

**TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU 186188

UNIVERSAL
LIBRARY

ग्रन्थों की खोज

(तृतीय भाग)

लेखक

उदयसिंह भटनागर

सर्वोदय साहित्य मन्दिर.

हुसैनी अलम रोड, हैद्राबाद (द.) नं. २

साहित्य-संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ

उदयपुर [राजस्थान]

प्रकाशक—

साहित्य-संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ

उदयपुर ।



मुद्रक—

विद्यापीठ प्रिन्टिंग प्रेस

उदयपुर

प्रकाशकीय निवेदन

राजस्थान में प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास एवं कला-विषयक प्रचुर सामग्री यत्र-तत्र बिखरी हुई है। आवश्यकता है, उसे खोज कर संग्रह और सम्पादित करने की। राजस्थान विश्व विद्यापीठ [तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ] उदयपुर ने इस आवश्यकता को अनिवार्य अनुभव कर विक्रम सं० १९६८ में "साहित्य-संस्थान" (उस समय प्राचीन साहित्य शोध संस्थान) की स्थापना की और एक योजना बनाकर राजस्थान की इस साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक निधि को एकत्रित करने का काम हाथ में लिया। योजना के अनुसार "साहित्य-संस्थान" के अन्तर्गत विभिन्न प्रवृत्तियों निम्न छः स्वतन्त्र विभागों में विकसित हो रही हैं : (१) प्राचीन साहित्य विभाग, (२) लोक साहित्य विभाग, (३) पुरातत्व विभाग, (४) नव साहित्य-सृजन विभाग, (५) अभ्ययन गृह और संग्रहालय विभाग एवं, (६) सामान्य विभाग।

१. 'साहित्य-संस्थान' द्वारा सर्व प्रथम राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए हस्तलिखित हिन्दी के ग्रन्थों की खोज और संग्रह का काम प्रारम्भ किया गया। प्रारंभ में विद्वानों को इस प्रकार के ग्रन्थालयों को देखने में बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी। राजकीय पुस्तकालय, जागीरदारों के ऐसे संग्रहालय एवं जहाँ भी ऐसी पुस्तकें थी, देखने नहीं दी जाती थी, धीरे-२ इसके लिये वातावरण बना कर काम कराया जाने लगा। सबसे पहले साहित्य संस्थान द्वारा पं० भोतीलाल मेनारिया द्वारा सम्पादित "राजस्थान में हिन्दी के हस्त लिखित-ग्रन्थों की खोज प्रथम भाग,

प्रकाशित कराया गया और उसके बाद बीकानेर के प्रसिद्ध विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा द्वारा सम्पादित उक्त ग्रन्थ का दूसरा भाग छपाया एवं प्रस्तुत तीसरा भाग श्री उदयसिंह भटनागर की देख-रेख और सम्पादन में 'संस्थान' ने तय्यार करवाया है; जो आपके हाथों में है। इसी प्रकार चौथा, पांचवा और छठा भाग भी क्रमशः श्री अगरचन्द नाहटा, श्री नाथूलाल व्यास एवं श्री भोलाशंकर-व्यास द्वारा सम्पादित किये जा चुके हैं। इनका प्रकाशन शीघ्र ही किया जाने वाला है।

प्राचीन साहित्य विभाग में हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज के अतिरिक्त १२,००० चारण गीत विभिन्न विषयों के एकत्रित किये जा चुके हैं।

२. लोक साहित्य विभाग द्वारा हजारों कहावतें, लोकगीत, मुहावरें, लोक-कहानियाँ, वात-ख्यात, ख्याल, पहेलियाँ, बैठकों के गीत आदि संग्रह किये जा चुके हैं। पं० लक्ष्मीलाल जोशी द्वारा सम्पादित-मेवाड़ी कहावतें और श्री रतनलाल मेहता द्वारा सम्पादित मालवी "कहावतें" पुस्तक रूप में प्रकाशित की जा चुकी हैं। कहावतों के दो भाग और प्रकाशन के लिये तय्यार हैं। 'लोक वार्ताओं' के दो संग्रह, गीतों के दो संग्रह प्रेस कॉपी के रूप में तय्यार हैं। आर्थिक सुविधा होते ही इनको प्रकाशित करा दिया जायगा।

३. पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत पट्टे, परवाने, ताम्र पत्र और ऐतिहासिक महत्व के अन्य कागज-पत्रों को संग्रह किया जाता है। प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के, शिला लेख, चित्र तथा अन्य कला कृतियाँ एकत्रित की जाती हैं। इसमें अच्छी सामग्री एकत्रित करली गई है।

४. नव साहित्य-सृजन विभाग से अब तक तीन पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। पं० जनार्दनराय नागर द्वारा लिखित "आचार्य चाणक्य" नाटक, पं० सन्धैयालाल ओझा द्वारा रचित "तुलसीदास" ब्रज भाषा काव्य, एवं श्री हुक्मराज मेहता द्वारा लिखी गई "नया चीन" आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें विद्वानों से लिखवाई जा रही हैं।

५. अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग में अब तक १००० हस्तलिखित महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं २२०० मुद्रित ग्रन्थ एकत्रित किये जा चुके हैं। यह धीरे-२ एक विशाल संग्रहालय का रूप ले सकेगा। ऐसी आशा है।

६. सामान्य विभाग के अन्तर्गत राजस्थानी के प्रसिद्ध महाकवि श्री सूर्य-मल की स्मृति में "सूर्यमल आसन" और राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ तथा

पुरातत्त्ववेत्ता स्व० डॉ० गौर शंकर हीराचंद ओझा की पुण्य स्मृति में “ओझा आसन” स्थापित किये गये हैं। इन आसनों से प्रति वर्ष संबंधित विषयों पर अधिकारी विद्वानों के तीन भाषण समायोजित कराये जाते हैं। और उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाता है। “सूर्यमल-आसन” से अब तक डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, नरोत्तमदास स्वामी, अग्रचन्द्र नाहटा तथा रा० ब० रामदेवजी चौखानी के भाषण कराये जा चुके हैं। और डॉ० चाटुर्ज्या के भाषणों की “राजस्थानी-भाषा” नामक पुस्तक ‘संस्थान’ से छप चुकी है।

“ओझा आसन” से प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता सीतामऊ के महाराज कुमार डॉ० रघुवीरसिंह के तीन भाषण “पूर्व आधुनिक राजस्थान” विषय पर हो चुके हैं और यह पुस्तक प्रकाशित की जा चुकी है। दूसरे अभिभाषक डॉ० दशरथ शर्मा थे, जिनके भाषण शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं।

साहित्य-संस्थान से शोध-मम्बन्धी एक त्रैमासिक “शोध-पत्रिका” श्री डॉ० रघुवीरसिंह, श्री अग्रचन्द्र नाहटा, श्री कन्हैयालाल सहल, श्री देवीलाल सांमर एवं श्री भगवतीलाल भट्ट के सम्पादन में प्रकाशित होती हैं। हिन्दी के समस्त शोध-विद्वानों का सहयोग इस पत्रिका को प्राप्त है, इसलिये यह शोध-जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है।

इस प्रकार साहित्य-संस्थान अपनी बहुमुखी कार्य योजना द्वारा राजस्थान के बिखरे हुए साहित्य को एकत्रित कर प्रकाश में लाने का नम्र प्रयत्न कर रहा है लेकिन यह काम इतना व्यय और परिश्रम साध्य है कि कोई एक संस्था इसे पूरा करना चाहे तो असम्भव है। हमारे देश की प्राचीन साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परम्पराओं तथा चिन्तन-स्रोतों को सदैव गतिशील एवं अमर बनाये रखना है तो इस काम को निरन्तर आगे बढ़ाना होगा। देश के धनमानी सेठ-साहुकारों, राजा-महाराजाओं, जागीरदारों तथा जमींदारों को ऐसे शुभ सरस्वती के यज्ञ में सहायता एवं सहयोग देना ही चाहिये। राजस्थान और भारत के विद्वानों, विचारकों और साहित्यकारों का इस प्रकार के शोध-पूर्ण कार्यों की ओर अधिकाधिक प्रवृत्त होना आवश्यक है।

साहित्य-संस्थान हिन्दी के आदि ग्रन्थ “पृथ्वीराज रासौ” का प्रामाणिक संस्करण अर्थ और भूमिका सहित शीघ्र ही प्रकाशित करवा रहा है। “रासौ”

का सम्पादन-कार्य इस विषय के मर्मज्ञ विद्वान श्री कविराव मोहनसिंह, उदयपुरं कर रहे हैं । इसके प्रकाशन से हिन्दी साहित्य की एक ऐतिहासिक कमी की पूर्ति होगी ।

आशा है विद्वानों, कलाकारों और धनी-मानियों द्वारा संस्थान को इसके कार्य में पूरा सहयोग प्राप्त होगा । इसी आशा के साथ—

विक्रम सं० २००६ }
सन् १९५२. }

गिरिधारीलाल शर्मा

मन्त्री

साहित्य-संस्थान

“दो शब्द”

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर ने अपने १५ वर्षों के कार्यकाल में अनेक संघर्षों, संकटों और कठिनाइयों को झेलते हुए भी निस्सन्देह ऐसे कार्य किये हैं, जो उसके अस्तित्व तथा उपयोगिता के लिये प्रमाण रूप माने जा सकते हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ के अन्तर्गत स्थानीय कवि-गोष्ठियों और साहित्य-चर्चाओं से लगाकर राजस्थान एवं अखिल भारतीय महत्व के सम्मेलन समायोजित किये जा चुके हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ की स्थापना का मुख्य लक्ष्य ही राजस्थान की साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शिक्षणात्मक उन्नति करना था। इसी लक्ष्य को मूलाधार मानकर इसके अन्तर्गत वे सभी विविध प्रवृत्तियाँ तथा काम प्रारंभ किये गये, जो देश के सर्वांगीण विकास तथा निर्माण के लिये आवश्यक एवं अनिवार्य थे। लोक शिक्षण द्वारा उत्तरदायी लोक तन्त्रात्मक लोक-जीवन निर्माण का काम राजस्थान में सर्व प्रथम इसी संस्था द्वारा प्रारम्भ किया गया।

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर (तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ) ने संवत् १९६८ में प्राचीन साहित्य की शोध-खोज, संग्रह-सम्पादन एवं प्रकाशन के लिये साहित्य-संस्थान (उस समय खोज विभाग) की स्थापना की और राजस्थान के प्राचीन साहित्य-विशेषकर डिंगल-के ग्रन्थों की शोध-खोज प्रारम्भ की। साहित्य-संस्थान ने इसकी महती आवश्यकता अनुभव की कि राजस्थान के प्राचीन ठिकानों, मन्दिरों, उपाश्रयों और रामद्वारों में पड़ी हुई अमूल्य साहित्यिक निधि को अन्धकार से प्रकाश में लाने का जब तक योजनाबद्ध कार्य नहीं किया जायगा तब तक अतीत का गौरवपूर्ण महिमामय राजस्थान आधुनिक जनतन्त्रात्मक प्रगतिशील भारत के साथ संयोग साधकर प्रगति कर सके, यह संभव नहीं है। इसीलिये समस्त राजस्थान के प्राचीन साहित्य और लोक साहित्य की गवेषणा का कार्य व्यापक आधार पर देश के विद्वानों की सहायता से करने का नम्र प्रयत्न किया जा रहा है। ऋषि-मुनियों की इस पुरातन तपोभूमि में अनेक

सरस्वती-पुत्रों ने वर्षों तक साधनारत रहकर सरस और सुन्दर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रचनायें मुखरित की हैं, उन्हें आज हम अपनी असावधानी और प्रमाद से नष्ट हो जाने दें तो इससे बढ़कर क्या लज्जा की बात हो सकती है ?

साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ ने अब तक प्राचीन साहित्य की शोध-खोज कर विवरणियों (बिबलियोग्राफी) के तीन भाग प्रकाशित कर दिये हैं और तीन भाग अभी आर्थिक कठिनाई के कारण अप्रकाशित रखे हैं । ज्यों ही आर्थिक सुविधा प्राप्त होंगी, उन्हें भी प्रकाशित कर दिया जायगा ।

दस वर्षों के निरंतर शोध-खोज के कार्य के बाद इस वर्ष राजस्थान-सरकार ने साहित्य-संस्थान क 'प्रकाशन-कार्य' के लिये १०,०००) न्यूनतम सहायता प्रदान की है; उसी सहायता से इस "राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, भाग-३ का प्रकाशन किया जा सका है । सरकार द्वारा 'प्रकाशन कार्य' के लिये प्रदत्त सहायता को स्वीकार करते हुए मैं संस्था की ओर से सरकार के प्रति कृत-ज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजस्थान-सरकार, उसके मंत्रीगण तथा शिक्षा विभाग के अधिकारी महाशय ऐसे गभीर और गवे-षणापूर्ण साहित्यिक-सामग्री को प्रकाश में लाने का प्रोत्साहनपूर्ण सहयोग देते रहने में किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं करेंगे ।

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ के सभी सहायकों, हितैषियों और शोध-खोज के विद्वानों का मैं उनके सहयोग के लिये-अत्यन्त आभारी हूँ । यह तो उन्हीं का काम है और उन्हीं के लिये इस संस्था द्वारा ,किया जा रहा है-अतः उनका सहयोग तो निस्सन्देह मिलेगा ही ।

गुरु गोविन्दसिंह जयन्ति
दिसम्बर १६५२

}

जनार्दनराय नागर

एम० ए०, साहित्यरत्न

प्रोपकुलपति

राजस्थान विश्व विद्यापीठ

अपनी ओर से—

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ किसी भी देश की संस्कृति—उसकी भावना और चिन्तन के विकास की परम्परागत निधि है। युद्धों की परम्पराओं के बीच जीते-जागते राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की अमूल्य निधि का संग्रह उसकी सांस्कृतिक सजीवता का द्योतक है। अविश्वास और परम्परागत दकियानूसीपन इस निधि की रक्षा में विशेष सहायक हुआ है। फिर भी उत्तम कोटि के राजपूत शैली के चित्रों के समान अनेकों अमूल्य ग्रन्थ भी यूरोप और अमेरिका में चले गये हैं और वहाँ के संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

उदयपुर के विद्यापीठ में, अपने आरम्भिक जीवन से ही इन ग्रन्थों के संग्रह, संरक्षण, प्रकाशन आदि की ओर मेरी विशेष रुचि थी। अतः इसका विभाग खोला गया और मेरे संयोजन में कार्य आरम्भ हुआ। मुझे आज यह व्यक्त करते हुए हर्ष है कि यह विभाग संस्था का एक प्रधान और सजीव अङ्ग बनकर कार्य कर रहा है। इसकी बहुमुखी प्रवृत्तियाँ उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य बहुत बड़ा है, व्यापक और विस्तृत है। इसके लिये अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता है। इस दृष्टि से मेरा यह कार्य एक प्रयोग मात्र था। फिर भी मैंने इससे बहुत बड़ा अनुभव लाभ किया। कई स्थानों से तो मुझे कई बार निराश लौटकर आना पड़ा। परन्तु मैंने उन लोगो को प्रसन्न करने और उनसे ग्रन्थ निकलवाने का विश्वास भी प्राप्त किया, और उसके परिणाम स्वरूप मैं लगभग १५०० ग्रन्थों के विस्तृत विवरण ले सका। प्रस्तुत रिपोर्ट में उन सब का विस्तार बहुत कठिन था। यद्यपि इस प्रकार की विवरणी के लिये मेरा एक मिन्न दृष्टिकोण है। विवरण व्यापक और विस्तृत होने चाहियें, जिससे ग्रन्थ पर एक आलोचनात्मक अध्ययन हो सके, उससे सम्बन्धित भाषा, साहित्य, इतिहास, जीवन-चरित्र, महत्वपूर्ण घटनाएँ, सामाजिक परिस्थितियों आदि की ओर भी आवश्यक संकेत हों; क्योंकि सभी ग्रन्थों का न तो प्रकाशन सम्भव है और न उनकी बार बार प्राप्ति ही। विवरण अधिकतर इसी दृष्टि से लिये गये थे। परन्तु, इतनी विस्तृत सामग्री के प्रकाशन की व्यवस्था भी तो एक समस्या है। अतः मैंने लगभग ५०० रचनाओं का विवरण देना निश्चय किया।

प्रस्तुत रिपोर्ट का कार्य सन् १९४२ के दिसम्बर में ही समाप्त हो गया था। १ सितम्बर १९४२ में मैंने इस कार्य को आरम्भ किया और पूरे चार महिने तक बराबर घूमने और विवरण लेने

का कार्य किया गया। इसका बहुत सा श्रेय मेरे उन सहयोगियों को है जिन्होंने मेरे साथ धूमकर विवरण उतारे और मेरे कार्य में सहायता प्रदान की। यद्यपि अपने क्रम में इस रिपोर्ट का प्रकाशन दूसरे भाग के रूप में होना चाहिये था, परन्तु इसका प्रकाशन आज पूरे दस वर्ष के पश्चात् हो रहा है। इसका बहुत कुछ श्रेय मेरे इस कार्य के सहयोगी माई श्री गिरीधारीलाल शर्मा को है। एक प्रकार से उनका यह कर्तव्य ही था, क्योंकि इन विवरणों को लिखने के लिये उन्हें भी मेरे साथ घर-घर की खाक छानने के कष्ट अनुभव करने पड़े हैं। श्री पुरुषोत्तम मेनारिया को भी मैं भूल नहीं सकता। उन्होंने भी इसी प्रकार मुझे उतना ही सहयोग दिया और इसकी प्रेस प्रति बनाने में अधिक परिश्रम किया। आज मुझे इस बात का गर्व है कि ये दोनों ही व्यक्ति अपने विषय में संलग्न और अपनी धुन के पक्के हो गये हैं। मेरे पश्चात् इस विभाग (शोध-संस्थान) का कार्य इन्होंने बारी बारी से सम्हाला और इसका विकास किया। अतः ये दोनों ही बधाई के पात्र हैं। उन सज्जनों का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने विश्वास के साथ अपने ग्रन्थों को मेरे सम्मुख लाकर रख दिया तथा मुझे उनसे विवरण उतारने दिये। श्री मोतीलाल मेनारिया के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ। समय-समय पर उनकी सम्मति ने मेरे कार्य में उत्साह-वर्द्धन किया। श्री अगरचंद नाहटा ने इसके प्रकाशन में अपनी सम्मति से मुझे अनुमति किया है। आचार्य जिनविजय का तो मुझ पर काफी ऋण है। एक शिष्य अपने गुरु को क्या धन्यवाद दे और क्या उनके प्रति आभार प्रदर्शन करे ! अपने सतीर्थ माई डा० मोगीलाल सडिसरा से भी इसकी प्रस्तावना प्राप्त करने का सुअवसर बड़ौदा में रहने से मुझे प्राप्त हो गया। उनका मैं आभारी हूँ।

दस वर्ष पश्चात् यह विवरणी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है। जिस रूप में यह विद्वानों के सम्मुख प्रकाशित हो रही है, मुझे आशा है, उनके लिये यह उपयोगी सिद्ध होगी। मुझे संतोष है कि अनेकों छिपे हुए ग्रन्थों में से कुछ की सूचना विद्वानों के सामने आ रही है। प्रस्तुत विवरणी राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास की एक आधार भूमि बन सकती है। इसमें प्राचीनतम ग्रन्थ वि० सं० १४१३ तक के मिलेंगे जो भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

यों तो मेवाड़ में ही साहित्य की इतनी सामग्री बिखरी पड़ी है कि उसके आधार पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ तैयार किया जा सकता है; जिसके द्वारा मेवाड़ के सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास का परिचय हमें मिल सकता है। महाराणा सांगा के जीवन काल तक (वि० सं० १५८४) या यों कहिये कि वि० सं० १६०० तक राजस्थान का इतिहास मेवाड़ का इतिहास ही है। पृथ्वीराज के साम्राज्य के ध्वंस के पश्चात् मेवाड़ ही प्रधानतः इतिहास में जीवित रहा है। उसके पूर्व भी मेवाड़ में साहित्य और कला का जो विकास हुआ है वह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। साहित्यिक अभिव्यक्ति

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशभाषा सभी में हुई और इनके ग्रन्थों का कहीं तो उल्लेख मिलता है और कहीं कहीं ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं।

मेवाड़ में साहित्य, ज्ञान, विज्ञान और कला के विकास की सूचना हमें मेवाड़ और मेवाड़ के बाहर बिखरे हुए अनेकों शिलालेखों के द्वारा प्राप्त होती है। राजा नरवाहन के एकलिंगजी के शिलालेख (वि० सं० १०२८) से हमें ज्ञात होता है कि यहाँ स्याद्वाद (जैन), सौगात (बौद्ध) और वेदाङ्ग मुनि (आर्य) का महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ हुआ था। यह शास्त्रार्थ मेवाड़ के बौद्धिक विकास की महानता का द्योतक है। राजा शालिवाहन के समय (वि० सं० १०३०) का एक अन्य शिलालेख मेवाड़ की सांस्कृतिक, साहित्यिक और कला सम्बन्धी प्रगति की सूचना देता हुआ यह व्यक्त करता है कि राजा नरवाहन स्वयं संस्कृति, साहित्य और कला का महान पोषक और संरक्षक था ^१। एकलिंगजी की प्रशस्ति (वि० सं० १०२८) का रचयिता अमर स्वयं एक महान् कवि था। यह इस प्रशस्ति से ही ज्ञात होता है। इसी युग में रामानुजाचार्य (वि० सं० १०७३) का प्रभाव मेवाड़ पर पड़ा, जिससे आगे चलकर अनेकों नारायण (विष्णु) के उपासक साधु-महात्माओं ने इस भूमि को उपासना और भक्ति से आस्रावित किया। जैन और बौद्ध प्रभाव भी इस देश पर उस समय अवश्य रहे हैं यह केवल उक्त प्रशस्ति में दिये गये शास्त्रार्थ से ही नहीं विदित होता, अन्य प्रमाणों से भी होता है। प्रसिद्ध जैन साधु जोहन्दु (योगीन्दु) जो एक महान् विद्वान्, वैयाकरण और कवि था, संभवतः चित्तौड़ का ही निवासी था। इसका समय विक्रम की १० वीं शती था ^२। इसी समय रामसिंह नाम जैन कवि की भी रचना भाषा में मिलती है। रावल जैत्रसिंह के समय (वि० सं० १२७०-१३०६) में अहाड़ नगरी में दो प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना हुई। पहला 'ओघनिर्मुक्ति' (वि० सं० १२८४ में लिखित) और दूसरा वयजल द्वाय लिखित 'पादिक वृत्ति' (वि० सं० १३०६)। अहाड़ नगरी में लिखित एक तीसरा ग्रन्थ (वि० सं० १३१७ तेजसिंह का समय) 'श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र-चूर्ण' पाठ्य के भण्डार में सुरक्षित है। ये तीनों ग्रन्थ ताड़पत्र पर लिखित हैं। अहाड़ के समीप 'धूलकोट' में लिखित 'तांबावती नगरी' २००० ई० पूर्व की सम्यता की द्योतक है। रावल तेजसिंह के समय (वि० सं० १३१७-१३२४) जैन-संस्कृति का मेवाड़ में प्रभाव जमने लगा। उस समय के प्रसिद्ध जैन मुनि रत्नप्रभसूरि का रावल तेजसिंह के मन्त्रियों और उसकी माता पर काफी प्रभाव था ^३। रत्नप्रभसूरि स्वयं विद्वान् और कवि था।

१ जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, जि० २२, पृ० १६६।

२ राहुल सांकृत्यायन-हिन्दी काव्यधारा पृ० २४०।

३ चित्तौड़ की गम्भीरी नदी के पुल के नीचे पाया गया शिलालेख (वि० सं० १३२४)

वि० सं० १३३० में उसने जिस प्रशस्ति की रचना की, उसे उसके शिष्य पार्श्वचन्द्र ने शिला पर लिपिबद्ध किया, केलिहसिंह ने उसे खोदा और सूत्रधार देहूण ने उसे स्थापित किया। इससे प्रशस्तिश्रों की रचना से लेकर स्थापन तक की कला का संकेत हमें मिलता है। बौद्धकालीन सम्यता कल्याणपुर और चित्तौड़ के पास मम्भमिका नगरी के भूगर्भ में छिपी पड़ी है। शैव और वैष्णव संस्कृति का यह स्थान सदा से केन्द्र बना रहा। नागदा की मूर्ति और वास्तुकला इसका एक अच्छा उदाहरण है। चित्तौड़ के विजय-स्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ जैन और वैष्णव स्थापत्य के कला स्तम्भ हैं।

लाखा और कुम्मा (वि० सं० १४३६-१५२५) के युग में मेवाड़ संस्कृति, साहित्य, और कला की चरम सीमा पर था। यह युग मेवाड़ का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इसमें जिन सांस्कृतिक भावनाओं का संचार हुआ, साहित्य के विविध अङ्गों को उन्नति हुई और कलाओं-संगीत और चित्र, शिल्प, मूर्ति, स्थापत्य और युद्धकला भी का जो विकास हुआ उसने मेवाड़ को सामान्य भूमि से बहुत ऊपर उठा दिया, उसने ऐसी प्रबल और स्वतंत्र सत्ता का रूप धारण किया कि पड़ोसी यवन आक्रमणकारी कभी सुख की नींद न सो सके। गोरखनाथ की गोरखपंथी शाखा और उससे निकले हुए अचोर-पंथ का मेवाड़ अखाड़ा था। उदयपुर के पास तीतरड़ी की प्रसिद्ध गुफा गोरखपंथियों से सम्बन्धित मानी जाती है और उसके पास का गांव समीनाखेड़ा अब तक ओघड़ बाबा का अखाड़ा है। कदाचित् गुरु मण्डार, चुणकरनाथ, चरपटनाथ, जालंघ्रीपाव धूँधलीमल, पृथ्वीनाथ, बालनाथ, ओघड़-पंथ के प्रमुख प्रवर्तक मोतीनाथ, सती कणोरी, शंभुनाथ, सिद्ध गवरी, सिद्ध घोड़ाचोली, सिद्ध हरवाली आदि में से कुछ यहाँ से अवश्य सम्बन्धित थे और कुछ ने अपनी रचनाओं का यहीं से प्रसार किया होगा। कुंमा स्वयं एक महान मन्त्र, कलाकार, संगीतकार संगीतज्ञ और संगीत शास्त्री, काव्यकार तो था ही, परन्तु साथ ही योग्य शासक, नीतिज्ञ और एक कुशल सेनानी तथा वीर योद्धा भी था। वह कलाकारों, विद्वानों, पंडितों, संगीतज्ञों, कवियों, शिल्पियों, मूर्तिकारों, सैनिकों आदि का महान पोषक और नेता था। 'एकलिंग महाकाव्य' से ज्ञात होता है कि कुम्मा वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद्, व्याकरण, राजनीति आदि का विद्वान् था। संगीत पर उसके तीन ग्रन्थों—^१ संगीत राज, २, संगीत मीमांसा ३. सूड़ प्रबन्ध का पता चलता है। उसके बनाये हुए कीर्तिस्तम्भ के एक टूटे शिलालेख से ज्ञात होता है कि वह शिल्प और वास्तु शास्त्र का भी विद्वान् था और कीर्तिस्तम्भों पर उसने स्वयं एक ग्रन्थ रचा था-जिसको उसने जय और अपराजित के मतों को आधार माना है^२। कुंमा एक नाट्यकार भी

१ चीरवा में प्राप्त।

ओम्हा-उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २, पृ० १११८। २६

था। उसने चार नाटक लिखे, जिनसे विविध भाषाओं-कर्णाटी, महाराष्ट्री, राजस्थानी, आदि पर उसके अधिकार का परिचय मिलता है। शासन व्यवस्था पर उसने 'सुप्रबन्ध' ग्रन्थ लिखा, 'चण्डी शतक' का अनुवाद किया और गीत गोविन्द पर 'रसिक प्रिया' टीका लिखी। अनेकों स्तुतिश्रों की रचना की जिन्हें वह स्वयं विभिन्न रागों और तालों में गाता था। उसके समय में मण्डन सूत्रधार ने 'देवतामूर्ति प्रकरण', 'प्रासाद मण्डन', वास्तु मण्डन, 'वास्तु शास्त्र', 'रात्रवल्लभ', 'रूपमंडन', 'रूपावतार', 'वास्तुसार' की रचना की। उसके भाई नाथा ने 'वास्तुमंजरी' तथा उसके पुत्र गोविन्द ने 'उद्धार भोरणी', 'कलानिधि', और 'द्वारदीपिका' की रचना की। अत्रि और उसका पुत्र महेश उस समय के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे। वैद्यक और ज्योतिष के ग्रन्थों की भी रचना हुई। इस समय तक यहीं कहीं शार्ङ्गधर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'शार्ङ्गधर-संहिता' और 'संगीत रत्नाकर' समाप्त कर दिये थे (वि० सं० १४२०)। 'हम्मीर रासौ' और 'हम्मीर काव्य' की भी इस समय तक रचना हो चुकी थी। परन्तु इनकी खोज करना एक बहुत बड़ा कार्य है। कुंभा के पिता मोकल स्वयं विद्यानुरागी थे। मोकल के राज्य (१४७८-१४६०) में कविश्वर महेश ने कवि के रूप में, प्रशस्तिकार के रूप में, दर्शन शास्त्र के विद्वान् के रूप में सम्मान प्राप्त किया। मोकल के समय के शिलालेखों से स्पष्ट है कि कविराज बाणविलास योगीश्वर और एकनाथ उसके प्रसिद्ध कवि, वीसल प्रसिद्ध शिल्पकार और फना और मन्ना प्रसिद्ध सूत्रधार थे। मोकल के पिता लाखा से लेकर कुंभा तक भोटिङ्ग मठ अपने काव्य और प्रशस्तियों के लिये प्रसिद्ध रहे। रावल समरसिंह (वि० सं० १३५८) का प्रसिद्ध कवि वेदशर्मा था।

विक्रमसंवत् १३०० से १५०० तक का युग सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति का युग था। धार्मिक अधिकार किसी वर्ग विशेष का नहीं, मनुष्य मात्र का है। कोई भी कर्म हेय नहीं है, वह भगवद्भक्ति के मार्ग में बाधक नहीं है। अपना कर्म करते रहकर ही भगवान् की प्राप्ति करना इस युग की प्रधान विशेषता थी। नामदेव ने छीपा-कर्म करते हुए, कबीर ने जुलाहा-कर्म करते हुए, सेना ने नार्ई का काम करते हुए, अपनी भक्ति और साधना का प्रभाव जनता पर डाला। इसी प्रभाव ने धन्ना जैसे एक जाट कृषक को राजस्थान का महान् भक्त बनाया (वि० सं० १४७२), रैदास जैसे चमार को (वि० सं० १४८५-१५८५) भक्तों के ऊँचे आसन पर आरोढ़ किया, पीपा को (वि० सं० १४८०-१५३०) राज महल से निकालकर द्वारिका में मित्रुक का काम कराया। और तो और, मेवाड़ के राजमहल के अन्तःपुर की मर्यादा तोड़कर राजराणी मीरों को

१ श्रोभा-उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २ पृ० १११८-२६।

२ जैसा कि 'शार्ङ्गधर' से पता चलता है।

बाहर निकाला और साधुओं और सन्तों के बीच बैठकर गान और नृत्य करवाया। धन्ना, पीपा, रैदास और मीराँ मेवाड़ के अमर भक्त हैं, मोतीनाथ अघोरियों का महान प्रवर्तक है, शाङ्गधर महान कवि और वैद्य है, कुंभा भक्त, कवि, कलाकार, विद्वान और योद्धा है, भोटिंग मट्ट इस युग का महान विद्वान, कवि और प्रशस्तिकार है, सूत्रधार मण्डन शिल्पकला का सूत्रधार है। इस प्रकार धन्ना, पीपा, रैदास, मोतीनाथ, शाङ्गधर, कुम्भा, भोटिङ्ग मट्ट, मण्डन सूत्रधार और मीराँ, इस युग के 'मेवाड़ के नवरत्न' हैं, जिसकी संतति है सांगा और प्रताप जैसे युद्धवीर देश भक्त !

इस युग में संस्कृत का अधिक महत्व था, पर इन व्यक्तियों ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि देश भाषा का भी उतना ही महत्व है। भक्तिकाल में भावनाओं के परिवर्तन के साथ साथ भाषा का भी परिवर्तन देख पड़ता है। राजस्थानी पर ब्रजभाषा का प्रभाव आरम्भ होता है। मीराँ की भाषा में ये लक्षण स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। पर चारण भाटों की भाषा और साहित्यिक परम्परा भी इसी युग में स्वतन्त्र अस्तित्व धारण करती हुई दिखाई पड़ती है। इसी युग में 'डिंगल गजब डोकरो डाकी, पिंगल पूगल नाजुक नार' की ध्वनि (१५७५ के आसपास) सुनाई पड़ती है और राजस्थानी की दो शैलियाँ डिंगल-पिंगल हमारे सम्मुख आती हैं। आगे चलकर दादू पंथ, निरंजनपंथ, रामस्नेही पंथ आदि अनेकों पंथों ने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में योग दिया। रामस्नेही का जन्म तो मेवाड़ ही में हुआ है। इसके आदि गुरु संतदास (सं० १८०६ में मृत्यु) मेवाड़ के दातडा गांव के ही निवासी थे। साहित्य-कोटि के अनेकों कवि मेवाड़ में हो गये हैं। साँगा (सं० १५६६) से महाराणा सज्जनसिंह (सं० १६४१) तक मेवाड़ में अनेकों साहित्यकार, संत, साधु, भक्त, पंडित आदि हो गये हैं जिन्होंने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में अपनी ओर से कुछ दिया है। इनमें से कुछ की ही रचनाएँ अभी तक हमें उपलब्ध हुई हैं और कुछ की सूचना मात्र मिलती है। 'रायमल रासौ', 'हरिवंश महाकाव्य' (संस्कृत), सौदा बारहठ जमना (सं० १५६६-८४) और केसरिया चारण हरिदास (वि० सं० १५६६-८४) पीथा आशिया (सं० १६२८-५३) की रचनाएँ आज अप्राप्य हैं। प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने बिखरे हुए रासौ को एकत्रित कराया (१६६०), १ पर अमरसिंह की काव्य-रचनाएँ अप्राप्य हैं। चारण भल्ल (सं० १६७६-८४) और बारहठ गोविन्द (सं० १६८४-१७०६) के कोई नाम तक नहीं जानता। किसी दयालदास ने राणा रासौ (सं० १६८० के लगभग) काव्य की रचना की, पर उसका कहीं पता नहीं। भींडर के जैन उपाश्रय की परम्परा से सम्बन्धित पन्यास (पं०=पन्यास) दौलत विजय (दलपत) ने प्रसिद्ध 'खुम्भाण रासौ' की रचना (वि० सं० १७२५ के लगभग) की।

महाराणा राजसिंह के साथ विष द्वारा मारे जानेवाले^१ और महाराणा द्वारा 'भाई' माने जानेवाले दधिवाड़िया आशकरण की वीरगाथाएँ अब तक अप्राप्य हैं। इसी युग में कम्मा नाई भी कोई कवि हो गया है, जिसने उक्त महाराणा को अपने पूर्वजों के गौरव का स्मरण दिलाकर उन्हें दिल्ली जाकर बाद-शाह के सन्मुख झुकने से रोका^२। किशोरदास चारण ने 'राजप्रकाश' (सं० १७१६) और मान कवि (जैन कवि) ने 'राजविलास' (सं० १७३५-३७) की रचना की। इसी समय लाल भट्ट ने भी महाराणा राजसिंह पर १०१ छंदों का एक काव्य रचा। रणछोड़दास का 'राज प्रशस्ति महाकाव्य' भारत का सब से बड़ा शिलालेख माना जाता है। यह रचना भी राजसिंह के समय की है। जोगीदास चारण कृत 'हरिपिंगलप्रबन्ध' (सं० १७४४), मुरली कृत 'अश्वमेध' (सं० १७५५) और 'त्रियात्रिनोद' ख्याति में आचुके हैं। कविराज करणीदान ने महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (सं० १७६७-६०) के राज्य में किसी काव्य की रचना की ! कवि नन्दराम कृत 'शिकार भाव' (सं० १७६०) और 'जगविलास' (सं० १८०२), महाराणा जगसिंह के मन्त्री देव करण कायस्थ कृत 'वाराणसी विलास' भी साहित्य की उत्तम कोटी की रचनाएँ हैं। रामकृष्ण और नाथूराम महाराणा जगतसिंह द्वितीय (वि० सं० १७६०-१८०८) के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे और नेकराम प्रसिद्ध कवि, जिसने 'जगद्विलास' की रचना की। इसी समय दाँतड़ा में प्रसिद्ध सन्तदास हुए, जिनके शिष्य कृषाराम की प्रेरणा से रामचरणदास ने 'रामस्नेही पंथ' की स्थापना की। विक्रम संवत् १८१७ में सोमेश्वर कवि ने 'राज्याभिषेख काव्य' (संस्कृत) की रचना की और उसी परम्परा को बैकुण्ठ पल्लीवाल ने 'अमरसिंह राज्याभिषेख काव्य' (सं० १८१७) की रचना में निभाया। पंडित मङ्गल के 'अमर नृप काव्य' की रचना भी इसी समय हुई। महाराणा अमरसिंह ने (सं० १८१७-१८२६) 'रसिक चमन' लिखा इसी समय किसी अज्ञात कवि ने 'सुदामा चरित्र' की रचना की, जो नरोत्तमदास के 'सुदामा चरित' से सर्वथा भिन्न है।

महाराणा भीमसिंह के समय तक (सं० १८३४-१८८५) मेवाड़ में कृष्ण भक्ति का पूर्णतः प्रचार हो चुका था। महाराणा भीमसिंह की कृष्ण भक्ति सम्बन्धी कुछ कविताएँ भी प्राप्त होती हैं। इस समय तक ब्रज भाषा और राजस्थानी का समन्वय हो चुका था। इसी समय फतहकरण चारण, फतेराम वैरागी, कविआ करणीदान, किशना आदा, आशिआ मानसिंह, अपनी रचनाओं से प्रसिद्धि में आये। फतहकरण राजस्थानी का गद्य-पद्य लेखक था। पर उसकी केवल 'पंचारूयान' (टीका) की सूचना ही मिलती है। किशना आदा के तीन ग्रन्थ-भीमविलास, चण्डिशतक,

१ महाराणा यश प्रकाश-भूसिंह शेखावत

२ राजनगर के महल में इसका एक पद खुदा हुआ मिलता है।

रघुवर जस प्रकाश उपलब्ध है। आशिआ मानसिंह ने डिंगल में किसी रूपक की रचना थी^१। इसी समय संत परम्परा में दीन दरवेश का एकलिंगजी में प्रादूर्भाव हुआ, जिनके जीवन काल के विषय में सन्त-साहित्य के विद्वानों में मिन-मत है। दीन दरवेश की रचना राजस्थानी में है परन्तु उस पर कुछ डिंगल का प्रभाव अवश्य है। इसी समय ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि पद्माकर का उदयपुर में आगमन हुआ, जिसका प्रभाव यहाँ के साहित्य पर अच्छा पड़ा। उन्होंने यहीं पर 'गनगौर' पर रचना की। ब्रजभाषा ने राज दरवार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। इसका परिणाम महाराणा जवानसिंह हैं। इनकी रचनाओं से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ये पूर्ण अधिकार के साथ ब्रजभाषा में रचना करते थे। वि० सं० १८८७ में उत्पन्न कवि गुमानसिंह (बाठलड़ा) की रचना ब्रजभाषा में आध्यात्मिक विषय की रचना का उत्कृष्ट उदाहरण है।

महाराणा सज्जनसिंह के समय तक मेवाड़ में ब्रजभाषा का विकास अपनी चरम सीमा पर पहुँचता हुआ देख पड़ता है। इसके पश्चात् साहित्य की राजकीय परम्पराएँ भी टूटने लगती हैं और साहित्य एक स्वतन्त्र अस्तित्व प्राप्त कर लेता है। महाराणा सज्जनसिंह का समय प्राचीन संग्रह और वर्तमान विकास का युग था। इसका श्रेय महाराणा के गुरु जानो बिहारीलाल को है, जो संस्कृत, हिन्दी, फारसी और अँग्रेजी के विद्वान थे। इनके कारण महाराणा की प्रवृत्ति बदली और वे साहित्य, कला, इतिहास, विद्वानों के प्रेमी और प्रशंसक ही नहीं आश्रयदाता भी बने। वे स्वयं काव्य के मर्मज्ञ थे। उन्होंने हस्तलिखित ग्रन्थों, प्राचीन चित्रों और विविध ऐतिहासिक सामग्रियों के संग्रहालयों की स्थापना की। कवि सम्मेलनों का आयोजन किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु का इन्होंने मेवाड़ में भव्य स्वागत किया। भारतेन्दु के प्रभाव से सरकारी कार्यालयों और अन्य विविध विभागों के नाम हिन्दी में दिये गये। प्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा श्यामलदास, कवि ऊजल फतहकरण, बारहठ किशनसिंह, स्वामी गणेशपुरी उनके प्रसिद्ध कवि थे। वे स्वयं एक सद्गुरु कवि और गायक थे। स्वामी दयानन्द का प्रभाव भी मेवाड़ पर पड़ा। महाराणा ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। महाराणा ने मेवाड़ में पार्लियामेन्ट के ढंग की शासन व्यवस्था की भी घोषणा की^२, परन्तु अँग्रेजी शासन नीति के कारण वह सफल न हो सकी।

मेवाड़ के साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। जिन

१ श्रीश्रीभाजी के संग्रह में इसकी प्रति थी।

२ महाराणा सज्जनसिंह की एक प्राचीन प्रकाशित घोषणा के आधार पर।

ग्रन्थकारों का और ग्रन्थों की सूचना इसमें दी है वे केवल नाम मात्र हैं। हमें उन सबकी खोज तथा अध्ययन कर, उनका जीवन के साथ मूल्यांकन करना होगा।

हिन्दी-विभाग

विश्व विद्यालय, बड़ौदा

१५-१२-५२

उदयसिंह भटनागर

लेखकानुक्रमणिका

क्र०सं०	लेखक	पृष्ठ	क्र०सं०	लेखक	पृष्ठ
१	अगंद	२४, ५८	२३	कानइया	२३
२	अग्रदास	१८	२४	कानइदास	१०, १७
३	अजैपाल	६०	२५	कान्हा	२६, ५६
४	आधार अधार)	१६, २४	२६	कासीराम	१६
५	अभयसोम	२०६, २०८	२७	किशन कवि	६, २५
६	अमरपुरी	२०	२८	किशना आढ़ा	१०१
७	अर्जुन नागा	१८०	२९	किसोर	२०
८	आलम	१४८	३०	कीताथोरी	२३, ५६
९	आसानंद	५८	३१	कुलपति मिश्र	११५, १४०
१०	उदयरत्न (भुवन भानु केवली)	१६२	३२	कुशललाम	१०२
११	उदासीराम	१७	३३	कृपाराम	१७५
१२	उम्मेदा	२०	३४	कृष्णदास	१८
१३	ऋषिवर संघ	३२	३५	कृष्णानंद	१६, २४, ५८
१४	कबीर ६, १७, २०, २२, २३, २५, ४६,	५८, ६७	३६	केवलराम	१८
१५	कमजी दधिवाड़िया	६०	३७	केवलदास	६०
१६	कमाल (कमाली)	१७, ५८	३८	केशवदास	११५, १२१, १४४
१७	कर्मचंद	५८	३९	केसर कीर्ति	३७
१८	करुणाराम	१६, १७	४०	केसोदास	१८
१९	कविन्द्र उदयनाथ	११५, १३७	४१	खिडियो जगो	१०४
२०	कबिराव करनीदान	२०१	४२	खेम कवि	१६६
२१	काजी कांदन	२४	४३	गंगादास	१६
२२	काजी मुहम्मद	१८, २४, ५८	४४	गंगाधर	१६
			४५	गरीबदास	२, ५८

४६ गिरधर आस्थो	१०७	७३ छीतरदास	६०
४७ गुरुभंडार	२४	७४ छोगालाल	१८
४८ गोपाल	५६	७५ जगजीवनदास	५६
४९ गोपालदास	२२	७६ जगन्नाथ	१४, १५, १६, १६, २१, २५, २७, ३५, ६७, ५७, १८३, १६८
५० गोपालदास	२०२	७७ जगा	६७
५१ गोपीचन्द	५६	७८ जनगोपाल	१४, १६, २१, २३, २५ ६७
५२ गोरखनाथ	२४, ५६	७९ जनसूरतराम	६६, ७५
५३ गोविन्ददास	१८	८० जमना	२०
५४ ग्यान तिलोक	२४	८१ जयनारायण (कवि)	१२७
५५ ग्वाल कवि	११३, ११५, १३६, १४२, १४४, १४८	८२ जयराम	२१
५६ चन्नदास	१६, १७	८३ जसवंतविजय	८६
५७ चन्नमुज	१४, २३, २५	८४ जसविजय उपाध्याय	४, १२
५८ चतुरदास	७, ३६, ६७	८५ जससोमविबुद्धि	१६२
५९ चतुर्भुजदास निगम	१०१	८६ जान कवि	२०५, २१०
६० चरणदास (नासकेत)	१६, २२, १८२	८७ जालध्रीपाव	५६
६१ चरपटनाथ	५६	८८ जिनहर्ष	६, ३३, २१२,
६२ चाचर	१६	८९ जिनोदयसूरि	२१६
६३ चित्रसाल	१२२	९० जेतराम	१७, २३३, २३८,
६४ चिन्तामणि	१३३	९१ जैमल	६०, २१३,
६५ चुणकरनाथ	६०	९२ जोगीदास	१६
६६ चैन	६०	९३ ज्ञानविमलसूरि	१५३
६७ चन्द	१८	९४ टीला	५६
६८ चन्द (चन्दबरदाई)	६०	९५ ठाकुर	११५
६९ चन्द्र सखी	२०	९६ तत्त्वविजय	१५२
७० चौथमल	१६७	९७ तुरसीदास	१४, १८, ६४,
७१ चौरंगीनाथ	२४, ६०	९८ तुलसीदास	८१, १०२
७२ छीतभदास	१६, ५८	९९ त्रिलोचन	२३, ५८

१०० दत्त	५६	१२६ नथमल	२७
१०१ दलपतराय-वंशीधर	११०	१३० नन्ददास ८, १८, २१, २२, ३८,	
१०२ दया-निधि	११५, १४८	५५, ६३, १५०, १८१	
१०३ दयाल	१८२	१३१ नयविजय	६१
१०४ दयासखी	२०	१३२ नरसिया	२३
१०५ दयासागर	१६३	१३३ नरसी	१७, ५६
१०६ दादू	१७, २३, २४, ५८	१३४ नरहरिदास	३
१०७ दानदास दयाल	१२५	१३५ नरोत्तमपुरी	६०
१०८ दास (?)	१३	१३६ नवलराम	१८, ७१
१०९ दास (?)	१८	१३७ नानक	२४, ५६
११० दास कवि	११५	१३८ नानकदास	१६
१११ दीन	१८	१३९ नानूदास	१८
११२ दुलहराय १६, १७, २०, २२, ३१, ६७		१४० नान्दूराम	११६
११३ दूजणदास	६०	१४१ नापा	५६
११४ दूलह कवि	११५	१४२ नाभादास	२०६
११५ देवदत्त) काव्य रसायन	११५	१४३ नामदेव	१७, २३, ५८
११६ देवदास	३१	१४४ नारायण ब्राह्मण	२१८
११७ देवल	५६	१४५ नारायण बैरागी	१७८
११८ देववर्द्धन (?)	१७१	१४६ नारायण दास	१६
११९ देवीदास	५	१४७ नीतानन्द	१८
१२० देवीदास	१७	१४८ नेम	१६
१२१ देवीदास	२१४	१४९ पजनेस	१४८
१२२ देवीसिंघ	२०	१५० पद्माकर	८६, १४८
१२३ देश्रम	५६	१५१ परमसागर	२०८
१२४ दौलत विजय (पं०)	८१	१५२ परमहंस सूरतराम	२०, ६६
१२५ धन्नाजी	१६, १६, २३, ५८	१५३ परमानन्द	१८, २४, ५८
१२६ धीरमदास	१८	१५४ परसा	२३, ५८
१२७ धूँधलीमल	६०	१५५ पारवती	६०
१२८ ध्यानदास १४, १६, २५, ६७, २१६		१५६ पीपा	२३, ५८

१५७ पुण्यरतन	१८४	१८५ भगवानदास निरंजनी	१७
१५८ पुण्यसागर	३३	१८६ भण्डारी उदेचंद	१२६
१५९ पुरुषोत्तम	१६	१८७ भवानीदास	१६
१६० पृथ्वीनाथ	६०	१८८ भानुकवि	१३८
१६१ पोद्दकरदास	१७	१८९ भीमजी	२३
१६२ प्रतापसाहि	१४७	१९० भुवनजी	२४, ५८
१६३ प्रवीनराय	११५	१९१ भैरवप्रसाद	१६६
१६४ प्रियादास	३६	१९२ मंछापुरी जोधपुरी (मंछ)	१३७,
१६५ प्रेमदास	१५		१८८
१६६ बल्लावर (स्त्री)	२०	१९३ मतिकुशल	१५८
१६७ बल्लावरसिंह	१३४, १४६	१९४ मतिराम	११५, १४१
१६८ विखना (वखना)	१७, २४, ५६	१९५ मतिसुन्दर	५६, २०६
१६९ बनारसीदास	१०८, १५३	१९६ मदन मोहन	१६
१७० ब्रह्मानन्द	१०३	१९७ मदनेश	४०, १२५
१७१ बलभद्र (मिश्र)	११५, १३१	१९८ मनराखन श्रीवास्तव	१२६
१७२ बहबल	५८	१९९ मयाराम	१८
१७३ बांकीदास	२०	२०० महादेव	६०
१७४ बाजींद	१६, १७	२०१ महाराजा जसवन्तसिंह	२, ३
१७५ बारहठ कान्हा	२०		३७, ७४, ७५,
१७६ बालकदास	१६	२०२ महाराज प्रतापसिंह 'ब्रजनिधि'	१२७
१७७ बालगुन्हाई	५६		
१७८ बालनाथ	५६	२०३ माणिकचंद	२७
१७९ बालसाखी	२०	२०४ माधवदास	१०३
१८० बिहारी	११५, १३४	२०५ माधवसिंह	१४३
१८१ बीठुदान	२०	२०६ माधौजगन्नाथी	५८
१८२ बीसा	२३, ५६	२०७ माधौराम	८
१८३ बैलियानन्द	२३	२०८ मीठी	१६
१८४ भद्रसेन	१५६	२०९ मीडकीपाव	६०

२१० मीरां	१७, २१-२३३	२३७ रामकरण कविराय	१०६
२११ मुकुंदभारथी	५८	२३८ रामचरण १४ से १७, २० से	
२१२ मुनि क्षमाहंस	३६	२२, २४, २५, ३४, ४१ से	
२१३ मुनि गुणचन्द	६२	४६, ४६, ६६, ६७	
२१४ मुरलीदास	६५, ६७	२३६ रामजन २५, २६, ४७, ४८, ७६,	
२१५ मुरलीधर	१६	२४० रामदास	१५३
२१६ मुरलीराम १५, १६, १७, २५, ३०		२४१ रामप्रताप	१७
२१७ मूरत	१८	२४२ रामसिंघ नरवर पति	११५
२१८ मेघविजय	३६, १६३	२४३ रामवल्लभ	१७
२१९ मोतीचंद 'चद'	१८६, १६१	२४४ रामसखी	२०
२२० मोतीदास	१६	२४५ रामसजन	१६
२२१ मोतीनाथ	१६	२४५ कं० रामसिंह नरवर पति	११५
२२२ मोरध्वज	१६	२४६ रामानन्द	२४, ५८
२२३ मोहनदास	६०, ६५	२४७ रावराजाबुद्धिसिंह	१३२
२२४ मोहनविजय	१५६, १६५	२४८ रूपदास	१८
२२५ यशोविजय	२१३	२४९ रूपरसिक	१६
२२६ रंगा	५६	२५० रैदास	१७, २३, ५८
२२७ रंगीला	१८	२५१ लछ्मनदास	१८
२२८ रघुनाथ	८	२५२ लक्ष्मोदय	८७
२२९ रतनदास (साधु रामस्नेही)		२५३ लवलीनराम	१७
	१७, २० २२, ६७	२५४ लाल	११५
२३० रतनदास वैरागी	३, ४१	२५५ लालदास	१८
२३१ रतनो खाती	१७६	२५६ ब्रजनन्द	२०
२३२ रसिकछेल	१६	२५७ ब्रजराज	२०
२३३ रसिकनाथ	१८	२५८ विजय सिंघ	२०
२३४ राजू	१४	२५९ विजिया	२३
२३५ राणां	५८	२६० विद्यादास	१६, ५६
२३६ राधाकृष्ण	१६	२६१ विद्यारूचि	१५७

२६२ विनयचन्द्र	१६५	२८६ सिधगवरी	५६
२६३ विनयविजय-जसविजय	२१२	२६० सिध घोड़ाचोली	६०
२६४ विनीतकमल	२०६	२६१ सिध हरवाली	६०
२६५ वीर विजयगणि	१५६	२६२ सुखदेव मिश्र	१
२६६ वृन्द कवि	१०६	२६३ सुखमणदास	१६
२६७ शान्तिकुशल	१,१६७	२६४ सुखानन्द	२४, ५८
२६८ शिवकरणा	१५	२६५ सुन्दरकवि	१५०
२६९ शिवराम	२१३	२६६ सुन्दरदास	५, १५, १६, ३०, ६०, ६१, ६५,
२७० शिवराम-विप्र (दाधीचि)	१३०	२६७ सुमतिहंस	२०२
२७१ श्रीपति सुकवि	११५	२६८ सुरति कवि (मिश्र)	१२४, १४०,
२७२ श्री भट्ट	१८		१४४
२७३ संग्रामदास	६७	२६९ सूरज	१८
२७४ संग्रामसूरि	८६	३०० सूरतराम	१७
२७५ सतीकणोरी	६०	३०१ सूरदास	१७, २४, ५६
२७६ सदानन्द	१६	३०२ सूरविजय	१६८
२७७ सधना	५८	३०३ सेख उसमान	१६
२७८ सन्तदास २०, २२, २५, ३८, ६६, ६७,	६८	३०४ सेख बहावदी	५८
२७९ सम्भुनाथ	२४	३०५ सेख मावदी	१६
२८० समयसुन्दर	१६२	३०६ सेना	५८
२८१ सवाईसिंघ	२०	३०७ सेवादास	१५, १६, २३, ६७
२८२ सांवलिया	२४, ५६	३०८ सोजा (सोभा)	१५, १६, २३,
२८३ सांवतराम	१७३		५८, ६७
२८४ सांखभद्र	१६६	३०९ सोम	२४, ५६
२८५ साखीदास	६०	३१० सोमनाथ	१३८
२८६ साधु	६०	३११ स्याहुसैन	६८
२८७ साधुराम	१६, १७, २६	३१२ स्वरूपदास	८, १३२, १८७
२८८ सामलदास	१८५	३१३ हंस कुमार (हंसकवि)	१६०
		३१४ हरदास	५८

३१५ हरषत	६०	३२० हरिराम	१८
३१६ हरसेवक	१६४	३२१ हरिरामदास निरंजनी	१२६
३१७ हरि (?	१५४	३२२ हरि स्यंघ	६०
३१८ हरिचरणदास	१११, ११५,	३२३ हस्तराम	१८
	१२१, १२२, १३५, १४६	३२४ हुक्मेश	२०
३१९ हरिदास	१८, २३	३२५ हेमरतन	८१

ग्रन्थानुक्रमणिका

क्र०सं०	ग्रन्थ	पृष्ठ	क्र०सं०	ग्रन्थ	पृष्ठ
१	अचलदासजी की वार्ता	१५२	१७	अमृतधारा का कवित (भगवान दास निरंजनी)	१७
२	अंजना सुन्दरी रास*	१५१	१८	अमरदत्ता मित्राणंदरास	१५२
३	अजारी सरस्वती	१	१९	अर्जुन गीता *	२३
४	अठारा नांतां को ब्यौरो*	६७	२०	अलंकार आशय	१०६
५	अणभै वाणी (मुरलीराम)	२५	२१	अलंकार चन्द्रिका	१११
६	" " (रामचरण)	१४, २१ २२, २४, २५, ४१, ६६, ६७	२२	अलंकार रत्नाकर	११०
७	" " (रामजन)	२४, २५	२३	अवतार चरित्र	३
८	" " (सन्तदास)	२२, २५, ६७, ६८	२४	आनन्द मन्दिरास	१५३
९	अणभै प्रबोध	२, २५	२५	आनन्द विलास	३
१०	अध्यात्म प्रकाश	१	२६	आनन्दार्णवसार	३
११	अनभौ विलास	४२, ६६	२७	इग्यार अंग स्वाध्याय	४
१२	अनुभव प्रकाश	२	२८	ईश्वर विवाह	५
१३	अनेक नाम माला (नाममाला)	२१, २२, १५०	२९	उपदेश चिन्तामणि	५, १५, १६
१४	अनेकार्थ मंजरी (अनेकारथी)	८, २१, १५०	३०	उपदेश छत्तीसी	६
१५	अपछरानुं इन्द्र सराप दीन्हौ तेरी वात	२०४	३१	उपदेश बावनी	६, २५
१६	अपरोक्ष सिद्धान्त	३	३२	उमा महेश्वर संवाद*	२२
			३३	उषा भागवत	१५३
			३४	एकादस की ध्याई	७, २२, २५, ६७
			३५	एकादस भागवत की कथा	३८
			३६	आखाणे की वार्ता	२०४

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

३७ ओधवजी ना संदेश	८	६१ कुँवर साहिजादा री बात	२०६
३८ कक्का बत्तीसी	१५, ६६	६२ कुण्डलियाँ	६६
३९ कइस्ना	६०	६३ कृत (पीपा)	२३
४० कपड़ कतोहल*	८६	६४ कृत (नामदेव)	२३
४१ कर्मविपाक गीता*	२२	६५ कृत (रैदास)	२३
४२ करुणा बत्तीसी	८	६६ कृत (हरिदास)	२३
४३ कल्याण मन्दिर भाषा	१५३	६७ कृत (सोजा, सोभा)	२३
४४ कवाट सरवेहीया री बात (हरि ?)	१५४	६८ कृष्णजीवन ना बारा मासि*	११
४५ कविकुल कण्ठाभरण	११५	६९ कृष्ण बारामास्यो*	८६
४६ कवित्त रामायण	८१	७० कृष्णानन्दजी को कृत	२४
४७ कविता कल्पतरु	११६	७१ कौरु शास्त्र*	१५५
४८ कवि दर्पण	११२	७२ कोल्याइत रे साह री बात	२०३
४९ कवि प्रिया	११५, १२१	७३ क्षेत्रपाल छंद*	८६
५० कवि प्रिया की टीका	१२१	७४ खर्यौ चीते अर विजै देवड़े री बात	२०५
५१ कवि वल्लभ	११५, १२२	७५ खुमाण रासौ	८१
५२ काणे राजपूत री बात	२०५	७६ गङ्गाष्ठक	३
५३ काव्य कुतुहल	१२२	७७ गजेन्द्र मोक्ष*	१६
५४ काव्य रसायन	११५	७८ गरभ चिन्तामणि	२५
५५ काव्य सिद्धान्त	१२४	७९ गाँव रे धणी री वार्त्ता	२०६
५६ किवत (परमहंस सूरतराम)	६६	८० गावा को गोपीचन्द*	१७
५७ किवत (रामचरण)	४६, ६६	८१ गावा को नरसी महता को माहेरो*	१७
५८ कुँवर चित्रसेन री बात	२०४	८२ गीत संग्रह	१२
५९ कुँवर पाल पाटण रे धणी री बात	२०६	८३ गुरुदेव को अंग	१५, २१
६० कुँवर भूपति सेन री बात	२०४	८४ गुरु बीनती जोग	२६

८५	गुरु महिमा	१४, ६७	११०	चमत्कार चिन्तामणि	१६३
८६	गुसाईं जी की बधाई	२७	१११	चापे सींघ री अर वीरे भायल	
८७	गोपीचन्द को बैराग	१३		री बात	२०५
८८	गोरख चरित्र (शुक्ल ग्रन्थ)	२४	११२	चारण मदमै मनोहर री बात	
८९	गोरा बादल पदमिणी चउपई				२०४
		८१	११३	चार परधानां री बात	२०४
९०	गोविन्दाष्टक	३	११४	चिन्तामणि को अंग*	१५
९१	ग्रन्थ (गोरखनाथ)	२४	११५	चिन्तामणि (ग्रन्थ)*	१५
९२	ग्रन्थ ग्यान प्रबोध	२६	११६	चिन्तावगु बोध	६६
९३	ग्रन्थ (बखना)	२४	११७	चिन्तावणी (रामचरण)	२१,
९४	ग्रन्थ अनखंडण	१५			४४, ६६, ६७
९५	ग्रन्थ वैराग बोध*	१४	११८	चित्रसेन पद्मावती रास*	१६४
९६	' ग्रन्थ साध प्रख्या*	६०	११९	चौपाई (साखीदास)	६७
९७	ग्रम गीता*	२४	१२०	चोबीस एकादसी रो महात्तम	
९८	ग्रह कूप वर्णन*	१५, १६			२७
९९	चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्ध	१६२	१२१	चोबीस घरां की लीला*	२३
१००	चन्दन मलयागिरि चोपई-दूहा		१२२	चोबोली राणी री बात	२०३
		१५६	१२३	चौरासी बोध	२७
१०१	चन्द्रराज चरित्र	१५६	१२४	चौरासी बोल*	१५
१०२	चन्द्रराजा चोपी	१५७	१२५	छन्द पयोनिधि	१२५
१०३	चन्द्रकँवर की वार्ता	१६०	१२६	छन्द प्रकाश	१२५
१०४	चन्द्रलेहा चतुष्पदी	१५६	१२७	छन्द प्रबन्ध पिङ्गल भाषा	१२६
१०५	चन्द्र शेखर चरित्र	१५६	१२८	छन्द रत्नावली	१२६
१०६	चन्द्राइणी (जन सूरतराम)	६६	१२९	छन्द विवेक	१२७
१०७	चन्द्राइणी (रामचरण)	४२	१३०	छन्दोनिधि पिङ्गल	१२६
१०८	चन्द्रोदय ग्रन्थ*	६६	१३१	छांटमां वाणी	२५
१०९	चम्पक माला*	१६४	१३२	जगदविनोद	८६

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

१३३ जड़भरत चरित्र*	२३	१५४ दादू की जन्म लीला ❀	२३
१३४ जम्बूसर को प्रसंग*	१५, १६, २८	१५५ दामो देवडो अर सामो सरबेही	
१३५ जामराउल रो बारामास्यो	१६५	री बात	२०५
१३६ जिनपाल जिन रत्नक रो, चउडा-		१५६ दिल्ली रे होसनखां री बात	२०४
लियो	१६७	१५७ दीनमान रा फलां री बात	२०४
१३७ जोग वासिष्ठ ❀	२२	१५८ दीपङ्ग कुल प्रकाश	६०
१३८ ज्ञान प्रमोद	२५	१५९ दीवाली री वार्ता	२०४
१३९ ज्ञान समुद्र	३०, ६०	१६० देवसी रा बारी री बात	२०५
१४० ज्ञानै साह री बात	२०४	१६१ द्रौपदी चौपई	१७३
१४१ भूलणी	६६	१६२ धन्नाजी री प्रची	१६
१४२ टेक को अंग	१५, ३०	१६३ धना सालिभद्रजी री चौपी*	१७
१४३ ठाकुर कवित्त	११५		
१४४ ढोला मारवणी री बात (गद्य-		१६४ ध्रुणा चारज*	
पद्य)	१६८	१६५ धू चरित्र १४, १६, २१, २३	१५
१४५ ढोला मारवणी री बात (पद्य)	१६७	१६६ नखसिख	११५, १२४
१४६ तखत विलास	१३०	१६७ नयनदीप	१२
१४७ तरपत बोध (मुरलीराम)	२५	१६८ नरसी महता को माहेरो	१७६
१४८ तरपत बोध (रामजन)	४८	(रतनो खाती)	
१४९ तर्क चिन्तामणि ❀	१५, १६, २१	१६९ नरसी महता को माहेरो	
१५० ताँत बाजी राग बूझी तेरी बात	२०५	(शिवकरण)	१५
१५१ तिलोकसी जसडोतरी, भाटी	२१	१७० नलदवदंती आख्यान	१७८
अर कुंगड़े बलोच री बात	२०५	१७१ नवतत्त्व नी चौपई	३२
१५२ दत्तात्रेय उपाख्यान ❀	१४, १६,	१७२ नवधा भक्ति*	६७
	१७१	१७३ नवरत्न कुमार री वार्ता	२०६
१५३ दवदन्ती नी कथा (गद्य)	१७१	१७४ नववाहिनी स्वाध्याय	३३
		१७५ नसीत नामो*	८, १७६
		१७६ नांव प्रताप १५, २१, ४५, ६६, ६७	

१७७ नांव बत्तीसी	६६	१६६ परसण सिणगार	३३
१७८ नासकेत	१६, २२	२०० पातसाह अलावदीन अर हंमीर	
१७९ नासकेत की कथा	१५, १८०	हठीले री वात	२०६
१८० नासकेत पुराण	१८१	२०१ पातसाह बजरंग रै बेटे री	
१८१ नासकेत भाषा (नन्ददास)	१८२	वात	२०४
१८२ नासकेत भाषा (दयाल)	१८२	२०२ पाण्डव गीता*	२२
१८३ निरंजन पुराण	२४	२०३ पाण्डव यशेन्दु चन्द्रिका ८,	
१८४ निर्वाण गीता*	२२	१३२, १८७	
१८५ निसांणी आगम री	१८६	२०४ पिङ्गल	१३३
१८६ नेमिनाथ रास	१८४	२०५ पिंडत समाध	२५
१८७ नेह तरंग	१३२	२०६ पिताका लच्छन तथा षोडष	
१८८ पंचम स्कन्धे प्रसादी महात्म्य *		क्रम	१३४
१६		२०७ पूरव चिन्तामणि	१५, ३४
१८९ पंचमार री वात	२०५	२०८ पोपांवाई री वार्ता	२०३
१९० पद-संग्रह (संत काव्य) १७,		२०९ प्रची धन्नाजी की*	१६
१८, १९, २०, २३, २४, २५,		२१० प्रची सेख उसमान की*	१६
४७, ५८, ५९, ६०		२११ प्रतीत बोध	२५, ५८
१९१ पद, साखी, रमैणी (कबीर,		२१२ प्रथम रेखता	६६
परसा, पीपा आदि) ५८, ५९, ६०		२१३ प्रथ्वीराज रासो	६०
१९२ पदमिणी चउपई	८६	२१४ प्रसंगी दूहा	२०, २२, ६७
१९३ पदमिणी चरित्र	८७	२१५ प्रसण सिणगार	१५, १६, ६७
१९४ पद्मावती की वार्ता*	५	२१६ प्रसादी महात्म्ये भगवते प्रथम	
१९५ पद्मावती नी वार्ता (सामलदास)		स्कन्ध*	१५
१८५		२१७ प्रह्लाद चरित्र	१४, १६, २१
१९६ पनरह तिथियाँ रा दोहा*	१६०	२१८ प्रह्लाद को छंद*	१६
१९७ पनरेति रा दोहा*	८६	२१९ प्राण संकुलि (गुरु भण्डार)	२४
१९८ परदेसी राजा री चौपाई*	१८६	२२० प्राण संकुलि (चौरंगीनाथ)	२४
		२२१ प्राण संकुलि (संभुनाथ)	२४

२२२ प्रेम तरंग	११५	२४४ भक्ता का नाम	१४
२२३ प्रेम लक्षण निरूपण*	६७	२४५ भक्तामर भाषा	३७
२२४ फुटकर पदावली (आलम, दयानिधि, पजनेस, पद्माकर आदि)	१५, २२, १४८	२४६ भक्ति द्वावन *	१६
२२५ फूलजी फूलमती री वार्ता	१८८	२४७ भागवत गीता *	२२
२२६ बंग साहिजादे री वात	२०४	२४८ भागवत गीता की टीका	३७
२२७ बंसीभाट री उत्पत्ति री वात	२०४	२४९ भगवती छंद	८६
२२८ बलि सोभा (सोजा) की	२३	२५० भजन संग्रह (करुणाराम)	१६
२२९ ब्रज नी दानलीला	१०३	२५१ भटियाणी री वार्ता	१६५
२३० ब्रह्म समाधि लीन जोग	१५, २५, ३५	२५२ भरतहरि चरित्र*	१५, १६
२३१ बाँधी बुहारी री वार्ता	२०५	२५३ भरतहरि की लावणी •	१५, १६
२३२ बारमासा*	८६	२५४ भरतहरि शतक की टीका	१२७
२३३ बालन चरित्र*	१६	२५५ भलै बुरै री वात	२०४
२३४ बावनी (क्षमहंस)	३६	२५६ भलै भलो, बुरै बुरो री वात	२०५
२३५ बावनी (ज्ञान तिलोक)	२४	२५७ भागवत एकादश स्कन्ध	३६
२३६ त्रिध चिन्तामणि	२५	२५८ भागवत दशम स्कन्ध भाषा	३८ ६३
२३७ बिहारी सतसई	११५, १३५	२५९ भाटियाणी नरवां जुदी हुई तेरी वात	२०४
२३८ बिहारी सतसई की टीका	१३५	२६० भावनावेलि	१६२
२३९ बुढलारी ढालां	१८६	२६१ भीम विलास	१०१
२४० बूढ्या रासो	१६१	२६२ भुवन जी की भाषणी (भाखणी)	२४
२४१ बैराग बोध	४६	२६३ भुवन भानु केवली	१६२
२४२ भक्तमाल (नाभादास)	२०६	२६४ भोगल पुराण*	२४
२४३ भक्तमाल की टीका (प्रियादास)	३६	२६५ भ्रमर गीत	३८
		२६६ भान्ति भंजनी *	११५
		२६७ मङ्गल कलश	३६, १०३

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

२६८ मदन कुँवर की वार्ता	२०६	२६० रघुनाथ रूपक	१३७
२६९ मदन नरिन्द चरित	१६३	२६१ रतनदास दोहावली	४१
२७० मदन विवेक प्रकाश	४०	२६२ रत्नपाल रत्नावती रास	१६८
२७१ मधुमालती	१०१	२६३ रत्नमंजरी की तृतीय वार्ता	२०६
२७२ मन खण्डण २१, २५, ४४, ६७		२६४ रत्नमाणिक साहिजादा की बात	२०४
२७३ मयणरेहा	१६४		
२७४ महिपाल नरिन्द्र चरित	१६५	२६५ रमैणी	६, २३, २५
२७५ माधवानल	१०२	२६६ रसचन्द्रोदय	११५, १३७
२७६ मानतुंग मानवती रास	१६५	२६७ रस पियूष	१३८
२७७ मिहमद खान साहेजादे की बात	२०६	२६८ रस मंजरी	१३८
		२६९ रस रंग	१३६
२७८ मीराँ के भजन २१६-२३३		३०० रस रत्न टीका	१४०
२७९ मीराँ सम्बन्धी भजन २१, २३३	२३८	३०१ रस रहस्य	१४०
		३०२ रस राज	११५, १४१
२८० मुखनावों*	२२	३०३ रस रूप	१४२
२८१ मुनिपति चरित कथा	१६६	३०४ रस विलास	१४३
२८२ नेतारज मुनि कथा	१६७	३०५ रस सिरोमनि (रामसिंह नर- वरपति)	११५
२८३ मोगल मेहंदे की बात	२०५	३०६ रसिक प्रिया	११५, १४४
२८४ मोरडो हार गिलियौ तेरी बात	२०४	३०७ रसिक प्रिया की टीका	१४४
२८५ मोहन लीला*	११५	३०८ रसिकानन्द	११५, १४४
२८६ मोहमरद की कथा १४, १६, २१		३०९ रसोत्पति	१४६
२८७ मोह विवेक	२३	३१० राग चरचरी (रामचरण)	४६
२८८ रजपूत आल्हण की बात और भादे बाणीये की बात	२०४	३११ राजनीति हितोपदेश	१६६
२८९ रजपूत की स्त्री की सहटी बोली तेरी बात	२०५	३१२ राग चरचरी (सूरतराम)	६६
		३१३ राजा गन्धर्वसेन की बात	२०३

३१४ राजाचन्द री बात	२०३	३३३ रामजन बाणी संग्रह	४७
३१५ राजा चोर बकचूलजी री कथा	१६६	३३४ राम प्रताप	२५
३१६ राजा पराक्रम सेन री बात	२०४	३३५ राम बोध ग्रन्थ *	२४
३१७ राजा भोज अर बाफरै चोर री वार्ता	२०४	३३६ राम रसायन बोध *	१४
३१८ राजा भोज अर भाणवती रे वाद री बात	२०४	३३७ राम रसायन	४२
३१९ राजा भोज री अर मंत्रसेण री बात	२०४	३३८ राम रासो	१०३
३२० राजा भोज री अर माघ पंडित री बात	२०३	३३९ राम सतग	१४, १६, २५
३२१ राजा मोरध्वज की लावणी *	१५	३४० राम सागर	२४, ४६
३२२ राजा रे बेटे री बात	२०६	३४१ रामानन्द की रचना	२४
३२३ राजा रे बेटे रे महल री बात	२०५	३४२ रायधण री वार्ता	२०३
३२४ राजा रो बेटो देसौटे नीसरीयो छै तेरी वार्ता	२०५	३४३ राव नरपतिजी री बात	२०५
३२५ राजा विजैपति री वार्ता	२०५	३४४ रावल जामून साह मिलियौ तेरी बात	२०५
३२६ राजा विजैराव री बात	२०५	३४५ रास पंचाव्यायी	३३, ५५, ६३
३२७ राजा सिधराव जैसिघदे री बात	२०६	३४६ राहत भजन	५७
३२८ राजा सुसील री बात	२०३	३४७ रेखता (रामचरण)	४५
३२९ राठोड़ वंश की उत्पत्ति	२०१	३४८ रेखता (सूरतराम)	६६
३३० रात्रिभोजन चौपाई	२०२	३४९ लालमेण कुवर री बात	२०६
३३१ रामचन्द्रिका	११५	३५० लुद्धवै पाटण माहे ब्राह्मण चोरी कीवी तेरी बात	२०४
३३२ राम चरित मानस	१०२	३५१ लूणसाह री बेटी री बात	२०६
		३५२ लेख कवि वल्लभ भाषा टीका *	११५
		३५३ लेख काव्य प्रकाश भाषान्वाद *	११५
		३५४ लेख रस रहस्य	११५
		३५५ वचनिका महाराज रतनसिंहजी री	१०४

३५६ वल्लभा ख्यात	२०२	३७८ वात रत्ना री, रतन ही रहै	
३५७ बल्यया सटीक *	१०३	अर प्रीत ही रहै	२०५
३५८ बाधड़ै बल्लैरे री वात	२०५	३७९ वात राजकेर धन री	२०५
३५९ वाणी (कानड़ दास)	१०	३८० वात राजा भोज री चार चारणा	
३६० वाणी (जगन्नाथ)	१६	बाबत	२०३
३६१ वाणी (जन सूरतराम)	७५	३८१ वात राजा भोज री छीपण	
३६२ वाणी (दादू)	५८	बाबत	२०३
३६३ वाणी (दूल्हराम)	१६, २०	३८२ वात राज भोज री बाफरे	
३६४ वाण (देवदास)	३१	चोरां पासी चोरी सीखो तेरी	२०४
३६५ वाणी (परमहंस सूरतराम)	२०, ६०	३८३ वात संग्रह	२०३
३६६ वाणी (बखना)	५६	३८४ वार्ता ओषाणे तणे सूमारथ	
३६७ वाणी (बार्जींद)	१६	हूयो तेरी	२०३
३६८ वाणी (रामचरण)	१५, २०, ४१	३८५ वार्ता जैसे सरबहीये री	२०३
३६९ वाणी (रामजन)	१५	३८६ वार्ता राय मंत्रसेन री	२०५
३७० वाणी संग्रह	५८	३८७ वार्ता राजा सालवाहन री	२०४
३७१ वाणी (संग्रामदास)	६७	३८८ वार्ता साहूकार री अर सूवे री	२०५
३७२ वाणी (संतदास)	२०, ६६	३८९ वार्ता श्री सूर्यजी री	२०३
३७३ वाणी (साधुराम)	१६	३९० विक्रमे चग्निरे चोबोली सतीनी	
३७४ वात अचलदास खीची री उमादे		चउपई	२०६
सांखली परणीयो ते री	२०४	३९१ विक्रम वेलि	२०६
३७५ वात नरबदजी अर नृसंघ सींघल		३९२ विक्रम सेन चतुष्पदी	२०८
री पियार दे बाबत	२०४	३९३ विक्रमादीत री उत्पत्ति री वात	२०३
३७६ वात मुहत्तै सुमंतकुंर मंगल		रूप री	२०५
३७७ वात मोरडी मतवाली री	२०५	३९४ विचारमाला	६०
		३९५ विमलसाह रो सरलोको	२०६

३६६ विरह मंजरी	३८, ६३	४२२ शब्दी (बाल गुन्हाई)	५६
३६७ विवेक चिंतामणि	१६, ६१	४२३ शब्दी (बालनाथ)	५६
३६८ वीरोचन मोहते री बात	२०३	४२४ शब्दी (महादेव)	६०
३६९ वीसहरमाण जिनस्तवन	६१	४२५ शब्दी (मीडकी पाव)	६०
४०० वृन्द सतसई	१०६	४२६ शब्दी (सती कणोरी)	६०
४०१ बेला जूरै री वार्ता	२०४	४२७ शब्दी (सिध गबरी)	५६
४०२ वैराग बोध *	२५	४२८ शब्दी (सिध घोड़ा चोली)	६०
४०३ वैराग्य शतक	६२	४२९ शब्दी (सिध हर वाली)	६०
४०४ वैष्णव गीता *	२२	४३० शब्दी (हरवत)	६०
४०५ वैष्णव महात्म्य *	२३	४३१ शब्दी (हरि स्थंघ)	६०
४०६ वैष्णव वार्ता संग्रह	२०६	४३२ शालिभद्र मुनि चरित्र *	८६
४०७ व्यंग्यार्थ कौमुदी सटीक	१४७	४३३ संग्रह	६३
४०८ षट्श्रुत वर्णन	१४८	४३४ संतों के फुटकर सबद	२५
४०९ शब्द प्रकाश १५, २१, ४३, ६६, ६७		४३५ संतों (विविध) के अंग संग्रह	१४
४१० शब्दी (अजैपाल)	६०	४३६ संत कृतियों के फुटकर अंग	१४
४११ शब्दी (गोपचन्द)	५६	४३७ सगत रासौ	१०७
४१२ शब्दी (चरपटनाथ)	५६	४३८ सभाय *	६४
४१३ शब्दी (चुण्णकनाथ)	६०	४३९ सतपुरुषों का गाथा का सबद	१४, ६४
४१४ शब्दी (चौरंगी नाथ)	६०	४४० सतवंती की वार्ता २०५, २१०	
४१५ शब्दी (जालंध्री पाव)	५६	४४१ सतसार	६५, ६७
४१६ शब्दी (दत्त)	५६	४४२ सनेह लीला	६५
४१७ शब्दी (देवल)	५६	४४३ सबद (दूल्हराम) २२, ३१, ६७	
४१८ शब्दी (धूंधलीमल)	६०	४४४ समय सार नाटक	१०८
४१९ शब्दी (नानक)	२४	४४५ समसार नाटिका का किवत	६७
४२० शब्दी (पारवती)	६०	४४६ सभा प्रकाश ११५, १४६	
४२१ शब्दी (पृथ्वीनाथ)	६०	४४७ सरबंगसार	७५, ६७

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

४४८ सलेमखान साहिजादे री बात	२०६
४४९ सवैया-संग्रह (छीतरदास)	६०
४५० सवैया-संग्रह (परमहंस सूरत- राम)	६६
४५१ सवैया (सुन्दरदास)	७५
४५२ साखी (कबीर) ६, २०, २२, २३, ६७	
४५३ साखी (काजी कांदन)	२४
४५४ साखी (चैन)	६०
४५५ साखी (जैमल)	६०
४५६ साखी (दादू)	२३
४५७ साखी (नानक)	२४
४५८ साखी (बखना)	५६
४५९ साखी (मुरलीराम)	१६
४६० साखी (रामचरण)	२५
४६१ सादे मागलीये री बात	२०५
४६२ साधु मुनिसर गुणमाला	२१३
४६३ सामुद्रकइंस्त्री--पुरुष शुभाशुभं*	२१३
४६४ सार गीता *	२२
४६५ सारासार पञ्चीसी	२१३
४६६ सांवलसाहरे बेटे री बात	२०६
४६७ साह री स्त्री रेतपावस री बात	२०५
४६८ साहूकार री बात	२०६
४६९ सिंहलसुत चौपई *	२१६
४७० सिखरेईदेउ गडावत री बात	२०५
४७१ सिंघासन बत्तीसी	२१४

४७२ सिद्धान्त बोध	७४
४७३ सिद्धान्त बोल *	७५
४७४ सिद्धान्त सार	७५
४७५ सिधिनाम श्रीपति बोध टीको ग्रन्थ *	२४
४७६ सिधराव जैसंघदे री बात	२०४
४७७ सुखविलास	४५, ६६
४७८ सुख संवाद *	२२
४७९ सुख समाध	१५, १६, ४४
४८० सुन्दर शृंगार	१५०
४८१ सुबोध प्रकाश	६६
४८२ सूर पञ्चीसी	५६
४८३ सोनारी'र सुतारी री बात	२०५
४८४ सोनीगरांरी वंशावली	१०६
४८५ श्री आदिनाथ सेंटुं	३३
४८६ श्री कृष्ण को समर	११५
४८७ " जीरावल्ली पार्श्वनाथ स्तवन	३३
४८८ " नाथजी को अभिग्रन्थ	२४
४८९ " पंच कल्याणी स्तोत्र	३३
४९० " पाल चतुष्पदी	२१२
४९१ " पालरास	२१२
४९२ " मंथर स्वामी विज्ञप्ति	२१३
४९३ " महादेव पारवती री बात	२०६
४९४ " महावीर पारण	३३
४९५ " मेघ कुमार चउचढालियउ	३३

४६६ श्रुगारोहिणी (स्वर्गारोहिणी)	२२	५०३ हरिचंद ग्रन्थ (सत, चरित)	१४, १६, २५, ६७, २१६,
४६७ श्रवंगसार	१७	५०४ हरिदास चहवाण री वात	२०३
४६८ श्रवंगसार का फुटकर सबद	२०	५०५ हरिहर संवाद	२२
४६९ श्रवंगसार संग्रह	१४	५०६ हस्ताबल	२३
५०० श्रवंगसार संतविचार	२२	५०७ हितोपदेश	२१८
५०१ श्रवंगी शब्द	६०	५०८ ह्याल बोध (मुरलीराम)	२५
५०२ हंसराज बछराज चउपी	२१६	५०९ ह्याल बोध (रामभजन)	७६

१	कुल ग्रन्थ संख्या	५०६
२	कुल ग्रन्थकार संख्या	३२६
३	अज्ञात लेखकों के ग्रन्थ	७६
४	अज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ	६२
५	ज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ	३
६	कान्यशास्त्र-ग्रन्थ	३६
७	महत्वपूर्ण साहित्यिक ग्रन्थ	६२

“प्रस्तावना”

साहित्य-संस्थान की ओर से उदयसिंह भटनागर, द्वारा संपादित राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग ३ का स्वागत करते हुए मुझे हर्ष होता है। इसके प्रथम दो भाग राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्य संशोधक श्री मोतीलाल मेनारिया तथा अग्रचंद नाहटा ने तैयार किये हैं। साहित्य के इतिहास की महत्त्वपूर्ण सामग्री राजस्थान विश्व विद्यापीठ के अन्तर्गत ‘शोधसंस्थान’ द्वारा प्रकाशन की यह योजना प्रशंसनीय है। राजस्थान के प्राचीन साहित्य भंडारों में संचित कतिपय महत्त्वपूर्ण रचनाओं की सूचना प्रस्तुत विवरणों द्वारा विद्वानों को प्राप्त होगी। इसमें मेवाड़ के कतिपय प्राचीन ग्रन्थ संग्रहालयों का उपयोग कर सम्पादक ने यह ग्रन्थ तैयार किया है। इस संग्रह से पश्चिम भारत के मध्यकालीन साहित्य की प्रगति के अप्रकाशित ग्रन्थों से उद्धृत नमूनों का लाभ विद्वानों को प्राप्त होगा। परन्तु इस “माला” का नाम ‘राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज’ किस उद्देश्य से रखा गया—यह मेरी समझ में नहीं आता ? इसमें अधिकतर ब्रजभाषा तथा जूनी राजस्थानी-गुजराती के ग्रन्थों का ही विवरण है। यदि इस ‘माला’ का नाम ‘राजस्थान में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज’ रखा गया होता तो वह अधिक व्यापक अर्थ का असेतक होता। राजस्थान और गुजरात में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थ हजारों नहीं लाखों की संख्या में मिलेंगे। अब प्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन तथा इस प्रकार के शोधपूर्ण विवरण का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण और प्रशंसनीय है। सम्पादक तथा ‘साहित्य-संस्थान’ इस महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति को चालू रखेंगे—ऐसी मैं आशा रखता हूँ।

भोगीलाल ज. सांडेसरा, एम. ए. एच. डी.

अध्यापक निवास

बड़ौदा

६-२-१९५३.

युनिवर्सिटी प्रोफेसर तथा अध्यक्ष—

गुजराती-विभाग,

म० स० विश्व विद्यालय, बड़ौदा

राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

(तीसरा भाग)

(१) अध्यात्म, धर्म, दर्शन, भक्ति, सम्प्रदाय, पंथ आदि..... ।

१ अजारी सरस्वती । रचयिता- शान्तिकुशल । आकार- ६'७" × ४'२" ।
पत्र-संख्या २ । इसमें जैन शैली का एक पँच रंगा सरस्वती का चित्र है । लिपिकार-
अजयकुशल । विषय- अजारी सरस्वती की प्रार्थना । छंद-संख्या ३७ ।

हेमा चारिज ने पणि तूंठी । कालिदास ने तूंहीज तूंठी
अनुभूति सन्यासी लाधी । मुनि लावण्य समें तूँ साधी ॥१०॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२) अध्यात्म प्रकाश । रचयिता- मुखदेव मिश्र । आकार- ८" × १०" । पत्र-संख्या- ३१ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । छंद-(दोहा, सोरठा, कवित्त कुण्डलियाँ, सबैया आदि) संख्या २४१ ।
रचनाकाल-संवत् १७५५ आसोज शुक्ला ११ बुधवार ।

आदि भाग-

कवित्त

स्थावर जंगम जीव जिते जग भाँतिन भाँतिन वेष धरै हैं ।
नामहि सचिदानंद स्वरूप आतम एक प्रकास करै हैं ॥
ता बिन जानत सिंधु सो लागत जानते गोपद तुल्य तरे हैं ।
बंदति ताहि कहै मुखदेव सों ब्रह्म सदा सब हो ते परे हैं ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

आगम तंत्र पुरान पुनि, पंच रीति मति जान ।

षौचि आपने पख्य को, जग में डारत आन ॥२४१॥

[अन्ताणी संग्रह]

(३) अनभै प्रबोध । रचयिता- गरीबदास । इसकी दो प्रतियाँ हैं । पहली प्रति । आकार-६'५" × ४" । पत्र-संख्या १३ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २५ अक्षर हैं । छन्द-संख्या-१४१ ।

आदि भाग-

चौपाई

ॐ प्रणम ॐ गुरु के पाई । मति बुद्धि ज्ञान देहु समभाई ॥

जासौ बरनो प्यंड ब्रह्मंडा । सातो सायर अर नव खंडा ॥१॥

आदि अनादि जोति अपार । ताथें प्रगट्यौ ॐ कार ॥

ॐ कार तें पाँचों तंत । राजस सातिग तामस मंत ॥२॥

धरती पाणी अगनि मिलाऊँ । पवन अकास ए पाँचों नाऊँ ॥

राजस ब्रह्मा विष्णु कै स्वांति । तामस महादेव की भाँति ॥३॥

अन्तिम भाग-

दोहा

गरीबदास घटि ऊचरी, बांणी निर्मल सार ।

जे यहु गाबै सुंणों, तिनकें कटें बिकार ॥१४०॥

अनभै प्रमोध उचारतां विचारंत । पापेन लिपंत पुनि न हरंत ब्रह्म समाधि गच्छन्ते ॥ ॐ नमो गुरु दादू पादूका प्रणाम ॥ १४१ ॥

[चुन्नीलाल दादूपंथी, उदयपुर]

दसरी प्रति-यह ७२सन्तों के संग्रहवाले गुटके में है । देखो ग्रन्थ-संख्या ३०।

[केवलराम दादूपंथी]

(४) अनुभव प्रकाश । रचयिता- महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर ।

आकार-६" × ५^३/_४" । पत्र-संख्या १५ । पत्र-संख्या २५ । लिपिकाल-सम्बत् १७३४

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(५) अपरोक्ष सिद्धान्त । रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर,
आकार-६'' × ५ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या १०० । लिपिकाल सं० १७२४ ।

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(६) अवतार चरित्र । रचयिता-नरहरिदास । पहली प्रति । आकार-
१३'' × ८ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या १६४ । प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति
में २२ अक्षर हैं ।

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

दूसरी प्रति-श्री नाथूसिंह राव, सलुम्बर

(७) आनन्द विलास— । महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर । आकार
६'' × ५ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या ३४ । पत्र-संख्या २०२ । लिपिकाल सं० १७२४—

दोहा

संवत् सत्रह सै बरष, ता ऊपर चौबीस ।

सुकल परख कातिक विदै, दसमी सुत रजनीस ॥२०२॥

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(८) आणंदार्णवसार— । रचयिता-रतनदास । आकार-११ $\frac{३}{४}$ '' × ६'' ।
पत्र-संख्या ७५ । प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में
१२ अक्षर हैं ।

विषय-फुटकर रचनाएँ । लिपिकाल तथा रचनाकाल सं० १६३४
आदि भाग—

कवित्त

विद्या गुण मंडित जे पंडित वदत अैसे

सुधा को निवास पाँच ठौर में प्रमानिये ।

सागर में चन्द्रमा में अधर में तियानिके में

ब्याल के बदन माहि देवलोक मानिये ॥

खारौ क्षीन पति-मरै डसत गरल चटै
 होत है निपात बात छिपी नाहि जानिये ॥
 कंठ हरि भक्तिनि के बसत सदैव सुधा
 भनत रतनदास ठीक चित्त मानिये ।

अन्तिम भाग-

मालिनी छन्द

अखिल मल निवासं, पाणिनात सुपासं ॥
 कनिक गिरि निवासं, सूर्य कोटि प्रकासं ॥
 भवतु भव निवासं, मालति तीर वासं ॥
 गणपति ममि वंदे मानसे राजहंसं ॥

विशेष-इस ग्रंथ के साथ 'गोविन्दाष्टक' और 'गंगाष्टक' दो रचनाएँ और हैं ।

[ब्रजलाल साधु, श्रीधरजी का मन्दिर, भींडर]

(६) इग्यारह अंग स्वाध्याय । रचयिता-जसविजय उपाध्याय ।

आकार-१०'' x ४३'' । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या ७५ । रचनाकाल सं० १७२२ ।
 विषय-जैन धर्म वार्त्ता ।

आदि भाग-

आचारांग बड्डुं कष्टुं लो अंग इग्यार मभारि रे ।
 चतुर नर अठार हजार पद जिहां रे लो दाख्यो मुनि आचार रे ॥

अन्तिम भाग-

विपाक सुत अंग नास जाय अंग इग्यारे सांमल्यारे
 पोहता मन ना कोडि ।
 टोडरमल जीत्यूरै । गई आपदा संपदा मिली रे
 आवी होड़ा होडि ।
 मात बकाई मंगल पिता रूपचंद भाई उदार ।
 माणिक श्राप कांइ सांमल्यारे विध सूँ अंग इग्यार ॥
 युग युग मुनि विधु पङ्कजरे श्री जसविजय उवजाय ।
 सुरति चोमासू रही रे कीधो ए सुख साय ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, कसारागली, उदयपुर]

(१०) ईश्वर विवाह । रचयिता-देवीदास । आकार ७" x ५'५'' । पत्र-

संख्या ६ ।

आदि भाग-

संकर सारदा ने सीस नांमु ।
 गरवा गणपति जो'जो मुंज सामं ॥
 सारदाये ते समरथ जाणी ।
 आइ आपो अतुपम वांणी ॥
 परमोही ने पूछी बात ।
 काम करी परण्या ते संभुनाथ ॥
 वीवा वगते करी बषाणौ ।
 ये बो देवीदासे नव जाणौ ॥
 प्रभुजी ना नांम पुछावो ।
 वीवा वगते करीन गावो ॥

इसके साथ 'पद्मावती की वार्त्ता' भी संग्रहित है ।

[कविराव मोहनमिहजी, भटियाणी चौहटा, उदयपुर]

(११) उपदेश चिन्तामणि— रचयिता-सुन्दरदास । यह रचना १३६ संतों के संग्रहवाले गुटके में है । पत्र-संख्या- ५ । पत्र-संख्या ७६ ।

आदि भाग-

दोहा

काल चिन्तामणि ए कही, अब भाषूँ उपदेस ।
 लोक चतुर दस बरण हूँ, गहो विधि ज्ञान प्रदेस । १ ।

अन्तिम भाग-

काया छूटसी करलाय । पंछी बोलता उड़ जाय ॥
 मरणा मोत के आगै । मूख काई नही जागै ॥ ७७ ॥
 राम ही साजनो कर चेत । उभी बांहां हेल देत ॥
 भजरे काईमां' करतार । मुगती मालका भंडार ॥ ७८ ॥
 भजीयां उधरेगा प्रान । एह उपदेस मेरा मान ॥
 भूला कटूँन हरी कूँ ध्याय । तेरा बापका क्या जाय ॥ ७९ ॥

[रामद्वारा धोली बावड़ी, उदयपुर]

(१२) उपदेस छत्तीसी । रचयिता-जिनहर्ष । आकार-२'' × ४'५''

पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या ३६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ३५ अक्षर हैं ।

आदि भाग-

सकल सरूप यामें, प्रभुता अनूप भूप
धूप छाया छाया मां हैं, नए न जगदीस ज्यूं ।
पुण्य हैं न पाप हैं न, सीत हैं न ताप हैं न
जाप के प्रताप कटे, करम अनीस ज्यूं ॥
ज्ञानको अगंज पुज, सुख वृष्य को निकुंज
अती से चोतीस फुनि, बचन पेंतीस ज्यूं ।
एसो जिन राज जिन हरष प्रणमि उपदेस की
छत्तीसी कहूं सबैये, छत्तीस ज्यूं ॥

अन्तिम भाग-

अधम न करी मान, मान किये होवे हांण
मान मेरी सीख मान, सुख प्राही मान रे ।
मानते रावण राज, लंका सो गयो विभाज
कियों है अकाज गई सब जान रे ॥
दुर्जोधन मान करी, हारी सब धराहरी
मानते गयो है मुंज चानुरी की खान रे ।
कहे जिनहर्ष मान, मन में न आण मान
आणे तो विसाणभद्र जिसो मान आण रे ॥

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

(१३) उपदेस बावनी । रचयिता-किशन कवि । (यह १३७ संतों की रचनाओं के गुटके में संग्रहीत है) पत्र-संख्या केवल १८ है । ग्रन्थ अपूर्ण है । इस में ६२ पद्य थे परन्तु प्रथम तीस पद्य अप्राप्य हैं । ऐसा मालूम होता है कि ये तीस पद्यवाले पत्र, कागज बहुत पुराना होने से तड़क कर निकल गये हैं । इसी गुटके में इन गायब पत्रों के दूसरी ओर के कुछ पत्र वर्तमान हैं । और कुछ, जिन पर मीरां के भजन थे, गुम गए हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर सात-आठ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५-१८, अक्षर हैं । अक्षर बारीक और नागरी लिपि में अंकित हैं । ग्रंथ का विषय

धार्मिक है, जिसमें संसार के माया-मोह से दूर रहने का उपदेश दिया गया है। ग्रंथ के अन्तिम भाग से ज्ञात होता है कि कवि ने अपनी बहन रतनबाई की मृत्यु पर सं० १७०८ विजया दशमी को उसकी पुण्य स्मृति में इस ग्रंथ की रचना की।

अन्तिम भाग—

श्री पे संग राज लोग जस रस ताज गुरु
तिनकी क्रिया जू की बिताई पाई पावनी ।
संमत् सतरै से अरु आठै बिजै दसमीं कूँ
ग्रंथ की समापति भई है मन भावनीं ॥
साधवी ग्यांन मां की जाई श्री रतन बाई
तज्यौ देह तातै एह रची पद चावनी ।
मत की ममत लीन्हों तत्व ही पै रुचि दीन्हों
बाचिक किसन कीन्हों उपदेस बावनी ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(१४) एकादस की ध्याई । रचयिता—चतुरदास । आकार—३" × २" ४"
पत्र-संख्या १७ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११, १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २२, २५ अक्षर हैं । इसमें ७, ८, ९, और १० अध्याय हैं । सातवें अध्याय में ७७ चौपाइयाँ और २ दोहे हैं । आठवें अध्याय में ५५ चौपाइयाँ, ९ वें अध्याय में ३६ चौपाइयाँ और १ दोहा और १० वें अध्याय में ५० चौपाइयाँ और १ दोहा है ।

आदि भाग—

अथ एकादस की ध्याई लिख्यते । श्रीभगवानुवाच—

उधव में कही देऊँ ग्यांना । सत्त कहत हूँ नाही आंना ॥
या जग साध भए है जेते । आप ही आप उधरे तेते ॥ १ ॥
आप ही भलो बुरा पहिचानै । छाँडे बुरो भले कूँ ठाने ॥
गरु आपनूँ आपही होई । पसु पंखी भावे ज्यौं कोई ॥ २ ॥

अन्तिम भाग—

मो दसि जनपद एक ही, ध्यावे जग तर बंस ।
तो (ता) सन मुख जगनाथ जन, मैं ध्याऊँ पैडस हंस ॥ १ ॥
मोसूँ पग पाछो परे, सनमुख जग तर बंस ।

तासूँ मैं जगनाथ जन, पाओ पैंडस हंस ॥ ५० ॥
यह रचना २० सन्तों की रचनाओं के गुटके में है।

[रामद्वारा, धौली बावड़ी, उदयपुर]

(१५) ओधवजीना संदेसा । रचयिता-रघुनाथ । आकार-७" x ५'५"
छन्द-संख्या २० । लिपिकाल-संवत् १६१८ ।

अन्तिम भाग-

अवगुणी आनल धरसो अवला री कना ।
वाक घणो पण - वीने वीसारो रांय जो ॥
आकंते तेडी ने के जो अटलु रघुनाथ प्रभु पधारे घेरजो ।
ओधवजी अमे साथे रसीयो रूसणे ॥ पद २० ॥
ओधवजी अलबेली कोरे आवसे
.....

(अपूर्ण)

[कविराव मोहनसिंहजी के संग्रह में]

(१६) करुणा बत्तीसी । रचयिता-माधौराम । आकार-६" x ४'८" ।
पत्र-संख्या १७ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १३, १५ अक्षर
हैं । छंद-संख्या ३५ । लिपिकाल सं० १६०० अश्विन शुक्ला ५ गुरुवार । लिपिकार-
भट चयनराम । विषय-कृष्ण-भक्ति, ईसा के साथ 'नमीतनामा' (१) 'अनेकार्थ-
मंजरी' (२) 'पाण्डव-यशोन्तु-चन्द्रिका' (३) संग्रहीत हैं । अनेकार्थ मंजरी और
पाण्डव-यशोन्तु-चन्द्रिका अपूर्ण हैं ।

आदि भाग-

कवित्त

गिरि कौ उठाए ब्रज गोप कौ बचाय लये
अबल तैं उबारे पुन बालक मंजारी कौ ।
गजकी गरज सुनि ग्राहतैं छुडाय दयो
राख्यो व्रत नेम धर्म पंडव की नारी कौ ॥
राखे गज घंटा तल बालक विहंगम कौ
राख्यो पन भारत में भीषम ब्रह्मचारि कौ ।

त्रिविधि ताप हारी निज संतन सुखकारी
मोहि तो मरोसो भारी अैसे गिरिधारी कौं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

करौ अपराध घोर सांभ कोर कोर नित
अति ही कठोर मति वोर को निकाम हूँ ।
आतुर अधीर तातैं धीरज धरत नाहीं
ऊंच नीच बोली ठोली बकौं आठौं जामहूँ ॥
अरचा न जानुं कछु चरचाहू न बूझत हौं
कभू हेत प्रीत सौं न लेत हरि नाम हूँ ।
सबै तकसीर बलवीर मेरी छिमा करौं
कहे माधौराम प्रभु तिहारौ गुलाम हूँ ॥ ३४ ॥
या करुना बत्तीस कौं, पदे सुने नर नारि
ताके सब दुख दुंदु कौं काटे कृष्ण मुरारि ॥ ३५ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(१७) कबीर की साखी । रचयिता-कबीर । आकार-६" × ६" । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या ३४ । प्रति अपूर्ण है । कबीर की अन्य कई रचनाएं मिली हैं जिनका यथा स्थान उल्लेख किया गया है । इस प्रति के केवल दो ही पत्र हैं । प्रथम दो पत्र जिन पर २१ साखियां थीं, अप्राप्य हैं । इन दो पत्रों पर २२ से लेकर ५६ तक साखियां हैं ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीण्डर]

(१८) कबीर की रमैणी । रचयिता-कबीर । आकार-६'७" × ५'८" । यह प्रति एक दो-सौ ग्रन्थों के चोपड़े में संग्रहीत है, जिसका उल्लेख आगे किया गया है । पत्र-संख्या ४ । छन्द-संख्या ३७ ।

ग्रंथ का आदि भाग-

राम रमे रम राम ही जीऊं । इअत राम सुधारस पीऊ ।
समरथ राम सजीवण मेरी । दरीया छांड पडूँ कित सेरी ॥ १ ॥
सेरी सेरा मेरी मेरा । करम उपाय राम नहीं नेरा ।
बिद्या बेद पडे जग फूला । कथनी कथि सुमरण तैं भूला ॥ २ ॥

भीष्मोवाच

सावधान होय सुनियो बाता । अब हूं तन छांडत हूं प्राता ॥
अति रहस भारथ उपगारा । सान्ति पर्व मध्य जो सारा ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

बिन हरि कथा सुने नी काना । ध्रग विद्या जहाँ बुद्धि न ग्याना ॥
ध्रग सो ग्यान जहाँ नही विरागा । अजहूँ मूढ़ जगाये जागा ॥ २० ॥
अैसी सब साधन की रीति । राम नाम सूँ कीजे प्रीति ॥
स्थिर मति हरि सों हित करे । सो संसार समुद्र ही तरे ॥ ३० ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२२) गावा को ग्रंथ गोपीचन्द । रचयिता-कान्ह कवि । यह भी १३७
संतों के संग्रहीत गुटके में है । पत्र-संख्या ६१ । पद्य-संख्या १६८ ।
आदि भाग-

राजेश्वर अलख निरंजन रे ॥ अलख..... ।
भजले नाथ नैं गोपीचन्द राजा
भजन किया सूँ मेरा लाल अमर होइ जाई ॥ २ ॥
गोपीचन्द तन धन जोबन रे ॥ तन..... ।
थिरता है वहीं गोपी० ॥
थिरता नही मेरा लाल भरतरी भाई ॥ ३ ॥
मैणावाती मेहलां बैठी है । मेहलां०
सीस तपे गुर पीर दरस नित जाई ॥ ४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२३) गीत संग्रह । रचयिता-जसविजय । आकार-१०" x ४५" । पत्र-
संख्या १७ । पद्य-संख्या २६४ । रचनाकाल--१७७१, श्रावण सुद २ ।

आदि भाग-**राग-राम कलि**

रिषभदेव हित कारी । जगत गुरु०.....
प्रथम तिर्थंकर प्रथम नरेसर प्रथम यती ब्रह्मचारी ॥
वरसी दान देई तुम जगमी, ईलति ईति निवारी ।
तपसी काहि करतु नही करना, साहिब बेर हमारी ॥
मांगत नहीं हम हाथी घोरे, धन कंचन नहीं नारी ।

दिउ मोहि चरन कमल की मेरा, याही लगत मोहि प्यारी ॥
 गग लीला वासित मुरडोग, तूँपरि सब ही उमारी ।
 मि मेरे मन निश्चल कीनों, तूँ आना सिरधारी ॥
 अगसो साहिब नहीं को जनमी, यासू होइ दिलयारी ।
 दिल ही दलाल प्रेम के बीचि, तिहां हव खानै गमारी ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

धन रा दोला.....ए दाल
 साचो देव सुपास जीरे, साहिब तूँ मूलतान । गुणना गेहा ।
 तूँभ सूँ प्रीत भक्ती बनी रे, चन्दन गंध समान ॥
 ए तो कदिइं न कारमी रे, कदीइं न अलगी थाइ ।
 दिन दिन अधिकि विस्तर' ई रे, महिमां इमांह काइ ॥
 सरस कथा जे एहनी रे, तेह पवन मइ संग ।
 वासित भवि जन तस हूँइ रे, चन्दन रूप मुरंग ॥
 लार मांसनो तेहरों रे, एह तो जनमना गेग ।
 तेणीं अधिक तुम्ह प्रीतडी रे, न लहई पामर लोग ॥
 करम भुजग बन्धन इसां रे, विरुआं दीमें जेह ।
 विरति मयूरी मोकलो रे, जिम सबी छूटे तेह ॥
 मूँभ पासैं एक मंत्र छे रे, गारुड प्रवचन सार ।
 कहो तो तेने बन्धन हम्में रे, देव करो जो सार ॥
 प्रीति ते चंदन वासना रे, वासित मोम्में मंच ।
 तुम्ह तो मलयाचल समा रे, वाचक जस कहे धन ॥ ८ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२४) गोपीचन्दजी को बेराग । रचयिता-दाम (?) । आकार-

३'६" x ३" पत्र-संख्या २८ । पद्य-संख्या १५३ ।

आदि भाग-

नमो नमो निरंजण देवा । अंजन रहति निरंजन सेवा ॥
 काल करम न लागे कोई । ताहि सुमरि जीव सद्गति होई' ॥ १ ॥
 सुमरे जाको सेस महेसा । ब्रह्मा बिसन रु जपै गणेश ॥
 सारद नारद सब सिर नावे । सिन्धु रिधि मुक्ति ग्यान पद पावै ॥ २ ॥

करे बन्दगि श्रवणी अकास । पांणी पवन सित्र के दास ॥

चन्द सू न आपा अनुमरै । सुर नर चरन पखालन करै ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

गोपीचन्द कुँ मिलि गया, जोगी जलौधरनाथ ।

‘दास’ कहें धन्य गुरु सिखां, प्रख्या असिलि ही साथ ॥ १५१ ॥

कोऊ सुणौ बैराग बोध, सोधै अपणौ जीव ।

राम भगति सरधा सकति, ज्यों गति मिले इन पीव ॥ १५२ ॥

‘दास’ कह्यो बैराग बोध, करि आरोधन नाथ ।

खम्या करौ परि बधिअंकू, मै लूध न समरूँ बात ॥ १५३ ॥

[स्वरूपलालजी जगदीश चौक, उदयपुर]

(२५) गुटका । आकार ६"२" × ४" । पत्र-संख्या ६८० । लिपिकार--

करूणाराम । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

- (१) श्री रामचरणजी महाराज की अणभैवाणी
- (२) राजू कृत भक्तों का नाम
- (३) सत पुरुषों का सबद
- (४) ग्रंथ राम सतक । रचयिता चत्रभुज
- (५) धू चरित्र । रचयिता-जनगोपाल
- (६) फूटकर पद-सूर, मीरां, तुलसी, रामचरन, नन्ददास आदि के
- (७) मोहमरद राजा की कथा । रचयिता-जगन्नाथ । (रचनाकाल--सं० १७७६)
- (८) प्रह्लाद चरित्र । रचयिता-जनगोपाल
- (९) हरिचन्द ग्रंथ । रचयिता-ध्यानदास
- (१०) कान्ह कृत गाथा को गोपीचन्द । पद्य-संख्या १२४१
- (११) राम रसायन बोध
- (१२) दत्तात्रेय उपाख्यान
- (१३) ग्रंथ बेराग बोध
- (१४) विविध संतों की कृतियों के फूटकर अंग
- (१५) श्रृंगार
- (१६) विविध संतों के अंग
- (१७) गुरु महिमा ग्रंथ । रचयिता-रामचरण

- (१८) ग्रंथ नांव प्रताप । रचयिता—रामचरण
- (१९) ग्रंथ शब्द प्रकाश
- (२०) ग्रंथ चिन्तामणि
- (२१) ग्रंथ मन खण्डन
- (२२) गुरु देव को अंग । रचयिता—रामचरण
- (२३) चौरासी बोल
- (२४) फूटकर पद
- (२५) राजा मोरध्वज की लावणी
- (२६) नासकेत की कथा
- (२७) ग्रह कूप बर्णन
- (२८) प्रसादी महात्मै मगवते प्रथम स्कन्दे
- (२९) भरतहरि की लावणी
- (३०) चिन्तामणि को अंग
- (३१) भक्त वत्सल राग कौतूहल नरसिंह महता को माम्हरौ—शिवकरण कृत
- (३२) सुन्दरदास कृत विवेक चिन्तामणि
- (३३) तर्क चिन्तामणि
- (३४) प्रसन्न सिन्धुगार
- (३५) उपदेस चिन्तामणि
- (३६) ब्रह्म समाधि लीन जोग
- (३७) पूरब चिन्तामणि
- (३८) जम्बूसर को प्रसंग
- (३९) सुख समाध
- (४०) भरतहरि चरित्र
- (४१) टेक को अंग— मुरलीराम
- (४२) कक्का बत्तीसी

[रामद्वारा धोलीबावड़ी, उदयपुर]

(२६) गुटका विविध संग्रहः—

- (१) रामचरण महाराज की वाणी । पृथ-संख्या १६१६
- (२) रामजन महाराज की वाणी । पृथ-संख्या ६११ ।

- (३) मुरलीरामजी की साखी । पद्य-संख्या ११५
- (४) राम सतक-चन्द्रदास
- (५) दुल्हारामजी की बाणी । पद्य-संख्या ३१
- (६) जगन्नाथजी ,, ,, । पद्य-संख्या २८३
- (७) बाजींदजी ,, ,, । ,, ,, १४६
- (८) साधुगमजी ,, ,, । ,, ,, १७
- (९) धृ चरित्र-जनगोपाल । पद्य संख्या १७८
- (१०) प्रह्लाद चरित्र । ,, ,, २८५
- (११) मोहमरद । ,, ,, २७२
- (१२) रामसतक । ,, ,, १००
- (१३) हरिचन्द चरित । ,, ,, ३४०
- (१४) दत्तत्रै उपाख्यान । ,, ,, २१०
- (१५) भक्ति द्रष्टावन । ,, ,, ३१
- (१६) ग्रह कूप वर्णन । ,, ,, ३०
- (१७) पंचम स्कंदे प्रसादी महात्म्य । पद्य-संख्या ३६
- (१८) करुणाराम के भजन
- (१९) भरतहरि की लावणी
- (२०) तर्क चिंतामणि
- (२१) त्रिवेक चिंतामणि
- (२२) उपदेश चिंतामणि
- (२३) प्रसन श्रृंगार । १०२ पद
- (२४) जम्बूसर । ३८ पद
- (२५) गजेन्द्र मोक्ष । ४५ चौपाई
- (२६) धन्नाजो की प्रची । ६० चौ० दो० ७
- (२७) सेख उसमान की प्रची
- (२८) बालन चरित्र । ४०० पद्य
- (२९) प्रह्लाद को छन्द
- (३०) सुख समाधि । २११ पद्य
- (३१) भरतहरि चरित्र । १४२ दो० ४३४ चौ०
- (३२) नासकेत । १०८ दो० १६५६ चौ०

- (३३) श्रृङ्ग सार । पद्य ३२४
 (३४) अमृतधारा का कवित्त । पद्य २६
 (३५) गात्रा को गोपीचन्द्र । पद्य १२३८ दो० २
 (३६) गात्रा को नरसी मेता को मायरो । पद्य ४०५
 (३७) रामचरण का पद ३
 (३८) रामप्रताप ,, ,, १
 (३९) मुरलीराम ,, ,, ५
 (४०) दुल्हाराम ,, ,, ३
 (४१) देवीदास ,, ,, २
 (४२) कान्हड़दास का पद १
 (४३) पोहकरदास ,, ,, ६
 (४४) सूरतराम ,, ,, ६
 (४५) चन्नदास ,, ,, १
 (४६) जेतराम ,, ,, ४
 (४७) साधूराम ,, ,, ५
 (४८) करुणाराम ,, ,, ६
 (४९) लवलीनराम ,, ,, ४
 (५०) उदासीराम ,, ,, १
 (५१) रतनदास ,, ,, १
 (५२) बार्जीद ,, ,, १
 (५३) रामवल्लभ ,, ,, १
 (५४) कबीर ,, ,, ६२
 (५५) बिषना ,, ,, ७
 (५६) कमाली ,, , १
 (५७) दादू , ,, १४
 (५८) सूरदास ,, ,, ६०
 (५९) मीरों ,, ,, १०४
 (६०) नरसी ,, ,, ६
 (६१) नामदेव ,, ,, २
 (६२) रैदास ,, ,, २

(६३)	तुरसीदास	के पद २७
(६४)	लालदास	” ” ८
(६५)	नीतानन्द	” ” २
(६६)	धीरमदास	” ” १
(६७)	हरिदास	” ” २
(६८)	अग्रदास	” ” ४
(६९)	श्री भट्ट	” ” १
(७०)	केसोदास	” ” १
(७१)	हरिराम	” ” २
(७२)	कृष्णदास	” ” ४
(७३)	नन्ददास	” ” १
(७४)	स्याहुसैन	” ” ८
(७५)	दीन	” ” ४
(७६)	काजी महम्मद	” ” ७
(७७)	नानूदास	” ” १
(७८)	गोविन्ददास	” ” १
(७९)	लक्ष्मनदास	” ” १
(८०)	सूरज	” ” २
(८१)	परमानन्द	” ” १
(८२)	दास	” ” ५
(८३)	केवलराम	” ” १
(८४)	मयाराम	” ” १
(८५)	हस्तराम	” ” २
(८६)	चन्द	” ” २
(८७)	रंगीला	” ” २
(८८)	रसिकनाथ	” ” २
(८९)	मलराम	” ” ३
(९०)	मूरत	” ” १
(९१)	झोगालाल	” ” १
(९२)	रूपदास	” ” १

(६३)	छीतमदास	के	पद	१
(६४)	चाचर	"	"	१
(६५)	सुखमणदास	"	"	१
(६६)	मोतीनाथ	"	"	४
(६७)	नारायणदास	"	"	१
(६८)	जोगीराम	"	"	१
(६९)	गंगादास	"	"	३
(१००)	सदानंद	"	"	१
(१०१)	मदनमोहन	"	"	१
(१०२)	विद्यादास	"	"	१
(१०३)	मोतीदास	"	"	१
(१०४)	कासीराम	"	"	२
(१०५)	मुरलीधर	"	"	१
(१०६)	नानकदास	"	"	१
(१०७)	मीटु	"	"	१
(१०८)	बालकदास	"	"	१
(१०९)	रामसजन	"	"	१
(११०)	अधार	"	"	१
(१११)	सेख भावदी	"	"	१
(११२)	कृष्णानंद	"	"	१
(११३)	मोरध्वज	"	"	१
(११४)	जगन्नाथ	"	"	१
(११५)	भवानीदास	"	"	१
(११६)	गंगाधर	"	"	१
(११७)	राधाकृष्ण	"	"	३
(११८)	नेम	"	"	१
(११९)	धना	"	"	१
(१२०)	पुरुशोत्तम	"	"	१
(१२१)	रूपरसिक	"	"	१
(१२२)	रसिक छेल	"	"	१

(१२३)	ब्रजनंद	के पद	४
(१२४)	ब्रजराज	" "	३
(१२५)	चंद्रसखी	" "	५
(१२६)	बालसखी	" "	१
(१२७)	रामसखी	" "	१
(१२८)	बख्तावर	" "	१३
(१२९)	किसोर	" "	२
(१३०)	उम्मेदा	" "	२
(१३१)	जमना	" "	२
(१३२)	दयासखी	" "	१
(१३३)	हुक्मेश	" "	१
(१३४)	अमरपुरी	" "	१
(१३५)	सवाईसिंघ	" "	१
(१३६)	विजयसिंघ	" "	१
(१३७)	देवीसिंघ	" "	१
(१३८)	बांकीदास	" "	१
(१३९)	बीठुदान	" "	१
(१४०)	बारहठ कान्हाजी	" "	२

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२७) गुटका संतवाणी संग्रह । आकार-५"८" x ३"३" । पत्र-संख्या-५८० । लिपिकाल-सं० १८७६ । लिपिकार-प्रीतमदास ।

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

- (१) स्वामी सन्तदास की वाणी
- (२) रामचरण की वाणी
- (३) परमहंस सूरतराम की वाणी
- (४) दुल्हराम की वाणी
- (५) रतनदास का प्रसंगी दुहा
- (६) श्रबंगसार का फुटकर सबद
- (७) कबीर की साखी

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२८) गुटका विविध संग्रह । आकार-७" x ३'६" । पत्र-संख्या ४२० ।
इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

- (१) प्रह्लाद चरित्र
- (२) धू चरित्र
- (३) मोहमरद की कथा (अपूर्ण)
- (४) रामचरणजी की अणभै बाणी, ग्रंथ नाव प्रताप, सबद प्रकाश, चिन्तामणि, मन खंडन और गुरुदेव को अंग
- (५) नंददास की अनेक नाममाला और अनेकार्थमाला
- (६) जयतराम कृत मीराँ सम्बन्धी भजन— ये भजन मीराँ के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं, उन्हें आगे दिया जायगा ।

प्रह्लाद चरित्र का अन्तिम भाग—

अमृत रस प्रह्लाद जस, कहै सुनै जे कोइ ।
अभै अमर पद पाइये, भगति मुक्ति फल होइ ॥ २४१ ॥
सुनै सुनावै प्रीत जुत, हरिजन हरि जस एह ।
कहै गोपाल उर धारिकै, राम भगति सँ तेह ॥ २४२ ॥
मै मुति सारू आपनी, कही जु घटि बधि बात ।
जन गोपाल सुत हेत को, नीकां समझै मात ॥ २४३ ॥

धू चरित्र का अन्तिम भाग—

गुरु गोविन्द प्रताप तैं, कथ्यो भगति रस सार ।
जन गोपाल हरिजन कह्यो, बाणी करि बिसतार ॥ २४२ ॥
धू चरत जे कोई सुनै, मन बच क्रम चितलाइ ।
हरि पूरव सब कामनां, भक्ति मुक्ति फल पाइ ॥ २४३ ॥
अब सूँधा सब कागद करूँ, सारद लखै बनाइ ।
उदध घोर मस कीजिए, धू म्हमां न समाय ॥ २४४ ॥
मैं अग्यान मति आपनी, कल्पि कही कछु बात ।
बकसत सुत अप्राध कू, जन गोपाल पित मात ॥ २४५ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२९) गुटका विविध संग्रह—आकार-६" x ३'४" । पत्र-संख्या ५८० ।
लिपिकाल—संवत् १८७६ । लिपिकार—पीतमदास

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

- (१) संतदास की अणमै वाणी
- (२) रामचरण की अणमै वाणी
- (३) सूरतराम की अणमै वाणी
- (४) दुल्हराम का सबद
- (५) रतनदास का प्रसंगी दोहा
- (६) श्रबंगसार संत विचार का फुटकर सबद
- (७) एकादस की ध्याई (दो अध्याय)
- (८) कबीर की साखी ।
- (९) मुख नावों
- (१०) फुटकर पद

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(३०) गुटका । आकार-६'७" × ५'८" । पत्र-संख्या लगभग ६०० ।
इसमें लगभग २५० रचनाएँ संग्रहित हैं, परन्तु इन सब का यहाँ देना असम्भव होने
के कारण केवल निम्नलिखित रचनाओं के नाम ही दिए जाते हैं:—

- (१) नाममाला
- (२) नासकेत
- (३) सुखसंवाद
- (४) जोगवासिष्ठ
- (५) भागवत गीता
- (६) निर्वाण गीता
- (७) सार गीता
- (८) वैष्णव गीता
- (९) कर्म विपाक गीता
- (१०) पाण्डवी गीता
- (११) ध्रुवाचारज
- (१२) उमा महेश्वर संवाद
- (१३) भृगा रोहिणी
- (१४) हरिहर संवाद

- (१५) वैष्णव महात्मै
- (१६) हस्तांबल
- (१७) अञ्जुन गीता
- (१८) चन्द्रोदय ग्रन्थ
- (१९) मोह विवेक
- (२०) धू चरित्र
- (२१) प्रहलाद चरित्र
- (२२) जड़ भरत चरित्र
- (२३) चोबीस घरां की लीला
- (२४) दादू की जन्म लीला
- (२५) दादू की साखी
- (२६) कबीर की साखी
- (२७) कबीर की रमैणी
- (२८) नामदेव को कृत
- (२९) रैदास को कृत
- (३०) हरिदास को कृत
- (३१) सोजाजी को कृत
- (३२) सोजाजी की बलि
- (३३) पीपाजी को कृत
- (३४) परसाजी को पद
- (३५) बैलियानंद का पद
- (३६) धन्नाजी का पद
- (३७) कीता धोरी का पद
- (३८) चतरभुज का पद
- (३९) बीसाजी का पद
- (४०) त्रिलोचनजी का पद
- (४१) नरसियाजी का पद
- (४२) कानइयाजी का पद
- (४३) विजियाजी के पद
- (४४) मीमजी का पद

- (४५) सोमजी का पद
(४६) अधारुजी का पद
(४७) सावलियाजी का पद
(४८) भुवनजी की भाषणी
(४९) ग्यान त्रिलोकजी की बावनी
(५०) कृष्णानन्दजी की कृत
(५१) रामानन्दजी की रचना
(५२) अंगदजी का पद
(५३) सुखानंदजी का पद
(५४) नानकजी का पद, सव्दी और साखी ।
(५५) काजी मोहम्मद का पद
(५६) सूरदास का पद
(५७) परमानन्द का पद
(५८) कान्हाजी का पद
(५९) गोरखनाथ का ग्रन्थ
(६०) बखनाजी का ग्रन्थ
(६१) गुरु भण्डार की प्राण संकुलि (गुरु भण्डार मत्स्येद्र के शिष्य)
(६२) चोरंगीनाथ की प्राण संकुलि
(६३) संभुनाथ की प्राण संकुलि
(६४) प्रभ गोता
(६५) शुक्ल ग्रन्थ—गोरख चरित्र ।
(६६) श्रीनाथजी को पंथ अभिग्रन्थ
(६७) रामबोध ग्रंथ
(६८) निरंजन पुराण (दादू)
(६९) सिधिनाम श्रीपति बोध नाम टीकौ ग्रन्थ
(७०) भोगल पुराण
(७१) काजी कांदन की साखी ।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

(३१) गुटका—आकार—३½" × २"४" । पत्र-संख्या ८६६ ।

इनमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

(१) रामचरणजी की अणमै बाणी

- (२) एकादस की ध्याई
 (३) संतदासजी की छांटमा वाणी
 (४) किशान कवि कृत उपदेश बावनी- रचना-काल सं० १७०८ के लगभग
 (५) कबीर की रमैणी
 (६) ग्रंथ रामसागर-कबीर
 (७) ग्रंथ रामसतक-चत्रभुज
 (८) रामचरणजी के फुटकर सबद
 (९) हरिचन्द चरित-ध्यानदास, सं० १८०० के लगभग
 (१०) मोहमरद की कथा-सं० १७७६ काति विद १२ सोमवार
 (११) संतदास की अणभै वाणी
 (१२) ग्रंथ बेराग बोध
 (१३) रामचरणजी की अणभै वाणी में का छाँटवा सबद-साखी, ग्रंथ रामप्रताप, मन-
 खण्डन, ग्रंथ पिंडत समाध, गरभ चिन्तामणि, बिध-चिन्तावणी ।
 (१४) रामजन की आणभै वाणी
 (१५) प्रह्लाद चरित्र-जनगोपाल
 (१६) भरतरी चरित्र
 (१७) धू चरित-जनगोपाल
 (१८) ब्रह्म समाध-जगन्नाथ, सं० १८८५ बैसाख सुदी ४, रविवार
 (१९) रामजनजी की अणभै वाणी छाँटवां
 (२०) मुरलीरामजी की अणभै वाणी-ग्रन्थ ह्याल बोध, ज्ञान प्रमोद, तरपत बोध,
 प्रतीत बोध ।
 (२१) संतों के फुटकर शब्द

इस ग्रंथ में कोई लिपिकाल नहीं है । पत्र भी इसमें कई तरह के जोड़े हुए हैं और लिपि भी ग्रंथों के साथ बदलती गई है जिससे ऐसा ज्ञात होता है कि अलग अलग लोगों द्वारा ये ग्रंथ लिपिकृत हुए हैं । आरम्भ में कुछ छन्द दिए गए हैं, जिनकी लिपि अन्य ग्रंथों की लिपियों से भिन्न है । ये छन्द कृष्ण की मुरली और रास से सम्बन्ध रखते हैं । सबसे प्राचीन लिपि में एक छप्पय दिया हुआ है जो इस प्रकार है:--

अथ घड़ी प्रमाण छप्पय

प्रहै, अंगुष्ठौ पुरस ब्रह्म इंद्री तिथि कहीऐ
 तरज्या रस^१ रुद्र^१ उमय^२ विचार मन लहीऐ

मधिमा रवि रुषि^७ राम बुधि बोध ना उर जानूँ

अनामिका त्रयौदस^{१३} बेद^४ बसु^८ सुर जुगति निदानूँ

करै कनेष्टा सप्रम जो ग्रह^९ रतन तत पेषिये

करिये बिचार यह रेन दिन घटिका पंडित लेषिये ॥ ७ ॥

नोट:- यह कबीर कृत 'राम सागर' के नीचे दिया गया है, रामसागर कबीर की नई रचना है।

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(३२) गुरु बीनती जोग । रचयिता-साधूराम । आकार-१६" × ११"५" ।

पत्र-संख्या ६८ पद्य-संख्या २४६ । रचना काल सं० १८६८, चैत्र शुक्ला ८ सोमवार ।

आदि भाग-

प्रथम बंद गुर देव को, दुतिए संत रु राम ।

तन मन इन पद अरपि कै, प्रणवत साधूराम ॥ १ ॥

गुरु संत हरि जो क्रिपा, मो परि करो जु पूरि ।

तो गुरु बिनती जोगकी, उपजै मो रस ऊरि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

नम्र उदैपुर ताल पिछोला । ता तटि राम हिं द्वारा अमोला ॥

जाहां जु ग्रंथ भयो हे च्यारी । नृप सरदारसिंघ की बारी ॥ २४३ ॥

राणा भीम पिछे नृप ज्वाना । भए उजागर अति बलवाना ॥

भक्ति भीम सुं करी सवाई । देस देस सन्तन जस गाई ॥ २४४ ॥

चढ़ै खूंट में जस बिस्तरिया । दस बर साल गिराज जु करिया ॥

देह त्यागि के स्वरग सिधारा । अमर रहयो जस धरा मंभारा ॥ २४५ ॥

ता गादी सरदार ही सिंघा । राजत मली जु भाँति नरिन्दा ॥

ग्रंथ भयो है ताकी बिरियां । संमत अठार अठ्याणुं र' वरिया ॥ २४६ ॥

चेत सुक्ल अष्टम ससिवारा । पूरण ग्रंथ भयो हरिद्वारा ॥

किंचित जस गायौ हरिजन कौ । रसिकां सब गुण भनै जु उनको ॥ २४७ ॥

गुरु सतुति बरनन करी, मेरी बुधि उनमानि ।

पार लहै कोटिगनि कौ, मसक अहंकृत मानि ॥ २४८ ॥

सब ही जन मो ऊपरै, रखियो महर अपार ।

अरजी साधूराम की, यहै जु बारंबार ॥ २४९ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(३३) गुसाईजी की बधाई । रचयिता-माणिकचंद । आकार-
७ $\frac{१}{२}$ " × ६ $\frac{१}{२}$ " ।

आदि भाग-

बोहोरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटै श्री विठ्ठलनाथ हमारे ।
द्रापर वसुधा भार हरयो हरि कलयुग जीव उधारे ॥

अन्तिग भाग-

ऐसो कवि को है जुग महिमां वरनै गुण जु तिहारे ।
माणिकचंद प्रभु कों सित्र खोजत गावत बैद पुकारै ॥

(३४) चोबीस एकादसी रो महात्तम । रचयिता-नथमल । आकार-
६" × ५'१" । पत्र-संख्या २० । विषय-चोबीस एकादशियों के महात्म्य की गद्य
में टीका । भाषा-राजस्थानी

आदि भाग-

नारदजी ब्रह्मा ने पूछे- तुं पिता सब जाणै । श्रावण वदी एकादसी । उपवास कीयां कुण
पुन्य । ब्रह्माजी बोल्या-श्रावण वदी एकादसी का नाम । व्रत कीयां सकल काम की सिध दृइ ।
गोविन्दजी की सेवा कीजै । सर्व तीर्थ स्नान कीयां पुन्य दृइ ।

अन्तिम भाग-

किसनजी कछो । चार मास उपोष्ये । ती वारे दान पुण्य तीरथ घणा कीजे । जूँरि
नारायण पोटे छे । बालक रूप छे । साँप को रूप छे । वीर है । मोर छे । डर ही रूप छे ।
संसार ने रूप छे । ताथे चोमासो महिदान पुन्य घणा कीजै । आसाढ सुदि एकादसी । श्री नारा-
यण पोटे । इण व्रत थी वैकुंठ पावै ।

[श्री ग्वरूपलालजी शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर]

(३५) चोरासी बोध (चोरासी बोल) रचयिता-जगन्नाथ । इसकी
कई प्रतियाँ मिली हैं । जिनमें से एक का उल्लेख ऊपर गुटका संख्या २४ (२३) में
किया गया है । दूसरी प्रति:- पद्य-संख्या ६१ ।

आदि भाग-

नकारो नर सो बचन, नटत ही उपजे दुख ।
यूँ चोरासी जायगा, नटै ते बरते मुख ॥ १ ॥

मनख जनम पायकै, टाले इतना दोष ।

तो जगन्नाथ नरनारी को, सुधरे लोक परलोक ॥ २ ॥

राम स्मरतां धकीऐ नैं ॥ १ ॥

गुर सेवा मैं लुकीऐ नैं ॥ २ ॥

करणी कर गरबाजे नैं ॥ ३ ॥

नित को नेम घटाजे नैं ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

ऐ चोरासी सुभ असुभ, कया मान का ठाम ॥

जगन्नाथ करीऐ सवै, जब लग ग्रह बिसराम ॥ ३ ॥

ईच लगत चालै सुघड़, तो भलां कहै सब लोय ॥

नहचै आवा लोक मैं, पलो न पकड़ै कोय ॥ ४ ॥

या चोरासी चित धरै, तो वा चोरासी बार ॥

अपनी अपने हाथ हैं, मन मानै सो साध ॥ ५ ॥

बार बार नर-तन नहीं, कहै सासतर संत ॥

तातै सुकत कीजिये, के भजिऐ भगवंत ॥ ६ ॥

जैन जवन सिव धरम कहैं, करणी सुधरे काम ।

दया धरम इकतार सूँ, जगनाथ कोहो राम ॥ ७ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(३६) जम्बूसर को प्रसंग । रचयिता- अज्ञात । यह ग्रंथ १३६ संतों के संग्रहीत गुटकों २५ (३८) और २६ (२४) में मिला है । इसके अतिरिक्त भी इसकी कई प्रतियाँ मिलती हैं । पत्र-संख्या ३ । इसमें उपदेश की दृष्टि से एक कहानी दी है । एक धनपति साहुकार के पुत्र जम्बूसर का उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह होने के कारण उसमें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है । इसमें १० दोहे, ४ कवित्त, १४ सोरठे और १० चौपाइयाँ हैं ।

आदि भाग-

दोहा

मेवल हे सो यूँ कहै, जंबूसर ज्यूं जान ।

सिषता को प्रसंग अब, कहूँ सो निश्चे मान ॥ १ ॥

क्लृवत

ऐक साह धनवंत तास के पुत्र बजोई ।
 जंबूसर तस नाम सीध 'र जनमत होई ॥
 पिता कियो हठ बहोत, परणबो आरें कीनों ।
 परण तजूं कर नारि, आप उत्तर यूं दीनों ॥
 ऐक बनिया के छी आठ, तिनें सुन मतो बिचारै ।
 करे पितासूं अरज, पुरष जंबूसर मारै ॥

अन्तिम भाग-

जंबूसर बड़ भाग, धन तेरी माता पिता ।
 जनम नहीं जग राग, छांड रतो परब्रह्म सूँ ॥ १२ ॥
 द्रव्न लेन कूँ चोर, बाधी पोट ज प्रीत कर ।
 हान भयो तिह ठोर, जंबूसर को ज्ञान सुन ॥ १३ ॥
 अष्ट नारि एह ज्ञान, सुनत ही सो सब गयो ।
 चोर भये लगतान, सीलवान का बचन सुन ॥ १४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(३६) ग्यांन प्रबोध । रचयिता-रामजन । पत्र-संख्या ३२ । पद्य-संख्या

३६७ ।

आदि भाग-

सत गुर राम दयाल जन, धन आनंद सुखकार ।
 तिन कूँ बंदत रामजन, करिहु नित निरधार ॥ १ ॥
 गरू सबद श्रवणा करूँ, धरूँ राम का ध्यान ।
 राम गरू जन प्रसन्ता, जातै नास अग्यान ॥ २ ॥

सिख उवाच-

कूँन ग्यान कांहां तै आयौ, नास भए तब कांहां समायौ ।
 अर अग्यान जावै कहीं साधन, सिख पूछे गुर करि आराधन ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

महा भयानक काल एह, कलिजुग क्रंम अधाग ।
 ता मति सत गुर प्रगटै, सो धन मेरो भाग ॥ ४ ॥

हलाबोला कलजुग ऐह, जाही न धरम बबेक ।
 तिन मधि प्रगटै आइ गुर, रामचरणजी एक ॥ ३६५ ॥
 रामचरणजी मेव बत, जिनकी बांणी छोल ।
 मत करार सर भगति ज्युँ, भरीए ग्यान भकोल ॥ ३६६ ॥
 ग्यान उदधि गलतां नमत, उतम भजन रत आप ।
 भीलौड़े प्रगटे भले, प्रगट हरे संताप ॥ ३६७ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(३८) ज्ञान समुद्र । रचयिता-सुन्दरदास । यह एक ४'५" × ३'१" आकार-
 वाले संग्रह में है । जिसमें तीन रचनाएं और हैं । (१) मोहमरद, (२) रहत
 भजन, (३) राजा चोर अकचूरजी की बात । पत्र-संख्या ८६ । पद्य-संख्या-३०६
 रचना काल-१७१० ।

पुष्पिका

संमत् सतरेसे गये, बरष दसोत्तर ओर ।
 भाद्रव सुद एकादसी, गुर वासर सिर मोर ॥
 ता दिन संपूरन भयो ज्ञान समुन्दर ग्रंथ ।

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(३९) टेक को अंग । रचयिता-मुरलीराम । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या
 ३८ । रचना राम सनेही पन्थ से सम्बन्धित है ।

आदि भाग-

टेक रखां काइस भलो, हेतम को सिर देख ।
 मुरलीराम निवाजिया, देख जनां की टेक ॥ १ ॥
 टेक समाई सूरवां, राम नाम की अैन ।
 जन मुरली छाडे नहीं, देख रमाया चैन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

टेक न छाडे लोवड़ी, होय जाय तारोतार ।
 द्रढता लीयां रंग की, यू जन नाम करार ॥ ३६ ॥
 ऐकै रंग एक तार में, रहती रंजन धीर ।
 रंग लगावै आपणों, रचै आन सरीर ॥ ३७ ॥
 रषांम काज अर्पण करे, तन धन मान मुलवक ।

टेक रखे निज नाम की, कोण्यां गुरली खलक्क ॥ ३८ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४०) तर्क चिन्तामणि । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या ५३ । यह ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है । देखो सुन्दर ग्रंथावली भाग १ । प्रकाशित ग्रंथ से इसकी भाषा में काफी अन्तर है ।

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४१) दुल्हरामजी महाराज का सबद । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या १३ ।

आदि भाग-

राग भंभोटी-

बलिहारी गुर देव तुम्हारी-भो सागर सैं त्त्यारी ॥ टेक ॥
 रामनाम की नांव ज सारी, बैठाया नरनारी ॥
 पण को बिड़दवान इक भारी-धीरज जार उ डारी ।
 जत सत समता रतन अपारी, किरपा पवन चलारी ॥
 सत गुरु आप करण के धारी, औघट घाटी टारी ।
 दुल्हेराम चरण उपगारा, सरणै रक्षा उबारी ॥

अन्तिम भाग-

दरसाया दिल मांही रे, तूँ साइंया-दरसाया दिल मांहि ॥ टेक ॥
 दरस कीयां दिल हरी निवारी, मारी ममता साहि ॥
 नारी वारी बित पर हारी, जै हैरहीं जातिन जाहि ।
 उनमन चित नचलताई, सरबंगी राम दिखाहि ॥
 सरबक गुर कृपा सूँ जानै, मरम दूँदता दरसाहि ।
 दुल्हेराम की अन्त्रजामी, तुम सूँ छानी नाहि ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४२) देवदास की वाणी । आकार-८"५" × ७"२" । पत्र-संख्या ४५ ।
 रचना काल सं० १८४४ (?) लिपिकार (या संग्रह कर्ता)-जगन्नाथ

आदि भाग-

नमो अखंडत राम नमो सत गुरु सुखदाता ॥

नमो अनंत ही कोटि, राम रस पाई पिलाता ॥
 जिनकी गही ज वो रहो सिरी सदा हमारूँ (?) ॥
 अठ पहरथौ मन मोलि सुरति धरि निरति न टारूँ ॥

दोहा

देवदास बन्दन करै, बारू बारज जोइ ।
 राम गुरु अर संत जन, हिरदै राखूँ पोइ ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

राम चरण गुर देवता, सकै सीख बौहो भारी ।
 देवदास इक नाम, जासकी बिरती करारी ॥
 भजन करै भरपूरि, आन 'चा न सुहावै ।
 गुर पद में गलतान, और कछ दाइ न आवै ॥
 सकल बासना नास, आसन की फुनि नाहीं ।
 बिचरें जग के माहीं, केवल ज्यूं जल के माहीं ॥
 ऐसे सन्त दयाल, नगर इक स्यावै आए ।
 रहै दिवस दस बैठि, तांहां तन कूँ छिटकाए ॥
 साथ तीन ता लारि, समै ता दिन की अैसी ।
 अन्त समै लगी राम, और चर्चा नहीं कैसी ॥
 परम धाम किए बास, तासमें संसै नाहीं ।
 हम देख्या निरताइ, सबद अणमै का माहीं ॥
 अष्टादस सो जानि, बरष चमाली गिणिए ।
 पोस माम के माहिं, तीन दिन बाकी भणिए ॥
 प्रात समै आदीत दिन, गए देह छिटकाइ ।
 जगन्नाथ देखी जिसी, साची कही बनाइ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(४३) नव तत्व नी चौपई । रचयिता-ऋषिवरसंघ । आकार-
 ६३" × ४३" । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १३६ । लिपिकाल-सं० १८२४ ।
 लिपिकार-ऋषि मलूकचन्द्र । रचनाकाल सं० १७६६ ।

आदि भाग-

पास जियेसह अविनाशय । सह सुख दाम तेणें सुखसाय ॥
नव तत्व नो कहैं विचार । सामलजो चित दे नर नारि ॥ १ ॥
जीव अजीव पुन्य पाप ज जोय । आश्रव संवर निरञ्जरी होय ॥
बन्ध मोक्ष नवत्त ए सार । हवे कहैं ऐनी विस्तार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दश नपुसंक सिधज जाण । बीस ते स्त्री सोस वेखान ॥
एकसौ आठ पुरष ज कथा । जिन बचने आगम थी लथा ॥
छिसैं छहोत्तर बोलज सार । आगम थी कीधो बिस्तार ॥
नव तत्व नो चौपइ एह । भयैं गुणैं सुख पामे तेह ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४४) नव ब्राह्मिनी स्नाभ्याय । रचयिता-अनहर्ष । आकार-
१०'२" × ४'८" । पत्र-संख्या ३ । रचना काल सं० १६१६ । इसका विवरण जैन
गुर्जर कवियों में आ चुका है ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४५) पंच कल्याणी स्तोत्र । रचयिता-पुन्यसागर । आकार-१०' × ४'३' ।
पत्र-संख्या ५ । इसमें निम्नलिखित रचनाएं हैं:—

- (१) श्री मेघकुमार चउदालिया (सं० १७२८) पद्य-संख्या ४७ ।
- (२) श्री महावीर पारणउ । पद्य-संख्या ३१ ।
- (३) श्री आदिनाथ सेतु । पद्य-संख्या ३२ ।
- (४) श्री जीरावल्लि पार्श्वनाथ स्तवन । पद्य-संख्या १५ ।
- (५) श्री पंच कल्याण स्तोत्र । पद्य-संख्या २१ ।

[वर्द्धमान ज्ञान, मन्दिर, उदयपुर]

(४६) परसण सिंगार । रचयिता-सेवादस । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या
१०१ । इसकी दो प्रतियाँ हैं । दूसरी प्रति में पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या १०२ ।

आदि भाग-

उनमनि नेजा फरहरे, अनहद धूर निसाण ।
सहीत भोम्या ऊपर, चढीयो सबद दिवाण ॥ १ ॥

नाँव ज़प की फोज का, केहा कलैं बखाण ।
एक एक सूँ आगला, बहु जोधा बलवान ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

बात हामरा जंग की, कोई सुणै सांचला सूर ।
सेवादास अलबत चढ़ै, सुणत सुवा सुख नूर ॥ ६८ ॥
लख कोटयाँ मध सूरवाँ, सूणै हमारा जंग ।
सबद बिचारै सेवाला, सो सुण सुण देव रंग ॥ ६९ ॥
मौ बपड़ा की क्या घणी, ए सत गुरु हन्दी रीझ ।
खोटे पहरै सेवाला, पाई मोटी चीज ॥ १०० ॥
सत गुरु मेरे सिर तपौ, श्री गाजी गिरधरदास ।
जिनके बल जंग जीत कर, किया पिसण सब नाश ॥ १०१ ॥
तहां काल तणाँ सारा नहीं, फरी राम की आण ।
सेवादास जंग जीत कर, परस्या पद निर्वाण ॥ १०२ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४७) पूरब चिन्तामणि । रचयिता-रामजन । पत्र-संख्या ४ । पत्र-संख्या २३ । यह तीयालीस ग्रंथों के गुटके में संकलित है ।

आदि भाग-

जनम अनेक विधि पायो है जगत में,
सिधी इन काज भयो गयो ज्यु ही आयो है ।
जैसे नलि नाल साथ कळू हीन चढ्यो हाथ,
मृग की सी नाई (मृग) बारबार भरमायो है ॥
ताते अब चेत भजो आगम के साथ सजो,
रामजन राम गाय गुरुजन चितायो है ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

चोरासी के सीरे तन पायो है रतन एह,
जतन जतन कर नीठ ठाम आयो है ।
भ्रम में न भूल माई बड़ाई जू जान लीजै,
कीजै कृत सांच काच कूर कूँ हनायों है ॥
तीयालीस लाख बीस सहस 'हूँ' बरस बीते,

मानवें जनम एह नीठ नीठ पायो है ।
 ताते अब चैत सावधान होय रामजन,
 राम राम कहो गरुदेवजी चितायो है ॥ २३ ॥

[रामद्वारा, धोती बावड़ी, उदयपुर]

(४८) ब्रह्मसमाधिलीन जोग । रचयिता-जगन्नाथ । इसकी कई प्रतियां मिलती हैं । इसका उल्लेख ऊपर के गुटकों में भी आचुका है । पद्य-संख्या २७६ । रचना काल-सं० १८५५, वैसाख सुदी १४ रविवार ।

आदि भाग-

बिनऊं राम दयाल गुर, वीय रो संत अतोल ।
 तुम कृपा जापर करो, तब उपजे उर बोल ॥ १ ॥
 मन हुलस्यों तुम महरस सूं, ग्रंथ करन अभ्यास ।
 जथा अरथ नीकां कहैं, जगन्नाथ है दास ॥ २ ॥
 राम चरण जन प्रगट्या, अवनि लियो अवतार ।
 आदि अंत लग जो भई, जांको कहूं बिचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

याहां सदा आनन्द में मंगल मूरति राम ।
 मंगल कर बोहतेन कूँ पधारे परमधाम ॥ २२ ॥
 परमधाम सबके परैं, राम सबद अदभूत ।
 लीन भए जन तासमें, अनभि जन अनभूत ॥ २३ ॥
 अणभी अणमौ पद मिले, राम ही राम उचारि ।
 ता बरीयां की जगन्नाथ, कछुयक कही बिचारि ॥ २४ ॥
 जनगति की मोही गम नहीं, ये तो अगम अपार ।
 जगन्नाथ मोकुं भूर्यो, सो मै कछो बिचार ॥ २५ ॥
 रामचरण महाराज को, जस प्रगट्यो जग मांहि ।
 ज्यूं फूल के अंतर ज्यूं, आप सरूप सराहि ॥ २६ ॥
 बाण्यो सबद बिचारीये, खित मेली सबकार ।
 राम सबदमई जगन्नाथ, रामचरण माहाराज ॥ २७ ॥
 मै हूँ अनुचर रावरो, जगन्नाथ मो नांव ।
 राम चरण महाराज कूँ, बार बार परनाम ॥ २८ ॥

मेरी बुधि सखु कछो, एह सभै को ध्यान ।
जगनाथ मो उर खो, राम चरण को ध्यान ॥ २६ ॥
घठारासे पचपन बस, रवि चोदस बैसाख ।
ग्रंथ संपूरण जगनाथ, पुन जानो सुधि पाक ॥ ३० ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(४६) बावनी-रचयिता-मुनि त्रिमाहंस । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या ५४ । विषय-नीति, उपदेश आदि ।

आदि भाग-

छप्पय

ॐकार अपार पार बहु किण ही पायो ।
ब्रह्मा त्रिष्णु शिव सगति ध्यान ग्यान ही धुरि ध्यायो ॥
मंत्र तंत्र जड जंत्र जोग जुगति महिमागर ।
ऋद्धि वृद्धि नव निद्धि सिद्धि साधक सुख सागर ॥
जम्पन्ति जिहि नितु प्रति जकेलहेत सुख लीला लहर ।
कवि कहे खेम सेवो सयन ॐकार आठों पहर ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

खिमा खंग करि मखी पिसुण दहवट पुलाई ।
भगड़ा भऊड़ सन्ताप जाई ऊँ बादल वाई ॥
खिमा खडग करि गद्या गण धरि उछव मंगल ।
संप कुटुम्बा साथ आधि उपजई अनंगल ॥
कवि हंस खेत इहि खरि बावनी कवते करी ।
सब सयण सुणन्ता सीखन्ता वसुधा मंगल विस्तरी ॥ ५४ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(५०) भक्तमाल टीका । टीकाकार-प्रियादास । आकार-
६.६" x ६.५" । पत्र-संख्या ५५ । पद्य-संख्या ८२४ (मूल तथा टीका को मिलाकर)
लिपिकाल सं० १७८६ । कार्तिक शुक्ल ७ शनीवार । लिपिकार-नारायणदास ।

पुष्पिका

“श्री उदयपुर मध्ये राणा श्री संग्रामसिंहजी विजय राज्ये । स्वामी श्री हरिदास तत शिष्य

प्रियादासजी लिखावतम् आत्मार्थे वाचनार्थे ।”

नोट— भाग १ में उल्लिखित भक्तमाल की टीका इसीकी प्रतिलिपि मालूम होती है ।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५१) भक्तामर भाषा । रचयिता-केसरकीर्ति । आकार-१०" x ४'४" ।

पत्र-संख्या ३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ४४ सवैया । रचना सरस और सानुप्रास है । यह मानतुंगाचार्य कृत संस्कृत ‘भक्तामर’ का भाषानुवाद है । कहा जाता है कि मानतुंगाचार्य को एक बार ४० तालों में बंद कर दिया गया था । उस पर उसने जिन भगवान की प्रार्थना में ४० पदों की रचना की । एक-एक छंद पर एक-एक ताला टूटता गया । आदि भाग—

श्री जिन नायक वंछित दायक पाइकै पाय प्रणाम करै है ।
भाव धरी सुर आइन मैं प्रभु माणिक मौलि के मध्य जरै है ॥
तास प्रभा कु प्रकास करै कम पाप कलाप कुं दूरि हरै है ।
जुगादि भवोदधि मध्य परे नर तो पद पूज थी सोड धरै है ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

स्तोत्र रूप फूलमाल गुंथी गुणै विसाल
अरीथाइ आलमाल जे सुणै सुभावतै ।
भावतै विरची येह विविध वरण जेह
विचित्र कुसुम तेह सोह सुषडावतै ॥
ऐसी माल कंठ धारै मानुभव आज्य आरै
निरंतर जै उचारै चित कै सुहावतै ।
मानतै उत्तंग सोई घरे लच्छी पूर होइ
केसर कीरति पोछै प्रभू कें प्रभाव तै ॥ ४४ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(५२) भगवद् गीता-टीका । टीकाकार-महाराजा जसवन्तसिंह ।

आकार-६'६" x ६'५" । इसके साथ प्रियादास कृत ‘भक्तमाल की टीका’ नन्ददास कृत ‘भागवत दशम स्कन्ध भाषा’ आदि कई अन्य ग्रन्थ भी हैं । भगवद्-गीता-टीका २८ पत्रों में समाप्त हुई है । इस प्रति को सम्बत् १७६८ में महाराणा

संग्रामसिंह के राज्यकाल में प्रियादास ने आत्म पठनार्थ लिपिबद्ध किया। टीका गद्य में है।

आदि भाग-

धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, आदि ।

टीका-संजय उवाच-दुरजोधन पांडवों की सैन्य देखि द्रोणचार्य पासि जाय अरु बोल्यो-‘हे-आचार्य ! पांडु पुत्रों की बड़ीइ सेना विषै समवेत एकत्र भये। जैसे ये मेर अरु पांडु पुत्र कैसे है। जुध की इच्छा धरतु है। हे संजय ! ते कहा करत भये।’

अन्तिम भाग-

संजय उवाच-हे राजा या भाँति श्री कृष्ण कों अर्जुन कों महाअद्भुत संवाद मै सुन्यो। सो यह वेद की कीया तें। साक्षात श्रीकृष्ण के मुख तें। जोग परम गुह्य सुन्यो। सो यह फिरि समरन करि करि बहुत हर्ष पावत हों। और यह अद्भुत श्रीकृष्ण को रूप समरन करि करि म्होंकों विस्मय होतु है। और महा हर्ष होतु है। हे राजन् यह म्होंकों निश्चै है। जहां जोगीश्वर श्रीकृष्ण है अरु जहां धनुर्धर अर्जुन है तहाँ सर्वथा लक्ष्मीजी है। विजय है। विभूति है। अरु नीति है। मेरी मति यूँ कहे है ॥ ७१ ॥

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५३) भ्रमरगीत । रचयिता-नन्ददास । आकार-११" × ५" । पत्र-संख्या २१ । पद्य-संख्या ७५ । लिपिकाल-संवत् १६३१ ।

[ब्रजलालजी साधु, भींडर]

(५४) भागवत दशमस्कन्ध भाषा । रचयिता-नन्ददास ।

प्रति १:- यह एक ८" ८" × ६" आकार वाले चोपड़े में है, जिसका लिपिकाल संवत् १७३५ से १७६१ है। इस चोपड़े में चार ग्रन्थ हैं:-

१. भागवत दशमस्कन्ध भाषा (संवत् १७३५) - नन्ददास
२. रास पंचाध्यायी (संवत् १७६१) - नन्ददास
३. विरहमंजरी (,, ,,) ,,
४. एकादश भागवत की कथा (संवत् १७६१) - संतदास

इनका वर्णन यथा स्थान किया गया है।

आदि भाग-

दोहा

नव लखि न करि लखिजी. दश मै आश्रय रूप ।

नंद बंदि लै प्रथम तिहि, श्रीकृष्णालि अनूप ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

सुनै छु कोउ मन क्रम बचन, ऐह उनतीसवो अध्याय ।

धंस न कलिमल बंस कह्यु, नंद न अवर उपाय ॥

इसमें कुल २६ अध्याय है जो ७२ पत्रों में समाप्त हुए हैं ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

प्रति २:- आकार-६'६" × ६'५" । लिपिकाल- संवत् १७६२ ।

[प्रयागदासजी का गृथल, उदयपुर]

(५५) भागवत एकादस स्कन्ध । टीकाकार-चतुरदास । आकार-११'३" × ६" । पत्र-संख्या १८८ । पत्र-संख्या २४०६ । रचनाकाल-संवत् १६५२ । चतुरदास संतदास का शिष्य था ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(५६) भागवत एकादश स्कन्ध । टीकाकार-चतुर्भुजदास आकार-१०" × ४'६" । पत्र-संख्या २०३ में से केवल १७५ शेष हैं ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(५७) मंगल कलश । रचयिता-मेघविजय । आकार-१०" × ४'२" । पत्र-संख्या ३० । पत्र-संख्या ६०८ । लिपिकाल-संवत् १८१६ ।

आदि भाग-

विनिता नय निबोधणी, वृषभ लंबन जसु पाय ।

प्रणमुं आदि जिणैसरू, नामे नव निध थाय ॥ १ ॥

शांति जिणैसर सोलना, अचिरा मात मलार ।

हुं प्रणमुं पय तेहना, अमय दान दातार ॥ २ ॥

सीलवंत सिर सेहरो, मोजकुं अरि मरतार ।

स्याम वर्ण सोहे सदा, उजल गिर सणगार ॥ ३ ॥

संखेस्वर सामि सधर, पुरिसा दाणी पास ।

वामा नंदन सेवता, पहोचे मन नी आस ॥ ४ ॥

सम सासन सोधणी, महावीर जिन राय ।

पय प्रणमता जेहना, अलिय विघन सविजाय ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

चितामणी पास पसाउ ले ए मालंतडी, ए रास रच्यो सुविचार ।
 संघ सकल आग्रह किए मालंतडी, मेघ कहे सुखकार ॥
 ध्रु ताहरा जिदां लगे ए मालंतडी, मेरू अचल गिरनार ।
 राम रहो ए तिहां लगे ए मालंतडी, बलि जिहां रवि ससि सार ॥
 ए रास भावे करी ए मालंतडी, जेह भणे मंन सुद्ध ।
 अने थलि आदरे सांमले ए मालंतडी, ते लहे, निर्मल बुद्धि ॥
 मंगल कलस मणि वरे ए मालंतडी, जे करे पूण्य अपार ।
 मेघविजय कहे नेड ने ए मालंतडी, नित नित जय जयकार ॥

(५८) मदन विवेक प्रकाश । रचयिता—मदनेश । आकार—७" × ६"

पत्र-संख्या ३५३ । पद्य-संख्या १६५० से अधिक । इसका रचना काल—संवत् १६४१ है । पूरा ग्रंथ १८ विश्रामों में विभाजित है । प्रथम विश्राम में कवि ने अपना वंश वर्णन किया है । जिसमें शक्तिसिंह से लेकर अपने तक का पूर्ण वर्णन है । ग्रंथ का विषय आध्यात्मिक ज्ञान है । प्रथम विश्राम में वंश-वर्णन होने के कारण यहाँ द्वितीय विश्राम का आदि भाग दिया जाता है ।

आदि भाग-

दोहा

मेद सजाति विजाति ओ, स्वगत कहे जो नाहिं ।

कृष्ण * शब्द को लक्ष्य यों, मदन धस्यो उर माहिं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

मंगल कुल मंगल प्रजा, मंगल देस महान ।

मदन सु मंगल रूप है, मंगल रूप सुजान ॥

चंद निधि अरू वेद शसि, संवत् चेत सुदि मास ।

संपूरण ता दिन भयो, मदन विवेक प्रकाश ॥

जब लगि गिरि कैलाश में, गौरि गिरीश निवास ।

अटल रहो जब तक जगत, मदन विवेक प्रकाश ॥

ॐ ये इनके दादूपंथी गुरु थे और रतलाम निवासी स्वरूपदास (पांडव यशेन्दु चन्द्रिका के लेखक) के शिष्य थे ।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(५६) रतनदास दोहावली । रचयिता-रतनदास । आकार-५'८" x ३'३" । पत्र-संख्या १७ । पद्य-संख्या १६६ । लिपिकाल-संवत् १८७६ ।

आदि भाग-

करै गुरां की बंदगी, सिख उरि अधिक हुलास ।

हरि बरि ऐहि मांगियौ, जनम जनम रहु दास ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

कपट भेष सिर साध कै, कौडी मिली न ऐक ।

साहा भजन भ्रम भूलीयौ, गुर न्याणा दीयौ बंबेक ॥ १६७ ॥

त्रिप्र सौहीं यौ आतमां, बेटी बुधि जौ जानि ।

संगति सगाई राम बर, घर गुर पूरा मानि ॥ १६८ ॥

सुरायण रटि राम कूँ, काहर कंभी दूरि ।

लज्या सोही कुंसंगति, बेल ज भगती पूरि ॥ १६९ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(६०) रामचरण बाणी संग्रह । रचयिता-रामचरण । रामस्नेही पंथी रामचरणजी की रचनाएँ कई संग्रहों में मिलती हैं । निम्नलिखित ग्रन्थों का विवरण यहाँ दिया जाता है:-

१. अणभै बाणी । इसमें निम्नलिखित अंग-साखी हैं:-

१. गुरदेव	कौ	अंग-	साखी	७८
२. सुमरण	"	"	"	१२२
३. बीनतो	"	"	"	१८
४. साधसंगति	"	"	"	३६
५. काल	"	"	"	५०
६. चितावणी	"	"	"	६६
७. सुरातण	"	"	"	३६

८. टेक	„	„	„	२७
९. कसतूरियां भ्रग	„	„	„	१२
१०. मन	„	„	„	२८
११. हेतप्रीत	„	„	„	१४

२. चंद्राहणाः—

१. गुरदेव	कौ	अंग	पथ	४
२. सुमरण	„	„	„	३
३. बीनती	„	„	„	१६
४. ब्रह्म	„	„	„	२४
५. साध भमी	„	„	„	१
६. साध	„	„	„	३६
७. साध संगति	„	„	„	४६
८. त्रिकत	„	„	„	२०

२. अनभौ बिलास को प्रथम प्रकरण ।

आदि भाग—

नमौ राम रमतीत, नमौ गुर देव स्वामी ।
 नमौ नमौ सब संत, नांव रटि भए जूं नामी ॥
 जिनके चरणूं हेठि, रहौ नित सीस हमारा ।
 तन मन धन अर प्राण, करूं नवृद्धावर सारा ॥
 राम संत गुर देव बिनि, नहीं और अधारा ।
 राम चरण कर जोड़ि कै बंदै बारू बारा ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

और मिलाये मिलै न तिही न ति दुर्लभ मेल हरीजन को ।
 त्रिए ताप मिटै जन कै दरस्यां मल धौइ कै दूर करै मन को ॥
 जीव नरमल होइ कै राम रटै कोइ क्रमा को नाहि रहै कंनको ।
 कहै रामचरण देख्या हम जोइ कै संत सधान म्हाधन को ॥ १ ॥

४. राम रसायन ।

आदि भाग-

राम तीत राम गुरदेव जी, पुनि तिहूँ काल के संत ।
 जिनकूँ रामचरण की, बंदन बार अनंत ॥ १ ॥
 सत गुर परम निधान पद, हृद सूँ बेहद जोय ।
 रामचरण बंदन करै, ब्रह्म रूप नित सोंय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

(ये) राम रसायण महारस, गुर सिख पारख कीन ।
 सरणां की सोमा कहूँ, सो सुणयो परबीन ॥ ६२ ॥

५. शब्द प्रकाश ।**आदि भाग-**

राम नाम तारंग मंत्र, सुमरे संकर सेस ।
 राम-चरण सांचा गरु, देवे यौ उपदेस ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम भजन बिन खाली करणी ।
 ज्यूँ बिन बीज सुधारी धरणी ॥
 राम बीज साधन हल हाकै ।
 तो राम-चरण खेती फल पाकै ॥ २४ ॥

दोहा

वरण कयो संखेप सो, दरीया कैसो पार ।
 जिन परसीया धाम कूँ, सो लीज्यौ संत बिचार ॥ १ ॥
 'रामचरण' रट राम नाम, पाया ब्रह्म बिलास ।
 ई साधन कोई लागसी, जाकै होसी सबद प्रकास ॥ २ ॥

६. चिंतावणी-**आदि भाग-**

प्रथम बंदन गुरदेव कूँ, पुनि अनंत कोटि निज साध ।
 कहूँ एक चिंतावणी, यौ वाणी निमल अगाध ॥ १ ॥
 बधे स्वाद रस भोग सैं, इंद्रयां तयै अरंथ ।
 उन जीवन कै चेतवै, करूँ चिंतावणी गरंथ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

धरीयां दिक् कलि जाइ, सर्व ब्रह्म नाही कलै ।
 रामचरण रति ताहि, चौरासी का भैट ल ॥ १ ॥
 चौरासी का भार, भजन बिना छुटै नही ।
 तातै होइ हूँसीयार, एह सीख सत गुर कही ॥ २ ॥

७. मन खंडण-

आदि भाग-

अलख निरंजण बीनऊँ, लागूँ सत गुर पाय ।
 मन खंडण की जुगति होय, सो मोय दथौह बताय ॥ १ ॥
 तन मन पर असवार है, गुण इंद्री सब साथ ।
 फरे सवादां बस भयौ, क्यूँ कर आवै हाथ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

आतम कूँ नही व्याधि, व्याधी रोग मन मानीऐ ।
 जिन ऐ तजी उपाधि, सुध स्वरूप ते जांणीऐ ॥ २ ॥

८. सुख समाध-

आदि भाग-

दोहा

सीस नवाऊं गुर चरण, पुनि बिनऊं सिध-साध ।
 निराकार की भगति दो, सो दो बुद्धि अगाध ॥ १ ॥

चौपाई

निराकार प्रणपात नित कीजै रसना । बिमल गाइ गुण जीजै ॥
 गुर रजब दादू परम देवा । नाम कबीर करै हरि सेवा ॥ २ ॥
 गोरख भरथरी गोपीचंदा । धू प्रहलाद सकल कूँ बंदा ॥
 पीपा धना सैन रैदासा । सोभा सोभ सुनो हरिदासा ॥ ३ ॥
 सब कर कृपा देह जू ग्याना । कीजे सुख की कथा बखाना ॥
 मेरी सक्ति नही कछु छैती । कही जाय.....त्युं तैसी ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग—

जब गुरु कृपा करी पट भागै । यहु गुण कथित चतुर दिन लागै ॥
 कथा बिपुल उनमान सुं बरनी । जथा सगति खेम सो निरनी ॥ २०६ ॥
 भूल चूक दू घट बध आई । सुख को हेत लिख्यो सब माई ॥
 यह अरदास सुनो सुखदेवा । तुम गुण वार पार नही छेवा ॥ २१० ॥

६. नांव प्रताप—**आदि भाग—**

महमा नांव प्रताप की, सुणै श्रवण चितलाइ ।
 राम-चरण रसना (?) तो क्रम सकल भडि जाइ ॥ १ ॥
 जिन जिन सुमरथा नाम कूं, सो सत उतरथा पार ।
 राम-चरण जो बीसरथा, सो ही जम के लारि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग—

‘रामचरण’ भजि राम कूं, ब्रह्म देस कूं जाइ ।
 जहां जग जोराँ का मै नहीं, सुख मै रहै समाइ ॥ २ ॥
 ‘रामचरण’ कहै राम कौं, बडौ प्रताप जग माहि ।
 अनैत कौटि जन ऊभरथा, भजै समर मै नाहि ॥ ३ ॥

१० सुख-विलास (चतुर्थ प्रकरण)—**आदि भाग—**

बावन अखिर कौ विसतारा । सो सिखि सुखिम थूल अपारा ॥
 बेंद पुरान सासतर कहीऐ । सुमति साखि छंद जो लहीऐ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

टेक पतीव्रत बीनती, नांव तणू निरधार ।
 कुबधी कात्र न खेदता, कहूँ कपूत निस्सार ॥ १०८ ॥

११ रेखता ।**आदि भाग—**

सदगुर सारसा और दीसैं नहीं तीन ही लोक करि देखि जोई ।
 भ्रम कपाट उघाडि दीपग धरथा मनकी मलता हरि खोई ॥
 वेद न कतेब सुणि समझि आई नहीं सुम अर असुम की भूलि मारी ।

मिलत गुरदेव जगाइ चेतन कीया भूलि परिज्ञान की थाप भारी ॥
 राम की धाम हम हू रि कछा जाणता पिंड ब्रह्मंड का भेद पाया ।
 राम ही चरण गुर देव दयाल के चरण कूं परसंता सांच आया ॥ १ । ३ । ३ ॥

अन्तिम भाग-

×

×

×

कुबधि की खानि जग सुबधि उपजै नहीं बिपति परपंच नहीं संच पाई ।
 काम अर क्रोध मद लौम बौहौ खोभता भ्रम कुं निकरम मैं अवधि जाई ॥
 आन की धार नां फिरै तन कारना बौध नासौ धनां हरि भुलाई ।
 राम ही चरण ए जगत अमार हैं सार इक राम तूं सुमरि भाई ॥ १६ ॥

१२. किवंत-

आदि भाग-

पतनी पीव पछाणिए कपति कौ व्रत धारथौ ।
 नांनां भ्रम उपास हेति हरदा सूं डारथौ ॥
 रही सबद अंगि लागि राम बिनि आन मात्रै ।
 ज्यूं कवलां जल मधि अरणि की करणि सुहावै ॥
 भगति रमै यूं जगत मै तजे न सांची टेक ।
 रामचरण गुर ग्यान कौ जनकै अचल बमेक ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम नाम जपि लेह नेह जग छाडिउ परसारा ।
 बिक्रम क्रम सुं भाव विषै गुण त्यागि बिकारा ॥
 सम दम सत संतोष दया उरि दिद बिसवासा ।
 निंदावै निसप्रेह आस तजि रहो निरासा ॥
 बन बसती समि जाणि संक काहं नहीं गिणिए ।
 औसी सूंज समाइ बेगि भौसागर तरीए ॥
 काइर हुंवा न छूटसी, हरि भजि होइ हुसियार ।
 रामचरण फिरि नां मिले, यो मौसर या वास ॥ ६ ॥

१३. राग चरचरी-

आदि भाग-

हारौ रे कोई हारौ रे, संसार करम सूं हारौ रे ॥

गुर कौ ग्यान हिरदै परि राखौ, रसनां राम उचारौ रे ॥ टेक ॥
 मैं मेरी मैं मति कोई भूलौ, याहां नही कोई धारौ रे ॥ १ ॥
 काल कंठ जब आइ गहेगा, रहसी पड्यौ पसारौ रे ।
 जम का दूत पकडि लेजासी, उनको मूं ठौ कालौ रे ॥ २ ॥
 पाप ' र पुनि संग दौइ चालै, और न चालै लारौ रे ।
 रामचरण भजि राम सगेसी, निरधारा आधारौ रे ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

सार असार समझै नहीं, ऐसा मुति का हीण ।
 राम नाम की निन्धा गर्यै, करमां सूं लिबलीन ॥ १ ॥
 ब्रह्म सबद राकार है, माया रूप मंकार ।
 रामचरण ऐ छुग लहै, निराकार आकार ॥ २ ॥

१४. फुटकर पद-फुटकर पद कई संग्रहों में मिलते हैं। अतः यहाँ देना ।
 अनावश्यक हैं ।

[उदयपुर के रामद्वारों में संग्रहीत]

(६१) रामजन वाणी संग्रह-

अणभै वाणी । पद्य--संख्या:- दोहा १०१, चौपाई २४४, सोरठा ३५,
 चंद्रायणा १, पद्धरी ४८, गीतक १६, अरेल १३, मनहर २८, सर्वईया ४५,
 किवत ४, निसाणी ४, चामर १, कुँडलिया ८, भंपाल ४, त्रौटक १, रेखता २६ ।

आदि भाग-

कवित्त

काम क्रोध भाव तेते सोधिये स्वरूप तेते
 पक्व है.....सेते बित चहुँटा ईये ।
 जेते पक्व है हरष हिय से तिनको होजे
 अपक्व कोई जोग क मिटाईये ॥
 जैसे ब्याल काल रूप नाजुक नोला स्वरूप
 सोधिके सजीवनी सु सत्रु सूं घटाईये ।
 ब्याल सम जग जाल ज्ञान मत्त मंत्र हाल
 भगवान बुधि बाल अमी सो चटाईये ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

पद

आरती अचल पुरस अबिनासो । घट-घट व्यापक सकल प्रकासी ॥ टेरे ॥
 प्रथम आरती मंदिर बूहारथा । राम राम रट कर मनि कारथा ॥
 दूसरी आरती दीपग जोया । हिरदै प्रेम चांदणां होया ॥
 तीसरी आरती कूंभ भराया । नाम कवल सूँ गगन चडाया ॥
 चौथी आरती चोक बीराजै । जाहां अनहद का बाजा बाजै ॥
 पाँचमी आरती पूरण कांमां । सुरति परसीया केवल रामां ॥
 सेवग स्वामी भया समानां । राम ही राम और नही आनां ॥
 राम-चरण औसी आरती कीजै । परस अम्बर जुग जुग जीजै ॥

२. प्रतीत बोध-पद्य-संख्या ५५ ।

आदि भाग-

दोहा

सत गुर राम दयाल जन, घन आनंद सुखकार ।
 तिनकूं बंदन रामजन, करिहुँ नित निरधार ॥ १ ॥

चौपाई

भज रमतीत राम निरधारा । आनंद घन सुखकार अपारा ॥
 सब सरजे सब देह खपाई । सब सूँ अलपत रहे सदाई ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

जीता सोई जगत में, फिर न जनमै आइ ।
 रामजन प्रतीत सूँ, रहै राम ल्यो लाइ ॥ ५५ ॥

३. तरपत बोध-पद्य संख्या १०० ।

आदि भाग-

दोहा

राम नाम को ध्यान धर, कर प्रहार मत आन ।
 रामजन मन बाचका, वै जन तरपति जान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

तरपत मन बच काइ, बिमौ भोग भावट नही ।

राम-चरन चित लाइ, रामजन औसी कही ॥ १०० ॥

४. बैराग बोध । पद्य-संख्या १५६ ।

आदि भाग-

कर बंदन गुरु रामजन, मन बच काय निधान ।

जाकी करपा भाव हूँ, बैराग बोध परमान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

ज्ञान बिचारै रामजन, गुरु मुख तें सिध पाय ।

धरै सदा बैराग मन, राम राम लिवलाय ॥ १५८ ॥

राम नाम सूँ लिव लगी, तजी बासना आन ।

रामजन यो भाषीयो, बैराग बोध प्रमान ॥ १५९ ॥

[रामद्वारा, उदयपुर]

(६२) राम सागर । रचियता-कबीर । आकार-३" × २'४" । लिपिकाल (या रचना काल) सं० १३४२ (?) यह उक्त आकारवाले, हरे रेशमी जिल्दवाले एक छोटे से गुटके में मिला है । कुल छोटे छोटे १० पत्रों में यह ग्रन्थ समाप्त होता है । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २२ । २४ अक्षर हैं । ग्रंथ चौपाइयों तथा चौपइयों में हैं जिनकी कुल संख्या ८३ है । कबीर की यह एक नवीन रचना खोज में मिली है । अतः हम इसे यहाँ सारी उद्धृत कर देते हैं:-

नेमषार तीरथ (में) करि सनांना । रिषि बिंद सोनक परधाना ॥

करि सनांन मिलि बैठे जाई । हरि पावन का करो उपाई ॥ १ ॥

रिष सब पूछे आपस मांही । उत्तर किनहू आवै नाही ॥

तही समै ताहां नारद आए । कर जोड़ि रिष सो मान बधाए ॥ २ ॥

बंदन करै बीनती ल्यावै । कहो मुनि हरि कूँ कैसै पावै ॥

सकल पाप कैसी विधि जाई । ए रिषजी हम कूँ समझाई ॥ ३ ॥

दान बिना तप साधां नाही । तीरथ हम कहू नही जांही ॥

जिग जोग साधन नहीं करै । अरु बिधि बिनि किए क्यूँ उधरै ॥ ४ ॥

नान बरत हम करै न कोई । इंद्रणी निग्रह हम पै नही होई ॥

करां न कोई देव अराधन । ध्यान मुनि का करा न साधन ॥ ५ ॥

सुनां न सास्त्र पढां न बेद । हरि पावन कईए मेद ॥

मौ सागर तैं उतरै पारा । अरु सहजै पावै मोष दुवारा ॥ ६ ॥

करि हो क्रिपा नारद मुनि देवा । रिष सब करै तुमारी सेवा ।

नारद उवाच-

नारद कहै सुनो रिषराई । सति मानौ मैं कहुं सुनाई ॥ ७ ॥
 सिव के पास असी हम सुनी । सोही बांणी तुम पूछी मुनी ॥
 परवत मोरे है कवलास । तां ऊपर ईसुर को बास ॥ ८ ॥
 पूछै ताहां पारवती सती । तुम मन की बात कहो हो जती ॥
 तुम हो सकल देवन का देवा । सुर नर करै तुमारी सेवा ॥ ९ ॥
 बार बार मैं लागू पाई । तुम ध्यावो सो मोहि बताई ॥
 ब्रह्मादिक मुनि तुम कूँ ध्यावै । जो मांगे सोही सिधि पावै ॥ १० ॥
 परजा सकल अराधन करै । जाका काज सहज मैं सरै ॥
 देव बिस्व का तुम हो साषी । सो सेवग कूँ कहो तुम भाषी ॥ ११ ॥
 तुम कूँ भजै मांगै सोइ पावै । तीन लोक तुमरा जस गावै ॥
 तुम जनम मरण सूरहित हो स्वामी । रूप डिगंवर अर न्हकामी ॥ १२ ॥
 बसती तुम कूँ सुहावै नाही । बास तुमारा जंगल मांही ॥
 जटा रषावो भभूत चटावो । कबहुँक नाना रूप दिषावो ॥ १३ ॥
 कबहुँक नाथ पुलंदर जोगी । कबहुँ बिलासी कबहुँ भोगी ॥
 भांग धतूरा आक आहारी । माया अलपति बोहो बिष जारी ॥ १४ ॥
 कबहुँ तुम बालक ब्रह्मचारी । कबहुँ मोहो सबकी नारी ॥
 करो प्रति पालख सिष्टि सवाई । कबहुँक वसु प्रलै कराई ॥ १५ ॥
 भांजत घड़त बार नही होई । तुम उपरांत और नही कोई ॥
 अकथ कथा तेरी कही न जाई । मैं जाणूँ तुम त्रिभुवन राई ॥ १६ ॥
 तुम ध्यावो सो मोहि देवा । निस दिन करो कूँण की सेवा ॥
 ऐ हम कूँ इजरज अति भारी । कहो क्रिपाल मैं बंदी तुमारी ॥ १७ ॥
 दया करी मोहि भेद बतावो । मेरा मन में उपज्यौ भावौ ॥
 मैं सेवा करि मांग्या दान । मोकूँ कहीऐ तुमरो ध्यान ॥ १८ ॥

श्री महादेव उवाच-

पारवती सूर ईसुर बोल्या । अंतर गति का पड़दा खोल्या ॥
 वो गुप्त कथा है अनत अपारा । जाको कोइक जानै सारा ॥ १९ ॥
 मैं ए कथा न काहुँ कही । गुप्त कथ मेरी मन मैं रही ॥
 तुमकूँ ऐ अब कथा सुनाऊँ । तूँ निज सेवगता तैं सुच पाऊँ ॥ २० ॥

मनसा बाच्या प्यास तुमारै । तब कहबै का हेत हमारै ॥
 अधिकारी बिन कहीऐ नांही । बिन पूछ्यां रहीऐ मन मांही ॥ २१ ॥
 तुम मनसा बाचा सेवग मेरी । म्हमा काहा कहूं मैं तेरी ॥
 अति आतुर करि मांग्या दान । धन पारवती तेरा ग्यान ॥ २२ ॥
 सुण पारवती सतजुग की बात । सब कोई होता तस बिग्यात ॥
 ब्रह्मा बिसन आराधन करता । हरि बिन कथा आन नही धरता ॥ २३ ॥
 सब लोकन कै हिरदे हरिनाम । और धरम हरि बिना निहकांम ॥
 तीरथ बरत सहज मैं करता । हरि धरम की तपस्या (?) ॥ २४ ॥
 इंद्रयी निग्रह हरष न सोग । जिग न करै न साधे जोग ॥
 पाप न करता हरि हित दांना । तीरथ जाइ न करत सनांना ॥ २५ ॥
 और देव की पूजा न होती । बरण अवरण नहीं कोई श्रोती ॥
 भूत प्रेत नहीं सूंण असूंणा । जंत्र मंत्र नहीं कामण टूणां ॥ २६ ॥
 राम जनां की सेवा करता । गुर गोविंद सूं निस दिन डरता ।
 काम क्रोध नही लोम'र मोहा । नां काहू सूं करता द्रोहा ॥ २७ ॥
 आठूं जाम बिमल जस गाता । परम लोक मैं प्रम पद पाता ।
 जुआ मरण का जाहां दुष नांही । सब कोइ जाता अब गति मांही ॥ २८ ॥
 सो गति देवन पावै कोई । जो गति आप भागवती जोई ।
 सो दुल्लभ निज भगति सुनाई । ताहि धरो उर मैं चितलाई ॥ २९ ॥
 तातैं सतजुग का मत लीजे ॥ पारवती ऐह सती सुनीजे ॥
 तू' बल्लभ मेरै अती परीया ॥ सो तोहि कहूं मोहि हरि दीया ॥ ३० ॥
 तुम हरिदैं धरो भगति बिसवासा ॥ ज्यूँ पावो अमरा बासा ॥
 साची बात कहूं बारंगा ॥ अति अघाध प्रलया परसंगा ॥ ३१ ॥
 साचा अखर दोइ सुण ऐही ॥ राम नाम तु सति करि लेही ॥
 मनसा बाचा ल्यौ हरि नाम ॥ आन मता तजिऐ बेकाम ॥ ३२ ॥
 ऐ उपदेस मैं साचा कथा ॥ मरम्या जगत नांव बिन बधा ॥
 कोई कहै तुला चढ़ि दांन दुज दीजै ॥ कोइ कहै जिन्न बंदगी कीजै ॥ ३३ ॥
 कोइ कहै कासी मैं जई बसीऐ ॥ कोइ कहै गया पिंडही मरीऐ ॥
 कोइ कहै प्राग बैष्णी परसीऐ ॥ अपणा पित्र त्रपत सब करीऐ ॥ ३४ ॥
 कोइ कहै नाना सासत्र सुनिऐ ॥ कोइ कहै वेद पुरान ही मनीऐ ॥

कोइ कहै तप करीऐ काया ॥ कोइ कहै सब तजीऐ माया ॥ ३५ ॥
 कोइ कहै कुल ब्राह्मन की पूजा ॥ ऐ बड़ देव और नहीं दूजा ॥
 एक कहै न्यात ब्राह्मन की सेवा ॥ या बिन और नही कोई देवा ॥ ३६ ॥
 ऐ करम करै जम लोक सिधावै ॥ मोष परम पद कोइ न पावै ॥
 जे जे करै सोही पावै ॥ पाप'र पु'न जनम भुगतावै ॥ ३७ ॥
 दुष पावै सो पाप करमां ॥ सुष पावै सो उत्तम धरमां ॥
 ऐ धरम करम का जाण बिहारा ॥ पार ब्रह्म पद इन सू' न्यारा ॥ ३८ ॥
 या मै परम पद नही पावै ॥ ऐ चोरासी माहिमां हि फिरावै ॥
 जब लग हरि हिरदै नही आवै ॥ तब लग मोष कहूं नही पावै ॥ ३९ ॥
 आननि होइ हरि सू' आराधै ॥ दूजै अंग सू' मन नही बांधै ॥
 राम बिना जीव मरम न जैहै ॥ राम बिना जीव दुःष ही पेहै ॥ ४० ॥
 राम बिना साधन सब भूटा ॥ राम बिना मन फिरै न अफूटा ॥
 राम बिना हिरदो सुध नांही ॥ इस बिधि कहत बेद कै मांही ॥ ४१ ॥
 बिध निषेद का बेद पूरांना ॥ हरि सुमरन हरि सेव'न जाना ॥
 ऐक नांव निज सति करि लीया ॥ सुकृत जिन सहज सब कीया ॥ ४२ ॥
 जाके हिरदै है हरि नांम ॥ ताका सहज सरै सब काम ॥
 तां कारण पारवती तुम सुनौ ॥ हरि कौ नांव रेखि दिन मनौ ॥ ४३ ॥
 सुण देवी तत्त बवेका ॥ राम नांम सति साचा ऐका ॥
 पारवती कहै सुनौ सिव देवा ॥ सब ही क्यू' न करै हरि सेवा ॥ ४४ ॥
 नांना धरम जग काहै ध्यावै ॥ सब तजि हरि सरखै किन आवै ॥
 तत्त कष्टा तुम एह विचारा ॥ तौ काहै भरम्यो यूँ संसारा ॥ ४५ ॥
 अरु बोहो बिधि सासतर क्यू' हूवा ॥ अर क्यू' बोल्या जूवा जूवा ॥
 एह जग असै क्यू' भमाया ॥ सब सासतर क्यू' एक न भाया ॥ ४६ ॥
 ऐ सांसा मेरे उपज्या भारी ॥ या कथा सुनावौ इसुर तपधारी ॥

सिव उषाच-

सुन पारवती कथा सुनाऊं ॥ सांसा तेरा दूर गमाऊं ॥ ४७ ॥
 रिषन देव हम मिलि कीया बिचारो ॥ हमहिं न मानै ऐ संसारा ॥
 करि हौं उपाव कोई असै एक ॥ आपही पूजै लोक अनेक ॥ ४८ ॥
 लोक अराध करै हरि कैरा ॥ चोरासी मै नेकन फेरा ॥

हमकूँ कोइ जग मानै नांही । हम देव-रिष का का जग माहिं ॥ ४९ ॥
 रिष देव हम मिलि करि हरि सेवा । तब परसण भो नाराइण देवा ॥
 मांगों देव धूँ तुम कूँ सही । यूँ नाराइण बाचा कही ॥ ५० ॥
 मन की बात देवता कही । जग मैं हमारी पूजा नही ॥
 सो पूजा अप करावो नाथा । दया करो देवो सिर हाथा ॥ ५१ ॥
 तब ही बोल्या देव मुरारी । तुम कूँ पूजू हूँ अवतारी ॥
 राम किसन ओतार ज होई । ताको भेद लहै जन कोई ॥ ५२ ॥
 जब ले ओतार जग बंदी करी । तब देव रिष कूँ पूजै हरि ॥
 ता पीछै पूजे सब कोई । तातैं काहू मुक्ति नहीं होई ॥ ५३ ॥
 देवन कूँ लागा संसारा । साचा हरि सूँ रटत नियारा ॥
 सुन पारवती यूँ भरम उपाया । तुम पूछथा मैं कह सुनाया ॥ ५४ ॥
 ऐक सूनों दूजा परसंगा । जातैं उपजै भरम के अंगा ॥
 मोपै हरिजी मांग्या दान । सिव तुम करो अनत मत आन ॥ ५५ ॥
 मैं तब कही कहीयौ यूँ राम । मो सेवग कूँ फुरमावो काम ॥
 तब हरि कह्यो सुनौ सिवराया । प्रथवी धूँ मोसूँ भरमाया ॥ ५६ ॥
 मोहि कोइ न जाणै ऐसी करो । तुम जग माहि जाई तन धरो ॥
 झूठा सासत्र करो अपारा । अर मोकूँ भूलै सब संसारा ॥ ५७ ॥
 भेद करो बोहौ भरम दिखावो । नाना बिध के धरम चलावो ॥
 मो ताई कोइ सकै नही आई । ऐसी करो आप सिवराई ॥ ५८ ॥
 ऐह दान मांग्या हरि आप । तब मेरा मन मैं मयौ संताप ॥
 मैं जब सब दुनीया भरमाई । आन देव सूँ दीया लगाई ॥ ५९ ॥
 लोभ लाम दुनीया सब फरी । देवत पूज जाचणा करी ॥
 ऐसे सब दुनीया भरमाई । हरि पूरण पद दीऐ भूलाई ॥ ६० ॥
 तब इक राजा मोसूँ कही । जाकै राम बिराजै मही ॥
 माहा भगत जगत सूँ न्यारो । राम भजन ताकै अधिकारो ॥ ६१ ॥
 तब वै राजा ऐसी कही । ब्रह्महत्या सिव तोकूँ मई ॥
 पग पग ऊपर जानू सही । यां मैं झूठ तणक मो नही ॥ ६२ ॥
 तेरो कस्यो कूँण नही मानै । तै हरि धरम कीयौ क्यूँ जानै ॥
 करता भेटि अरु आन बतावै । जम घर जाइ नरंक गति पावै ॥ ६३ ॥
 तब मेरे मन ऐसी आई । अब मैं जाइ लगू हरि पाई ॥

तुम हरिजी मीकूँ भरमायौ । धन राजा जिन ग्याँन बतायौ ॥ ६४ ॥
 मैं जब करी हरि सूँ अरदासो । मोकूँ पड़ी जमाँ की पासी ॥
 हत्या ब्रह्म संसार मोहि लागी । हरि धरम हम भेट्यौ अभागी ॥ ६५ ॥
 बिश्व सगली मैं भरमाई । सो ऐ कम क्यूँ छूटै हरिराई ॥
 ऐसो जप तप धरम बतावौ । इन करमाँ सूँ मोहि छूड़ावौ ॥ ६६ ॥
 माया ऊपर बल तुमरी स्वांमी । मैं नहीं जांणी अंतरजामी ॥
 मोहि वाचा छलीयौ देव मुरारी । मैं बूड़ो बोहो करम ऊपारी ॥ ६७ ॥
 उधरब का कहो कोइ जाप । ज्यूँ कटि है मेरा सब पाप ॥
 अैसेँ ज्वाब मैं हरिसूँ कहीया । तब हरि मोसूँ परसण भईया ॥ ६८ ॥
 मोकूँ मन्त्र दीयो तत ऐक । जि काटै मेरा पाप अनेक ॥
 मन में सुमरण तब रह सोई । तातैं करम लगै नही कोई ॥ ६९ ॥
 सहंसर नांम दीयौ हरि नांम । याकूँ भजो तुम आठूँ जाम ॥
 तब हम कछौ ऐह न्हिचै आई । कदाचि भेद होइ ता मांही ॥ ७० ॥
 तबै बिसन परमात्म देवा । मोकूँ फेरि बतायौ भेवा ॥
 सिव तुम राम मंत्र कूँ ध्यावौ । अंतर गति मैं प्रीत बधावौ ॥ ७१ ॥
 तब एह भेद कछौ हरि आप । मरै मिटै सकल संताप ॥
 जब मैं बोहोत बीनती करी । तुम बिन कूँण उधारैं हरी ॥ ७२ ॥
 राम मंत्र किरपा करि दीन्हौ । सो मैं बोहोत प्रीत करि लीन्हौ ॥
 ता मंतर कूँ आतुर ध्यावै । जामण माहि कभू नही आवै ॥ ७३ ॥
 हम ध्यावै सो ऐह निज भेव । तूँभी कर पाखती सेव ॥
 अंतर जामी अंतर ध्यावौ । सहजै मोष परम पद पावौ ॥ ७४ ॥
 सहंसर नांव मैं भेद विचारा । राम नांम सब ऊपर सारा ॥
 एक नांम तै भए अनेक । राम सुमर ऐ साचो ऐक ॥ ७५ ॥
 राम रमे रम रमी ऐ राम । सोही सारैगा तेरा काम ॥
 सिव ऐ पाखती सूँ कही । नारद मुनि मन जाणी सही ॥ ७६ ॥
 साची करणी नारद करी । सहज सहज आगै बिस्तरी ॥
 नारद रिष कूँ कही सुनाई । सोनक आदि दीए समझाई ॥ ७७ ॥
 सत गुर रामानंद परताप । अंतर हरिजी प्रगटै आप ॥
 कहै कबीर ऐ भेद अपारा । जो सुमरै सो उतरै पारा ॥ ७८ ॥
 सत गुर रामानंद परसाध । अमल भया मन मिट्या बिबाद ॥

कहै कबीर ऐ भेद अघाध । इनमै समझै बिरला साधि ॥ ७९ ॥
 पूरण ज्ञान कष्टौ निज सार । हरि हरि की बाणी निरधार ॥
 सुणै 'रु समझै सीखै सोई । ताकूँ अखै अमर गति होई ॥ ८० ॥
 सूरज उदे ज्युँ तमर नसाई । भरम करम यूँ जाई विलाई ॥
 पारवती सूँ भाग्यौ ईश्व । मनसा बाचा बिसवा बीस ॥ ८१ ॥
 सोही नारद सोनक समझाई । सबै रिषन का भरम गुमाई ॥
 निरमै भया राम ल्यौ लावै । आणंद मंगल प्रेम बधावे ॥ ८२ ॥
 ऐहि ग्रंथ सुनि भरम निवारै । अपणा मन हरि चरणां धारै ॥
 हरि तत प्रेम बध्यौ मन धीर । ग्यानी का गुर कहै कबीर ॥ ८३ ॥
 ॥ इति श्री ग्रन्थ रामसागर संपूरण ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७३) रास पंचाध्यायी । रचयिता-नन्ददास । इसकी कई प्रतियाँ देखने में आईं, जिनमें सबसे प्राचीन प्रति संवत् १७६१ की लिपिकृत है। उसी का विवरण यहाँ दिया जाता है।

आकार-८"८" × ६" पत्र-संख्या ११ । पत्र-संख्या २१४ । इन छंदों का क्रम अध्यायों के अनुसार विभाजित नहीं है पर रचना के पाँचों अध्याय पूर्ण हैं।

प्रथम अध्याय— में कुल १०४ छंद हैं। उदयनारायण तिवारी द्वारा सम्पादित (तरुण भारत ग्रंथावली-सं० ३६) रास पंचाध्यायी (और भँवर गीत-नन्ददास कृत) के प्रथम अध्याय में १३२ छंद हैं। इस ग्रंथ में उक्त प्रकाशित रचना के निम्नांकित ३१ छंद नहीं हैं:-

१२, १४, १७, १८, २१, ३६, ३७, ४४, ४५, ५८, ५९, ७०, ७२, ७३, ७४, ८८, ८९, ९०, १००, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११२, ११३, १२१, १२२, और १२३; । और इस ग्रंथ के निम्नलिखित ३ छंद उक्त प्रकाशित रचना में नहीं हैं:-

नगरि कौ धरम न रझौ पलकति तन चलयौ ठौरते ।

खग मृग गोबद्ध पछ कछ ते रहे कौ रते ॥ ८४ ॥

सुनि गोपनि के प्रेम बचन आंच सी लगी तब हि जिय ।

पघर चलयो नव नेह मीत नव नीत सहस हिय ॥ ८५ ॥

उजल मृदुल बालुका सरस अति सुमग सुहायौ ॥

जमना जू निज करन रंग करि अयन बनायो ॥ ८५ ॥

द्वितीय अध्याय— १०५ से आरंभ होकर १४१ पर समाप्त होता है। इस प्रकार द्वितीय अध्याय में ३७ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ५० छंद हैं। अतः इसमें निम्नांकित १३ छंद कम हैं:—

१३, १४, १६, २३, २४, २५, २६, २७, ३२, ४०, ४६, ४८ और ४९।

तृतीय अध्याय— १४२ से आरंभ होकर १५५ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कुल १४ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २२ छंद हैं। निम्नांकित १२ छंद इसमें (ग्रंथ में) नहीं हैं:—

२, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, २०, २१ और २२।

इस ग्रंथ के निम्नलिखित छंद प्रकाशित रचना में नहीं हैं:—

बुधि जन मन हरनी बानी बिन जरत सबै तिय ।

अधर सुधा सब सहित तन कप्या बहु ज्या बहु पिय ॥ १५२ ॥

अरू पिय तुम्हरी कथा अमृत सब ताप सिरावहि ।

अमरामृत कौ तुछ करै ब्रह्मादिक गावहि ॥ १५३ ॥

अपेरि जिन कर तुम्हरो मोहन मुख अवलो क्यौ पिय ॥

तन की ताप बुझावो रसिक संबिद कोबिद हिय ॥ १५४ ॥

जौ कैसे हुं साज समै सुन्दर मुष देखौ ॥

तौ इह बिधना कूर करि नैन लौ मेघौ ॥ १५५ ॥

चतुर्थ अध्याय— १५६ से आरंभ होकर १७३ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में १८ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २७ छंद हैं, अतः निम्नांकित ९ छंद अधिक हैं:—

६, ६, १०, ११, १२, १३, १७, १८ और २७।

पंचम अध्याय— १७४ से आरंभ होकर २१४ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कुल ४१ छंद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ८२ छंद हैं। इसमें निम्नांकित ४१ छंद नहीं हैं:—

४, ६, ७, ८, ९, १७, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ७४, ७६ और ७९ ।

इस प्रकार इस सम्पूर्ण प्रति में:-

१	अध्याय	में	१०४	छंद	हैं,	प्रकाशित	रचना	में	१३२	छंद	हैं-इसलिये	३१	छंद	कम	है	और	३	अधिक
२	"		३७	"	"	"	"	"	५०	"	"	"	१३	"	"	"	"	×
३	"		१४	"	"	"	"	"	२२	"	"	"	१२	"	"	"	"	४
४	"		१८	"	"	"	"	"	२७	"	"	"	६	"	"	"	"	×
५	"		४१	"	"	"	"	"	८२	"	"	"	४१	"	"	"	"	×

इस प्रति में २१४ छंद हैं प्रकाशित रचना में ३१३ । इस प्रति में १०६ । कम है और ७ अधिक हैं ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(६४) राहत (रहत) भजन निर्वाह । रचयिता-जगन्नाथ ।

आकार-४'५" × ३'१" । पत्र-संख्या ६ । पन्ना-संख्या २६ ।

आदि भाग-

दोहा

जत राखँ जगन्नाथ जन, नर-नारी को होइ ।
 सो माया संसार मैं, स्वरग न संसय कोइ ॥ १ ॥
 क्यूँ हूँ उपजै काम बसि, जत का करै जतन !
 जगन्नाथ जगदीस जग्य, रहत अमोल रतन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सहिजादै साईं सुमरि, चेरी भजि हरि चरण ।
 जगन्नाथ ते जुगल....., मेटे जामण मरण ॥ २८ ॥
 उद्धरैं उद्धर सही सौ, सुमिरि सने ही राम ।
 जगन्नाथ जगनाथ मैं, निहचल ते निहकाम ॥ २९ ॥

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(६५) वाणी संप्रह । आकार-६'२" x ६" । लिपिकाल "संवत् १८२५
बृहस्पतिवार, शुक्ल पक्ष, पौष सुदी १२" । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

क्र०सं० रचयिता- रचना	पृष्ठ
१. दादूवाणी	१-१२६
२. कबीर-साखी, पद, रमैणी	१२६-१८१
३. नामदेव ,,	१८१-१९४
४. रैदास ,,	१९४-२०४
५. हरदास ,,	२०४-२२०
६. गरीबदास, अनमै प्रबोध	२२०-२३५
७. रामानंद पद	२३५
८. सुखानंद ,,	२३५
९. आसानंद ,,	२३६
१०. कृष्णानंद ,,	२३६
११. धना ,,	२३७
१२. सेना ,,	२३७
१३. पीपा ,, साखी	२३७-२४०
१४. सोभ्ना ,,	२४०-२४२
१५. परमा ,, साखी	२४२-२४३
१६. सधना ,,	२४३-२४४
१७. कमल ,,	२४४
१८. रांणी पद	२४४
१९. छीतम ,,	२४४-२४५
२०. बहबल ,,	२४५-२४६
२१. काजी महमूंद ,,	२४६-२४८
२२. सेख बहावदी ,,	२४८-२४९
२३. तिलोचन ,,	२४९
२४. भवन ,,	२४९-२५०
२५. अंगद ,,	२५०
२६. मुकुंद भारणी ,,	२५०

२७. नापा	„	२५०-२५१
२८. बिद्यादास	„	२५१
२९. रंगा	„	२५२
३०. सांवलिया	„	२५२
३१. देश्रम	„	२५२
३२. बीसा	„	२५२
३३. मतिसुंदर	„	२५२
३४. सोम	„	२५२-२५३
३५. नरसी	„	२५३
३६. कीता	„	२५३
३७. कर्मचंद	„	२५३-२५४
३८. माधौजगनाथी	„	२५४-२५५
३९. परमानंद	„	२५५-२५८
४०. सूरदास	„	२५८-२६५
४१. सूर पच्चीसी ग्रन्थ-पद		२६५-२७२
४२. कान्हा	पद	२७२-२७९
४३. बषना बांगी, साखी		२७९-३१४
४४. गोपाल	पद	३१५-३३०
४५. टीला	„	३३०-३३५
४६. जगजीवनदास	„	३३५-३३८
४७. नानक	„	३३८-३४२
४८. गोरषनाथ	पद	३४२-३६१
४९. चरपहनाथ	शब्दी	३६१-३६४
५०. बाल गुन्हाई	„	३६४
५१. सिध गबरी	„	३६४
५२. देवल	„	३६४
५३. दत	,	३६४
५४. गोपीचंद	„	३६५-३६६
५५. जालंघ्री पाव	„	३६६
५६. बालनाथ	„	३६६

५७. धूर्धलीमल ,,	३६६-३६७
५८. चौरंगनाथ ,,	३६७
५९. सिध घोडाचोली,,	३६७-३६८
६०. सिध हस्वाली ,,	३६८
६१. मीडकी पात्र ,,	३६८
६२. चुणकरनाथ ,,	३६८
६३. अजैपाल ,,	३६८
६४. पारबती ,,	३६८
६५. महादेव ,,	३६९
६६. हणवत ,,	३६९-३७०
६७. सती कणोरी ,,	३७०
६८. पृथ्वीनाथ ,,	३७०
६९. ग्रन्थ साध प्रख्या	३७०-३७३
७०. मोहनदास पद	३७३-३८०
७१. जैमल साखी	३८०-३८७
७२. दूजणदास पद	३८७-३८८
७३. चैन साखी	३८८-३९१
७४. साधू पद	३९१
७५. जगा ,,	३९१
७६. केवलदास कड़वा	३९१-३९२
७७. हरिस्यंघ शब्द	३९२
७८. श्रबंगी शब्द	३९२-४३७
७९. सुन्दरदास-ज्ञानसमुद्र	४३७-४५०
८०. छीतरदास-सवैया	४५०-४५३

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(६६) विचारमाला । रचयिता- नरोत्तमपुरी । आकार-८" x १०" ।

पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ४२ । रचनाकाल-संवत् १७२६ ।

आदि भाग-

दोहा

नमो नमो श्री रामजू , सतचित आनंद रूप ।

जिन जान्यो जग स्वप्नवत, नासे भ्रम तम कूप ॥

राम भया सत गुरु दया, साधु संग जब होइ ।
तब प्राणी जाँनै कछु, रखो विषे रस भोइ ॥

ग्रंथकार परिचय-

पुरी नरोत्तम मित्र वर, रखो अतीत भगवान ।
वरनी मालविचार मैं, ताकै कहै प्रमान ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

स्वप्न राग भयो रंक, प्राण तजे तहां लु धाव से ।
जागे बह पर जंक, कहां विस्मय कहां हर्ष पुनि ॥

दोहा

आस्तिक नास्तिक ना कुछ, नहि जहां एक र होय ।
लघु दीर्घ नहि गुण अगुण, न चेतस्वरूप मय सोय ॥

[अन्ताणी संग्रह]

(६७) विवेक चिन्तामणि । गुटका विविध संग्रह (२६।२१) में संग्रहीत । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-संख्या ३१ । पद्य-संख्या- ३६ ।

आदि भाग-

आप निरंजन है अविनासी । जिन या बहू बिध सिष्ट प्रकासी ॥
अब तू पकड़ उसीका सरणां । समझ देख निश्चै कर मरणां ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

जूदा कोई रहण न पावै । होय अमर ज्यूं ब्रह्म समावै ॥
सुंदर ओर कहूं न उपरणां । समझ देख निश्चै कर मरणां ॥ ३६ ॥

(६८) बीस हरमाण जिनस्तवन । रचयिता-नयविजय । आकार- ६'२" x ४" । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या १२१ । इसमें निम्नलिखित जिन-स्तवन हैं:-

क्र० सं०	स्तवन	पद्य
१.	श्री मंधर जिन स्तवन	७
२.	भुग मंधर ,, ,,	६
३.	बाहु ,, ,,	५

४. सुबाहु जिन स्तवन	५
५. जात स्वामी जिन भास	६
६. सुबाहु ,, ,,	७
७. रिष भासन ,, ,,	७
८. अनंतवीर्य स्तवन	६
९. सुरप्रत जिन स्तवन	५
१०. विशाल स्वामी जिन भास	५
११. अनंतवीर्य जिन स्तवन	६
१२. चंद्रानन ,, ,,	७
१३. चंद्रबाहु ,, ,,	७
१४. भुजंग ,, ,,	६
१५. ईश्वर ,, ,,	५
१६. नेमिप्रत ,, ,,	५
१७. महाजैन ,, ,,	६
१८. देव जस स्वामी ,, ,,	७
१९. ,, ,, , ,, ,,	७
२०. अजितवीर्य ,, भास	६

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६६) वैराग्य शतक । रचयिता--मुनि गुणचंद । आकार-
६'४'' × ४'८'' । पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या १३३ । रचना काल-संवत् १८७०,
आषाढ़ सुदि २ बुधवार । इसमें वैराग्य शतक की भाषा में टीका की गई है । भाषा-
राजस्थानी । इसमें कुल ५ अध्याय हैं । एक अध्याय में २६, २ अध्याय में २५,
३ अध्याय में २१, ४ अध्याय में २२ और ५ अध्याय में १६ पद्य हैं ।

आदि भाग-

श्री आदीश्वर नित नष्ट, बांझित सुख दातार ।

मंगल कारक इण गुणों, धरम तणा करतार ॥ १ ॥

श्री सद गुरु प्रणमी करी, धर्म तणो करि राग ।

भाषा करि पंच ढालियौ, कहूं शतक वैराग ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

इहां भाषी वैराग्य नी, पंचमी ढाल उदार ।
 वैराग्य शतक अनुसार थी, कहियो ए अधिकार ॥ १६ ॥
 गुणचंद मुनि कहै प्राणियां, धारो धर्म सनेह ।
 प्रभूचंद ने आग्रहे, रचनो कीधी एह ॥ १७ ॥
 संवत नम मुनी वसु मही (१८७०), सुदि आसाठ उदार ।
 द्वितिया तिथि बुध वासरें, वाणारसी मभार ॥ १८ ॥
 भणसी गुणसी एहने, जैन धर्म सू' राग ।
 दिन दिन अधिको तेहने, उपजसी वैराग ॥ १९ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७०) संग्रह । आकार-८" x ६" । लिपिकाल-‘संवत् १७६२ वर्षे
 शाके १६५७ मिति भाद्रवा विद ७ बुधवारेण लिखितं ब्राह्मण पोहकरणा बिसालधा
 लालचंद का आत्म पठनार्थम् ।’ यह प्रति संवत् १७३५ की प्रतिलिपि है ।
 इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:-

१. भागवत दशम स्कन्ध भाषा । रचयिता-नन्ददास ।
२. रास पंचाध्यायी । रचयिता-नन्ददास ।
३. विरह मंजरी । रचयिता-नन्ददास । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १६०:-

आदि भाग-

दोहरा

परम प्रेम उछलनइ कुं, बल्यौ जु तन मन मैं ।
 ब्रजबाला बिरहन मई, कहति चंद सौ बैन ॥ १ ॥
 अहो चंदा रस-कंद तुम, जातु आहि उहि देस ।
 द्वारामति नंद-नंद सौ, कहियो बलि संदेस ॥ २ ॥

चौपई

चले चले तुम जइयो जहाँ । बैठै हौहि सांवरे तहाँ ॥
 निधरक कहियो जिय जिनि डरौ । हो हरि ! अब ब्रज-अवनि फरौ ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

दोहरा

अब्र भौंति ब्रज कौं बिरह, बनै न काहू नंद ॥

जिनकौ मित्र बिचित्र हरि, पूरन परमानंद ॥ १६० ॥

४. एकादश भागवत की कथा । रचयिता-संतदास ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(७१) सभाय । रचयिता-अज्ञात । आकार-६'५" × ४'३" ।

पत्र-संख्या ५ । विषय-जैन-धर्म सम्बन्धी ८ स्वाध्याय ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७२) सत पुरुषां का गावा का सबद । रचयिता (सप्रह कर्ता)-

तुरसीदास । पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या ५४ ।

आदि भाग-

राग गौरी

मन रे, ये तेरा उनमानां—

हरि रस छाड बिषै रस मातौ, तो भी माया उलकानां ॥ १ ॥

श्रवण दवारै राग आहारी, नैनां रूप लुमानां ॥

सम रस इंद्री बिषै बिचारै, क्यूं प्रगटया क्यूं छानां ॥ २ ॥

नाना गंध नासा कर भावै, षटरस रस ना खानां ॥

राजस कै छक छक्यौ डोलै, जैसे फरत दिवानां ॥ ३ ॥

श्रवण तुचा नै नासक रसना, पंच बिषै लपटानां ॥

मिनषां जनम पायके भूंदू, हरि की भगति भुलानां ॥ ४ ॥

चित कपटी कुबधी अर लोमी, अपणां गणै न आनां ॥

चंचल चपल चुगल बौहो रंगी, आप माहि बंधानां ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

आज स्याम देखे दधि पीवत है, सररररर । आज स्याम...टेर

कर सूं कर पकरी मोहन नै, अरी चुरी मोरी गई करररर ॥ १ ॥

नंद महर के भक भेलन मै, मोती बिखरे खररररर कदेह ।

जो सिख मनसा बाचा मिलै, तन मन अर पर लेह ॥ २ ॥

× × ×
 बिष मन दीना व जरजरी, बहै उंडी अति धार ।
 ऐक मना तर नीसरथा, दूजा हूबण हार ॥ ३ ॥
 अगम देस अमरापुरी, जहाँ हरिजन का बास ।
 तहाँ कबीर (?) घर कीया, मटी मरण की आस ॥ ४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७३) सतसार । रचयिता-मुरलीदास । पत्र-संख्या ४ । पद्य-संख्या-

७४ ।

आदि भाग-

स्तुति

प्रथम स्तूति गुर राम कूँ, जासु सब परकास ।
 भूत भव कि ब्रतमान सब, तन को मूरलीदास ॥ १ ॥

दुहा

कहूँ ग्रन्थ इक सार जूँ, सुबज्यौ होइ असत ।
 मुरली भजीए राम कूँ, परिहरि सब दुरमत्त ॥ २ ॥

चौपाई

प्रथम सत सोही राम उचारै । दूजौ सत सांच उरि धारै ॥
 तीजौ सत सौ बाटिर खाई । सौ असती प्रम पद पाई ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

असत अर ग्रह चार, तीजौ ग्रिहचाड़ी सही ।
 एक असत... सार, पाखंड प्रभु मानै तहीं ॥ ३६ ॥
 ग्रिहसत होइ भव पार, ग्रिहचाड़ी अधबिचि रहै ।
 ग्रिहचारी भौ पार, पैली सुख प्रापति नही ॥ ३७ ॥

[रामद्वारा, धोलीबावड़ी, उदयपुर]

(७४) सनेह लीला । रचयिता-मोहनदास । इसकी एक प्रति का विवरण भाग एक १ (१५३) में दिया गया है जिसमें रचयिता का नाम 'रसिकराय' निम्नलिखित दोहे के आधार पर दिया गया है:-

जो गावै सीखै सुणे, मन कम वचन सहेत ।
 रसिकराय पूरण कृपा, मन वाञ्छित फल देत ॥ १२० ॥

उक्त दोहे में कवि ने 'रसिकराय' से श्रीकृष्ण से अर्थ लिखा है, जो अर्थ करने से स्पष्ट हो जाता है। परन्तु, श्रीमेनारिया ने रचयिता से ही उसका अर्थ ले लिया है जो अशुद्ध है। मन वांछित फल देने वाला 'रसिकराय' है। अतः 'रसिकराय' ग्रंथ कर्त्ता नहीं हो सकता। हमें इसकी ये दो प्रतियां मिली है :—

१. आकार-७ $\frac{1}{2}$ " × ६ $\frac{1}{2}$ " । पत्र-संख्या १० । पद्य-संख्या १३० । इसमें भी उपर्युक्त दोहा है। परन्तु उसकी क्रम संख्या १२० न होकर १२७ है। प्रति बहुत जीर्ण है।

[अन्ताणी संग्रह]

२. आकार-११" × ५ $\frac{1}{2}$ " । पत्र १३ । पद्य-संख्या १२५ । लिपिकाल संवत्-१६३१ जेष्ठ कृष्ण १५ भृगुवार । लिपिकार-रतनदास । इसमें रचयिता का नाम मोहनदास दिया हुआ है। इसमें भी प्रथम भागवाला दोहा है। इन दोनों प्रतियों का अन्तिम भाग इस प्रकार है:—

नासत सकल क्लेश पुनि (कों १), सुनत बढत (अरु उपजत १) मन मोद ।

युगल (जुगल १) चरन मकरंद मन, पावत परम विनोद । (१) १२६ । (२) १२४ ॥

प्रति (१) भमर गीत कौंसो पढ़ै, सुनै सकल चितलाय ।

इच्छा मनि की पूरवै, श्री राम कृष्ण सहाय ॥ १३० ॥

प्रति (२) श्री मुकंद मन मधुप जहै, सकल संत अनुराग ।

जसुधा प्रेम प्रवाह में, परे रहत बडभाग ॥ १२५ ॥

[ब्रजलाल वैरागी, भींडर]

(७५) सन्तदास वाणी संग्रह । इनकी रचनाएँ कई संग्रहों में मिलती हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख इस प्रकार है:—

प्रति- १. आकार-५" × ३" । लिपिकाल-संवत् १८७६ । इसमें सन्तदास की अण्णमै वाणी के १० अंग, ५६५ साखी; ४ रेखता और २ पद हैं । इसके अतिरिक्त इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:—

१. रामचरणजी की अण्णमै वाणी, अनमौ-विलास, सुखविलास, ग्रन्थ नांव प्रताप, शब्द प्रकाश, चिंतावणी, प्रथम रेखता, किवत और राग चरचरी ।

२. परमहंस सूरतरामजी की वाणी (साखी), कुण्डलियाँ, रेखता, सबैया. भूलणा, किवत (विभिन्न अंगों में), कका बत्तीसी, चिंतावण बोध, पदराग चरचरी, चंद्राणा (विभिन्न अंगों में), सुबोध प्रकाश और नांव बत्तीसी ।

३. साधां दूल्हरामजी का सबद ।
४. साधां रतनदासजी का प्रसंगी दोहा १६६
५. सरबंगसार का फुटकर सबद ७३६, इसीमें नवधा भक्ति, प्रेम लक्षण निरूपण, साखीदास की चौपाई, समय सार नाटिका का किवृत, अठारा नातां कौ ब्यौरी, मुरलीदास कृत ग्रंथ सतसार, सूर, मीरां और कबीर के महत्त्वपूर्ण पद हैं ।
६. प्रह्लाद चरित्र—जनगोपाल
७. मोहमरद की कथा—जगन्नाथ, तुलसीदास का शिष्य । संवत् १७७६ कार्तिक विद १२ सोमवार ।
८. हरिचंद सत—ध्यानदास । इसका लेखन काल इस प्रकार है:-

उदध दौत करि लीजिये, लेखन भार अठार ।

ध्यानदास वसुधा लिखे, भगवंत भगति अपार ॥

॥ संवत् १८२७ ॥

९. प्रसन्नसिंहगार—सेवादास कृत, गाजी गिरधरदास के शिष्य ।

१०. एकादस की ध्याई

११. कबीर की साखी ।

प्रति-२. आकार-६'५" × ४'५" । पत्र-संख्या-२१८ । इसमें भी निम्नलिखित रचनाएँ संग्रहीत हैं:-

१. संतदास की अणमै बाणी । पत्र-संख्या १४ । पद्य-संख्या १२ ।
२. रामचरण की अणमै बाणी, गुर म्हमा ग्रन्थ, नांवप्रताप, सबद प्रकास, चिंतावाणी, मनखंडण आदि ।
३. मुरलीराम की बाणी
४. संग्रामदास की बाणी

प्रति-३ । पत्र-संख्या ४४ ।

(१) अणमैबाणी के अंगों की विस्तृत सूचि इस प्रकार है:-

(१) १. गुरुदेव कौ अंग पद्य १ से	६६
२. गुरु सम्रथाइ कौ ,, ,, ७० ,,	७१
३. सुमरण ,, ,, ,, ७२ ,,	१३६
४. नांव निरणां ,, ,, ,, १४० ,,	१६०
५. जीव ,, ,, ,, ,, १६१ ,,	१६५

६.	नांवि महर्मा	,, ,, १६६ ,,	१६२
७.	जीव	,, ,, १६३ ,,	२०१
(२) ८.	साध-	,, ,, १ ,,	५२
९.	,, महर्मा	,, ,, ५३ ,,	५५
१०.	,, पारख	,, ,, ५६ ,,	६०
११.	,, परमाधी	,, ,, ६१ ,,	६७
(३) १२.	उपदेस-	,, ,, १ ,	५४
(४) १३.	चिंतावणी	,, ,, , १ ,,	१२०
(५) १४.	टेक-	,, ,, १ ,,	१८
(६) १५.	साध संगति	,, ,, १ ,,	१६
(७) १६.	भगति द्रोही	,, ,, १ ,,	८
(८) १७.	जिग्यासी	., ,, १ ,,	६
(९) १८.	?	,, ,, १ ,,	१०

(२) रेखता-४

(३) स्तुति के पद २

आदि भाग-

अणमै पद परकासिके, दाइक सत गुर राम ।

अनंत कौटि जन साहि की, ताहि करूं परंनाम ॥ १ ॥

अंग ॥ सह गुर का ऐकौ सबद, मन कोई लेवै मानि ।

तो सहज होत है संतदास, मुसकलि सूं आसानि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सीस दीयां सब को कहै, भलां भलां जग माहि ।

राम भजन बिनि संतदास, सदगति पहुँचै नाहि ॥ ७ ॥

राम नाम का मोरछा, सत गुर दिया बताइ ।

अब खेत न छोड़ै संतदास, जौ तगा-तगा होइ जाइ ॥८॥ अंग १० । साखी ५६३॥

ग्रन्थकार का विशेष परिचय—

छंद पद्धती

नम्र दांतडै मय् संतदास । राम नाम उर दृढ़ उपास ॥

निस दिन रहै राम तज आस । ररंकार ढाप सोमंत जास ॥

तज भरम क्रम आन उपास । रह जल कैवल ज्यूँ राग उदास ।
अणमै मुख उचारत बानी । सुनत नर लहे सुख खानी ॥ १ ॥

छंद शिखरण

सिष्य तास कपाराम है, सो भये मुक्ति-धाम है ।
रटै रैन-दिन राम है, न और कोई काम है ॥ २ ॥

x

x

x

छंद नराज

उन सिष्य मान ज्यूँ उदोत जग मानिये ।
द्वितीय ब्रह्म रूप रामचरण जानिये ॥
प्रसिद्ध जन महु अनंत जीव तयार है ।
महिमा अनूप जाकी कैसे पावै पार है ॥
अद्वैत मत उधार के द्वैत कूँ उखारयो है ।
अहं मम राग द्वेष देहि भाना (१) डारयो है ॥
तीन गुण जीत के ज मेटी सब भीत है ।
काटी मोह जाल सब बिचरे नचीत है ॥

x

x

x

छंद निसाणी

उन सिष्य जी राम सेवगजी राम नाम एक गायंदा ॥
काटी जग-जाला दीन-दयाला निद्वंद्व विचारायंदा ॥
सह सुचरणा जामण-भरणा भेट 'र ध्यान धरायंदा ॥
राम उपासी ब्रह्म विस्वासी तेजवान बड भायंदा ॥
इती करारी जगत न यारी कनक बाम हटायंदा ॥
भये प्रसिद्ध सब सिष्य मध्य अणमै मुख गायंदा ॥
सुन अणमै बानी नशै अघ खानी जग मन हुलमायंदा ॥
ज्ञान की छोलं मुक्त अमोलं दे भव दुःख (तुरत) मिटायंदा ॥
सिष्य अनंता मत के मंता राम को ध्यान धरायंदा ॥ ६ ॥

चौपाई

तास सिष्य मए पूरणदाता । राम नाम के ब्रह्म उपासा ।

बूँ जल-कवल रहे जगमाही । बैर भाव जग राग न जाही ॥ ११ ॥

× × ×

मनहर छंद

तास सिन्धु जानू ऐक सांची उन गही टेक ।

बड़े तेज बुद्धिवान, नाम श्री नरस राय है ।

सील संतोष जलीयां राम-रस मुख पीयां

छंद उपाधि भेट सारी भजै नित्य राम है ॥

काछ द्रढ मत द्रढ उर माही ज्ञान द्रढ

कोऊ आवै सरण ताही देत मुक्ति धाम है ।

सो है दीन के दयाल मोकूँ कीयो है निहाल

अैसा गुरुदेवजी कूँ बंदै करुणाराम है ॥ १३ ॥

दोहा

ता सिष करुणाराम है, रचे जीन यह छंद ।

गुरु संत कृपा करो, काटो मम भव बंध ॥ १४ ॥

× × ×

चरण सरण मोय दीजिये, काट जगत की पास ।

नराराम म्हराज के, चरण कवल की आस ॥ १७ ॥

× × ×

बरष उकीसा में भयो, भयो स्वैत सब केश ।

सो देख चिता चित भई, जरा दियो संदेश ॥ २ ॥

× × ×

मनहर

शशि^१ ग्रह^१ बेद^४ शशि^१ संवत शशि^१ बेद^४ षट^६

आसाढ शुक्ला सप्तमी^७ अमृत बेला जानिये ।

संसार असार लख तज्यो जान स्वान भख

रविवार सत गुरु सरणो लीयो मानिये ॥

उदीयापुर सुनाम रामद्वारा म धाम

तपे श्री नराराम अैसी ओपमा को मानिये ।

श्रीपमा स्वरूप आप भेटथो मोर भवताप

करुणाराम नाम दीयो सत गुरु जानिये ॥ १ ॥

चौपई

बरष शशि^१ ऋषि^७ उमर माही । जगत जस रणुं लीयो आई ॥

श्री त्रसराम कृपा कीनी । दियो राम भव मय हर लीनी ॥

मनहर

संबत् शशि^१ ग्रह^९ जानू साल नैत्र^२ बेद^४ मानू

माघ मास ऋतु बसंत सुम लग्न जानीये ।

जनम उत्सव भयो सावा पान (!) दिन गयो

हर्षित सब नारी नर परवार जानीये ॥

जनम नाम कढ़ायो कृष्णलाल सुभ पायो

देश हाडोती नम्र कोटो रामपुरो मानिये ॥ ६ ॥

×

×

×

संबत् अंक उलटीये, बेद^४ बेद^४ शशि^१ ग्रह^९ ।

माघ ज शुक्ला पंचमी, रबी पूर्ण भयो यह ॥ ८ ॥

सहर उदेपुर जानिये सर पीछोला तीर ।

जहाँ राम को धाम है, संतन की अति भीर ॥ ९ ॥

नागा नगरी निकट है, श्रीबड रामद्वार ।

तहाँ लिख्यो यो गोडको, करुणाराम विचार ॥ १० ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(७५) सरबंग सार । रचयिता-नवलराम । आकार-७'६" × ५'६" ।

पत्र-संख्या ४२६ । रचना काल सं० १८३४ । लिपिकाल-सं० १६०७, फागुण सुद-३, बुधवार । लिपिकार-रामदास । इसमें विविध संतों के मत सिद्धान्त, विचार, भावना आदि को लेकर संत साधना सम्बन्धी ४० विषयों का प्रतिपादन किया गया है । यह विविध संतों की वाणियों का सार ग्रन्थ है । लेखक का उद्देश्य आदि भाग में इस प्रकार दिया गया है:-

कुण्डलिया

सत गुरु मुझि पे मेहरि करि, बगसौ बुद्धि विचार ।

अबंगसार ए ग्रंथ जो, ताकौ करुं उचार ॥

ताको करूं उचार, साखी संता की ल्याऊं ।
 उकति जुकति परमाण, और अतिहास सुनाऊं ॥
 नवलराम सरणै सदा, तुम पक्ष हिरदै धरि ।
 सत गुर सुभि महारि करि, बगसौ बुद्धि विचार ॥

किवत

बगसौ बुद्धि विचार, सुरति धरि रहै जु मेरी ।
 करूं ग्रंथ सरबंग एक धरि साखि घनेरी ॥
 सत पुरषां का सबद सोधिकै देस मिलाऊं ।
 सत गुर के परताप उकति सौ अंग बणाऊं ॥
 जुगति जुगत निरणै करूं भव तिरणै की रीति ।
 नवल जगत कूं ना रुचै करै ममोषी प्रीति ॥ २ ॥

दुहा

अनंत कोटि जन सिर तपै, राम चरण उर मांहि ।
 आन भरोसो आन बल, नवलराम के मांहि ॥ ३ ॥
 राम निरंजन संत जन, सत गुर दया सुसंग ।
 जिनकै बाल बुधि सूं करूं, सुधा समंद अंबंग ॥ ४ ॥
 प्रथम स्तुति बरनन करूं, आगे और विधान ।
 अधि-मोचन ए ग्रंथ जू, ज्यों 'तिम-मोचन मान ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

भरमी करमी लखि बिनां, बाचिक बिषी असाध ।
 ताकूं ए भावै नहीं, सुणि कै करै विवाद ॥ ११५ ॥
 वाद विवाद निवारिए, साधू सब्द विचार ।
 नवल दोस हम कूं नही, संता भाषे सार ॥ ११६ ॥
 सार रूप ए ग्रंथ है, अरथ जुगति ता मांहि ।
 संस्कृत का श्लोक है, बाणी भाषा मांहि ॥ ११७ ॥
 साध सब्द गति अगम है, मैं काहा जानूं मेव ।
 नवल हिरदै जन प्रगटे, ग्रंथ भयौ तब एव ॥ ११८ ॥
 मेरी कुछि सरधा नहीं, सतगुर कपा कीन ।
 साधू रामदयाल सिरि, नवल मए प्रवीन ॥ ११९ ॥
 सत संगति सुम स्वाति सुख, दुख मिटावन जोइ ।

नवल सरणि गुरदेव की, सब ही कारज होइ ॥ १२० ॥
 बीतराग निज ब्रह्म जू, रामचरण कूँ जोइ ।
 नवल सरणि निज तास की, ग्रंथ बनायो जोइ ॥ १२१ ॥
 घटि बधि कोई संकला, अर्थ भेद जो होइ !
 सब जन छिम्यां कीजियौ, मै सरनागति तोहि ॥ १२२ ॥
 मेरी बुधि अति तुच्छि है, तुम्हारे सबद अपार ।
 नवल कहै तुम महरि सूँ, उपज्यौ एह बिचार ॥ १२३ ॥
 साहिपुरा निज नम्र मधि, सतगत अति सुम भाम ।
 नवल क्रिया गुरदेव की, श्रबंगसार ग्रंथ नाम ॥ १२४ ॥

सोरठा

संबत सौ एहजानि, अठारासै चौतीस जू ।
 पौस बुद्धि परमान, चतुर्दसी रविवार कूँ ॥ १२५ ॥

ग्रन्थ की विषय सूचि:—

१.	निर्गुण ब्रह्म गुर संत निरूपण	शब्द	७८	७८	पद्य
२.	राम महिमा सत विचार	,,	१६१	३	,,
३.	गुरु लक्षण निरूपण	,,	७१	११०	,,
४.	सिख पारख निरूपण	,,	३६६	१२५	,,
५.	काम सकाम भक्ति निरूपण	,,	४८०	८१	,,
६.	सरूप भक्ति निरूपण	,,	५३१	५१	,,
७.	त्रेगुण निज मूल भक्ति निरूपण	,,	५६५	६४	,,
८.	नवधा भक्ति प्रेम लक्षण ,,	,,	६६०	६५	,,
९.	सुमरण नांव ,,	,,	७७५	८५	,,
१०.	,, टेक पति ,,	,,	८५६	८४	,,
११.	सुमरण नांव महमां ,,	,,	८६२	८३	,,
१२.	,, ,, महातम ,,	,,	१०३५	७३	,,
१३.	उत्तिम भक्ति ग्यान ,,	,,	११२०	८८	,,
१४.	बंद मोखि सुम असुम बासना निरूपण	,,	११६२	७१	,,
१५.	जग दूषण बैराग निरूपण	,,	१२८३	६१	,,
१६.	अजचीन बैराग अजगरी भवर त्रि ,,	,,	१३५०	६२	,,

१७. सन्यास ज्योग सुध बैराग निरूपण	„	१४५८	८३	„
१८. लखि बैराग भेष निरूपण	„	१५३५	८७	„
१९. अडग बैराग खिम्य निरूपण	„	१६५५	८०	„
२०. संत महिमा निरूपण	„	१६२८	८३	„
२१. साध लखिण „	„	१७८६	९१	„
२२. सीत प्रसाद महमा निरूपण	„	१८६८	१०६	„
२३. जीव दया निरूपण	„	१९६३	६५	„
२४. अधम खय कारण दास लखिण निरूपण	„	२१३०	६७	„
२५. राम त्रिमूख कथन निरूपण	„	२२१७	८१	„
२६. कुसंग लखिण निरूपण	„	२२६३	८३	„
२७. परधन पर त्याग जोग करम धरम „	„	२३६८	८३	„
२८. कीम खंडण निरूपण	„	२४६३	१२५	„
२९. सील सुभ्रम „	„	२६५६	१६३	„
३०. माया खंड आसालोभ निरूपण	„	२७४३	८३	„
३१. माया खंड तत्त असत	„	२८५२	१०६	„
३२. काल चिंतामणि निरूपण	„	२९८०	१२२	„
३३. मय चिरत निरूपण	„	३०६१	८१	„
३४. भ्रम भेद निरूपण	„	३१३५	७४	„
३५. भ्रम भेद खंडण मनसा तीरथ निरूपण	„	३२६४	१२६	„
३६. साध महिमा निरूपण	„	३३८१	८६	„
३७. साध पारख निरूपण	„	३४३६	८८	„
३८. लखि अलखि पिंडत पारिख निरूपण	„	३५६२	१३६	„
३९. दर्शन लखि अलखि निरूपण	„	३७१५	१२३	„
४०. आन भ्रम खंडन भक्ति मंडण निरूपण	„	३७६४	७६	„

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७६) सिद्धान्त बोध । रचयिता-महाराजा जसवंतसिंह । आकार-

६१' x ५३३'' । पत्र-संख्या ४५ । पद्य-संख्या १२ ।

[अन्ताणी संग्रह]

(७७) सिद्धान्त बोल । रचयिता-अज्ञात । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या ६६ दोहे और ३६३ ढाल ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७८) सिद्धान्त सार । रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह । आकार-६'' × ५ $\frac{३}{४}$ '' । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १७६ ।

[अन्ताणी संग्रह]

(७९) सुन्दरदासजी सवैया । रचयिता-सुन्दरदास । प्रति १:- आकार-४'३'' × ३'६'' । पत्र-संख्या ५६ । पद्य-संख्या ११४ ।

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

प्रति२-आकार ६'५'' × ४'' । पत्र-संख्या १८० । पद्य-संख्या ७६५ । इसीके साथ दादूदयाल की वाणी है जिसकी पत्र-संख्या ३४६, पद्य-संख्या २५०० और लिपिकाल सं० १८४६ है:-

नवसे नवसे कहते हैं, बीस बीस लै और ।

नव ऊपरि फागुन सही, एकादशी गुर भौर ॥

[चुन्नीलालजी दादूपंथी, बड़ी ब्रह्मपुरी, उदयपुर]

(८०) सूरतरांम वाणी संग्रह । रचयिता-जन सूरतरांम । इसकी कई प्रतियाँ मिलती हैं । सूरतरांम की रचनाएँ रामद्वारों के कई ग्रन्थों में बिखरी पड़ी हैं । कहीं-कहीं सब एक साथ संग्रहीत भी मिलती है । रामस्नेही पंथ की रचनाओं की एक विशेषता यह है कि उनकी रचनाओं के शीर्षक बहुधा छंदों के नाम पर मिलते हैं । अतः उन्हें एक ही रचना के अन्तर्गत नहीं मानना चाहिये । यह परम्परा कबीर की रचनाओं साखी, अलिफ नामा, राग फगुआ, बिचार माला, शब्द, हिंडोरा, रेखता आदि के समान विकसित हुई है । जैसे-साखी, ककाबत्तीसी, रागमाला, शब्द, रेखता, कुण्डलियाँ, कवित्त आदि । सूरतरांम की रचनाओं के एक संग्रह का विवरण यहाँ दिया जाता है, जिसका आकार ६'५'' × ४'' है ।

१. बांणी (साखी) । पत्र-संख्या २७ । अंग ३५, साखी २६ ।

आदि भाग-

स्तूति का छंद

नमो अमापं नमौ अथापं नमौ नमस्ते परमदेव ।
 नमौ अजन्मा नमौ सबनमां नमौ नमस्ते नां छेव ।
 नमौ अलेख्यं नमौ अभेख्यं नमौ नमस्ते भव पारं ।
 उंति पति पर लए सथ तियाल नमो नमस्ते निराकारं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम भजै सौही संत है, मत सू बंधै नाहि ।
 जन सूरतराम हरि भजन बिनि, धकाधकी बौहौ खाहि ॥ ६ ॥
 धखा खाइ दरबारि मै, राम बिना सब कौइ ।
 जन सूरतराम सांची कहै, ग्रिही भेष किन होइ ॥ ७ ॥
 ॥ इति भेष कौ अंग संपूरण ॥

२. कूंडल्या । पत्र-संख्या २६ । अंग २५, कूंडल्या ६६ ।

अन्तिम भाग-

संम्रथ ग्यांन बिचारिए, सम्रथ सरणू जौय ।
 आन भ्रम बिन्न चारणी, निति हि परलै होय ॥
 निति हि परलै होय, भजन बिनि जनम गुमायौ ।
 राम नाम सुख छाडि, भ्रम संगि पाप कुमायौ ॥
 जन सूरतराम सांची कहै, च्यारि जुगा दुख होइ ।
 संम्रथ ज्ञान बिचारीए, संम्रथ सरणू जौइ ॥ ७ ॥

३. रेखता । पत्र-संख्या ८ । अंग ६, रेखता २१ ।

अन्तिम भाग-

खेत कू हाकि कै बोहौती दर्ई खात मी नांखी पलाव कीन्हा ।
 मैजड़ा फेरि कै खूब मी करि रख्यां घास अर फूसि कू डारि कीन्हा ॥
 बीज औरै नहीं कालजा कटि है खेत कू देखिकै खुसी होई ।
 वसि ही व्रत करि कूण सुख पाईया बीद बनि जान बेकाम जावै ॥
 जन सूरत ही राम अब समझ करि देखीए सीस बनि धड़ कसि काम आव ॥ ८ ॥

४. सवईया । पत्र-संख्या १० । अंग १६, सवईया ४० ।

अन्तिम भाग-

ऐसे बेईमान गुलाम हलाम है जासकी बुद्धि मैं सुधि नहीं कोई ।
 राम तजै अर दाम भजै सुनि सांग काछणौ जैसे रावत मोई ॥
 सेवग जाट 'र माली कीया सट खेत खल दुख ही दुख रोई ॥
 सूरतराम ऐ राम सूं बै सुख आग लीया छली दौन्यूं ही खोई ॥ २ ॥

५. भूलूणा । पत्र-संख्या २ । ५, भूलूणा ७ ।

अन्तिम भाग-

अरे नर मूरिख चेति बेगी पल माहि सौ कोल उड़ावता है ।
 तीन हीं लोक की कुण चली ब्रह्मा बिसन कूं खावता है ॥
 तू दिन रैनि भजै नहीं राम कूं राम बिना दुख पावता है ।
 जन सूरतराम अकाल भया निति ब्रह्म सूं ध्यान लगावता है ॥

६. किवत । पत्र-संख्या ४ । अङ्क ६, किवत १४ ।

अन्तिम भाग-

दुनियां बड़ी कुरंग, जासकै एक न रंगा ।
 नांना इसट उपाइ, तास कौ मन बौ भंगा ॥
 राम नांव कूं छाडि, आन कूं सीस नवावै ।
 अपण फिरतन पूजि, राम कूं पूठि दिखावै ॥
 म्हान्निसट संसार है, जामै लच्छिन नाहि ।
 जन सूरतराम सांची कहै, भग्या काल मुखि जाहि ॥ ३ ॥

७. नांव बत्तीसी । पत्र-संख्या ७ । छंद मंपाल, ३२ ।

आदि भाग-

सूरतराम करै प्रमहंज जू, राम गरू सूं बंदन ।
 नांव महातम करू बत्तीसी, जाति सबद की छंदन ॥
 सुनत ही भ्रंम क्रम सब भागै, उपजै नांव जिग्यासा ।
 नांव म्हातम परमपरा सूं, धरि चित ब्यौ पदवासा ॥ १ ॥

८. कका बत्तीसी । पत्र संख्या ३ । पद्य-संख्या ३३ दुहा ।

आदि भाग-

सतगुर कूँ निति बंदनां, निमसकार निति राम ।
 सब संत की म्हरि ग्रंथ करूं, ककाबतीसी नाम ॥ १ ॥
 कका क्रिपा करि गुर देवजां, लयौ सरण गति मौहि ।
 दीयौ मजन निज ब्रह्म कौ, सारथा कारिज सोइ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

ससा सतगुर की दया, कीयौ जीव कूँ पार ।
 अैसे गुर कूँ कीजीऐ, बंदन बार बार ॥ ३१ ॥
 हहा हरि गुर महरिकरि, दर्ई बुद्धि ऐह मौहि ।
 एह ग्रन्थ सुणि हरि भजै, ताकौ कारिज सहजै होई ॥ ३२ ॥
 कका बतीसी ग्रन्थ मधि, भाण्यौ सुमरण सार ।
 बाचि बिचारै जौ कोई, जन सूरतराम होइ पार ॥ ३३ ॥

९. पद राग चरचरी । पत्र-संख्या २० । पद्य-संख्या पद ४६, साखी २ ।

आदि भाग-

देखौ रे सतगुरजी दाता, ऐसा राहा चलाया है ।
 भरम करम सब दूरि निवारथा राम नाम पिछाया है ॥ टेक ॥
 जाकूँ रटत मन सुद्ध 'जहुँवा', प्रेम प्रीत उपजाया है ।
 उनके चरण सरण सुख पावै, जनम-मरण मिटिजाया है ॥ १ ॥
 माग भला जब रासण होई, ऐसा सतगुर पाया है ।
 जनकी म्हमा अगम अगौचर, ब्रह्मा वेद स गाया है ॥ २ ॥
 सिव सनकादिक वैं ही ध्यावैं, सोही तत बताया है ।
 ऐक नाव की न्हचै राखै, परमपद सुख पाया है ॥ ३ ॥
 जन सूरतराम का सांसा भागा, रामचरण गुर पाया है ।
 तन मन की सब आस निबारी, ध्यान अखंडत ल्याया है ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

साखी

हरिजनं औसा चाहिऐ, औषधि का सा रूप ।
 दुख मेटे सुख उपजै, जन सूरतराम अनूप ॥ १ ॥

साधू ऐसा चाहिये, तन सू रहै उदास ।

राममजन निसि दिन, जन सूरतराम गुर पास ॥ २ ॥

१०. चंद्राइणा । पत्र-संख्या २३ । अंग २१, चंद्राइणा ३५ ।

अन्तिम भाग-

कौई मुख ह्वे रहै है बात कौ करत है ।

कौ कथियौ था ग्यान का जन ही सरत है ॥

कौ देवी को ध्यान रुद्र कौ ध्यात है ।

परि हाँ सूरतराम भजि राम ब्रह्म पदपात है ॥ ३ ॥

११. सुख बौध कौ छटौ प्रकरण । पत्र-संख्या । इसमें किवत, अरेल, सरोठा, चौपई, कूंडल्या, भंपाल, निसांणी, साखी, त्रिभंगी, चंद्राइणा, सवइया, मनहर, चांमर, छपै, दुहा, रेखता-कुल ६५ पद्य हैं ।

आदि भाग-

किवत

बरकति बिरति बिचारी अरपि आपौ तुम गावौ ।

बरणि दस अवधूत रीति सूँ मौहि सुनायौ ॥

अबै साध कौ संग साध मइमां सौ गावौ ।

पारख साध असाध जिन्हीं की रैसि बतावौ ॥

सत संगति अर साध संग भषौ भलै प्रकार ।

जन सूरतराम उरि सिख कै सुन सै प्रीति अपार ॥ १ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(८१) हाल बोध । रचयिता-रामजन । पत्र-संख्या ११ । पद्य-संख्या दोहा १०, चौपई ६१ ।

आदि भाग-

करो फकीरी रामजन, रे मन हाल बिचार ।

सुमर राम रमतीत कूँ, अपनौ आपौ तार ॥ १ ॥

आपौ तारौ रामजन, तौ निज हाल समाय ।

निरदावै निर बासना, सत गुर सिरुया पाय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

कर जोड़ै करणां करै, सुणज्यौ दीन दयाल ।
माहा कठिन कलू काल मै, आप निभावौ हाल ॥ ६९ ॥
आप निभावौ हाल ऐह, सतगुर राम निधान ।
रामजन मन बंच करम, ऐ मांगत करदान ॥ ७० ॥
ऐही मांगत हूं सदा, राम गरू कै पास ।
रामचरण पद रैणं कौ, रामजन नित दास ॥ ७१ ॥

सूचना-इसीके साथ रामजन कृत 'ज्ञान-प्रमोद' है जिसकी पद्य-संख्या ३६७ है।

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२) काव्य, साहित्य-शास्त्र, इतिहास आदि....

(१) कवित्त रामायण । रचयिता-तुलसीदास । आकार-११'२" x ५'२" । पत्र-संख्या ४२ । पद्य-संख्या २८७ । लिपिकाल-सं० १८५१ । इसी के साथ तुलसीकृत 'रामचरित मानस' की भी तीन प्रतियाँ मिली हैं । मेरे पास भी एक प्रति सं० १६०१ की लिपिकृत है ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(२) खुम्माण रासो । रचयिता-पं० दौलतविजय । आकार-१०" x ४'४" । प्रति अपूर्ण है । इसके केवल चार पत्र हैं । प्रति पत्र पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ५५ अक्षर हैं । ६५ छंदों में अजेसी, 'लषमसी अरसी अधिकार समय' समाप्त हुआ है । अंत में रचयिता का नाम पं० दौलतविजय गणि दिया गया है । अतः यह प्रसिद्ध 'खुमाण रासो' का कोई भाग है । इसमें अजेसी, लषमसी, अरसी, हम्मीर आदि का चित्तौड़ के लिये अलाउद्दीन के साथ युद्ध का वर्णन है । इसमें यद्यपि कोई रचनाकाल या लिपिकाल नहीं दिया है परन्तु इसके अंत में दिया हुआ यह दोहा बहुत महत्व पूर्ण है:—

‘संबत्सर संवत्त में, तेरे से तेताल ।

आथडिया हिन्दू असुर, धरा करे धकमाल ॥’

आदि भाग—

गाहा

गौरी गुणे गहिरम् । गिरि तनया माय देहि वर वित्तं ।

भय हरि मगति मीरं । चामुंडा होय इक चित्तं ॥ १ ॥

दूहा

कमल वदन कमलासनी, कवि उर मुख कैलास ।
 वसे सदा वागेश्वरी, विधि विधि करे विलास ॥ २ ॥
 कवि दीजे कमला कला, जोडण कवित जुगति ।
 सुरिज वंस तणो सुजस, वरण करू विगति ॥ ३ ॥
 गढां मुगट चित्तोडगढ, राजे राण हमीर ।
 चित्तोडो टलते चमर, वडो अडुबाहो वीर ॥ ४ ॥
 कहू तस गुणरी कथा, सुणज्यो सवण सुचित्त ।
 एवे घालक वातां विहद, विधि विधि कथ विगत्त ॥ ५ ॥
 पुहवि पति पहि उप्पडे, लोह लगायो रास ।
 अनड पहीमो अरसि सुज, नृप तिहाँ कियो निवास ॥ ६ ॥
 गढ दिल्लीपति गंजियो, दीनो गड सर सल्ल ।
 सभियो गढ सोनिगारां, अँकै गढ अणहल्ल ॥ ७ ॥
 सिसोदो सायर नयर, हे सु अरसी राण ।
 एक दिवस आखेट के, चढिया श्री दीवाण ॥ ८ ॥

गाहा

चोसर घिरथा गिर घमसाणं । जूडा एकल्ल सुमट जुब्बाणं ।
 धार अणी अवसाणं । गोली पंखाल गणणं ॥ ९ ॥

अन्तिम भाग-

बात्रीसे बेटा हुंती, घटि घटि आये काम ।
 गढ कज्जे गढ लषमसी नवखंड रख्यो नाम ॥ ५ ॥
 वरस अठारे बीस दिन, रिघु अजेसी राण ।
 पाट बेटि पडतालिया, पुरडिया मुगलाण ॥ ६ ॥
 मुच्यो नहि मुगलाण पति, समसद्दी सुरताण ।
 कटथो गढ किल्लो करे, पनरे वरस प्रमाण ॥ ७ ॥
 दिसि दिल्ली दिठ्ठी नहीं, विदियो वारण वेर ।
 पितु वेरे आपही पडे, सुज्ज गहेस मरोर ॥ ८ ॥
 संवतसर संवत्त में, तेरे से तेताल ।
 आथडिया हिंदु असुर, धरा करे धरूपाल ॥ ९ ॥

(३) गोराबादल पदमिणी चउपड़ । रचयिता-हेमरतन ।

इस ग्रन्थ के कई संस्करण और प्रत्येक संस्करण की कई प्रतियाँ मिलती हैं, जिससे ज्ञात होता है कि यह रचना किसी समय बहुत प्रचलित थी । राजस्थान के बाहर भी इसकी प्रतियाँ पहुंच चुकी हैं जिनमें से नागरी प्रचारिणी सभा काशी, गुजरात विद्या-सभा, अहमदाबाद, ऑरिएण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा और भण्डार इन्स्टीच्यूट पूना के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । इनके अतिरिक्त कई जैन भण्डारों में भी इसकी प्रतियाँ मिलती हैं । मैंने इस कृति का सम्पादन किया है जो अब 'राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर, जयपुर' द्वारा प्रकाशित हो रही है । अतः इसके विषय में यहाँ अधिक न लिख कर कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ही लिखी जाती हैं ।

इस कृति का मूल लेखक हेमरतन है । संवत् १६४५ में हेमरतन ने सादड़ी (छोटी) में महाराणा प्रताप के मंत्री भामाशाह के छोटे भाई ताराचंद के आग्रह से इसकी रचना की । इसकी सबसे प्राचीन प्रति श्री रविशंकर देराश्री, बनेड़ा के पास है जिसकी सम्पूर्ण फोटो प्रति उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई । इसकी प्रशस्ति इस प्रकार है:-

बादल राउत नी ए कथा । सुणतां नावइ निज घटि व्यथा ॥
 रोग सोग दुख दोहग टल'इ । मन ना सयल मनोरथ 'फल' इ ॥ ६०८ ॥
 पूनिम गच्छि गिरुआ गणधार । देव तिलक सूरिसार सार ॥
 न्यान तिलक सूरिसर तास । प्रतपइ पाटइ बुद्धि निवास ॥ ६०९ ॥
 पदमराज वाचक परधान । पुहवी परगट बुद्धि निधान ॥
 तास सीस सेवक इम भणइ । हेमरतन मनि हरषइ घणइ ॥ ६१० ॥
 संवत् सोलइ सइ पणयाल । श्रावण सुदि पंचमि सुविशाल ॥
 पुहवी पीठि घणु परगड़ी । सबल पुरी सोहइ सादड़ी ॥ ६११ ॥
 पृथ्वी परगट राण प्रताप । प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप ॥
 तस मंत्रीसर बुद्धि निधान । कावेळ्या कुलि तिलक समान ॥ ६१२ ॥
 सांमि धरमि धुरि मामुंसाह । बयरी वंस विधुं सण राह ॥
 तस लघु भाई ताराचंद । अबनि जाणि अब तरिउ इन्द्र ॥ ६१३ ॥
 भूय जिम अविचल पालइ धरा । शत्रु सइ कीधा पाधरा ॥
 तसु आदेश लही सुम भाइ । समा सहित पांमी सुपसाइ ॥ ६१४ ॥
 वात रची ए बादल तणी । सांमि धरमि ए सोहामणी ॥

वीरा रस सिणगार विशेष । रस बेस्स अछइ सविसेष ॥ ६१५ ॥
 सुणता सवि सुख समंद मिलइ । भणतां भावटि दूरइ टलइ ॥
 ऊजम अंगि हुइ अति घणउ । मुहकम जाणइ करि मंत्रणउ ॥ ६१६ ॥
 षट सित षोडस गाथा बंधि । सुणिउ तिसु भाष्यु संबंधि ॥
 अधिकऊं न जे उच्चरिउं । मयण सुणी ते करयो खरुं ॥ ६१७ ॥
 सामि धरम पालतां सदा । सगली आवइ घरि संपदा ॥
 सुर नर सहू प्रसंसा कर'इ । वरमाला ले लखमी वर'इ ॥ ६१८ ॥

इति श्री गोरा बादिल चरित्रे । बादिल जय लक्ष्मी वर्णनो नाम प्रथम खंडः । संवत् १६४६ वर्षे मगशिर सुदि १५ ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि हेमरतन ने एक से अधिक खंडों में इस काव्य की रचना की हो । परन्तु इस प्रथम खंड से आगे की कथा अब तक कहीं प्राप्त नहीं हुई । हमें अब तक जितनी प्रतियाँ प्राप्त हुई उसमें गोरा बादल की कथा ही मिलती है, जिससे हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि यदि हेमरतन ने पद्मिनी के सती होने तक की रचना की होती तो वह अवश्य ही कहीं न कहीं प्राप्त होती, क्योंकि प्रथम खण्ड का प्रचार सर्वत्र दिखाई देता है और अन्य कई लेखकों ने इसका भाषान्तर कर छेपकों द्वारा विविध संस्करण भी तैयार कर दिये थे । यह हमें मानना पड़ेगा कि शीर्षक 'गोरा बादल पद्मिणी चउपई' के अनुसार यह कथा बिल्कुल पर्याप्त है । अतः लिपिकार ने भूल से ही 'प्रथम खंड' लिखा है; अथवा इस कथा को आगे बढ़ाने की लेखक की इच्छा रही हो—यह सम्भव है ।

इस विषय का अध्ययन करने पर हमें यह विदित हुआ कि संवत् १६४५ में हेमरतन ने सम्भवतः जायसी के पद्यावत से प्रेरित होकर इस काव्य की रचना की । रचना साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसमें काव्यगत डिंगल के प्रभाव से रहित राजस्थानी है और उस पर ब्रजभाषा का प्रभाव स्पष्ट देख पड़ता है । इसी में छेपक जोड़ कर संवत् १७६० में भागविजय ने (अथवा संप्रामसूरि ने) एक नया संस्करण तैयार किया । परन्तु भागविजय की कोई कृति अब तक हमें नहीं मिली । संप्रामसूरि की कई प्रतियाँ मिलती हैं उसमें भागविजय शब्द अवश्य आया है परन्तु उसका अर्थ किसी व्यक्ति के अर्थ में लेना संदेहास्पद है, क्योंकि संप्रामसूरि ने स्वयं अपनी प्रशस्ति में हेमरतन का उल्लेख कर उसमें छेपक रखना स्वीकार किया है । संवत् १६८०-८५ के लगभग जटमल ने 'गोराबादल की कथा'

की रचना की जो हेमरतन का एक संक्षिप्त संस्करण मात्र है। जटमल ने भी हेमरतन की भाषा और छंदों में थोड़ा-सा हेर-फेर किया। इस पर हम अलग लेख लिख कर बतावेंगे कि कहाँ किस लेखक ने कितना अंश हेमरतन से लिया है। संवत् १६०७ (या १७१७) में लब्धोदय अथवा (लब्धोदय के लिये ज्ञानराज ने) इसी रचना को गीतों की ढाल में ढाल दिया। इन संस्कारणों की कई प्रतियाँ उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जाता है:—

१. हेमरतन-कृत गोरा-बादल पदमिणी चउपई। रचनाकाल संवत् १६४५। सबसे प्राचीन लिपिकृत प्रति संवत् १६४६ की है, जो श्री रविशंकर देराश्री, बनेड़ा के पास है। इसमें पद्य-संख्या प्रशस्ति के अनुसार (६१६ + २) ६१८ है।

आदि भाग—

सुख संपति-दायक सकल । सिधि बुधि सहित गणेश ।
विघन विडारण विनय सुं । पहिली तुभ प्रणमेश ॥ १ ॥
ब्रह्म विष्णु शिव सहं मुखइ । नितु समरइ जसु नाम ।
ते देवी सरसति तणइ । पद युगि करुं, प्रणाम ॥ २ ॥
पदमराज वाचक प्रभृति । प्रणमी निज गुरु पाइ ।
केलवस्युं सांची कथा । कांणि न आव' इ काइ ॥ ३ ॥
नव रस दाखइ नवनवा । सयण सभा सिणगार ।
कवियण मुभ करियो कृपा । वदतां वचन विचार ॥ ४ ॥
वीरा रस सिणगार रस । हासा रस हित हेज ।
सामि--धरम--रस संभलु । जिम हुइ तन अति तेज ॥ ५ ॥
सामि-धरम जिणि साचविउ । वीरा रस सविसेष ।
सुभटां महि सीमा लही । राखी खिन्नवट रेख ॥ ६ ॥
गोरा रावत अति गुणि । बादिल अति बलवंत ।
बोलिसु वात बिहुं तणी । सुणयो सगला संत ॥ ७ ॥
रतनसेन राजा तणइ । अलि ह्वा अति छेक ।
गोरा बादिल बे गुणी । सत्तवंत सविवेक ॥ ८ ॥
युद्ध करी जिम जसलीउ । बसुहा ह्वा बिरुयात ।
चित्रकोट चावठ कीउ । ते निसणउ सहूवात ॥ ९ ॥

इसमें राजस्थानी का वयणसगाई अलंकार ध्यान देने योग्य है । अन्तिम भाग ऊपर दिया जा चुका है ।

दूसरी प्रति । लिपिकाल-संवत् १६६१ । इसमें पद्य-संख्या ७०३ हैं । आकार- $१०'' \times ४\frac{३}{४}''$ । पत्र-संख्या २० ।

[मुनि जिनविजयजी से प्राप्त]

तीसरी प्रति । लिपिकाल-संवत् १७२६ आकार-- $३\frac{३}{४}'' \times ४\frac{३}{४}''$ । पत्र-संख्या २६ । पद्य-संख्या ७१२ ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

चौथी प्रति । लिपिकाल-संवत् १७८५ । आकार-- $६'' \times ५''$ । पत्र-संख्या १०२ । पद्य-संख्या ७६५ ।

[भण्डारकर इन्स्टीच्यूट, पूना]

२. भागविजय [या संग्रामसूरि कृत] पद्मणी चौपई । रचनाकाल-संवत् १७६० । इसकी निम्नलिखित प्रतियां प्राप्त हुई ।

पहली प्रति । आकार-- $१०'' \times ४''$ । पत्र-संख्या ३१ । पद्य-संख्या ६१७ । इसमें कोई लिपिकाल नहीं है । संभवतः मूल प्रति हो ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

दूसरी प्रति-वही है जिसका उल्लेख रिपोर्ट के प्रथम भाग के पृष्ठ ५३ पर विवरण (६६) में श्री मेनारिया ने हेमरतन समझ कर किया है । इसकी पूरी प्रतिलिपि मेरे पास है, उसकी प्रशस्ति का वह भाग यहाँ उद्धृत करते हैं जो प्रथम भाग में उद्धृत अन्तिम भाग के पद्य-संख्या ६११ से ऊपर का है, और जिसे श्री मेनारिया ने उद्धृत नहीं किया । सभी प्रतियों में यह अंश मिलता है । इसीसे यह स्पष्ट हो जायगा कि हेमरतन का ही यह परिवर्द्धित संस्करण है:-

पदमराज वाचक परधान । पुहवी प्रगट सकल गुणवान ॥

तास सीस मन रंगै घणै । हेमरतन वाचक इम भणै ॥ ६०६ ॥

वात रची ए बादल तणी । सास धरम अति सोहामणी ॥

बीरा रस सिणगार वसेव । सील धरम पदमिण सुविवेक ॥ ६०७ ॥

सुणतां सुख चतुराई बधै । नीत रीत सूरतन सधै ॥

ऊजम तेज हुइ अति घणो । विविध करी जाणै मंत्रणौ ॥ ६०८ ॥
 साम धरम पालंता सदा । पामै धरि नव निधि संपदा ॥
 सुर नर सहु प्रसंसा करै । वरमाला ले लिखमी वरै ॥ ६०९ ॥

कलश कवित्त

हेमरतन की बुद्धि, छंद चोपई प्रथम कीय ।
 अब कछु वयण विसेष, सुकविराज सगुण थपीय ॥
 सुहिढ़ बंध 'संग्रामसूरि', चित बेधक वाइक ।
 कवित दुहा चोपइ, धरै नौतन जहां लाइक ॥
 महिलात ग्रंथ उज्जल कली, त्रीय सरूप भूषण सभै ।
 रंग रेख भरे चित्राम, सिर गुल क्यारी उपवन भभै ॥ १० ॥

तीसरी प्रति । लिपिकाल-संवत् १७८३ ।

[आरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा]

३. लब्धोदय (या ज्ञानराज) कृत पद्मिणी चरित्र (प्रबंध) । रचना
 काल-संवत् १७०६-७ । इसमें हेमरतन की उसी कथा को गीत की ढालों में
 ढाल दिया गया है ।

पहली प्रति । लिपिकाल सं० १७५३

[सरस्वती भवन, उदयपुर]

पहले भाग में श्री मेनारिया ने पृ० ५२ पर विवरण (६८) पर संवत्
 १८२३ की जिस प्रति का वर्णन किया है वह भी सरस्वती भवन [पूर्वनाम
 सरस्वती भण्डार] की है वह बहुत अशुद्ध है । इन दोनों की प्रतिलिपि मेरे पास
 है । इन दोनों प्रतियों में भी काफी अन्तर है, फिर भी इस प्रति का विवरण
 श्री मेनारिया ने नहीं दिया ।

दूसरी प्रति । आकार-१३ $\frac{१}{२}$ " x ८ $\frac{१}{२}$ " । पत्र-३३ । इसमें ५६ चित्र है ।
 कुछ बहुरंगी हैं तथा कुछ केवल मसि से चित्रित है । कला की दृष्टि से चित्र
 बहुत साधारण हैं । लिपि घसीट और बहुत अशुद्ध है । इसके आदि भाग के
 दोहे हेमरतन की रचना से मिलते हैं । अन्तिम भाग प्रथम भाग में उल्लिखित
 पद्य-संख्या ८०० तक बहुत पाठान्तर लिये हुए हैं जिसकी संख्या ८२६ है ।
 लिपिकाल सं० १८६५ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीडर]

तीसरी प्रति । आकार-६" × ६"२" । पत्र-संख्या ६१ । लिपि शुद्ध और सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्तिमें १७-१८ अक्षर हैं । प्रबन्ध तीन खण्डों में विभाजित है:—

प्रथम खंड—१४४ छंद

द्वितीय खंड—१५६ छंद

तृतीय खंड—५११ छंद

योग ८११ छंद

अन्तिम भाग—

श्री सुधरमी स्वामी पाट परंपरा रे, सुविदित गङ्ग सिणगार ।
 श्री खरतर मङ्ग श्रीजिनराज सूरीसरू रे, आगम आरथ भंडार ॥ ४ ॥
 तास पाट उदयाचल दीपें करूं रे, श्री जिन रंग वखाण ।
 रिभियां जिण साहिजिहान दिल्लिसरू रे, करि दीधी फरमाण ॥ ५ ॥
 तास हुकम संवत सतर छीडो तरे रे, श्री उदेपुर सुवखाण ।
 हिंदूपति श्री जगतसिंह राणो जिहा रे, राज करें जगमाण ॥ ६ ॥
 तास तणी माता श्री जंबूवती कही रे, निरमल गंगा नीर ।
 पूरणवंत षटदरसन सेवा करें सदा रे, धरम मूरति मन धीर ॥ ७ ॥
 तेहतणी परधान जगत में जाणीई रे, अभिनव अभय कुंमार ।
 केसर मंत्री सर सुत अरि करि केसरी रे, हंसराज हितकार ॥ ८ ॥
 जिण वा पूजा हेतें पुरंधर रे, कामदेव अवतार ।
 श्रोणिक राय तणी वरि गुरु भगवा पहिरे, मंहपुगर सिणगार ॥ ९ ॥
 पाट सात पछे जिणदेव मेवाड में रे, थाप्यो गङ्ग सिर थोभ ।
 कटारिया कुलदीपक जसि जेहने रे, श्री खरतर गङ्ग सोभ ॥ १० ॥
 तस बंधव डुगरासी तेवाणे दीयतो रे, भागचंद कुल भाण ।
 विनयवंत गुणवंत सोमागी सेहरो रे, वडदाता गुण सुजाण ॥ ११ ॥
 तस आग्रह करि संवत सतर सतोतरें, चेत्र पूनिम शनिवार ।
 नबरस सहित सरस संबंध वीरच्यउ रे, निज बुद्धि नें अनुहार ॥ १२ ॥
 श्री जिन माणिकसूरि प्रथम शिष्य परगडो रे, वाचक नयसमुद्र ।
 तास सीस बड बषती जगमें जाणीये रे, श्री हर्ष विशाल अनुद्र ॥ १३ ॥

“संवत् १७६१ वर्षे मासोत्तम माघ कृष्ण दशम्यां कुजौ लिखिता ॥ सकल पंडित श्री ५ श्री मतिविजयगणि तत शिष्य पं० जसवंतविजयेन लिपिकृता ॥

इसीके साथ संग्रह में निम्नलिखित रचनाएँ हैं :—

१. भगवती छंद (सं० १७६१)—जसवंतविजय कृत
२. शलिभद्रमुनि चरित्र (सं० १७६२)
३. कपड़ कतोहल
४. क्षेत्रपाल छंद
५. पनरेति रा दूहा
६. बारेंमासा रा दूहा
७. कृष्ण बारामास्यो

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

चौथी प्रति । आरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा ।

(४) जगद्विनोद । रचयिता—पद्माकर । इसकी तीन प्रतियाँ हैं ।

१. आकार—११" × ७" । पत्र—संख्या--१३६ । लिपिकाल संवत् १६०७ । इसके साथ ‘प्रवीणसागर’ भी जिल्दबंध है ।

[सरस्वती भंडार, भींडर]

२. ठीक उपरोक्त ढंग की ‘प्रवीण सागर’ सहित है ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

३. आकार—८" × ६" । पत्र—संख्या—१०६ । पद्य—संख्या—७२७ । लिपिकाल संवत् १६२७ ।

आदि भाग—

दोहा

सिद्ध सदन सुन्दर वदन, नैद नंदन मृदु मूल ।

रसिक सिरोमनि सांवरे, सदा रहो अनुकूल ॥ १ ॥

पुष्पिका—

“इति श्री कूर्मवंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंघाहस मधरा स्थानो मोहनलाल भटालज कवि पद्माकर विरचितं जगत विनोद नाम काव्य सम्पूर्णम् ॥”

[माणिक्य ग्रन्थ भंडार, भींडर]

(५) दीपंगकुल प्रकाश । रचयिता-दधिवाडिया कमजी । आकार-
१६" × १०" । पत्र-संख्या ४२ । प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में
१५ । १६ अक्षर हैं । पत्र-संख्या- ४६० । अन्त में एक अपूर्ण छप्पय है । इसमें
डोडिया राजपूतों का इतिहास है ।

आदि भाग-

दुहा

रस कपोल सुरमित (र) नरष, माचे सोर मलिंद ।

ईस पुत्र मोदक असन, गण नायक जग बंद ॥ १ ॥

छप्पै

सुरसति गुणपति सकत, उकत दीजिये अपारों ॥

दाखुं जस डोडीयां, मनोहरसीह मयारों ॥

गढ लाहो अग नीत, क्रीत दस देस कहाई ॥

तण जोरावर तटै, दिये नाहर विरदाई ॥

पीटियाँ सुं जल चाटण पथां, नेक बिरद थाटण नवां ॥

दरगाह राण भड डोडिया, एक एक बधता हुवा ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

जैसो आगर जोय, बले जोय बंधव बलू ।

कूंतां पूत ज होय, सूर सहो बड सारखा ॥ ४६ ॥

छप्पै

पुन्यात्तमा पुरस्स, हुबो नवलेस सिंघ हर ।

पंडित कवि पोपया, सदा पूजन परमेश्वर ॥

(ग्रन्थ आगे अपूर्ण है)

[अन्ताणी संग्रह]

(६) पृथ्वीराज रासौ । रचयिता-चंदबरदाई ।

इसकी ६ प्रतियों का विवरण प्रथम भाग के ५५ से ७० पृष्ठों तक दिया गया है । अतः उसके पश्चात् रासौ की जो प्रतियाँ खोज में प्राप्त हुई हैं उनका विवरण हम नीचे देते हैं—

प्रति-१ ।

आकार-११'' × ६३'' । इसके कुछ पत्र ही प्राप्त हुए हैं, जो 'माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर' में सुरक्षित हैं। पत्र बहुत प्राचीन हैं, और दो स्थानों पर मुड़े हुए होने के कारण तीन भागों में बँट गये हैं। बीच में दो सल हो गये हैं जहाँ के कुछ अक्षर भी घिस गये हैं। अक्षर जमे हुए और मोटे हैं पर इतने प्राचीन हैं कि सामान्य व्यक्ति से नहीं पढ़े जा सकते। इनमें मात्राएँ पीछे लगी हुई हैं और हिं, नि, जिज, जि, जो, च, छ, य, थ, रे, ले आदि अक्षरों में बहुत प्राचीनता देख पड़ती है। इस प्रति में कागज, लिपि और भाषा तीनों में प्राचीनता देख पड़ती है, जिससे अनुमान होता है कि यह प्रति कम से कम सं० १४०० के लगभग की होनी चाहिये। परन्तु दुख की बात है कि इस प्रति के केवल थोड़े से पत्र ही प्राप्त हुए हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ५३ अक्षर हैं। पत्र १३ के नीचे का ३ भाग इसके साथ मिला है जिसमें दोनों ओर सात-सात (१४) पंक्तियाँ हैं। शेष ३ भाग अप्राप्य है। इसी प्रकार आगे पत्र १४ का ऊपर का ३ भाग नहीं है, जो ७ पंक्तियों का टुकड़ा है। आठवीं पंक्ति के कुछ अक्षर भी उसी के साथ गये हैं। पत्र १३ के ३ भाग के एक ओर छंद ३६१ का अन्तिम भाग है और दूसरी ओर ऊपर छंद ३८७ समाप्त होता है। और नीचे छंद ३६१ आरंभ होता है। पत्र १४ के प्राप्त ३ भाग के आरंभ में छंद ३६५ समाप्त होता है। इस छंद का आदि भाग अप्राप्य टुकड़े में रह गया है। यह ३ भाग वाला पत्र दूसरी ओर छंद ४०२ पर समाप्त होता है। आगे ७०७ छंदों तक एक ही विषय चलता है, जहाँ अंत में 'राश केसु चरित्र' समाप्त लिखा है। आगे 'राजा विलासन शुक चरित्र' आरम्भ होता है, जो ६८ छंदों में समाप्त होता है। इसके आगे आरम्भ होने वाले समय का नाम नहीं है। परन्तु, २८ पत्रों तक के हांशिये पर 'कनवज्ज' लिखा है। शेष पत्रों के हांशिये फट गये हैं। इसके प्राप्त पत्र १४ से ३१ तक हैं।

पत्र १३ के ३ का प्रथम पृष्ठ

.....राजह ।

एकति सूदि आषारि एकति माडि गय गयारह ॥

पुरतानेर उरह कटार करि परिग बेत तुरन न जिय ।

जिहिं जूध मूध चहुवान सू प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥ ३६१ ॥

परबु गूँज गहिलोत नाम गोयंद राजवर ।
 दाहिमु' नरसिंघ परबु नगवर जाशधर ॥
 परबौ चंद पुंडीर वदन पिप्प्यौ मारंतु ।
 सोरंग सारंग परबु असिवर भारंतु ॥
 कूरमोराय बालनंदे बंधव तीन निहट्टिया ।
 कनवज्जराय पहिलि दिवस सुमिसत्त निघट्टिया ॥ ३६२ ॥
 पजूनह उपरहि राज प्रधीराजरा पुंतु ।
 गरूओ राउ गोविंद धाय अघायस संतु ॥
 नाय चित्त चहुवान कीन कींतु कर उभु ।
 रा रंडा दिल्ली आज लडि मन दुभु ॥
 धाराधिनाथ धारंग धर.....कींतु रुदन ।
 चामंडराज मुकयु सुमह रपन छिति छत्रीअ दहन ॥ ३६३ ॥
 अरध रयन चंदनी अरध अंगि अंगिया ।
 मो

[आगे सब फट गया है]

पत्र १३ के ३ का द्वितीय पृष्ठ

.....गुन सुधारस ।
 तुमहि क.....ति राज प्रथम कारण काम कस ॥
 हम काज आज शिर उपरि बाग धार रा..... ।
 ...ज चूराय दिल्लीय सुधी दु.....भर सजि दल ॥ ८७ ॥
 मिं जान्यो पहिलूत एह कारण कत राजन ।
 मरण पछिक कयमास मत जानि नही जाजन ।
 म.....पकरिय सब लोकइ सो जानिय ।
 एह कथ पहलूणि शनशन मई बानिय ॥
 मृत्यु शु एह कारण प्रथम.....प्रधीराज किय ।
 बंड सु अब अरी हरउ कशि लोक सुजीतु काजि जिय ॥ ८८ ॥

दोहा

संजोगिनि तनि निरषि, सुफल जम्म नृप मानि ।
 काम कसाए लोअने, हन्यो मदन सरतानि ॥ ८९ ॥

सुधि भूली संग्राम की, भूली अपनी देह ।
 जो न मया वसि पंगुदल , सुमयो बाम वसि नेह ॥ ६० ॥
 तेम चरन कर मुष उर, विकसत कमल अका-
 ॥ ६१ ॥

पत्र १४ का १-आठवीं पंक्ति से-

.....लान..... ॥
 हराय जामाते ष पमारतथ ॥
 शासनु पूर दिशि पुच्च पंच । रष नह राज सजि सुसंच ॥
 नार नाह कत पामार जित्त । उदित उदोत्त रषि सुमित्त ॥
 हाहुलीराज हंभीर तथ । जघील राउ भीमानीय पथ ॥
 धनपति दिशि रषि सुधीर । अप अप परिगह जुत्तवीर ॥
 बंधव हरण तोमर पहोर । बंधेला सुलष नवं लषसार ॥
 द्वि बंधह डंश म अल्ह सूर । महण शीपी परिहरि राहपूर ॥
 पञ्चिमि दिसा सजिधीर सार । भजंनह जूह गय मत्त भार ॥
 पामार शलष आजोन बाह । चहुवान अत्तत्ताई उधाह ॥
 चालुक बिभभ माहा अमंग । बदरी देव खिची प्रसंग ॥
 बार डह शीह अमंग भार । दण्डिणी दिसा सजि सूरसार ॥
 अनि २ दिशि शामंत सूर । रषह सुरकु हय गय सपूर ॥
 सहस एक २ शत एक सथ । शबभृत उच्च नीचेह उथ ॥
 अप २ भृत शामंत सब । पठण काज जल गंग तब ॥
 कमधज्ज भृत मध्ये वराहि । आनयुअपमे देवताहि ॥
 मुष पाय पाणिअ दोलि वारि । अवये अप आतम अधारि ॥
 करि सुनत शंति शामंतराज । चित्ति सु इष्ट मर स्वाभि काज ॥
 अउध बधि सजि वाजि शब । अशेन तान अप्पह अथव ॥
 उखंग मृत के दिअ सीस । अस्तेमि बेट केबिन परीश ॥
 पारश वेदि पंगुरह सेन । गज्ज निसान हय गय गुरेन ॥ ६५ ॥

दोहा

चिच अति चिंता तपि सज्जि राय कमधज्ज ।
 जिके सुमटवर अपनि फिरिता संकत रज्ज ॥ ६६ ॥

संजोगि शयन प्रधीराज भू, वजिहि लाग निसान
 कायर विधूति..., सुरति वंछहि मान ॥ ६७ ॥
 मोत्रि निसंक संभरि नरिंद । परष्य सुपंग संक्यो सुरिंद ।
 प्रधीराज कामत संजोग ॥
त हिंसहि के कान ।
 चपे चंग दिसी निरहि धुरि निसान ॥
 सिंधूर मारु मलकोश संगीत (तान) ।
 सूरिसूर अनंद कायर कंपान ॥
 पंचास कोस रुंधिय धरनि ।
 मिल्लान मधि चहुवांन धनि ॥
 कचिकिय चार बुल्यो बिसदु ।
 सिंघ जिम जग्य सुनि श्रवन सदु ॥ ६८ ॥

दोहा

विरूदाबलि बल्लत जग्यौ । त्रिअ संजोइ कौ कंत
 कंदल रस रति नयन । कोध सहित विहसंत ॥ ६९ ॥

छंद सारस

इशी रीत प्रगाशी । मंडल सामंत मासी ॥
 कबिन किलोल काशी । श्रुस्त्र गानि वासी ॥
 पारसं रजि चंद्रं । तार संते न संद्रं ॥
 करतरा कति बंधि । सूर छुटि बल बंधि ॥४००॥

छंद त्रोटक

छुटि बंद निशा प्रगटी प्रगटी । मिलिदनीमल रह सुघटी ॥
 निश मान निशानहुअं । धूअ धूरिन मूरिन पूरि पुअं ॥
 नव निभारबं बरयं बनयं । गजबजि तश जितयं घनयं ॥

पत्र १४/२

निजंक छरिअ छरियं तनयं । करि २ जनयं जनयं ॥
 करि सारद नारदयंनदयं । शिर सजन ममयं सदयं ॥
 निज निर्भय रावहु आन मनं । किरनी मिराजति सूर जनं ॥ ४०१ ॥

गाथा

शत भट किरणिहि सूरु । पूर रा रेणि सुग आयेस ॥
जोगिन पूर पति सूरु । पारश मिसि पंति पंग रायेश ॥ ४०२ ॥

[यहाँ से बंद मुरिल्ल आरंभ होता है]

पत्र २०/२

छंद भुजंग प्रयात

जिते सार साधा रिजु शारि द्रुयु । मनु आवनं मेछ संसार उट्यु ॥
फटी फुज्ज आवाज शापंग राई । मृगि जानि मागध मिव पचाई ॥
बजी हक्क हंकार भेरी । जुरी रोष सेना फिरी लाज वेशी ॥
धज बीर बिरषशा बंवरेशा । लगि सीस सामंत शाश्रमरेशा ॥
उडि गिंध आवध दृष्टि उतंगा । किन कि श्रुता जीवि कि हस्ति चंगा ॥
भटकि श्रुधायं श्रुरायं हवाई । मनु मारुतं मत्त छाई ॥
फिरि चक्क चहुआन की हाक बज्जी । मनौ प्रोट मत्त निबोटा सुलज्जी ॥
इशी कंत चहुआन करि केलि रती । फिरि जोगिनी जोग उच्चार मत्ती ॥
दहं कोह सीस्वामि आराम छुट्टी । पल्लि पंगरा शेन आवत उट्टी ॥ ५४१ ॥

कवित्त

पत्र २२/२

परतषिभ चलुक्क गहकि रा पंग सेन सब ॥
राज राव सारंग देव आइयो तपि तब ॥
सहस तीन तीन असवार धार धारा समर्थ ॥
नमलं नेह स्वामिसिंध पावहि सुहथं ॥
नाइयौ सीस नमि पंग कह दईय सीख पहुउचकर ॥
उपारि जंग निज सेन सम भले प्रसंभह अपमरा ॥ ८४ ॥

पत्र १८/१-२

कनवाज्ज समय का अंतिम छंद

दो० कु०

जोर शर शनन अलंदिय अधर दुराय दुराय ।
पुशा दुज दुज कंत निकरु सविन सुनाय सुनाय ॥ ७०४ ॥

हीह सुचि सुचि टालजि मनह सुघल विथला कंपितै ।
 न नटिकीय नहंनह जियत मरत मिलि मैत कझौ ॥
 अजब तुम मत भुरस । श्रुतिराज न हुंकिति दसन कुचित हसन ॥
 न तुट ताटंक न (त ?) । भगत कियन बिगुरह तम वत ॥ ७०५ ॥
 श्रुति राजन हुंकि हसन । कुत्रित हशान नयन ॥
 त्रुति त्राटंकन भंग । किय नग बिगुरह तमवन ॥ ७०६ ॥
 इति रश तिथि दह पंच विशि निशि । मुष अशम शरघात ।
 कुल ग्रीषम श्रीषम मुषनि । पावश प्रसन प्रभात ॥ ७०७ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते रास केसु चरित्रं समाप्तं ॥ॐ॥श्री॥०॥श्रीरस्तुः कल्याण-
मस्तु ॥॥

इसीसे आगे-

अथ राजा विलासन शुक चरित्रं लिख्यते

आदि-

मुरिल्ल

उत्तर पण्य असाढ पवित्रं । आद्रा मंडूल मंडि नषित्रं ॥
 दान भोग फल इहलक्षि गतिय । विलसन राज करै नव नितिय ॥ १ ॥

क०

इक जोस धन मद्द । मद्दराज मद्द वारुनि ॥
 अरू मद्द देह अरूज । संग नव वनिता तारुनि ॥
 अरू बंधन पतिसाह । पैज कनवज्ज संपूरिय ॥
 एता मद्द राजान । दुखदं दह कर दूरिय ॥
 आनंद कंद उमण तनह । संजोगी सर हंस सरि ॥
 जानिन राज अस्तम । उदय महि जीवन मानै सुपरि ॥ २ ॥

अन्तिम-

चौपाई

पत्र ३१/१

नृप पर दुष्य अलप्य छु कीनी । ज्यौं बरि गय तर फे रहि भीनौ ॥
 दुष निद्रा निसि घटिअ आई । तिहि नृप संज संपन्नौ पाइ ॥ ६५ ॥
 अति सुष संकुल बरष तिय । रितु रितु ए आचार ॥
 बिलसित चिन ग्रीषम अधर । सुपन सुराज विचार ॥ ६६ ॥

भावी गति आगम बिगति । की भेटन सम नुरच्छ ॥
 राम छुधिष्टिर और नल । तितही परी अवच्छ ॥ ६७ ॥
 मान करै मति हीन वर, जोवन धन तन रूप ।
 कौन कौन हूँ नीबरें, बिना ग्यान रस कूप ॥ ६८ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथीराज रास के भोग विलासे ध्रुक चरित्र वर्णन
 संजोगिता चेष्टा इच्छनि आप्र अथिम प्रस्ताव समय ४१ मः संपूर्ण ।

इसीसे आगे का समय जिसका नाम नहीं दिया—

दूहा

साष लाष षटलाष दर, सजिति रजतपुर इंद ।
 मनुहुँ सूर सामंत मुष, दिष्यिय चंद कविंद ॥ १ ॥

पत्र ३१/२ इसी पत्र का अंतिम—

गा०

जंदे ही तोदुषई, दुषह सुष सरीर, दुषच्छन अनं सुबतं, कीय असोक निद्धिय ॥ ८१ ॥

दो०

सत्तम बरष सज्जिव, अरष दीह अनसै सव्वड ।
 वृद्ध तीय अरू थिर अरथ, देह विधि न लषि दिव्व ॥ ८२ ॥
 राजन सुक मुच्छन बिगति माया.....

प्रति-२ । आकार- १२" × ८" । पत्र-४० । प्रत्येक पत्र पर ३६ पंक्तियाँ
 और प्रति पंक्ति में ३१ । ३२ अक्षर हैं । इसमें केवल निम्नलिखित समय हैं:-

- | | |
|---------------------|---------------------------|
| १. इच्छनि रुप वर्णन | चौथा समय २२ छंद |
| २. बालुकराय | पाँचवाँ समय १४४ ,, |
| ३. | छठा समय १८२ ,, (अपूर्ण) |

इसको भट्टारक श्री यशोदेवसूरि ने उदयपुर में संवत् १७६१ पौष वदि १४ को
 लिपिकृत किया ।

इसीके साथ निम्नलिखित रचनाएँ भी हैं :-

१. शाहजहाँ जीवन चरित्र
२. सुन्दर शृंगार

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

प्रति-३ । इसमें ६८ समय हैं आकार-- १४" × ६३" ।

प्रत्येक पत्र पर २८ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति पर लगभग ३२ अक्षर हैं ।

लिपिकाल-संवत् १८०६ साके १६७४ प्रवर्त्तमाने । आसोज शुक्ला ६ सोम-
वार । लिपिकार-हठीराम का पुत्र शंभुराम ।

इसके अंत में यह विज्ञप्ति दी हुई है—

मिलि पंक जगत उदधि ॥ करद काल रनी ।
कोटि कवी काज लह ॥ कम कटि कर्ते करनी ॥
हि तिथि संख्या गुनित ॥ कहे कक्काव त्रियानै ।
इहं श्रम लेषन हाण ॥ भेद भेद सोइ जानै ।
इम कष्ट ग्रंथ पूरन करय ॥ जन ब्रंभत्रा दुष ना लहय ।
पालिये जतन पुस्तक पबित्र ॥ लिषि लेषक बिनती करय ॥ १ ॥
गुन मनियन रस योइ ॥ चंद्र कवियन कर दिद्धिय ॥
छद् गुनीते तुदि ॥ मंद कवि भिन भिन किद्धिय ।
दे संदेस बिष्यरिय ॥ मेलगुन पार न पावय ॥
उद्दिम करि मेलवत ॥ आस बिन आलय आवय ॥
चित्रकोट रांन अमरेस त्रप ॥ हित श्री मुष आयस दियो ॥
गुन बीन करुन उदधि ॥ लिषि गसौ उद्दिम कियो ॥ २ ॥

दोहा

लघु दीर्घ ओछो अधिक, जो कछु अंतर होइ ॥
सो कवियन मुग्य सुद्ध तों, कहौ आप बुधि सोइ ॥ ३ ॥

इति विज्ञप्ति ॥ ॥ इति श्री कविचंद विरचिते राजा श्री प्रथिराज रासके राजकुंवर श्री रचयनसी
पट्टाभिषेक दिल्ली नगर वासं गोरी साहाब गोरि धरनं बिनै साह पातसाह तषत करनं परस्पर जुद्ध जुरनं ॥
दिल्ली जौहर जरनं ॥ राजा श्रीरयनसी मरनं ॥ राजा जैयचंद गंगासरनं प्रस्ताव संपूरनं समापत ॥
॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु, श्री उदैपुर नगरे महाराजाधिराज महाराणां श्री प्रतापसिंघजी विजेराज्ये
लिषावितं राज श्री भाट पूरव्या गोते रावजी श्री रामचंदजी ॥ ततपुत्र सकल कवि सिर छत्र सकल
चंडि सरोमनि ॥ रावजी श्री श्री श्री श्री सुषरामजी ॥ चिरंजीवि कुंवरजी श्री बेमचंदजी ॥ चिरंजीवि
कुंवर श्री मुरलीधरजी पठनारथं ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु ॥ सुभंभूयात् ॥ श्री ॥ संवत् १८०६ वर्षे ॥
साके १६७४ प्रवत्तमाने ॥ आसोज मासे सुकल पण्ये ६ तीथौ सोमवासरे ॥ लिख्यतं दसपुर जाति पंडित
हठीराम बूतपुत्र पंडित संभूरामेण लिख्यतंमिदं पुस्तकं ॥ लेषक पाठक चिरंजीवि ॥ श्री श्री श्री

॥ श्लोक ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा । तादृशं लिखितं मया ।

यदि श्रुद्धंममसुद्धं । मम दोषो न दीयते ॥

समयों की सूची-

- | | |
|----------------------------|--------------------------|
| १. आदि पर्व समयो | २. दसम समयो |
| ३. दिल्ली किल्ली समयो | ४. लोहानो आज़ान बाह समयो |
| ५. आखैटक वीर वरदान समयो | ६. नाहरराम समयो |
| ७. कन्हाय्य पट्टी समयो | ८. मेवाती मुगल समयो |
| ९. हुसेन कथा समयो | १०. चित्ररेखा समयो |
| ११. आखेट चूक समयो | १२. भोलाराय समयो |
| १३. सलष जुद्ध समयो | १४. इच्छिनि व्याहसमयो |
| १५. मुगल जुध समयो | १६. पुंडारी दाहिमी समयो |
| १७. भोमि सुगन समयो | १८. दिल्लीदान समयो |
| १९. माध्ये भाट समयो | २०. पदमावती समयो |
| २१. प्रथा व्याह समयो | २२. धन कथा समयो |
| २३. होली समयो | २४. दीपमालिका समयो |
| २५. सिस्रिता समयो | २६. करनाटी पात्र समयो |
| २७. देवाप्र समयो | २८. रेवातट समयो |
| २९. अनंगपाल समयो | ३०. कैमास युद्ध समयो |
| ३१. घग्घर नदी समयो | ३२. पीपा युद्ध समयो |
| ३३. करेहमा युद्ध समयो | ३४. इंद्रावती समयो |
| ३५. जेताराव समयो | ३६. कंगुरा जुद्ध समयो |
| ३७. हंसावती समयो | ३८. पोहडराय समयो |
| ३९. बरुन कथा समयो | ४०. सोमवध समयो |
| ४१. पञ्जून खोग समयो | ४२. पञ्जून चालुक समयो |
| ४३. चंद द्वारिका समयो | ४४. भीम वद्ध समयो |
| ४५. संजोगता पूरब जन्म | ४६. विनय मंगल समयो |
| ४७. सुक वरन समयो | ४८. बालुकाराय समयो |
| ४९. पंग जग्य विद्धेसन समयो | ५०. संजोगिता नेम समयो |
| ५१. हासी जुद्ध समयो | ५२. दुती हासी जुद्ध समयो |

५३. पञ्जून महोबा सम्भो

५५. सामंत पंग सम्भो

५७. कैमास बह सम्भो

५९. दिल्ली बरनन सम्भो

६१. षट ऋतु वर्णन सम्भो

६३. सुक चरित्र सम्भो

६५. आषटक चम्भ सम्भो

६७. बान बेध सम्भो

५४. पञ्जून विजय सम्भो

५६. समर पंग सम्भो

५८. दुर्गा-कैदार सम्भो

६०. जंगम कथा सम्भो

६२. कनवम्भ सम्भो

६४. धीर पुंढीर सम्भो

६६. बडो जुद्ध सम्भो

६८. राजा रेनसी सम्भो

प्रति-४। अन्तिम भाग-

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

पुष्पिका

चिरजीवो श्रोतान । हाम मन वंछित पूरय ॥

चिरजीवो श्रोतान । दुष आप दल चूरय ॥

चिरजीवो श्रोतान । पुत्र परवार सहेतो ॥

चिरजीवो श्रोतान । दान कवियन जन देतो ॥

हय पाट ठाट मंडार मरि । आस भास सफल फलय ॥

धरि ध्यान जोग साधन जुगति । जराम्रत्फलन नां कलय ॥

इसके नीचे वही विज्ञप्ति दी हुई है जो ऊपर तीसरी प्रति में आ चुकी है। परन्तु इसमें केवल ३३ समय दिये गए हैं। जिनकी सूची इस विज्ञप्ति के नीचे ही उसमें दे दी गई है। सूची इस प्रकार है:-

क्र० सं०	समय (प्रस्ताव)	छंद सं०	क्र० सं०	समय (प्रस्ताव)	छंद सं०
१.	तोंअर पाहा रूपक	८१	२.	करुण कथा रूपक	३३
३.	सोम वध रूपक	८६	४.	पंजून मोहव रूपक	१९
५.	पूजून विजै रूपक	२८	६.	चंद द्वारिका रूपक	८९
७.	कैमास युद्ध रूपक	७१	८.	भीम वध रूपक	१४२
९.	संजोगिता पूर्व जन्म रूपक	१४२	१०.	सुक वर्णन रूपक	१८
१२.	बालुकाराय रूपक	१९	१३.	जग्य त्रिभंसन रूपक	१७
१४.	संयोगिता नेम रूपक	५५	१५.	हांसी प्रथम जुद्ध रूपक	८९
१६.	हांसी २ जुद्ध रूपक	११३	१७.	पंजून महुवा रूपक	२६
१८.	पंजून छोगा रूपक	३५	१९.	सामंत पंग रूपक	१३५ ?
२०.	समर पंग रूपक	६०	२१.	कैमास वध रूपक	१८७

२२.	द्रुगा केवार रूपक	१६८	२३.	दिल्ली वर्णन रूपक	५७
२४.	जंगम कथा रूपक	५४	२५.	षट्ति वर्णन रूपक	५७
२६.	कनवज्ज रूपक	१३८४	२७.	सुक चरित्र	१०१
२८.	धीर पुंडीर	३१२	२९.	आषटक.....?	१६
३०.	समरसी दिल्ली सहाय	४६	३१.	बडी लड़ाई रूपक	८६०
३२.	बांन वेध रूपक	३४८	३३.	रयनसी रूपक	११२

प्रति-५

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

यह उपरोक्त चौथी प्रति का आधार ज्ञात होती है। यह जीर्ण होने से चौथी प्रति में इसकी प्रतिलिपि की गई हो ऐसा संभव है। क्योंकि दोनों में कोई अंतर नहीं दीख पड़ा। इसके आरंभ और अंत के पत्र फटे हैं।

आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ६ $\frac{३}{४}$ " । प्रति पत्र की पंक्ति संख्या-२५ । प्रति पंक्ति की अक्षर संख्या-३५ ।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(७) भीम विलास । रचयिता-किशाना आढ़ा । आकार-१०" × ८" । पत्र-२०२ । पन्ना-७१७ । रचना काल-सं० १८७६ ।

[अन्ताणी संग्रह]

(८) मधुमालती । रचयिता-चतुर्भुजदास निगम ।

प्रति-१: आकार-६'७" × ४'२" । पत्र-संख्या २६ । पन्ना-संख्या ८८३ । लिपिकाल-सं० १७६२ ।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

प्रति-२: आकार-११" × १०" । पत्र-संख्या ६६ । इसकी लिपि बहुत सुन्दर है तथा इसमें राजस्थानी कलम के ७६ बहुरंगी चित्र हैं। लिपिकाल-सं० १८२० ।

[सरस्वती भण्डार भींडर]

प्रति-३: आकार-११" × ६" । पत्र-संख्या ११४ । पन्ना-संख्या १२५ । बीच बीच में गद्य वार्ता भी है। इसीसे इसका शीर्षक 'मधुमालती री वार्ता' है ।

[अन्ताणी संग्रह]

(६) माधवानल । रचयिता-कुशललाम ।

प्रति-१: आकार-१०'२'' × ४'१'' । पत्र-संख्या २२ । पद्य-संख्या ५५०
गाथाएँ । लिपिकाल सं० १७१६ ।

प्रति-२: लिपिकाल-सं० १६५७ ।

प्रति-३: लिपिकाल-सं० १७८६ ।

आदि भाग-

देवि सरसतिइ सुमति दातार ।
कासमीर कमलासिनी, ब्रह्मपुत्र करि वीण सोहइ ।
मोहण तरवर मंजरी, मुख मयंक चिहुँ भवण मोहइ ।
पय-पंकज प्रणमी करी, आणी भणि आणंद ।
सरस चरित्र श्रंगार रस, पभणिसु परमाणंद ॥

अन्तिम भाग-

संवत १६ लोतरे, जैसलमेरि मभारि ।
फागुण सुदि तेरसि, विरन्ची आदितवार ॥
गाहा गूढा चौपड, कवित कथा संबंध ।
.....॥ ३६ ॥

कुशललाम बाचक कही, सरस चरित सुप्रसिद्ध ।
जे बाचे जे संभलि, तिही मिले नव निद्धि ॥ ३७ ॥

× × ×

राउल माल सुपाट घर, कुंवर श्री हरिराज ।
विरन्ची एह श्रंगार रस, तास कुतूहल काज ॥ ३८ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१०) राम चरितमानस । रचयिता-तुलसीदास ।

प्रति-१: आकार-११'२'' × ५'२'' । पत्र-बालकाण्ड १११, अयोध्याकाण्ड ६१, आण्य करण्ड २३, किष्किन्धा काण्ड २०, सुन्दर काण्ड १६, लंका काण्ड ४४, उत्तर काण्ड ४४ । लिपिकाल-सं० १८५१ ।

प्रति-२: लिपिकाल-सं० १८५८, वैसाख सुद ८ । बालकाण्ड का
लिपिकाल सं० १८०५ ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(११) रामरासो । रचयिता-माधवदास दधिवाड़िया । आकार-
६'६" x ६" । पत्र-संख्या ६०५ । लिपिकाल-सं० १७७५ ।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(१२) वल्लया सटीक । पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि' की टीका ।
टीकाकार-अज्ञात । यह भी ८" x ५" आकारवाले ६ रचनाओं के संग्रह में
संग्रहीत है । ३७ पत्रों में इस ग्रन्थ के १४६ पद्य सटीक लिपिबद्ध हैं । टीका मेवाड़ी
में है ।

आदि भाग-(आरम्भ के पाँच पद्यों में संस्कृत में प्रार्थना है)

टीका-प्रथम ही परमेश्वरजी ने नमस्कार करे छे । श्री सरस्वतीजी ने नमस्कारै ने । श्री गुरु
नमस्कारै ने । ए त्रिणि तत्व सार छे । इण उपरांत मंगलाचार कोन छे ।

दुवालो

आरम्भ मैं कीयो जेणि उपायो
गावण गुण निधि ऊँ निगुण ।
फिरि कंठ चीत्र पूतला निज करि
चीत्रा रो लागी चित्रण ॥ २ ॥

टीका-कवि कहे छे जिण मो ना उपायो । जे परमेश्वर सुगुण को निधि छे जिणरो गुणरो पार को न
पावे । मैं निगुण थका तिणका गुण गाइवा को आरम्भ कीयो ।

[स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(१३) ब्रज नी दानलीला । रचयिता-ब्रह्मानंद । आकार-७" x ५'५" ।
(यह पद्मावती नी वार्ता के साथ है) । पत्र-संख्या ८ । इसके प्रत्येक पृष्ठ
पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १२/१३ अक्षर हैं । इसमें आगड़ी बोली
में गाने के १२ पद हैं । लिपिकाल-संवत् १६१८ जेठ सुदी ४ ।

आदि भाग-

गोरस लई ने गोपीका चाली ब्रेचवा काजे ।
ओडो बांधो आवी ने वचमा ब्रजराजे ॥
मटुकी लीधी माण्डे चाली मईवाली ।

ओचीतानां आत्रीया वचमां वनमाली ॥
 मारग रोको मावजी आडा ऊमा छे आवी ।
 आव ओरी मै आरडी ईम कैने बालावी ॥
 मेडु तारु अमे लूट सु उभी रे रे मै आरी ।
 सांचु जांठो तु सुन्दरी लेसु रीत हमारी ॥
 जावा दोने जादवा वाटे रोको मा वेतां ।
 अमे मला जो राषीये तंम सामु रे केतां ॥
 समझौ वीना नव भालये पर नारी ने षेडो ।
 ब्रह्मानंद केरो नवे गली में लीनौ केडो ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(१४) महाराज रतनसिंहजी री वचनिका (रतन रासो) । रचयिता-
 षिडियो जगो । आकार-१०'' × ४'२'' । रचनाकाल-संवत् १५१५, वैशाख विद् ६ ।

लिपिकार-मुनि गोतम रुचि (भींडर निवासी)

लिपिकाल-"संवत् १७६३ वर्षे माघ मासै शुल्क पदे १३ तिथो सोमवासरे
 ॥श्री॥ सकल पंडित श्री ७ श्री विमल रुचि गरिण शिष्य मुनि गोतम रुचि ना लेषकः
 ॥ डंगला नगरे ॥

आदि भाग-

गुणपति गुणे गहिरं गुण ग्राह दान गुण देयनं ।
 सिद्धि ऋद्धि सुबुद्धि सवीरं सुडाहल देव सुप्रसन्नं ॥ १ ॥

कवित्त

समरि विसन सिव सगति सिद्धिदाता सरसति ।
 वषाणुं कमधज्य पुहुवी राजा छत्रपति ॥
 जेहा चक्कवे हुआ जिण वंस नरेसरु ।
 त्याग त्याग निकलंक वंस छत्रीस तणा गुरु ॥
 गजराज दियण मंजण गंजा उमै बिरूद उद्ध रे ।
 कुल माण धरै प्रगटबौ कमध रतनमल्ल रिणमल्ल रे ॥ २ ॥
 दलपति उदयसिंघ माल गंगेव महाबल ।
 बाघा सुजा जोध कमध रणमाल अणंकल ॥

चुडा वीरम सलष साष तेरह अज आला ।
 चाग तीडा छात्र हुआ कमधज्ज हाथाला ॥
 हिंदुआण तिलक हिंदु बिहद धुं हड आसासीह धन ।
 तीण पाट हूओ महिराण तन रूप भूप एता रतन ॥ ३ ॥

अन्तिस भाग-

गाहा

कंत मृत वात सुणे कुलवंती करि हरि २ जम हरि कुलवंती ।
 कुंदण तन होमे कुलवंती कीधा चंदन मो कुलवंती ॥ ८० ॥
 इम अंग होमि विमाणें आईआ सुरती सन्ही आई करि ।
 बऊ कोड पुहप वरषा करि लिण सामि चाला संभि सुंदरि ॥ ८१ ॥

वचनिका

“तिण वे लागें बरी आकास वांणी कहायो माहाराजा रेणसा वधाइ वधोइ
 अगनि सनान करि सति पणि आइ ब्रह्म विष्णु महेसर इंद्र सुरसथि सुर विमानें कही
 महा सतीयां सन्ही जाउं धवल मंगल पुहप वरषा करि वधावो ॥”

दूहा

सावत्री उमया श्रीया आगी सामी आई ।
 सुंदर भिदिर सोवन मैं इंदिर लई वधाइ ॥ ८२ ॥
 धवल मंगल हरष वधीया नेह नवल ।
 सूर रतन सखीयां सरिस मिलिया जणि महल ॥ ८३ ॥
 कुआं सुर नर पुर उद्धरे वैकंठ की घो वास ।
 राजा रायणा भर तणो जुग अविचल जग वास ॥ ८४ ॥

पुष्पिका-

“वदि वैयासह तिथि नवमी १५ पनरोतरे वरस ।
 वार शुक लडीआ विहद हिन्दू तुरक बहसि ॥ ८५ ॥
 जोडि मणै षडीयो जगो रासो रतन रसाल ।
 सूर पुरां सामलो म डमोटा भूपाल ॥ ८६ ॥
 दिल्ली रावा का उजेणी रासा च्यारिजुग
 कथा रहसी कविपात्र कहसी ॥ ८७ ॥

इति श्री महाराजा रतनजी री वचनिका संपूर्णम् ॥ संवत् १७६३ वर्षे माघ मासै शुक्ल पक्षे १३ तिथो सोमवासरे ॥ श्री ॥ सकल पंडित श्री ७ श्री विमलरुचि-गणि शिष्य मुनि गोतम रुचि रा लेखक ॥ डुंगला नगरे ॥

इसमें राणा रत्नसिंह का वीरता पूर्वक युद्ध में काम आना और पद्मिनी का अन्य स्त्रियों के साथ सती होने का वर्णन गद्य तथा पद्य दोनों में है। यह वीररस का सुन्दर कान्य है।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१५) वृन्दसतसई । रचियता-वृन्द कवि । प्रति १-आकार ७" x ८" ।

इसमें ७१४ पद्य हैं। इसका रचनाकाल इसमें 'ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार' दिया है, जिसके अनुसार संवत् १७६१ या १७६१ ठहरता है। परन्तु वृन्द कवि का देहावसान संवत् १७८० भादों वदि ३ निश्चित है। अतः इसका रचनाकाल संवत् १७६१ ही मानना होगा।

आदि भाग-

श्री गुरु नाथ प्रभाव तैं, होत मनोमथसिद्धि ।
घन तैं जु तरु बेल दल, फूल फलन की बद्धि ॥ १ ॥
किये वृन्द प्रस्ताव कैं, दोहा सगम बनाय ।
उक्ति अर्थ दृष्टान्त करि, दृढ़ करि दिये वताय ॥ २ ॥
भाव सरल सम हुत सर्वे, भले लगे इह माय ।
जैसे औसर की कही, वांणी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥

अंतिम भाग-

जिय संतोष विचारियै, होइ जु लिप्यो नसीब ।
षल गुल काच कथौर सौं, मानत रली गरीब ॥ ७११ ॥
जथा जोग सब मिलत है, जो विध लिप्यो अंकूर ।
षल गुल भागे गव्वारनी, रांणी पांन कपूर ॥ ७१२ ॥
सभै सारदो दीन को, सुनत होत मन मोद ।
प्रगट भयो यह सतसया, भाषा वृंद विनोद ॥ ७१३ ॥
संबत ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार ।
सातै दाका सहर में, वुपज्यो पुहमि प्रचार ॥ ७१४ ॥

[स्वरूपलाल शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर]

प्रति २. आकार ५'५" × ४'२" । इसमें ५४ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं । इसमें पद्यों की कुल संख्या ७१५ है । इसका लिपिकाल संवत् १७६८ भाद्रवा वदि ८ शनि है

[रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर]

प्रति ३. आकार- ११'५" × ८.७" । पत्र-संख्या ३७ । पद्य-संख्या-७०६ । लिपिकाल सं० १६०४ ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(१६) सगत रासो । रचियता-गिरिधर आस्या । आकार-११"×१०" । इसमें कुल ४३ पत्र हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३० अक्षर हैं । अक्षर बहुत अधिक जमे हुए न होने पर भी पढ़े जा सकते हैं । इसमें कुल ६४३ पद्य हैं । इसमें महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह तथा उसके वंशजों की वीरता का वर्णन है । इसमें रचनाकाल न होने पर भी ऐसा ज्ञात होता है कि यह रचना १७७५ के बाद की है क्योंकि भींडर में इसका रचनाकाल शक्तिसिंह के दसवें वंशधर मोहकमसिंह (दूसरे) के समय में माना जाता है । रचना वीर रस प्रधान है । ग्रन्थ डिगल भाषा में है ।

आदि भाग-

प्रथम प्रणमि सुरराइ प्रसन ? प्रणमि बले गणपति ॥

सत गुर पृण में सेव गुर । मोद दिये सुम मति ॥ १ ॥

तूरिज वंश सराहियै, भुजा धरजै विप्र भार ।

गुर धर गहिलोतां तणौ, सहिये लौ संसार ॥ २ ॥

उदाहरण-

दोल सच्चम ठूकडौ, भींडर हूँ कुल मांण ।

अमरो सुष रावै असंघ, विप्र जोस पुम्माण ॥ ४१ ॥

धर धुं सै धन धुप्पटै, सोनिगरो छल कार ।

सारा देस दसोर रा, प्रजा आपिआ पुकार ॥ ४२ ॥

बुं ब सुणै मी आबले, मांजण खलां भटक्क ।

सन्नातह हि साजत करे, किलंबे बेखटक्क ॥ ४३ ॥

अमरौ रौदा उप्परै, चाले कलि चुऊवाण ।
 दल आविद्या दसोर रा, भींडर उगे माण ॥ ४४ ॥
 मोरे भींडर मालजै, धर धपट्ट दे धक्क ।
 आथवलै अमरा तर्जी, किलंबे बे कटक्क ॥ ४५ ॥

अन्तिम भाग—

परि पलि अपछरा, नरो बैकुंठ पधरावै ।
 सांम्हे ले सुर भेलि, बड़ौ नर पाल बधावै ॥
 सति सकल सहिं सूरु, अवर कांड सुमति न आवै ।
 जिता साथि नरपाल, सहिसा जोति समप्पे ॥
 तर वहि धरु तोर की, तै हुआ वागम टलै ।
 संसार सिरै करि सगत हर, महा जोति नरहर मिलै ॥ ८ ॥

[सरस्वती भंडार, भींडर]

(१७) समयसार नाटक । रचयिता—बनारसीदास । आकार—
 १०" x ४'४" । पत्र-६१ । पद्य-७२७ । लिपिकाल-सं० १७६८ । रचनाकाल-सं०
 १६६३ आसोज शुक्ल १३ रविवार ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१८) सोनी गरां री वंशावली । यह ८" x ५" आकार वाले ६ रचनाओं
 के संग्रह में दी हुई १०१ नामों की एक वंशावली है ।

नाम इस क्रम से है:—

(१) आसापुरी । (२) काशिब । (३) चाहमान । (४) मरू । (५)
 श्रीवद्ध । (६) हंसदेव । (७) मलयदेव । (८) राजपाल । (९) मस्तकराव । (१०)
 पुत्रमासार । (११) माल । (१२) सत्रेसाल । (१३) भार्गनाथ । (१४) भवानीदास । (१५)
 भागीरथ । (१६) सामदत्त । (१७) जिनदत्त । (१८) रामदत्त । (१९) मानदेव । (२०)
 सूरजदेव । (२१) कामदेव । (२२) मुगधनाथ । (२३) विश्वनाथ । (२४) हरिदत्त । (२५)
 भरवदत्त । (२६) महीपकर । (२७) नारायनदास । (२८) सोमदास । (२९) नरवद । (३०)
 विश्वेश्वर । (३१) पुरुषदेव । (३२) विजयचंद । (३३) अजितसेन । (३४) वीरसेन । (३५)
 रूद्रसेन । (३६) नरसिंहदास । (३७) ईसरदास । (३८) गुणनाथ । (३९) अरवदपति । (४०) सोमेश्वर
 (४१) जांगलू । (४२) महीपाल । (४३) समरसीध । (४४) रातुल । (४५) अनय-
 सिध । (४६) उदयसिध । (४७) विजयासह । (४८) गुल्ल । (४९) बसिलदेव ।

(५०) अमर गंगेय । (५१) अनयसिंघ । (५२) वाहमदे । (५३) चाहमदे । (५४) सोमेश्वर
 प्रीथीराज । (५५) वासुदेव । (५६) सामंतराज । (५८) नरदेव । (५९) विक्रम ।
 (६०) अजैराज । (६१) आनों । (६२) बल्लभराज । (६३) दुर्लभराज । (६४)
 चंदनराव । (६५) गोवलराव । (६६) विधराज राव । (६७) सिंधराव । (६८) लाषण ।
 (६९) चीतो । (७०) बालण । (७१) सोही । (७२) मरेदराउ । (७३) अन्हल्ल राव
 (७४) जींदराज । (७५) आसराज । (७६) मणिराव । (७७) आल्हण राव । (७८)
 कात्रू । (७९) समरसी । (८०) जागदेव । (८१) अरसी । (८२) उदैसींघ । (८३)
 जसोवीर । (८४) कर्मसी । (८५) चाविगेद । (८६) सामंतसी । (८७) कानूमदे ।
 (८८) मालदे । (८९) रिणविर । (९०) वणवीर । (९१) लोलो । (९२) सतो ।
 (९३) भीमो । (९४) रणधीर । (९५) अखयराज । (९६) भाणजी । (९७) नारायण
 दासजी । (९८) महाराज श्री चतुर्भुजजी । (९९) महाराज श्री गरीबदासजी । (१००)
 महाराज कुमार श्री जगतसिंहजी । (१०१) कुमार श्री कीर्तिसिंघजी ।

[श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(१६) अलंकार आशय । रचयिता-रामकरण कविराय । रचना
 काल-सं० १८५७ विजय दशमी रविवार । आकार-१० $\frac{३}{४}$ '' × ७'' । पत्र-संख्या
 १६ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियाँ और प्रति प्रकित में २३ अक्षर हैं । छंद-
 संख्या ६७ ।

आदि भाग-

दुहा

वरन वसन वाहन विमल, विध विध विमल विचार ।
 बंदौ वर बानी वन, विमल वरन विस्तार ॥

अन्तिम भाग-

अतिसयोक्ति रुपक जहाँ, केवल ही उपमान ।
 कनक लता पर चन्द्रमा, धरे धनुष छे बान ॥
 संबत् अठार सतावनो विजय दशम रविवार ।
 अलंकार आशय जु यह मयो गन्ध अवतार ॥

[अन्ताणी संग्रह]

(२०) अलंकार रत्नाकर । रचयिता-दलपतराय और वंशीधर ।

लिपिकाल-सं० १६२८ । आकार-११'५'' . ८'७'' । पत्र-संख्या ६६ । प्रथम ६ पत्रों पर अलंकारों की सूची दी गई है और शेष पर ग्रन्थ का विस्तार है । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५/२६ अक्षर हैं । छंद-संख्या २१६ । इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह संवत् १६२८ में दशोरा पुरुषोत्तम द्वारा महाराणा शम्भूसिंह के लिये लिपिबद्ध की गई । लिपिकार ने जिस ग्रन्थ से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है उसकी सूचना ग्रन्थ के अन्त में लाल अक्षरों से इस प्रकार दी है-“या पुस्तक लिखाणी पारसोली रावजी श्री लछमणसिंहजी की पुस्तक सों । सौधौणी मोगडै हरदानजी संडायचरी पुस्तक सों । ”

ग्रन्थ के आदि भाग से ज्ञात होता है कि उक्त दोनों लेखकों ने इस ग्रन्थ का निर्माण महाराणा जगतसिंह के लिये किया था । ग्रन्थ अलंकारों को समझने की दृष्टि से बहुत उपयोगी है । क्योंकि प्रत्येक छंद की उसके साथ ही गद्य में विशद व्याख्या की है इसके अतिरिक्त इसकी एक और विशेषता यह है कि व्याख्या में अन्य कवियों के उदाहरण भी उद्धृत किये गये हैं ।

आदि भाग-

दोहा

नवत सुरा सुर मुकुट महि, प्रतिबिंबत अलि माल ।

किये रत्न सब नील मनि, सो गनेस रत्नपाल ॥ १ ॥

अथ देशाधिप वर्णन

उदयापुर सुर पुर मनौ, सुर वर श्री जगतेस ।

जिनकी छाया छत्र बसि, कीनौ ग्रन्थ असेस ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सवैया

कवि खेलत फाग सुनारिन संग, अनंग तरंग महा सरसै ।

तिहे टूटति मोतिय माल विसाल, उरोजन तें करकें परसै ॥

गिरि भूमि गुलाल तें लाल भये, सु तो दारिम जानि सुवा करसै ।

लखि सों यह साहजहाँ जगनाह के, दान ही की महिमा दरसै ॥ २१६ ॥

“एहां कवि की समृद्धि कहि याते उदात्त अलंकार” उदात्त के आश्रयसों मोती गुलाल करी लाल भये यह तद्गुण अलंकार । ओर इही लात इन्नु याके भ्रम को समर्थकता यातें काव्यलिंग अलंकार । सो इहां एक ही लाल शब्द करिकें तद्गुण अरु काव्य लिंगन को सूचन हे । याते दुहुन कों एक वाचकानुप्रवेश संकर अरु भ्रांति अलंकार । एक वाचकानुप्रवेश संकर अरु भ्रांतिमान अलंकार । इन दुहुन मिलिके उदात्तालंकार की सुन्दरता कीनी । याते अंगांगी भाव संकर ॥ एसी कवि की संपात्त सोई कार्य अरु साहजहाँ को दान महिमा सों कारन ए दोह धरे है याते हेतु अलंकार । अथवा प्रश्नोत्तर छते कवि की संपत्ति करि साहजहां की संपत्ति प्रस्तुत होइ तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा ॥ अथवा दुहुनी संपत्ति प्रस्तुत होय तो प्रस्तुतांकुर । ऐसे तीन हुं अलंकारन को संदेह संकर ॥ कवि की संपत्ति वर्णन तहां देत अजोग ही जोग या लछन ते सम्बन्धातिसयोक्ति के अरु उदात्तालंकार के एक वाचकानु प्रवेश संकर अरु कवि संपत्ति ओर राजा को दान ताको वर्णन सोइ अत्युक्ति अलंकार सो एक वाचकानु प्रवेश संकर वाके आश्रय सों कवि की संपत्ति रूप कार्य की द्वारा राज संपत्ति रूप कारन प्रस्तुत होइ तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा कवि संपत्ति ओर राज संपत्ति दोऊ प्रस्तुत होई तो प्रस्तुतांकुर सों इहाँ अप्रस्तुत प्रसंसा अरु प्रस्तुतांकुर से संदेह संकर सों राजा की संपत्ति वर्णन उदात्तालंकार व्यंग है ताको एक वाचकानु प्रवेश संकर ॥ ऐसे इन तीनहु एक वाचकानु प्रवेश संकरनु को सम प्राधान्य संकर है ॥ जो पे इन तीनहु संकर भाँझते कोऊ काहुको अंग नाही या प्रकार इन चारहु संकरन को संकर है ॥ उदात्त (१) अतिशयोक्ति (२) तद्गुण (३) काव्यलिंग (४) भ्रान्ति (५) हेतु (६) अप्रस्तुत प्रसंसा (७) प्रस्तुतांकुर (८) अत्युक्ति (९) ऐसे ना हुं अलंकार या सवैया में धरे हैं ऐसे ओर दू उदाहरन विचार लीज्यौ ॥

[कविराव मोहनसिंह, भटियानी चोहट्टा, उदयपुर]

(२१) अलंकार चन्द्रिका— रचयिता—हरिचरणदास ।

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ एक स्थान पर प्राप्त हुईं । यह जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के ‘भाषा-भूषण’ के अलंकार खंड की टीका है । प्रथम प्रति का आकार १२" x ७" ६" है । लिखित पत्रों की संख्या ८३ है । इसमें प्रथम तीन पत्रों पर ‘भाषा-भूषण’ का ‘नायका-भेद’ प्रकरण समाप्त हुआ है । चौथे पत्र से ‘अलंकार चन्द्रिका’ आरम्भ होती है । ग्रन्थ ४६८ छंदों में समाप्त होता है । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । शैली की दृष्टि से कवि ने पहले पद्य में लक्षण प्रस्तुत किया है, फिर गद्य में उसकी टीका की है और अन्त में बिहारी और मतिराम के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं । ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर ‘भाषा-भूषण’ में दी गई गणपति की प्रार्थना को व्यक्त करने वाला एक सप्तरंगी चित्र भी है, जिसका चित्रणकाल संवत् १६१० दिया गया है । चित्र शुद्ध राजपूत शैली का है ।

इस ग्रन्थ की रचना संवत् १८३४ में हुई और संवत् १९१० में राव बख्तावर-सिंह ने अमरचन्द्र ब्राह्मण द्वारा लिपिबद्ध कराया ।

द्वितीय प्रति का आकार ६" x ६" है । इसमें ३६ पत्र हैं । अन्त के अन्य ५ पत्रों पर अलंकारों की सूची दी गई है । इसमें गद्य में टीका नहीं है । केवल दोहों में लक्षण और उदाहरण है । इसके पश्चात् कुछ महत्त्वपूर्ण अलंकारों, ध्वनियों, रीति आदि पर ६४ पत्रों से प्रकाश डाला गया है । विभिन्न भेदों सहित ११८ अलंकारों के लक्षण सोदाहरण २१४ पत्रों में दे दिये गये हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ अक्षर हैं । परन्तु यह प्रति प्रथम प्रति की भाँति न तो लिखावट में सुन्दर है और पूर्ण ही । पाठ भी कहीं कहीं अशुद्ध है ।

ग्रन्थ के आदि भाग में टीकाकार ने इस प्रकार अपनी भिन्नता प्रकट की है :—

भाषा भूषन ग्रन्थ को, किय जसवन्त नरेस ।

टीका हरि कवि करत है, उदाहरन देखेस ॥

जहाँ सु चन्द्रालोक में, भाषा भूषन विरुद्ध ।

उदाहरण सूत्र— लच्छ सुलच्छन केरि तहि, करत सुहरि कवि सुद्ध ॥

(२२) कवि दर्पण—रचयिता—ग्वाल कवि । रचनाकाल—१८६१ । आकार—१०" x ४" । पत्र-संख्या ८० प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं । अक्षरों का लेखन सुन्दर, मोटा, जमा हुआ और नागरी है । रीतिकाल की शैली पर लिखित यह एक आलोचनात्मक ग्रन्थ है जिसमें काव्य-दोष का बड़े सुन्दर ढंग से विवेचन हुआ है । कवि ने यहाँ गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग किया है । सारे ग्रन्थ को सात 'क्रान्तियों' में विभाजित किया है । ग्रन्थ के विभाग और छन्द इस प्रकार हैं :—

प्रथम क्रान्ति	पद पदां दोष निर्णय	६० छन्द
द्वितीय "	वाक्य दोष निर्णय	८४ छन्द
तृतीय "	अर्थ दोष निर्णय	१३ छन्द
चतुर्थ "	रस दोष निर्णय	२६ छन्द
पंचम "	दोषैकता करन	३३ छन्द
षष्ठ "	दूषोद्धारक वर्णन	५७ छन्द

ग्रन्थ के आदि भाग के पहले कवित्त में शंकर की प्रार्थना है और दूसरे दोहे में सरस्वती की । तीसरे दोहे में कवि ने अपना और ग्रन्थ का परिचय दिया है—

वंदी विप्र सुग्वाल कवि, श्री मथुरा सुष धाम ।

प्रगट कियो या ग्रंथ को, कवि दरपन यह नाम ॥ ३ ॥

चौथे दोहे में कवि ने रचनाकाल दिया है—

“संवत् सप्ति^१ निधि^२ सिधि^३ सप्ति^४, आस्विन उत्तम मास ।

विजै दसमि रवि प्रगट हुअ, कवि दरपन परकास ॥ ४ ॥

पाँचवे दोहे में कवि ने खलों के मुँह पर ‘कुलफ’ (ताला) लगाकर सज्जनों की प्रार्थना करते हुए सातवें दोहे में अपनी शैली प्रकट की है—

“उदाहरन दुषनन पै, इक इक अपनो राषि ।

फिर पुराने कविन कै, रखिहौ कवित सुसाषि ॥ ७ ॥

इस ग्रंथ से यह सिद्ध होता है कि कवि ने यहां एक आलोचक के रूप में रीति काल की शैली में एक क्रांति उपस्थित की है । आलोचना के इतिहास में यह ग्रंथ महत्वपूर्ण स्थान रखता है । जो इसकी शैली से स्पष्ट प्रकट होता है । अपने समय में प्रचलित लगभग ४० रीति ग्रंथों, नाटकों तथा अन्य ग्रंथों का अध्ययन कर कवि ने यह ग्रन्थ तैयार किया है, जिनकी सूची हम नीचे देंगे । एक ओर तो कवि ने प्राचीन लक्षण ग्रंथों की शैली को स्थान दिया है और दूसरी ओर अपनी नवीन शैली को । सबसे पहले पद्य में लक्षण की स्थापना की गई है, फिर उसकी गद्य (वार्ता) में व्याख्या की है । इसके बाद कवि ने स्वरचित उदाहरणों से पुष्टि करते हुवे उनकी भी गद्य में व्याख्या करदी है । इसके पश्चात् अन्य ग्रन्थों से उदाहरण देकर उनकी भी व्याख्या कर, अनेक प्रश्नोत्तरों द्वारा शंका समाधान की है । अन्य ग्रन्थों से दोष पूर्ण उदाहरण लेकर उनकी भी विशद व्याख्या करदी है । कहीं कहीं कवि ने गद्य में भी वाक्य बनाकर अपने मत की पुष्टि की है । इससे हमें कवि के व्यापक अध्ययन के साथ ही साथ विषय को समझने की क्षमता और उसे व्यक्त करने की योग्यता का परिचय मिलता है । एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है ।

अथ पद-दोष

कवित्त

श्रुति-कटु-गत-संस्कृत अप्रयुक्त और
 असमर्थ फर निहतारथ न आनियै ।
 अनुचितार्थ लीजै ना निरर्थक अवाचक ॥
 तीनों असलील को बचावहु'र मानियै ॥
 राषौ ना संदिग्ध अप्रतीत ग्राम्य ने पारथ
 दोष कहे त्रीदस ये पद के प्रमानियै ।
 गत संस्कृत असमर्थ औ निरर्थक
 त्रै सागि दस दोष वाक्य हूँ मै पहिचानियै ॥ १ ॥ २७

वार्ता

“गत संस्कृत आदि ये तीन दोष छोड़िकै और श्रुति कटु इत्यादि जे कवित्त में है ते दस दोष वाक्य हूँ मैं होत हैं । अथ नाम छुत लछन-लछ लिखियत है—

कवित्त

कर्न कुट अट द्रुत वर्न तिय कीनो कुष
 गत संस्कृत सब्दा सुद्ध तीनि हारा है ।
 होय सब्द सुद्ध पै अवन्यौ अप्रयुक्त कहै
 जिश्रु पति नीको तो यै बारि डारा है ॥
 द्वर्थ ख्याती थोरो बहु थोरो है असमर्थ
 धूमि घन परसत अम्रत की धारा है ।
 राषै अप्रसिद्ध द्वर्थ मैं तो सोई निहतार्थ
 पीबै मकरंद अलि चन्द को अपारा है ॥ १ ॥ २८

वार्ता

कर्न कटु इति ‘अट’ कहियै नहीं, है टवर्ग जायै और जे वरन है तेहुत होय कान कों कडये लगै । प्रमानः—काव्य प्रकास की टीका—काव्य प्रकाशादर्श ना नंदी पुरुषास्ती.....।

याको अर्थ

“कठोर और ब्रज तन करि कै जो उच्चार करियै ओज गुण व्यजकम् संजोगी वर्ण ओ दुषद होय कानन कों जो पद श्रुति कटु कहियै ।”

इहाँ प्रश्न

“स्याम कन्हाई छुन्हाई प्यारे इत्यादि पद संजोगी है ये भी कर्न कष्ट भये चाहियौ ।”

“अैसेई पदन के जुदे करिये को कहा है । संजोगी भी होय औ तीव्र प्रयत्न करि उच्चारन करियै होय ताको उदाहरन ‘तिय कीनो कुष’ कुष को कोप, कुष की ठौर रिस कहै तो दोष नहीं ।

अन्यत्र:—काव्य रसाइन ।

आगे ‘काव्य रसायन’, ‘बिहारी’, ‘रसिक-प्रिया’ कृष्ण को समर’ आदि कई ग्रन्थों से उद्धरण लेकर गद्य में सब की विशद व्याख्या करके स्पष्ट किया गया है ।

ग्रन्थ में कवि ने इसी प्रकार निम्न कवियों और ग्रन्थों से उद्धरण लिये हैं:—

- | | |
|-----------------------------------|---|
| १. काव्य रसायन | २१. गीत गोविन्द (संस्कृत) |
| २. बिहारी सतसई | २१. दयानिधि |
| ३. कवि प्रिया | २३. श्री पति सुकवि |
| ४. रसिक प्रिया | २४. रस सिरोमनि ग्रंथ (नरवर पति राम सिंह कृत) |
| ५. श्री कृष्ण को समर | २५. दास कवि |
| ६. लेख काव्य प्रकाश (भाषानुनाद) | २६. राम चंद्रिका |
| ७. काव्य-प्रकाश (मूल संस्कृत) | २७. रसिकानंद |
| ८. काव्य प्रकाश (टीका संस्कृत) | २८. कुमार सम्भव (संस्कृत) |
| ९. सभा प्रकाश | २९. दुलह कवि |
| १०. ठाकुर कवि | ३०. वीर चरित्र नाटक (संस्कृत) |
| ११. प्रेम तरंग | ३१. रत्नावली (संस्कृत) |
| १२. कविवल्लभ | ३२. कर्पूरमंजरी (संस्कृत) |
| १३. फुटकर | ३३. रस मंजरी (संस्कृत) |
| १४. रस चन्द्रोदय | ३४. लालकवि |
| १५. रस राज | ३५. प्रवीनराय |
| १६. लेख रसरहस्य (भाषानुवाद) | ३६. काव्य-प्रदीप (संस्कृत) |
| १७. लेख कवि वल्लभ (भाषा-टीका) | ३७. भ्रांति मंजनी |
| १८. नवसिध | ३८. भास नाट्यकार (संस्कृत) |
| १९. आलम कवि | ३९. भाषा भूषण |
| २०. मोहन लीला | |

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२३) कविता कल्पतरु । रचयिता-नान्हूराम 'कवि सागर' । आकार-
 ८'' x ६'५'' । पत्र-संख्या ८२ । प्रत्येक पत्र ११-१२ पंक्तियां और प्रति
 पंक्ति में २२ से २७ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ में ५७३ छंद हैं । यह ग्रन्थ संवत् १६४०
 में रावल नवलसिंह के पुत्र राव मोड़सिंह ने सादरपुर में लिपि बद्ध किया । इसकी
 पुष्पिका इस प्रकार है "इति श्री सहृदय रूप जोरावरसिंह आग्या प्रमान ग्रन्थ
 कविता कल्पतरु कृत अर्थालंकार संकर संसृष्टि वर्णनम् नाम पंचमी साषा
 ॥ संपूर्ण ॥ संमत् १६४० वर्षे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे २ द्वितिया से संपूर्ण
 लिखितम् ॥

सादरपुर में शुभ लिखित, कवि कल्पतरु जान ।

नान्द पुत्र नवल के, आम्र पुष्प सम नाम ॥ १ ॥

ग्रंथ के अंतिम भाग से ज्ञात होता है कि जोरावरसिंह ने नान्हूराम को
 'कविसागर' की उपाधि दी थी और उसने उनके आदेश से संवत् १७८८ में इस
 ग्रन्थ का निर्माण किया था । आदि भाग में ३८ छंद तक कवि ने जोरावर-
 सिंह का और अपना वंश परिचय दिया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण
 है । सम्पूर्ण ग्रंथ पाँच शाखाओं में विभाजित किया गया है-

१-राजवंश वर्णन तथा शब्द अर्थ निरूपण

२-विभाव, अनुभाव, संचारीभाव आदि निरूपण

४-शब्दालंकार निरूपण

५-अर्थालंकार निरूपण

कवि ने मम्मट के मत का प्रतिपादन करते हुए लक्षणों को सोदाहरण
 समझाने का सफल प्रयत्न किया है । विषय के अनुसार छंद और भाषा के प्रयोग
 हुए हैं । वीर रस के छप्पयों में रासो की शैली का प्रयोग पाया जाता है ।

आदि भाग-

छप्पय

मंगल मंगल करन रूप मंगल छवि छाजत ।

बुधि विसाल गुन जाल बाल ससि माल विराजत ॥

फरस पानि वरदानि दुषद दानव दल षंडन ।

एक दंत निति मंत्र मत्त दंति मुष मंडन ॥

जिह जोग काज जगपत ही लहत-सिद्धि सिब सिद्धि तुव ।
 बीर रस भूषन करन देहु उकति गन ईस तुव ॥ १ ॥
 (५ छंद तक ब्रह्मा, शिव, कृष्ण, सरस्वती आदि की प्रार्थना है)

कवित्त

कुल पति मिश्र सब कविन के चक्रवर्ति,
 चक्रवर्ति गाये गाथ सुनै गुन भारे की ।
 नागदेव लोक तें निपुन कीनौ लोक,
 नांहरांम जैसी मति गज मुषवारै की ॥
 सुर गुर भूलि कै असुर-गुर भूलि गये,
 उदै निसिराज कै गनति कौन तारे की ।
 एक मुष वारेन की कविता समान कैसै,
 समता न कविता हजार मुषवारे की ॥ ६ ॥

दोहा

जोति रूप प्रगटै सुबुधि, मिटत तिम (१) अग्यांन ।
 दिनकर जिम कवि पैम को, धरै जबै कवि- ध्यान ॥ ७ ॥

अथ राजवंस वरनन

दोहा

देव अंस राजा भए, रघुकुल कै अवतंस ।
 लषि मत पूरव कवि- ने, वरनत हौ तिन वंस ॥ ८ ॥

छंद पद्धति

नृप ईस धर्म ग्वालेर दीन । तिन पुत्र सोट भए अति प्रवीन ॥
 सुत दुलहराय जमवाइ भाइ । दिय वड गूजर मीना उडाइ ॥ ९ ॥
 कुल तास कलस का किल नरेस । सुत हनूराय हनमंत भेस ॥
 जग जान उदे तिनकै सपूत । जिन मारि लई धरनी अभूत ॥ १० ॥
 जिनकै पजौन सावंत भेस । जीते कमद्व कनवउज देस ॥
 ता पुत्र मलैसी वड ववेक । गिरनारि आदि जीते अनेक ॥ ११ ॥
 वोजल नरेस तिनकै गुरुर । नृप राजदेव तिन वंस सूर ॥
 कहि कीलृणदे भय तास नंद । सुत कुंतिल लीने अति अनन्द ॥ १२ ॥
 सुनि जौनसीह ता पुत्र मानि । वर उदैकरण ता पुत्र जानि ॥
 तिनकै नरेस नरसिंघ गाव । भुज बंधु द्वितिय स्थावृंभराव ॥ १३ ॥

स्थौ वृंभ प्रगट स्थौवृंभ भूप, तिन जुद्ध जोरि जीते अनूप ॥
जिन वंस मोज षग दांन संग, रणमल्ल तास कै रण अभंग ॥ १४ ॥

दोहा

रणमल्ल के नाथू भयो, दुतिय पंचाङ्ग वीर ।
आसल जी सुत तीसरो, छुटै जंग तव वीर ॥ १५ ॥
पुत्र पंचाङ्ग कै भयौ, दिन मनि देईदास ।
सुत गुपाल तिनकै भयौ, जिम गुपाल वृजवास ॥ १६ ॥

कवित्त

वारह वरस कै संधारी बड़ गूजरांनि,
तीन बेर खेत पर्यौ चावले लराई कौ ।
पूरव मै मार्यौ बलषटा कौ फवजदार,
दलि डार्यौ दल जौ वरार पति साई कौ ॥
ठौर २ खगात्रल जीति के गुपालदास,
पायौ मान भूपतै किताव स्वताई कौ ॥ १७ ॥

दोहा

सुत गुपाल के द्वै भये, इक गनि भोपतिराव ।
कदौखतसी दूसरो, रिण से तिनको चाव ॥ १८ ॥
मीम रूप भोपति तनय, रावत राघोदास ।
फतेसिंघ हूंगर प्रवल, अरि कुल करने वास ॥ १९ ॥

कवित्त

मिच्छुक के कर दांन कौ देखत लहि छिपावत लोग भए हैं ।
जैवत एते रसोई मै आयकै बात मै टाक कै पात गए हैं ॥
षग गहै कहि कौन वचै जस के सुत तैं सब आइ नए हैं ।
रावत राघवदास के वास तैं दुज्जन वास धरान एए हैं ॥ २० ॥

दोहा

बड़ गूजर बल षंडि कै, भूडों लयो छिनाइ ।
मीना मार्यौ वारि कौ, फते फतेसिंघ पाइ ॥ २१ ॥
फतेसिंघ के केसरी, सिंघ सिंघ के भाइ ।

चतुरसिंघ बल करि प्रबल, पुनि सुजानसिंघ गाइ ॥ २२ ॥
 अचलसिंघ अरू देवसिंघ, फूलसिंघ मन मानि ।
 महुकमसिंघ पुनि अजबसिंघ, हिन्दू सिंघ जग जानि ॥ २३ ॥

छप्पय

फतेसिंघ के राव देवसिंघ देव प्रगट्टिव ।
 बीदरपति बल भीम खगावल दुज्जन बल घट्टिव ॥
 राम काम आसाम धाइ धौकल धर किन्नव ।
 कवर किसन के वैर बेगि दुज्जन सिर लिन्नव ॥
 बहु वर जट्ट मारे अघट, सोधि वृज सब सुद्ध किय ।
 आ वैरी नाथ विसनेस कौ, जीति जंग तिन जोति दिय ॥ २५ ॥

दोहा

देवसिंघ कै कँवर प्रिय, वषतसिंघ जुभ्भार ।
 जोरावरसिंघ जोरवर, अरि मारे गहि सार ॥ २६ ॥
 कवर उदै बषतौ कवर, कोकि लियो करतार ।
 मेव मारि रेणागढी, भूक्यौ राव भुभ्भार ॥ २७ ॥
 जुद्ध काव्य विद्या सकल, इत्यादिक पढि धीर ।
 इमि प्रवीन पुहुमि भयौ, जोरावरसिंघ वीर ॥ २८ ॥
 विदर बड़ाई ग्रन्थ रचि, कहै कबीसर गाइ ।
 सो प्रसाद जयसिंघ कौ, लीज्यौ सब जग पाइ ॥ २९ ॥

छप्पय

दए धवल पुरधाव वीर जोरावर रूद्धिव ।
 सांभरि सैद संधारि षेत परि घाइल उद्धिव ॥
 जट्ट पट्ट दहपट्ट जट्टमंडल कसि किन्नव ।
 आवै गढ़ गंजाइ धाइ हाडा हठ अन्नव ॥
 अरि आड तोडि आडावला-मेर घेर सब जेर किय ।
 वन गिरहि मेदि जयसाहि बलिए कहा कहि गु लाज लिय ॥ ३० ॥

कवित्त

लीनै तीन लोक भार करतार राज लहै
 कहै वेद गाथा मैं प्रमान मत वाहि कौ ।

दीनों करतार नरलोक भुज भार सब
 दिली पातसाह कौ जनम धनि ताहि कौ ॥
 दिली बातिसाह पातिसाही थंम जानि करि
 सौंय्यौ जयसिंघ भुजभार पातिसाहि कौ ।
 दीनों जयसिंघ महाराजि राज-भार सब
 जोरावरसिंघ मौर जानि कै सिपाही कौ ॥ ३१ ॥

दोहा

जोरावरसिंघ जोरवर, लखि जयसिंघ नरस ।
 राज-भार सौंय्यौ सरस, थंय्यौ मालवा देस ॥ ३२ ॥
 किला रांमगढ़ निकल इक, गांव भानपुर चार ।
 तहां कविन कौ करि सभा, कीनों कवित विचार ॥ ३३ ॥
 तहां बाघोरा भाट इक, चंद नंद सुषधाम ।
 वासी गढ़ आमीर कौ निज कवि न्हान्दूरांम ॥ ३४ ॥
 तिन कवि कौ कीनों हुकम, सब सुष दै सुष पाइ ।
 रस कविता भूषन वलिन, वरनौ ग्रंथ बनाइ ॥ ३५ ॥
 हुकम सकति सम पाइ कै, मंमट मत को पाइ ।
 वरनौ कविता कलप तर, ग्रंथ वाम ठहराइ ॥ ३६ ॥
 मन चिंतत फल कलपतरु, सेवत देत बताइ ।
 जिन रस भूषन बहुलहैं, कवित कलपतर गाइ ॥ ३७ ॥
 संवत सतरह सत सुनौ, वरष अटथासी जान ।
 नवमी आदि अषाढ़ पख, रचना ग्रन्थ प्रमांन ॥ ३८ ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

हुकम समान कीनों कविता कलपतर
 पाइ इत तामैं भेद कवि रस भीनों हैं ।
 चौप करि चाह सौं सुनत भए भिन भिन
 ताही वे रचित कौ उमंग और कीनों हैं ॥
 जोई जोई चाखौ सोई दीनौ मनचित फल
 बहुरि जगत् सांभ औसी जस लीनों द्व ।

नान्द्वाराम कवि को किताब कवि को
जोरावरसिंघ धीर रीझि करि दीनौ हैं ॥ २८६ ॥

दोहा

पुषि अष्टमी भूमि सुत, कातिक आदिक पाष ।
सबै ग्रन्थ पूरन भयौ, पूरन कवि अभिलाष ॥ १६० ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२४) कविप्रिया—रचयिता—केशवदास । प्रति १ । देखो भाग १, (२२)

प्रति २ । आकार—७" × १४" । पत्र-संख्या—२१ । पद्य-संख्या—६८ ।
दशा-जीर्ण ।

[अन्ताग्नी संग्रह]

प्रति ३ । आकार—११½" × ८" । प्रति अपूर्ण है । अतः पत्र-संख्या १ से ८ तक अप्राप्य है; और फिर ९ से १४ तक वर्तमान है; १५ से १६ तक अप्राप्य है; और फिर २० से ३५ तक वर्तमान है । रचना ३५ पृष्ठ पर समाप्त होती है जहाँ उसका लिपिकाल “संवत् १७४० वर्षे शाके १६०५ प्रवर्तमाने महा मांग्यल्य प्रद पोष मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां तिथौ भौमवारे श्रीमेडता गद्ये लिखावतं पंचौली श्री अचलदासजी अत्मार्ये चीरंजीव शुभं भवतु ॥ लिखतंम शेन सांवलः ॥”

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(२५) कविप्रिया टीका । टीकाकार—हरिचरणदास । रचनाकाल—
संवत् १८३५ मघ शुक्ल ५ । आकार—१२" × ६" । पत्र-संख्या ११२ । श्लोक-
संख्या—७१२५ ।

अथ कवि की स्थिति

राजत सुबे विहार में, हैसरानि सरकार ।
सालग्रामी सुर सरित, सरजू सोम अपार ॥ १ ॥
सालग्रामी सरजू तहँ, मिली गंग सो जाय ।
अंतराल में देस है, हरि कवि को सरसाय ॥ २ ॥
परगना ‘गोआ’ तहाँ, गाँव चैनपुर नाम ।

गंगा सों उत्तर तरफ, तहाँ हरि कवि को धाम ॥ ३ ॥
 सरजूपारी द्विज सरस, वासुदेव श्रीमान ।
 ताको सुत श्रीरामधन, ताको सुत हरि जान ॥ ४ ॥
 नवा पार में गाम है, बढ्या अभीजन तास ।
 विस्व सेन कुल भूपकर, करत राज कवि भास ॥ ५ ॥
 मारवाड़ में कृष्णगढ़, तंहं नित सुकवि निवास ।
 भूप बहादूर राज है, विरदसिंह जुवराज ॥ ६ ॥
 राधा तुलसी हरि चरन, हरि कवि चित्त लगाय ।
 तहाँ कवि प्रियामरन यह, टीका करी बनाय ॥ ७ ॥
 सत्रसो छयासठि महीं, कवि जो जन्म विचारि ।
 कठिन ग्रंथ सूधौ कियो, लै है सुकवि निहारि ॥ ८ ॥
 संवत् अठारह सौ विते, पैतिस अधिके लेषि ।
 साक अठारह सौ जपै, कियो ग्रंथ हरि देषि ॥ १४ ॥
 माघ मास तिथि पंचमी, शुक्ला कवि को वार ।
 हरि कवि कृति सौ प्रीत हो, राधा नन्द कुमार ॥ १५ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२६) कविवल्लभ । रचयिता--हरिचरणदास । आकार--१२" × ६.२" ।
 पत्र-संख्या ६१ । पद्य-संख्या ४३० । विशेष देखो भाग १ (२४) । इसमें कवि ने
 गद्य में व्याख्या भी दी है । कवि ने बिहारी-सतसई, कविप्रिया, श्रुति भूषण
 साहित्य दर्पण आदि के उदाहरणों के साथ जो उदाहरण दिये हैं उसमें अपने एक
 स्वरचित ग्रन्थ "मोहन-लीला" से भी उदाहरण दिये हैं जो अब तक अप्राप्य है ।

सूचना--इसीके साथ 'काव्य चंद्रिका' भी है ।

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२७) काव्य कुतुहल । रचयिता--चित्रसाल । लिपिकाल संवत्
 १६२५ पोष कृष्णा ११ गुरुवार । आकार--६" × ६.५" पत्र-संख्या २७ । प्रत्येक
 पत्र पर ६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २२ अक्षर हैं । अक्षर जमे हुए हैं और
 लिपि नागरी है । छंद--संख्या २१४ । यह पिंगल तथा रस का एक लक्षण ग्रंथ है ।
 ग्रन्थ ब्रज भाषा में है ।

आदि भाग-

दोहा

जय बानी दांनी सुमति, कविता कर वर पंथ ॥
 चतुर रसन रचना रचै, काव्य कुतूहल ग्रंथ ॥ १ ॥
 गोकुल सुतैलंग कुल, गुर मुरलीधर पाय ॥
 बंदन कै चातुर रचत, भाषा सहज सुभाय ॥ २ ॥
 कवि कविता लखन सहित, बहुरि प्रयोजन जान ॥
 काव्य अंग पुनि भेद कौं, बरनौ प्रथम प्रमान ॥ ३ ॥

उदाहरण-

(अथ-त्रियोग)

अब त्रियोग के भेद बखानौं । पूर्वानुराग रूचिर हम प्रमानो ।
 ईरषा स्नाप विदेस त्रिभागे । उदाहरो पूर्वानुरागे ॥ ६५ ॥

(पूर्वानुराग-यथा बरवै)

गगरी लग लग बगरी चित ही चाही
 सगरी पग गुन अगरी हित ही हाही ॥ ६६ ॥

(हास्य)

हास्यालंबन जानि विदूषक तिह अंगत उद्दीपो ।
 दग संकोच अनुभाव सुनी मुदत अलस संचारि समीपो ॥ ६७ ॥
 हासी इनके व्यंग ह्वै नृप कवित्त ।
 हास्य सुरगनि चातुरनि के चित्त ॥ ६८ ॥

उदाहरण

जल थल भ्रम पर उचक रत, लषि रहै सबै मुसकाय ।
 जानि फटक थल परत (जु) जल, मेंह सबै नृपराय ॥ ६९ ॥

(ओज)

कटि सुर्वन सुख सरेफ संग । गुन ओज चोज जिहि रूधिर अंग ।
 पुनि ओर बीर रस को भुवन्न, लखिब गाम गोड सगो सुवन्न ॥ ३ ॥

प्रसाद

आमा सै सुनत हि अर्थ तास । कहिये प्रसाद गुनको प्रकास ॥
 चित चहै मलो जन गूढ़ जानि । साँचो सु एक हरि ध्यान ग्यानि ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२८) काव्य सिद्धान्त । रचयिता-सूरति मिश्र । रचना काल-संवत् १७६८ काति सुद ७ बुधवार । आकार-६" x ७" ५" । पत्र-संख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५ अक्षर हैं । अक्षर नागरी हैं । छन्द-संख्या १५० । यह प्रति जोधपुर राव बागजी के भतीजे जीवराजजी की प्रति से संवत् १६३२ वैसाख बुद ५ गुरुवार को महत्तापसिंह द्वारा सलूम्बर में लिपि-बद्ध की गई ।

आदि भाग-

दोहा

श्री वृन्दावन मधि लसै, नित वय नवल किसौर ।
गौर स्याम अभिराम तन, दंपत संपत मोर ॥ १ ॥
कवि ताहि को कहत है, समझे कविता अंग ॥
बृज सविता गुण जो चहै, तो छवि ता प्रत अंग ॥ २ ॥

काव्य लक्षण

बरनन मन रंजन जहाँ, रीत अलौकिक होय ॥
निपुन कर्म कवि को छुतह, काव्य कहत कवि कोय ॥ ३ ॥

उदाहरण-माधुर्य-

दोहा

रौद्र रस-

आलंबन मधि रौद्र अरि, चिरत उदोपन धार ॥
भू भंगादि अनुभाव हैं, उग्रतादि संचारि ॥ ११३ ॥
जग के विषई नरन कौ, सदगत वरनी नाछ ॥
बृज बालन कै गुन रटै, तेऊ सदगत माछ ॥ ११४ ॥

अन्तिम भाग-

‘शब्द अर्थ तिनु धात मय, जीव सुरस आनन्द
अलंकार सौ कान्त है, अंग अंग मत छन्द ॥ १४७ ॥
गुन छु सुरता आदि गुन, रीति भलन सुनुधीर ॥
दौष अंध पंगादि विन, जानो काव्य सरीर ॥ १४८ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२६) छंद पगो निधि । रचयिता-महाराज कुमार मदनसिंह 'मदनेश', भींडर । रचनाकाल-१६२६ । आकार-फुल्सकेप । पत्र संख्या ४५ ..। छंद संख्या १३६...। यह ग्रंथ रचयिता के जीवन काल में समाप्त न हो सकने के कारण अपूर्ण ही रह गया है । इसमें एक जै मंगल अश्व का चित्र तथा अन्य पताका तालिकादि के चित्र और कोष्ठक भी अंकित है ।

आदि भाग-

दोहा

विषन हरन मंगल करन, लंबोधर उर ध्याय ॥

तवै बाज कछु कीजिये, तुरत सिद्ध दरसाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

धारा वणे जु च्यारिकौ, रगन चंद गुरु जानि ॥

छंद निर्गला जगत गुरु, पिंगल सीसि प्रमानि ॥ ५ ॥

धारा छंद उदाहरण

दूत आयो । पत्र लायो ॥

भोग डारौ । जोग धारौ ॥ ६ ॥

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(३०) छंद प्रकास । रचयिता- दानदास दयाल । आकार-६" × ६" । पत्र-संख्या ५६, जिनमें प्रथम १६ पत्र अप्राप्य हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं । ३२ से ५६ पत्र में कमल बंध, वृक्ष बंध, चश्मा बन्ध, जहाज बन्ध आदि ३७ चित्र हैं । इसमें रचयिता ने एक ही छंद में लक्षण और उदाहरण दे दिये हैं और साथ ही दादू पंथ की भावनाओं को भी व्यक्त किया है ।

उदाहरण

छप्पय

करिये एक दस प्रथम, त्रयोदस फेरि लगावत ।

इहि विधि कल चौबीस, च्यार पद काव्य बनावत ॥

रचि द्वै पद अवसान, पंच दस तेरह आनय ।

उल्लासे की रीतिमत, बसु बीस बखानय ॥

यह कश्यौ नाग खग नाह सों, छप्पय छंद अनंद सो ।

जब ह्वै अनन्य मगवत भजै तब छूट हिं भव फंदसों ॥ ५३ ॥

इन्होंने कुल ७८ छंदों का उल्लेख किया है । शेष ३७ बाह्य अलंकारों के विभिन्न छंद हैं

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(३१) छंद प्रबन्ध पिंगल भाषा । रचयिता- भंडारी उदेचंद । रचना-काल संवत् १६३६ आषाढ़ विद ३ । आकार-१० $\frac{३}{४}$ " × ७" । पत्र-संख्या १७, प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २६ अक्षर है । पत्र-संख्या १५० ।

आदि भाग-

दुहा

विघन हरन वांछित करन, श्री मदिष्ट गुन गाय ।

रचना छंद प्रबन्ध की, रची सबन सुषदाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दुहा

सब देसन में लसत है, मरधर देस विसाल ।

तहां तखतगढ़ जोधपुर, तपे मान महिपाल ॥ २८ ॥

ग्रन्थ बन्यो ता देस में, नगर नागपुर मांहि ।

बुधजन समुझि सराय है, यामे संसय नाहि ॥ २९ ॥

कंठ कर लहि ग्रन्थ यह, अर्थ मर्म निरधार ।

सो सब छंदन ग्रंथ को, ह्वै है वारा पार ॥ ३० ॥

परम देव नरवान में, औरन ऐसे बोध ।

चाहे सो विधि सकल छो, तैमे फिर कछु सोध ॥ ३१ ॥

[अन्ताणी संग्रह]

(३२) छंद रत्नावली-रचयिता हरिराम दास निरंजनी । रचना काल-संवत् १७६७ में डीड़वाना में लिपि संवत् १६३० में रामरत्नदास द्वारा भांडार में । आकार १२" × ७ $\frac{३}{४}$ " । पत्र संख्या-२६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १६ अक्षर है । छंद-संख्या ११० ।

आदि भाग-

दोहा

गुरु जन पति गोविन्द को, नाय सीस हरि राम ॥
 पिंगल मत भाषा विषे, रचत रुचिर परकाम ॥ १ ॥
 मात्रा बरन बिभेद करि, द्वे विधि लौकिक छंद ॥
 पिंगल आदि आचार जन, कहे बाधि पर बंद ॥ २ ॥

अंतिम भाग-

दोहा

जिहि अर्थ करि कबित को, चिमतकार मन होय ॥
 अलंकार तिहि नाम को, कवि धारो सब कोय ॥ १०७ ॥
 छंद नाम कृत भेद लसि, कविजन माँनहु वेद ॥
 के देशान्तर रीति है, के आचारज भेदि ॥ १०८ ॥
 ग्रंथ छंद रत्नावली, सारथ याको नाम ॥
 भूषन भारती ते भरथौ, कहे दास हरीराम ॥ १०९ ॥
 संवत सर ७ नव १ मुनि ७ शशी, १ नव नवमी गुरु भाति ॥
 डीडवान दढ़ कूप तट, ग्रंथ जन्म थल जानि ॥ ११० ॥

[सरस्वती भंडार, भींडर]

नोट:—इसी ग्रंथ के साथ जयपुर महाराज प्रतापसिंह 'ब्रज निधि' कृत भर्तृहरि शतक की टीका भी दी गई है ।

(३३) छंद विवेक—रचयिता—कवि जयनारायण । रचना काल—संवत् १८६२ वैशाख शुक्ल ३ गुरुवार और संवत् १८३४ फाल्गुण शुक्ल ६ बुधवार को गोरजी मोतीराम द्वारा बाँसवाड़ा में । आकार १२'' x ७'' ६'' पत्र संख्या—२२ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं । छंद—संख्या १२१ ।

ग्रन्थ की वर्तमान दशा उत्तम है । ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि लिपिकार ने महाराजा रावत मोतीसिंह राजगढ़ वाले की आज्ञा से इस ग्रन्थ की प्रति लिपि की और प्राप्त प्रति इसकी प्रतिलिपि है । बीच बीच में कवि ने अपने आश्रयदाता उमर नरेश का नाम दिया है ।

आदि भाग-

दं हो

याहि पढ़ै तें जानि है, छंदनु रचन विवेक ॥
 नाम धर्यो या ग्रन्थ को, याते छन्द विवेक ॥ १ ॥
 लघु-गुरु-द्वत गन आठ हैं, सब बानी में लीन ॥
 याते इनको प्रथम ही, करत विचार प्रवीन ॥ २ ॥

‘अथ लघु विचार’

जा अछिर के बिन्दु नहीं, परै न होहि संजोग ॥
 एके मत सों लघु लिखे, सरल रेष कवि लोग ॥ ३ ॥

उदाहरण-

निसानी छंद

तेरह पुनि दस पांच है, गुर अंत बनावै ।
 छंद निसानी में कला, तेईस गनावै ॥
 चिंतामनि कल वृच्छ कौ, काहे मन लावै ।
 श्री उमर नर नाह को, जस जो कवि गावै ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग-

द्वात्रिंसाक्षर रूपक-घनाक्षरी छंद

चारबौ बेर आठ आनै, मध्य बिसराम ठाने,
 बरन बत्तीस माने, अन्त लघु कौ हे धाम ।
 नारायण कहै अैसे, लखन बतायें जैसे,
 च्यारी तुक रचे तैसे, सोहत गुनन ग्राम ॥
 उमर नरेस जहाँ, सबसो मनत इमि,
 सु कवि लहत मोज, पूरन सकस काम ।
 जाति सुन आगरी है, अति सुख माघरी है ।
 रूपक घनाक्षरी है, सेस मन बाको नाम ॥ १६ ॥

दोहा

पिंगल मत बहु छंद हैं, कहे कोम पे नात ॥
 वरने कछुक जबा सुमति, जे मैं सुन्यो विष्यात ॥ १ ॥

पच्छि २ अंक^१ वसु^८ ससि^१यहै, संवत् माघव मास ॥
 मयो पच्छ स्वत तीज गुरु, छंद विवेक प्रकास ॥ २ ॥
 प्रगट लच्छ लच्छन सहित, कहे दुहुं बिधि छंद ॥
 नाम भेद कैते कहे, लेहु विचार कविद ॥ ३ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३४) छंदो निधि पिंगल—रचयिता—मनराषन श्रीवास्तव । रचना
 काल—संवत् १८६१ माघ शुक्ला १३ । आकार—१२'६" × ७'६" पत्र—संख्या २४ ।
 प्रत्येक पृष्ठ पर ३३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति पर २८, ३० अक्षर हैं ।

इस ग्रंथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि अधो नगर निवासी कवि
 शिवदत्त कान्य कुब्ज ने संवत् १६३६ असाढ़ सुद २ शुक्र को बांसवाड़ा में कविराव
 बख्तावरसिंह के पठनार्थ लिपि बद्ध किया । ग्रंथ ब्रज भाषा में है ।

आदि भाग—

दोहा

सीता राम सरोज पद, तीनि लोक को ईस ॥
 मन राषन को दास करि, देहु भक्ति बकसीस ॥ १ ॥

सोरठ

सुमिरत ही सिधि होइ, श्री गनेस कुंजर बदन ॥
 करहु क्रिपा मम सोइ, देहु बुद्धि संपति सदन ॥ २ ॥

दोह

सम्बत दस^{१०} वसु^८बर बसत, इकसठि^{६१} के अनुसार ॥
 मयो माघ सुदि त्रयोदसी, छंदोनिधि औतार ॥ ३ ॥
 सीतल पावन सुभग है, सोमवार है बार ॥
 करत काज सो सिद्ध है, सकल मनोरथ चार ॥ ४ ॥
 कायस्थ हैं भांडेर को, श्रीवास्तव कुल जान ॥
 हरिनारायणदास सुत, मनसुक राम प्रमान ॥ ५ ॥
 ता सुत मनराषन प्रथम, अमरसिंघ लघु माइ ॥
 करत सदा तिन पर क्रिपा, पंडित 'कवि नर' राइ ॥ ६ ॥
 बांदा है अस्थान सुम, कैन नदी जहूँ वास ॥

ता में नित प्रति देखिये, पंडित मुकवि प्रकास ॥ ७ ॥
 बंदन गुरु के चरन हूँ, सीस नार्ई सुष पाइ ॥
 तिन्ह यह छंदो ग्रंथ को, दीनो ग्यान बताइ ॥ ८ ॥
 पिंगल भाम अगस्त मत, गहि कवीस की राहि ॥
 कीन्हों छंदो वृति यह, मनराषन चित चाहि ॥ ९ ॥
 चतुर वेद को अंग है, छंद सफल सुभमान ॥
 याते पढ़ियत प्रात नित, भाषत नाग सुजान ॥ १० ॥
 बेद पढ़े बिन विप्र ज्यों, अंत्यज त्यों अति दीन ॥
 तैसे पिंगल बिन पढ़ै, कवि है कहत गुनी न ॥ ११ ॥
 श्रीमुनिलाल कृपा करी, आग्या दर्ई सु बेस ॥
 छंदन की रचना करहुँ, जिहि विधि भाषहु सेस ॥ १२ ॥

अन्तिम भाग-

दीपमाल छंद-दोहा

बारह दस दस बस बिरति, चरन चरन में जान ॥
 दस चोकल इक चरन करि, दीपमाल सुष बान ॥ ६७३ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३५) तख्त विलास । रचयिता-विप्र शिवराम दधीचि । आकार-
 ६" × ७½" । विषय-नायिका भेद लक्षण ग्रन्थ । रचना काल सं० १८६६ । राव
 महतापसिंह ने संवत् १९३२ अषाढ़ बुध ३ शनि को (संलूम्बर मेवाड़) सेलाना राव
 हमीर से प्राप्त प्रति से इस प्रति को लिपि बद्ध किया । ग्रन्थ ब्रजभाषा में हैं ।
 पद्य-संख्या १६६ ।

आदि भाग-

कवित्त

गुरु देव स्तुति

माया सी निसा की जहाँ नाहिन उदोत होत,
 कलिकृत तारू की न जोत लव लेस है ।
 तिमिर अहंमद सोउ डिगो न जानू किते,
 काम से उलूक नाहिं पावत प्रवेस है ॥

सिन्धु अरविंद सिबराम से प्रफुल्ल भये,
 चित चंचरीक गुन गावत बिसेस हैं ।
 हेरे मैं गनेरे दूर नेरे ना सुनेरे ऐसे,
 मेरे गुरुदेव श्रुप अपर दिनेस हैं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

बालबधू के पठन हित, लच्छन किये विचार ।
 उदाहरन नाहीं कहें, ग्रन्थ बदन हिय धार ॥ १६४ ॥
 मम कविता सब गुन रहित, बाल बचन सी जोय ।
 श्री गुरु श्रूप प्रतापते, कान मानि हे कोय ॥ २६५ ॥
 संमत निधि^१ ग्रह^२ वसु^३ महि^४, दसइ चैत्र सुक्लान ।
 तखत विलास मो....., रसिकन को सुखदान ॥ १६६ ॥
 तखतसिंह नृप हुकमते, लहि सिबराम हुलास ।
 श्रीगुरु श्रूप प्रतापते, कीनो ग्रन्थ प्रकास ॥ १६७ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३६) नखसिख । रचयिता-बलभद्र ।

प्रति १: आकार-११" x ७"२" । पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ६५ ।
 लिपिकाल-सं० १६४२ ।

आदि भाग-

मरकत को सूत, कीधों पन्नग को पूत,
 कीधौ राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं ।
 मखतूल गुन ग्राम सोमित सर स्याम,
 काम मृग कानन कि कुहू कें कुमार हैं ॥
 कोप की किरनि जाल नील कंजरी के तंतु,
 उपमा अनंत चारू चामर सिंगार हैं ।
 कारे सटकारे मीजैं सौंधे तैं सुगन्ध बास,
 अैसे बलिमद्र नव बाला तेरे बार हैं ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

प्रति २: आकार- $१०\frac{३}{४}'' \times ७''$ । पत्र-संख्या ६७ । लिपिकाल-सं० १६३७ ।
रचना काल सं० १७६६ पौष सुदी १३, मंगलवार ।

[अन्ताणी संग्रह]

(३७) नैत्र वर्णन । रचयिता-आलम । आकार- $११'' \times ७\frac{२}{२}''$ ।

पत्र-संख्या ४ । पद्य संख्या २७ ।

आदि भाग-

जोत भरे जेति भरे जोवन जेव भरे,
भीर भरे होत जैसे वारज विहान के ।
दया भरे मया भरे हांसी भरे हसा भरे,
सोमा के सुमाय भरे जीवन जिहान के ॥
स्स भरे रूप भरे रंग भरे ससि के-से,
सील भरे तेज भरे 'आलम' सुमान के ।
विस भरे सुधा भरे लाज भरे नेह भरे,
मैने भरे मान तेरे नैन रहिमान के ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सेत संषामणी जोति अंजन धनुष साज विक बिष अरून सुमन संग लाये हैं ।
प्रेम नेम सुधा धेनु सुन्दरता रमा-रंभा 'आलम' चपल बाजी काम के सधाये हैं ।
प्रीतम मद पुथरी कल्पतर पूरनता धनंत्री सुदृष्टी गज-गतिन सुहाये हैं ।
काहि को समंद मथ देवता समर कीनो चबुदे रतन त्रिय-नैनन में पाये हैं ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३८) नेहतरंग । रचयिता-रावराजा बुद्धिसिंह । आकार- $८'' \times ६\frac{५}{५}''$ ।

पत्र-८५ । पद्य-४६१ । रचनाकाल-सं० १७८४, भाद्रपद शुक्ल ६, चन्द्रवार ।
लिपिकाल-सं० १६२३ चैत्र वदि ६, मंगलवार ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३९) पान्डव यशेन्दु चन्द्रिका । रचयिता-स्वरूपदास आकार-

$८\frac{५}{५}'' \times १०\frac{६}{६}''$ । इसमें १६३ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २१ अक्षर हैं । अक्षर मोटे और जमे हुए हैं । अंत के ११ पत्रों पर एक शुद्धि पत्र दिया गया है जिसमें काव्य में प्रयुक्त लगभग १००० तद्धव शब्दों के

तत्सम रूप दिये गये हैं। ग्रन्थ में कवि ने डिंगल, पिंगल और संस्कृत तीनों भाषाओं का प्रयोग किया है। कविता अलंकृत और रसपूर्ण है। ग्रन्थ १६ मयूखों में विभाजित किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में ११६७ छंद हैं। कवि ने श्लोक, दोहा, सोरठा, चौपाई के अतिरिक्त पद्धरी, छप्पय, त्रिभंगी, कवित्त आदि छंदों का भी प्रयोग किया है। ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है। अतः हम कवि के उन दोहों को उद्धृत करते हैं जिसमें उसके तीनों भाषाओं का अलग अलग प्रयोग करना स्वीकार किया है।

दूहा

पिंगल डिंगल संस्कृत, सब समभन के काज ।

मिश्रित सी भाषा धरि, छिमा करिहुँ कविराज ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४०) पिंगल । रचियता-चिंतामनि । प्रति १-आकार-१२'६'' × ७'६''

इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पंक्ति में और प्रति पंक्ति २० । २१ अक्षर हैं। प्रति अपूर्ण है। केवल आदि भाग दिया जाता है—

॥ अथ प्रस्थान विपरीत प्रकारांतर को प्रस्तार ॥

अंतकला सिर गुरु कौ आन । पाछै रेख समान प्रमान ।

लगु आवै आगै यह जान । अस्थानिक दूजो पहिचान ॥ १ ॥

संख्या विपरीत भामह मत प्रस्तार

आदि कला संधि गुरु देसही, अगै पाति बरोबर रही ॥

पाछै सौ लगुसौ मर देह, यह संख्या विपरीत करेह ॥ २ ॥

उभै विपरीत दोहा

अत कला गुरु दीजिये, अगै करिये तूल ।

पाछै लगु सौ ले मरो, उभै नाम अनुकूल ॥ ३ ॥

[कविराव मोहनसिंह]

प्रति २-आकार-१२'६'' × ७'६'' । पत्र-संख्या ३३ । पद्य-संख्या १५६ ।

लिपिकाल सं० १६२७

[सरस्वती भण्डार, भीडर]

(४१) पिताका लच्छन तथा षोडसक्रम । रचयिता-राव बस्तावर-सिंह । आकार-१२'६" × ७'६" । यह चिंतामणि विंगल के साथ ही लिखा है । संवत् १६३७ इसका लिपिकाल है । इसमें १० पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ । २३ पंक्तियाँ हैं, परन्तु स्थान स्थान पर मेरु, पताका (पिताका) गण आदि के कोष्ठक आ जाने से पंक्तियों और अक्षरों की संख्या कम भी हो गई है । प्रत्येक पंक्ति में २० । २१ अक्षर हैं । केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग—

चौपाई

आड़े दंड पिताका करिये, सूची एक मत्त लौं भरिये ।
अंत एक तैं निकट जु अंका, घटाउ बरे लौं निरसंका ॥ १ ॥
लैके यक गुरु के रखधाना, निकट अंक लुपि कै तर लान्हा ।
यो एक लौं घट उबरे लीजै, यक गुरु की यक पंक्ति कीजै ॥ २ ॥

[राव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(४२) बिहारी सतसई । रचयिता-बिहारीलाल

इसकी कई प्रतियाँ देखने में आई हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है । अब तक की प्राप्त प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति संवत् १७४३ चैत्र शुक्ला पंचमी की लिपिकृत है (देखो भाग १, ७३ । (७७) । किन्तु यहाँ जिन प्रतियों का उल्लेख किया जा रहा है उनमें सबसे प्रथम प्रति किसी नथ्थमल नामक व्यक्ति द्वारा संवत् १७३८, फागुण कृष्णा प्रथम एकादशी, सोमवार की लिपिकृत है ।

आकार-८" × ५'१" । पत्र-संख्या २६ । पद्य-संख्या ७१३ ।

आदि भाग—

दोहा

मेरी भव बाधा हरा, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की भाई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

सामा सेन समान को, सबै सही के साथ ।
बाहु बलि जयसिंह जु, फतू तिहारें हाथ ॥ ७१२ ॥

यो दल काटे बलकतें, ते जयसीध भुवाल ।

उदर अवासर के परै, उगौ हरि गाय गोपाल ॥ ७१२ ॥

घर घर हिंदुनि तुरुकिनी, कहैं असीस सराहि ।

पतनि राषि चादरि चुरी, तैं राषी जय साहि ॥ ७१३ ॥

बिहारी रत्नाकर में संवत् १७३६ की एक प्रति का वर्णन अवश्य है, परन्तु उसकी प्राप्त प्रतिलिपि सं० १८०० की है अतः अब तक प्राप्त प्रतियों में वह सब से प्राचीन प्रति है ।

[श्री स्वरूपलालजी, जगदीश का चौक, उदयपुर]

प्रति २ । आकार-१३" × ५'६" । पत्र संख्या-१० । पद्य-संख्या-७२० ।
लिपिकाल-सं० १८६५ आषाढ़ सुद ५ भौमे ।

[स्वामी केवलराम दादू पंथी, उदयपुर]

प्रति ३ । आकार-६'५" × ५'८" सजिल्द । पत्र-संख्या ६६ । अक्षर बहुत सुन्दर और प्रति सचित्र है । चित्र दोहों की भावनाओं को प्रकट करने वाले हैं और राजपूत शैली में चित्रित हैं । ये बहुरंगी चित्र छोटे और बड़े सब मिलाकर ४३ हैं । इसकी लिपि तथा चित्रों का लेखक रामपुरा निवासी कडुजी दशोरा था । यह प्रति संवत् १८१६ अगण वदि ६ मंगलवार को लिपिबद्ध की गई ।

[जगन्नाथ वैरागी, भीडर]

प्रति ४ । आकार-६" × ६'५" । पत्र-संख्या ३३ । छंद-संख्या ६७२ ।
लिपिकाल-सं० १८४४ ।

विशेष-इसमें सभी दोहों को विषयवार छांट कर अलग-अलग शीर्षक के नीचे रीतिकाल की शैली में लिपिबद्ध किया गया है ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४३) बिहारी सतसई की टीका । (हरिप्रकाश) । टीकाकार हरिचरणदास ।

आकार-१२" × ८'५" । इसमें ११२ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर २६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २७ अक्षर हैं । अक्षर साफ और सुन्दर हैं । पत्रों को दीमक काट लेने पर भ अक्षर बच गये हैं । इसका रचना काल संवत् १८३४ है और

लिपिकाल सं० १८६५ भाद्रपद कृष्णा ११ भोमवार । रचना काल सं० १८५० ।

आदि भाग-

सवैया

तुलसीदल माल तमाल सो स्याम अनंग तै सुन्दर रूप मोहाही
श्रुति कुंडल के मनि की भलकै मुष मंडल पै वरनी नहि जाहीं ॥
सषि दोषि पियूष मयूष हुतें सुषमा अति आनन की सरसाही
बिहरै हरि गोप सुता संग कान्ह निसीपिनि मैं बनवीथिनि माही ॥ १ ॥

उदाहरण-

दोहा

देख्यौ अन देख्यौ कियो, अंग अंग सबे दिषाय ।

पैठत सी तन में सकुचि, पैठी चित हिल जाय ॥ १६ ॥

टीका-देख्यौ इति । सषी सों सषो वचन हे सवय हे सषि नायक कों अंग अंग दिषाय कें ।
नायक कों देख्यौ सो कियो । मानो नाही देख्यौ हैं । चित ही लजाय आपने चित में लजाय कें
अैसे वेठी आपना नन में सकुचिके पेठे हे पैठत सी । पैठत किया हैं ताके आगे सी वाचक हैं यातें
अनुक्तास्पदा वस्तुत्प्रेक्षा ।

अन्तिम भाग-

दोहा

सालग्रामी सरजू जहाँ, मिली गंग सों आय ।

अंतराल में देस सों, हरि कबि को सरसाय ॥ १ ॥

सेवी जगल किसोर के, प्राननाथजी नांव ।

सस सती तिनसो पढ़ी, वसि सिंगार बट दाव ॥ २ ॥

जमुनांतर श्रंगार बट, तुलसी विपन सुदेस ।

सेवत संत महंत जहि, देवत हरत क्लेस ॥ ३ ॥

पूरोहित श्रीनंद के, मुनि सांडिल्य महान ।

हम हैं ताकें गोत में, मोहन मो जजमान ॥ ४ ॥

मोहन महा उदार तजि, और जाचिए काहि ।

संपति सुदामा को दर्ई, इंद्र लही नहि जाहि ॥ ५ ॥

गही अकस मनु ताततें, विधि को बंस लषाय ।

राधा नाम कहें छने. आनन कान बटाय ॥ ६ ॥

(१३७) .

संवत् अठारह सौ बिते, तापर तीस रू चार ।

जन्माठे पूरो कियौ, कृष्ण चरन मन धार ॥ ७ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४३) रघुनाथ रूपक । रचयिता-कवि मंछ । रचना काल-संवत् १८६२ भाद्रवा सुद ५ शुक्रवार । आकार-८" × ६" ५" । पत्र-संख्या ७३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३, २४ अक्षर हैं । छन्द-संख्या १५०० । पिंगल के रीति ग्रंथ के समान यह भी डिंगल का एक रीति ग्रंथ है । इसमें राम कथा को उदाहरण स्वरूप लेकर डिंगल के रीति-शास्त्र का प्रतिपादन किया गया है । इसकी भाषा भी डिंगल है ।

आदि भाग-

गाहा

श्री निध आगम सारैं । बास्पनयनं च ज्यान की

अखिल जगत आधारं । सारंग धरण जयो अवधेस्वर ॥ १ ॥

दूहो

चरस करत लिखमण चमर, सरस अगार सामीर ।

ईस सिय छुत जन मंछ उर, वसो सदा रघुवीर ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दूहो

जम करो आज सरवरी, सरवरी सब सिर चंद ।

काम अधमरे अधमरे, मातर मतिरमति वृंद ॥

मंछ सुकवि कीधौ मुदै, निरमल भाषा नेत ।

मन रूप जति लिखियो महा, हरष मनां कर हेत ॥

पुष्पिका

राज श्री १०८ श्री अर्जुनसिंहजी का राज में लखित ब्राह्मण डुगारामेण ॥ गठनार्थ मोडजी पोथी सुखजी की छै ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४४) रसचन्द्रोय । रचयिता-कवीन्द्र उदयनाथ । रचना काल-संवत् १८०४ । यह प्रति अपूर्ण है । इसके ४ पत्र लिखित है, शेष सब पत्र खाली है ।

प्रथम २॥ पत्रों पर ४५ छंदों में 'काव्य कुलवधु' वर्णन समाप्त हुआ है। दूसरे प्रकाश के केवल ३१ छंद ही लिखे गये हैं।

एक उदाहरण-

मध्याऽधीरा-सर्वैया

कुंज निकुंजनि कोतुक हेतु, फिरौ तुम श्रीफल लेत-सुठारे ।
बानन बेधत काम हमै भरि, कोप कसीस कि कानि-किनारे ॥
पीवत हो तुमतो मदिग, हम पै मद मोहन जात सम्हारे ।
लाल जगे कितहूँ तुम रैन, भये दग आलस लाल हमारे ॥

सूचना विशेष-देखो आचार्य शुक्लजी कृत हि० सा० इ० पृ० ३२६ तथा ना० प्र० स० द्वारा प्रकाशित आचार्य श्यामसुन्दरदासजी द्वारा संपादित हस्त-लिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण पृ० १५ और १३०।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४५) रस पीयूष । रचयिता-सोमनाथ । आकार-६" x ७" । पत्र संख्या १ से १२ तक; आगे के पन्ने अप्राप्य हैं।

आदि भाग-

छन्दे

सिंधुर वदन अमंद चंद सिंदु भाल घर ।
एक दंत दुति वंत बुद्धि निध अष्ट सिद्धिवर ॥
मद् जल श्रवत कपोल गुंजरत चंचरीगन ।
चंचल श्रवन अनूप थोदि थिर करत मोहित मन ॥
सुर नर मुनिवर नटजोरि कर गुन अनंत इमध्याय चित्त ।
ससि नाथ नंद आनन्द करि जय जय श्री गणनाथ नित ॥

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(४६) रस मंजरी । रचयिता-भानु कवि । आकार-६'३" x ५'२" । पत्र-संख्या ६ । प्रति अपूर्ण है-

अतः इस विषय में अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता है। पाठ भी बहुत अशुद्ध है। केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

दोहा

गुरु गणेश पद वंदि के, सारद चरन नमाय ।

बरनत हौं रस मंजरी, रसकन के सुखदाय ॥ १ ॥

सवैया

गोन विषैनत कनेत भूमै तिही पहीलै डगु आप भरी है ।

फूलन भ्रम के डरते द्रम हूँ को भुजा सिव की प्रचरी है ॥

सैन समै म्रग छालि कि वुपरै आपुन अंग करीट करी है ।

प्रेम के मारते आ रस वंत प्रिया हरने अरधंग बरी है ॥

[राव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(४७) रस रंग । रचयिता—ग्वाल कवि । आकार—१४' × १३" । पत्र-संख्या ४० । रचना अपूर्ण है । प्रथम ५ पत्र अप्राप्य हैं । इन ५ पत्रों में ७६ पद्य थे । प्रत्येक पृष्ठ पर २० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २६-३० अक्षर हैं । विषय का विभाजन इस प्रकार है—

प्रथम उमंग—विभाव, स्थायी भाव; अनुभव संचारी भाव, सात्विक भाव-वर्णन-१६२ छंद ।

द्वितीय उमंग—पदमिन्यादि, उत्तमादि, द्विव्यादि स्वकीया भेद मान वर्णन-११२ छंद ।

तृतीय उमंग—परकीया, गणिकादि वर्णन-७४ छंद ।

चतुर्थ उमंग—अवस्था भेद ते पंच-दस नामका वर्णन-१०७ छंद ।

पंचम उमंग—सखी लक्षण (अपूर्ण)-६ छंद । एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

गच्छत पतिका मुग्धा को लक्षण

कवित्त

आयो काहू देस तै नरेस कौ बुलावौ बैगि,

सुनत सिधायों सीवा मोज के मिलन की ।

नाथ के चलत बटवाल नै नवायौ माथ,

हाथ मैं रझोन हीय हूक नही लल की ॥
 ग्वाल कवि कहै चांभी करसी चमक हीसो,
 रेखह रही न कहूँ तन में चिलक की ।
 सीत जर सोरी खैचि मुख पे सुके सवारी,
 सासु के पीछारी खरी थारी ले तिलक की ॥ २५ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४८) रस रत्न टीका । रचयिता-सुरति मिश्र । रचनाकाल संवत्
 सातअष्टादसै (१८०० या १८०७) सावन छवि भृगुवार । लिपिकाल सं०
 १६२७ । आकार-८"६" x ७"२" । पत्र-संख्या ४२ । पद्य-संख्या ७५ ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४९) रस रहस्य । रचयिता-कुतपति मिश्र । आकार-फुल्सकेप ।
 पत्र संख्या-४४ । प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३० अक्षर हैं । ग्रन्थ
 का विषय ८ भागों में बंटा हुआ है, जिनका क्रम तथा छंद-संख्या इस प्रकार है—

१	अध्याय	—	अप्राप्य है	
२	,,	—	शब्दार्थ निर्णय	३७ छंद
३	,,	—	ध्वनि निरूपण	६० छंद
४	,,	—	गुणीभूत व्यंग निरूपण	२२ छंद
५	,,	—	काव्य दोष	१३७ छंद
६	,,	—	गुण निरूपण	२४ छंद
७	,,	—	शब्दालंकार	४३ छंद
८	,,	—	अवसर ते प्राप्त अर्थालंकार	१८३ छंद

एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

न्यून पद लक्षण—

दोहा

जा बिलु अर्थ बने नहीं, सो पद जहाँ न होइ ।

पदम समूह व्यापार युत, कहे न्यून पद सोइ ॥ ४३ ॥

कवित्त

साजयत मोर बंदी भोगन को भोर जसु,
 गावैं ठोर ठोर हरषित जीव जन्तु है ।
 फूलत सुमन बरैं अधिक अनल आगैं,
 कोकिल मधुर सुर पढ़ैं वेद मंत्र है ॥
 बन घर अम्बर बने है बहु भातिन सो,
 नर नारी पर सुत लगन को तंतु है ।
 पयो राज नयो सब जग बस भयो सोई,

मेन अरु पहुमी को व्याह को बसंत है ॥ ४५ ॥

इहाँ विरही अनल कछो चाहिये ॥ अरु द्विज कोकिल कहिये तो वेद मंत्र पढिबो संभवै जाके
 कहे कछु बिगरै नांही सो अधिक पद कहावै ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५०) रसराज । रचयिता-मतिराम । रचनाकाल-संवत् १८८० ।

आकार-५'७" × ४" । पत्र-संख्या ६० । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति
 में २० अक्षर हैं । छंद-संख्या-४२४ ।

आदि भाग-

सोरठा

श्री सुष गुरु पद कंज, वानिप जुग पद उर धरो ।
 जाते मन आनन्द विविध केलि रसराज सुष ॥ १ ॥

दोहा

होत नायका नायकहि, आखंबित सिंगार ।
 तातें वरनों नायका, नायक मति अनुसार ॥ २ ॥
 उपजत जाहि विलोकि के, चित्त बीच रस भाव ।
 ताहि बषानत नायका, जो प्रवीन कवि राव ॥ ३ ॥

सवैया

कुंदन रंग फीको लगै, भलकें अंगन चारु गुराई ।
 आषिन में अलसानि चितौन में मंजु विलासन की सरसाई ॥
 को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लखें मुसक्यानं मिठाई ।
 ज्यौं ज्यौं निहारिये नैरे व्हे जानति त्यों त्यों बरी निषरेंसि निकाई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

अनयिष लोचन लाल के याते नंद कुमार ।
 मचि गई जु रषि चहि, विरहानल की जार ॥ ४२३ ॥
 समुझि समुझि सब रीझि है, वचन सुकवि समाज ।
 रसिकन के रस को कियो, इहें ग्रन्थ रसराज ॥ ४२४ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

नोट:— नाथूलाल हजूरी द्वारा तित्तरोद में यह ग्रन्थ लिपि बद्ध हुआ ।

(५१) रस रूप । रचयिता—ग्वाल कवि । रचना काल—? आकार—
 ११" x ७" ३" । पत्र-संख्या १ । पद्य-संख्या ८ ।

आदि भाग-

च्यार भुज धारी थोद थूल की थरकत भारी
 बिघन प्रहारी देत दासन सुमति है ।
 भाल चंद चंदन हैं सब जग बदन हैं
 पारवती--नंदन हैं ईस-पद रति है ॥
 ग्वाल कवि कहै मक्ति भाव की भरन घन
 असरन सरन करन सीख अति है ।
 सिद्ध निद्ध ब्रद्धि के करैया परसिद्ध पूर,
 सकल समृद्धि दैन सिद्ध गनपति है ॥

अन्तिम भाग-

वीरता लखैगे रघुबीर जू तिहारी अब
 भारी परी वहस सभारी परी फंद हौ ।
 तोर डारी मैंने तो मृजादा जादा बादा बिन
 तुम तो मृजादा पुरसोत्तम सुखंद हो ॥
 ग्वाल कवि परम प्रतीत पन पारों में तो
 पावत प्रतीत तुव नांव सुख कंद हो ।
 मैं तो दीनराज तुम दीनानाथ रघुनाथ
 मैं तो दुति-मंद तुम रामचंद चंद हो ॥ ८ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५२) रस विलास । रचयिता-माधवसिंह । आकार-१४" × १२" ।

इस ग्रंथ की यह प्रति अपूर्ण है । आरंभ के तीन पत्र गायब हैं । आगे २६ से ३४ तक के पत्र गायब हैं; अंत में ४२ से पत्र नहीं हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ से २२ तक पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में १८ से २८ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ के विषय की रीति काल की शैली के ही अनुसार कई उल्लासों में विभक्त किया गया है; यहाँ केवल ये उल्लास इसमें मिले हैं ।

प्रथम उल्लास-श्रंगार रसालंबन रूप नायक-नायिका वर्णन-२४८ छंद (आरंभ के ५२ छंद गायब हैं)

द्वितीय उल्लास-सखि दूति जान्यादि वर्णन-१ से ४४ तक और फिर १८ छंद हैं-पृष्ठ २६ से ३४ गायब हैं ।

तृतीय उल्लास-रस प्रसंग-१ से ३० तक छंद हैं । ३० से ६० तक गायब हैं । ६० से ६२ छंद वर्तमान हैं । उसके बाद लगभग ३० छंद और हैं, पर उनके ऊपर कोई संख्या नहीं है और लिखावट साफ न होने से गिना नहीं जा सका । यह ग्रन्थ कवि ने रीति काल की शैली पर ही रचा है । पहले एक छंद में लक्षण देकर फिर उसके स्वरचित तथा अन्य कवियों के उदाहरण दिये गये हैं । आवश्यकतानुसार गद्य में व्याख्या भी की गई है । एक उदाहरण उचित होगा:—
अथ प्रोषित पति का निरूपण

दोहा

गयो जु पति परदेस कों, होत विरहते छीन ।

प्रोषितपतिका जानिये, कविता माझ प्रवीन ॥ १८ ॥

उदाहरण

कवित्त

फूल फूल पुंज लौनी लतिका लारज गई

कमले कमल मौर सोर विर रायो है ।

चलि चलि सुन्दर समीर तजि सीतलता

ललित रसाल फल नालन तें छायो है ॥

होन लगे सघन जवासन के भार मधु,

दश विदिशान तेज तरुन दिखायो है ।

लेख लेख पंथ चित्त होत न निश्चित तह,

कंतह न आयो पे बसंत अन्त आयो है ॥ १९ ॥

चर्चा

इहां चितमनि प्रोषित शब्द को त्रिकाल वाचि लिखे है । प्रोषितपतिका प्रवत्स्यतपतिका प्रवसित पतिका । तिनके ये लखन कीने सो जाको पति परदेस सो तो प्रोषित पतिका । अर प्रवत्स्यत पतिका को लखन ये-प्रिय विदेस के गोन को उद्यम लखि दुख पाये । अर प्रवसित पतिकाये लखन कीनों सो—‘कठन पिऊ परदेस को अपने अंगवन देख । या प्रकार तो लत्र लिखे अर उत्तमादि भेद हूवि ऐसे लिखे सो प्रवास के कथन मात्र व्याकुल होय सो उत्तमा । पति को परदेस चलवो देखि दुखित होय सो मध्यमा । पति को परदेस गये पीछे दुःखित होय सो अधमा । तब इहां प्रवसित पतिका उनमें तीसरो भेद भिन्न कैसे लियो । मध्यमा प्रोषित पतिका को लखन अरू प्रवसित पतिका को लखन एक है । ताते हम दोनों ही भेद लिखे हैं—एक प्रोषित पतिका, दूसरी प्रवत्स्यतपतिका ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५३) रसिक प्रिया । रचयिता—केशवदास । रचनाकाल—१८८३ ।

आकार—६" × ६" पत्र-संख्या ६६ ।

[सरस्वती भंडार, भीडर]

प्रति २:—रचनाकाल—१८४४ द्वितीय श्रावण सुदि ५ शनिवार । आकार—६" × ६" ५" । पत्र-संख्या ५८ । छंद-संख्या ५४० ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५४) रसिक प्रिया की टीका—जोरावर प्रकाश । रचयिता—सुरति कवि । लिपिकाल—सं० १६२६ । रचनाकाल—सं० १८१० आकार—१२" × १०" । पत्र-संख्या १३२ । छंद-संख्या ५६२ ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५५) रसिकानंद । रचयिता—ग्वाल कवि । रचनाकाल—सं० १८७६ आकार—११" × ७" २" । पत्र-संख्या ४८ । प्रत्येक प्रष्ठ पर १४ । १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२ । ३६ अक्षर हैं । छंद-संख्या ३०६ । गद्द ११" × ७" २" आकारवाले चौपड़े का तीसरा ग्रंथ है । इन पत्रों में इस ग्रंथ के तीन प्रकरण समाप्त हुए हैं । शेष ६ प्रकरण भी एक दूसरे चौपड़े में स्वतन्त्र रूप से लिखे हुए हैं । लिपिकाल सं० १६२७ । इस ग्रंथ की रचना (काव्य के आदि भाग के कुछ दों से ज्ञात होता है) कवि ने नाभा महाराजा जसवन्तसिंह के आदेश से उन्हीं के लिये की ।

संवत् निधि^९ रिषि^७ सिद्धि ससि^१, स्याम पक्ष मधुमास ।

अदितवार सु द्वादसी, रसिका नंद प्रकाम ॥ ३७ ॥

कवि ने दो छंदों में मंगलाचरण किया है फिर गुरु की प्रार्थना की है—

श्री गुरु श्री जगदीश सुरी, श्री पति जू महाराज ।

तिन पद उज्ज्वल विमल कों, करत प्रनाम समाज ॥ ३ ॥

चौथे कवित्त में नाभा नगर का वर्णन किया गया है । पद्य ५ से २५ तक राजवंश, तुरंग और सभा का वर्णन है ।

राजवंश का संक्षिप्त वर्णन—

लियो विक्रमाजीत तै, जिन साको जग माहि ।

वीर सालबाहन प्रगट, तिन (सम) दूजो नाहि ॥

उनरु वंश में बली प्रचण्ड फूतसिंह—उनके तिलोकसिंह जो गुरु गोविन्दसिंह का भक्त हुआ—जिसको उन्होंने सिरोपाव, वस्त्र, जयपत्र प्रदान किया, जिसके सिर पर छत्र तना—उसके राजा गुरुदत्तसिंह हुआ, जो वीर था । उसके सूरतसिंह, जो दानी और तेजस्वी था—उसके हमीरसिंह, उसके महाराजा यशवंतसिंह हुये, जिनका यश काश्मीर से दक्खिन, बंबई से मुलतान, काशी, कलकत्ता आदि देश-देश में व्याप्त हुआ और—

मँगै जो मैगैय्या येक वार आय जाके पास,
ताको सुख संपति सौ सदन छयो करै ।

वादी बनि पंडित सुनावै वाद सौ हि बैठि
तोपै दोऊ वादिन को मानन दयो करै ॥

ग्वाल कवि प्रेमी प्रेम पूछिबौ करै तो ताहि,
प्रेम के पयोध में पकरि हूबियो करै ।

नामा के नरिंद आगे कवित्त कश्यो करै तो
कवि ताकी कविता की सिकल भयो करै ॥

अमृत धुनि—

कर कर पिट्ट कमट्ट की टक्क टक्क भये जम्ब ।

पन्नगेस फन फुट्टि है अविखसत्त दधि तम्ब ।

अविरखसत्त दधि तम्ब वलम्बल सधर थिरचर ।

भग्ग गय अरि नग्ग गय दरि अभागयथिर ॥

जगगगग जलमय मये सज्ज छंद कवि ग्वाल बर ।

जबहि कुप्पि जसवंत हरि जतउ मग गहि खमा कर ॥ १८ ॥

ग्रंथ की वर्णन शैली कवि दर्पन के ढंग की है। एक पद्य में लक्षण देकर उसकी साथ ही साथ गद्य में टीका तथा व्याख्या भी कर दी गई है।

एक उदाहरण—पुनरुक्त लच्छन

दोहा

मुख्य अर्थ द्विबार जहँ, बिना कार्य बीजुक्त ।

ताहि वचावहु बुद्ध जन दूषन है पुनरुक्त ॥ ३५ ॥

पुनरुक्त उदाहरन

चलि चितवो चेटक मरथो, बदन चंद सुखदान ।

विधि विधितें विरच्यो विसद, चंद लखन गुनखान ॥ ३६ ॥

कवित्त

आनंद को कंद वृषभानुजा को मुख चंद,

लीला ही ते मोहन के मानस को चोरे है ।

दूजो तेसो रचिवे को चाहत विरंच नित,

ससि को बनावे अजों मन को न मोरे हैं ॥

फैरत है सान आसमान पे चढाय फेर,

पानप चढायबै को वारिध में बोरे हैं ।

राधिका के आनन की जोटन विलोके विधि,

टूक टूक तोरे पुनि टूक टूक जोरें हैं ॥

टीका

इहाँ वृषभानुजा याही पद के कहिवे ते श्रीराधाजू को बोध मयो । फेर राधिका पद न कस्यो चाहिये अर्थ पुनरुक्त होत है । फेर मुख चन्द कहिके फेर आनन कस्यो इहाँ अर्थ में पुनरुक्त मयो । फेर एक बार विधि कहि के फेर विरंचि कस्यो अह अर्थ पुनरुक्त मयो ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५६) रसोत्पत्ति-रचयिता-कविराव बस्तावरसिंह । आकार १२'' × ७'६''

पत्र संख्या-६ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २६ अक्षर हैं । इसमें

कुल-पद्य ही है और जिनमें रसों का ही विवेचन है । रचना काल-

संवत् अयन' रु हर-नयन, खंड रदन गननाह ।

करी रसोत्पत्ति बखत कवि, चैत्र शुक्ल त्रितियाह ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

अयन (भुवन) = ३, हरनयन = ३, खंड = ६ और रदन गननाह = १ ।

इस क्रम से इसका रचनाकाल वि०सं० १६३३ होता है ।

ब्रज-वन कुंजन बिहारी, प्यारी राधा आलंबन भूता ।

श्रृंगारा रसचारी, प्रागटथ हारी त्वं बंदेहं ॥ १ ॥

मिलि विभाव अनुभावा, सात्विक 'स्थाई' रु संचारिय जू ।

अंगहि रस उपजावा, सो वर्नत लच्छन संयुक्ता ॥ २ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५७) व्यंग्यार्थ कौमुदी । रचयिता--प्रतापसाहि । आकार-६'३" x

५'२" । पत्र संख्या ८३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १२ अक्षर हैं । कुल १०६ छंदों में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है । इसका रचनाकाल संवत् १८८२ है ग्रन्थ सटीक है । कवि ने ग्रन्थ के आदि भाग में अपना विषय और शैली, इस प्रकार प्रकट की है—

दोहा

गनपति गिरा मनाय कै, सुमरि गुरन के पाइ ।

कवित रीत कछु क रत हों, व्यंग अर्थ चित लाइ ॥ १ ॥

वाचक लक्षक व्यंग को, सव्द तीन विधिमान ।

वाचक लक्ष्य रु व्यंग है, अर्थ त्रिविधि पहिचानि ॥ २ ॥

इनके लखन लख बहु, रस ग्रन्थन ठहराइ ।

तातै आवरने नही, बदे ग्रन्थ समुदाइ ॥ ३ ॥

जहाँ सव्द में अर्थ की, होइ उ अधिक प्रवृत्ति ।

चमत्कार इति से जहाँ, जानि विजना वृत्ति ॥ ४ ॥
 व्यंग जीव है कवित्त मैं, शब्द अर्थ गति अंग ।
 सोही उत्तम काव्य है, वरनै व्यंग प्रसंग ॥ ५ ॥
 करि कवि जन सो वीनती, सुकवि प्रताप सहेत ।
 कथि व्यंगारथ कौमुदी, व्यंग जानि पे हेत ॥ ६ ॥

सुचनिका

कही व्यंग तै नाइका, पुनि लत्तना विचारि ।
 ता पीछे वरनन करौ, अलंकार निरधारि ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग-

व्यंग अर्थ सब तै कठिन, को कवि पावे पार ।
 मंमट मत कछु समझि चित, कीजो मति अनुसार ॥ १०७ ॥
 यह व्यंगारथ कौमुदी, पढ़े गुने चितलाइ ।
 ताको मत साहित्य को, कछुक पंथ दसाइ ॥ १०८ ॥
 संवत कर^२ वसु^८वसु^८ मही^१, गति असाइ को मास ।
 किय विंग्यारथ कौमुदी, सुकवि प्रताप प्रकास ॥ १०९ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५८) षट्चतु वर्णन । रचयिता-ग्वाल कवि । यह एक ११" x ७.५" आकार की चोपड़ी में मिला है । यह कवि के यमुनालहरी ग्रन्थ का एक अंग मालूम होता है । इस चोपड़े में 'अलंकार रत्नाकर' 'रसिका-नन्द', बलभद्र कृत 'नख सिख', 'नैत्रवर्णन', ग्रन्थ हैं जिनका यथा स्थान वर्णन किया गया है । इनके अतिरिक्त इसमें आलम, दयानिधि, ग्वाल, पजनेस, पद्माकर, राव अमानजी आदि कई कवियों की फुटकर रचनाएँ हैं ।

इस ग्रन्थ में कुल ३७ कवित्त हैं । एक कवित्त यहाँ दिया जाता है ।

चम चम चौदनी की चमकि चमक रही,
 राखी है उतार मानो चन्द्रमा चरखतें ।
 अंबर अवनि अंबु वाले सु बिटप गिर,
 एक ही तै पेखे परें परेन बरखतें ॥

ग्वाल कवि दिसों दिसा ह्वै गई सपेद चारू,
 खेद को रह्यो न भेद फुला हे हरखतें ।
 लीपी अबरखतें कि टीपी पुंज परदेत,
 कैधों हुति दीपी हें के चांदी के बरखतें ॥ २६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५६) सभा प्रकाश । रचयिता-हरिचरणदास । आकार-१०'५'' x ७'४'' । पत्र-संख्या ७६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं । ग्रन्थ के आदिभाग से ज्ञात होता है कि ग्रंथकार ने भरत और वामन का आधार लेकर खंडन-मंडन की दृष्टि से इस ग्रन्थ की रचना की । रचना काल-सं० १८१४ श्रावण शुक्ल त्रयोदशी, शुक्रवार । ग्रन्थ १० उल्लासों में समाप्त है । लिपिकाल-संवत् १६१७, वैशाख सुद १२, भौम ।

आदि-

गौर स्याम जो वपु धरै, वस्तु विचारे एक ।
 ज्यों विसर्ग सो राखि है, निज जन मन की टेक ॥ १ ॥
 मोहि ग्यांन गौरव न को, कहै जोरि 'हरि' ग्यांन ।
 तुम ही ग्रंथ बनाय हो, राधा राधा जान ॥ २ ॥
 प्यारी पिय नारी ललन, आदि नाम निरधार ।
 उचित ठौर में लक्ष्य है, राधा नंद कुमार ॥ ३ ॥
 जो जै चाहत कविन सौं, खंडन मंडन आस ।
 सो चित दै नित देखि है, 'हरि' कृत सभा प्रकास ॥ ४ ॥
 लिख्यौ निरख मत भरत कौ, वामन हू को सुत्र ।
 दोष बुद्धि करि हैं नहीं, जो कवि मांहि सुपुत्र ॥ ५ ॥

अन्तिम-

दोहा

वह निरखनि मुसुक्यानि वह, वैसो कृपानिधान ।
 राधा अचल विहारि के, वसौ हिये वह ध्यानि ॥ २४ ॥
 दूर करत छवि कर्म गति, मनु दयाल सुम गीत ।
 राधा-हरि यह ग्रन्थ सौं, होउ सदा शुभ प्रीत ॥ २५ ॥

वेद ४ इंदु १ गज ८ भू १ गनित, संवत्सर रविवार ।

सावन शुक्ल त्रयोदसी, रच्यौ ग्रंथ सविचार ॥२६॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६०) सुन्दर शृंगार । रचयिता-सुन्दर कवि ।

प्रति-१: आकार-११" x ८" । पत्र-संख्या १६ । पद्य-३६७ । लिपिकाल सं० १७६१ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

प्रति-२: आकार-६" x ६" ५" । पत्र ३७ । पद्य-३६७ । लिपिकाल-सं० १८४४ । रचनाकाल-सं० १६८० ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६१) अनेक नाम माला । रचयिता-नन्ददास । विषय-शब्द-कोष ।

प्रति-१: आकार-६" ३" x ५" २" । पत्र-संख्या ११ । छंद-संख्या ६६ ।

[कवि राव मोहनसिंह, उदयपुर]

प्रति-२: आकार-७" x ३" ६" । पत्र-संख्या ३७ । छंद-संख्या २६१ ।

उदाहरण-

चन्द्रमा के नाम

इंदु सुधानिधि कलानिधि, अञ्ज जीव हिम रोम ।

ससिधर हिमकर निसाकर, औषधीस ससि सोम ॥ १०३ ॥

कुमुद बंधु श्री बंधु हरि, रोहिण्येय सुर-पेय ।

उडिराजा द्विजराज पुनि, लो मृगांक आत्रेय ॥ १०४ ॥

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

अनेकारथी । रचयिता-नन्ददास ।

प्रति-१: आकार-७" x ३" ६" । यह अनेक माला के साथ ही है । पत्र-संख्या १५ । पद्य-संख्या ११६ ।

प्रति-२: आकार-५" x ५" ३" । पद्य-संख्या ११६ । लिपिकाल सं० १८६१ ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(३) ख्यात-वात, कथा-काव्य, जैन-रास, जीवन-चरित्र, आदि

(१) अजना सुन्दरी रास । रचयिता-अज्ञात । रचनाकाल-सं० १६११
आश्विन कृष्ण ६ । आकार-६'५" x ५" । पत्र-संख्या ३६ । पद्य-संख्या ८१ दोहे
और १६१ ढाल । विषय-जैन-रास-रचना; सती शिरोमणि अंजना के शीलव्रत
की कथा ।

आदि भाग-

दोहा

मुनि सुवृत सांमजी, त्रिभवन तारण देव ।
तिर्थकर प्रभु वीसभौ, सुर नर सारे सेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

तौ जी आप स्वार्थ सहू सजौ, ए मलीया माया की जाल ।
हणुमंत संजम लेई तप करे, पाँच माहाव्रत खांडीनी धार ॥
तौ बावीस परीसीस है सहौ, सील संतोष जे छै गुणवंत ।
तौ षट आवशक नीम, साच बौ हणुमंत ॥
वीर गयो निरवांण तौ ॥ १६ ॥

तौ अंधकौ औछौ में कछौ ते मी छामीइ कंड होज्यौ
जिन मुझ तौ सील तथा गुण वरणच्यां सती ने सीरोमणी
अंजनां माय तो एतले संबंध पूरौ हूवौ आगल चालसी

सीता नी बात तौ विरहणी बली रे वेरागणी माय जिगतनी
माय तौ १६१ सती सीरोमणी अंजणा ॥ १ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२) अचलदासजी री वार्ता । रचयिता-अज्ञात । आकार-१०" × ४'३"
पत्र-संख्या ७ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४२ अक्षर हैं ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(३) अमरदत्त मित्राणंद रास । रचयिता-तत्त्व विजय । रचना-
काल सं० १७२४ । लिपिकाल-संवत्-१७३३, प्रथम श्रावण सुदी ६ । भरोचबन्दर-
मध्ये आकार-१०" × ४'३" । पत्र-संख्या २८ । प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पंक्तियाँ । प्रति
में पंक्ति ५२ अक्षर । लिपि जैन पाटी की । विषय-जैन जीवन-चरित्र । रचना
काल-सं० १७२४ ।

आदि-

(आरम्भ में ११ दोहों तक प्रार्थना है)

दान तणा पर भावथी, अमरदत्त मित्राणंद
सुख विलसी संसारना पाम्या परमानंद ॥ १२ ॥
अमरदत्त मित्राणंद नो, सरस एह संबंध
शांतिनाथ चरित्र थी, करस्यु एह प्रबंध ॥ १३ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(४) आनन्दमंदिर नास्ति रास—रचयिता-ज्ञानविमल सूरि । रचना-
काल-संवत् १७७० महासुदि १३ । आकार १०'४" × ५" । पत्र-संख्या २०० । छंद-
संख्या-४५८५ दोहा और ढाल । इसमें श्री चंद केवली का वर्णन है । एक स्थान
(प्रशस्ति में) पर अकबर और सलीम का भी वर्णन है—

‘साहि अकबर नि० निज वयणें, निज मत स्यूं मति जोरी जी ॥
साहिब सलेम आगलि जय वरीओ, श्री विजय सेन सूरी गुण दरिओ जी ।
विरुद सवाई जगत गुरु धरीओ, मति सुर गुरु अधी करी ओ जी ॥

आदि भाग-

सुषकर साहिब सेविये, श्री संषेसर पास ।

जास सुजस जग विस्तरायौ, महिमा निधि आवास ॥ १ ॥

इन्द्र वासव पूजित, चरण कज, रज पावित भू पीठ ।

परता पूरण परगडो, एहवो अपर-न दीठ ॥ २ ॥

संपति काले तिरथ छे, जे महिमा भंडार ।

पिण ए अतीत चौबीसीइ, कहि उत्पति विस्तार ॥ ३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञानमंदिर, उदयपुर]

(५) उषा भागवत । -रचयिता-रामदास । आकार-११"×६" ।
पत्र-संख्या २१८ । इसका लिपिकाल संवत् १६०१ है । कथा का १८ अध्यायों में
भागवत से दोहा चौपाइयों में भाषानुवाद किया गया है ।

आदि भाग-

दोहा

संग विना समये विना, राजद्वार विदेस ।

फल दायक मेने सुने, गवरी पुत्र गनेस ॥ १ ॥

चौपाई

सुमिरि सरसुती सुमिरौ तोही ।

बेठि कंठ अक्किल दै मोही ॥

दास दयाल चरन चित ल्याऊ ।

कीन कृपा हरि के गुन गाऊ ॥

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(६) कल्याण मन्दिर-भाषा । रचयिता-बनारसीदास । आकार-
६'३"×४'१" । पत्र-संख्या ३ । छन्द-संख्या ४५ । विषय-भक्ति । विशेष-रचना
गद्य और पद्य में है ।

अन्तिम भाग-

चौपाई

मह तुम चरण कमल गुन गाई । बहु विध भगति करी मन लाई ॥

जन्म २ प्रभु पाऊँ तोही । यह सेवा फल दीजे मोही ॥ ४३ ॥

इह विध श्री भगवंत सुं जस जे भवि जन भासे ते निज पुन भयडार

(१५४)

संचि चिर पाव पणा सहि रोम रोम उदन्न सित अंग प्रभु
कै गुण गावै सुरग संपदा भजे वे-पंचम.....गति पावे ॥ ४४ ॥

दोहा

एह कल्याण मन्दिर कियौ, कुमुद चन्द की बुद्धि ।

भाषा कहत बनारसी, कारन समकित सुद्ध ॥ ४५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७) कवाटसरवेहीयारी वात । रचयिता-हरि ? आकार-११" × १५"

पत्र-संख्या १०० । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १३, १४ अक्षर हैं । रचना गद्य-पद्य में है, जिसमें पद्यों की संख्या २३३ है । यह प्रति संवत् १६०८ जेठ विद् १४ गुरुवार को खाराड़ी रा खड़िया नरसीगदास भेरूदा-सोत द्वारा लिपिबद्ध हुई । इसके आरम्भ में एक संवत् '१८५४' कात्तिक मास कृष्ण पक्ष भी दिया गया है । यह इसका रचना काल है । इसका विषय तो वही है जो प्रथम भाग के पृष्ठ २ पर अनंतराय सांख्यतारी वात का है । परन्तु रचना शैली और भाषा में अन्तर है । प्रथम भाग वाली रचना में रचयिता का नाम अज्ञात है । परन्तु इसमें २३२ वें दोहे में लेखक ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

दुहा

दानवा श्री हरी नाम दष, जात रखी बर जाण ।

हर जेठी कै सुत कही, वात कवाट वर्षाण ॥ २३२ ॥

आदि भाग—

दुहा

सुरसत मात सुमत हो, गवरी पुत्र गुणेश ।

करणानिध कर जोड़ कर, मांगू बुद्धि महेश ॥ १ ॥

वारता

कोयलापुर पाटण नगर जठे अनंतराय सांख्यो राज करै जी को घुरसाण हिंदवाण दोनु ही राह रैसी है । जोको कोयलापुर कीसोयेक दरसावे । जीण ने देखीया थंका दुजो सहर दायनी आवे ।

अन्तिम भाग-

दूहा

केइ घोड़ा गाँव की, केइ गयंद कहाय ।
 करां चढ़े कवाट रे, लंका दीये लुटाय ॥ २२८ ॥
 ना राज्या सारी जगत, पल के जोत प्रकास ।
 सुरज ज्याही कवाट सी, ईधक जोत उजास ॥ २२९ ॥
 पांषहे माऊ कवाट त्रप, साँचो अहे समाव ।
 ज्या सामो देखै जरू, राका करे जराव ॥ २३० ॥
 तेरासे सेताली समो, सुकल पष माहा मास ।
 नीज गरू की बात तद, प्रतमो राज प्रकास ॥ २३१ ॥

[स्व० पं० रतीलाल अन्ताणी के संग्रह से]

(८) कोकशास्त्र वार्ता प्रबन्ध प्रथम भाग । रचयिता-अज्ञात ।

यह ग्रन्थ ८" x ५" आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में संग्रहीत है । ६ पत्रों में इसके ६६ छन्द समाप्त हुए हैं ।

आदि भाग-

कवित्त

अति कोमल सब अंग, रूप राजिति अति निर्मल ।
 ॥
 जाहि सदा है प्रसन्न, ताहि आणंद अभारी ।
 राग रंग रति रूप, सबै लागत अति मारी ॥
 विस्तार कोक भूषण करन, इह इच्छा कविज न धरतु ।
 शृंगार आदि रतिराज को, जोरि सुकर अस्तुति करतु ॥ १ ॥

दोहा

जहाँ रंनथंभर (गढ़) सुगढ़, तहाँ मैरव राजान् ॥
 त्यागी लोमी मानधर, गारन दुसह गुमान् ॥ २ ॥
 षटभाषा विद्या चवद, कला बहुतर चार ।
 गुण प्रमाण असू मयो, ज्यूँ मोजराज मतिधार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

कोक सुं व्याही पंषिनी, जोरी बनी अपार ।
 मानो अवा ततार फिरि मकरध्वज रति नारि ॥ ८५ ॥

कोक महल क्रीसत सदा, पंषिनी कुं लिये संग ।
 हास विनोद विलास सुष, सदा रहिति रति रंग ॥ ८६ ॥
 तब सु कोक अरु पंषिनी, कीन्हों एक विचार ।
 केलि ग्रन्थ इक कीजिये, होइ सुजस संसारि ॥ ८७ ॥
 ओषद अरु रति भेद सब, तिय वर्णन सिंगार ।
 कियो दुऊँ मिली बुद्धि सौँ, कोक नाम विस्तार ॥ ८८ ॥
 ता पाछे कवि अति मयै, रचै नु भाषा रूप ।
 कोक ग्रन्थ अति सरस है, सुनि सुनि रीभत भूप ॥ ८९ ॥

[स्वरूपलाल जगदीश चौक, उदयपुर]

(९) चंदन मलयागिरि की चोपड़-दूहा । रचयिता-भद्रसेन ।

आकार-६'६" × ५" । पत्र-संख्या ५ । छन्द-संख्या २०३ चउपड़, दूहा, गाहा ।
 लिपिकाल-सं० १८२४, माह विद् १४ सोमवार । लिपिकार-ऋषि हेमराज ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१०) चंदराज चरित्र । रचयिता-मोहनविजय ।

प्रति-१: आकार-६'७" × ४'२" । पत्र-ढाल १८०० । रचनाकाल-सं० १७८३ । लिपिकाल-१८७८ ।

आदि भाग-

दोहा

प्रथम धरा धवनी म, प्रथम तीर्थकर आदेय ।
 प्रथम जिणंद दिणंद सम, नमो नमो ना मेय ॥ १ ॥
 अमित कांत अद्भुत सिषा, सिर भूषित सो छाह ।
 प्रगटथो पन्न ऊह थकी, सिंधू सलिल प्रवाह ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

तमगछ नायक गुण गण लायक विजय सेन सुरिंदरजी ।
 प्रति बोध्यो जियें दिल्ली नो पति अकबर साह भुमिंदरजी ॥ १६ ॥
 तास चरण शतपत्र सु मधुकर कीर्तिविजय उबभावाजी ।

तास सीस कवि मुख मंडन मान विजय कवि राया जी ॥ १७ ॥
 तास पद सेवक मति सुत सागर लब्ध प्रतिष्ठ कहायाजी ।
 पंडित रूप विजय गुण गिरुआ, दिन दिन सुजस सबायाजी ॥ १८ ॥
 तेहने बालक मोहन विजये अठोतर सौ दालें जी ।
 गायो चंद चरित्र सुरंगो चरित्र बचन परिनालें जी ॥ १९ ॥
 कीधो चोथो उल्लास संपूरण, गुण बसु संजय वर्षेजी ।
 पोस मास सित पंचमी दिवसें, तरणिज यारें हर्षेजी ॥ २० ॥

×

×

×

विजय, तेम सुरिंद राज्ये करि परम गुरु वंदना ।
 कवि रूप सेवक मोहन विजयें वर्ण व्यागुण चंदना ॥ २ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

प्रति:-२ लिपिकाल-१८४६

[अन्ताणी संग्रह]

(११) चंदराजाचोपी । रचयिता-विद्यारुचि-आकार-१०.४" × ४.४" ।

पत्र-संख्या १३५ । छंद-संख्या-२६८४ लिपिकाल-संवत्-१७६१, फाल्गुनमास ।

आदि भाग-

दोहा

श्री जिननायक समरिह, ऋषभदेव अरिहंत ।
 वंछित पूरण सुरतरु, भय भंजन भगवंत ॥ १ ॥
 शिव सुष दायक सविह, शांति नाथ जिनचन्द ।
 यादव वसन लोमणी, नमइनेमि जिणंद ॥ २ ॥
 पुरुषा दाणी परगडो, श्री वर काणो पास ।
 नाम जपता जेहनो, सफल फले सवि आस ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तप गळ पंडित वड वयरागी, संवेगी गुण भरिउरे ।
 श्री गुरु सहज कुसल सुषदायक, उप समरसनो दरियो रे ॥ ८ ॥
 ताम सीस सुध समयम धारी, श्री लक्ष्मी रुचि बुध ईस रे ।

क्रिया बंत पंडित कुलदीपक, श्री विजय कुसल तस सीस रे ॥ ६ ॥
 तस पद पंकज भ्रमर विराजें, श्री उदयरुचि कविराय रे ।
 कुमत मतंगज कुंभ विदारण कंठी ख कहवाय रे ॥ १० ॥
 तास सीस सेवग महोदधि, श्री हर्ष रुचि बुध कहीरे रे ।
 उपकारी मुक्त श्री गुरु मिलिया, दरसण ती सुष लहीरे ॥ ११ ॥
 विज्ञ सरोमणि मुगट नगिनो, विद्या रुचि तस सीस रे ।
 गुण मणिते पुरो पंडितरे सुषदायक सुजगीस रे १२ ॥ १२ ॥

[वद्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर,]

(१२) चन्द्रलेहा चतुष्पदी । रचयिता-मतिकुशल । प्रति-१ । आकार-
 ६-३" x ४" । पत्र-संख्या-२० । पद्य-संख्या ६२४ गाथा और २६ ढाल । रचनाकाल-
 सं० १७२८ । लिपिकाल-सं० १७४६ । विषय-जैन जीवन चरित्र ।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

प्रति २ । आकार-६-८" x ४-८" । पत्र-संख्या २३ । पद्यः संख्या-१०८५ ।
 लिपिकाल-सं० १८८१ ।

आदि भाग-

दूहा

सरसति भगति नमी करीं, प्रणमूं सदगुरु पाय ।
 विघन विडारण सुषकरण, परसिध एह उपाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दूहा

संवत सिद्धि कर मुनि जिसै, (वदि) आसु दशमि रविवार ।
 श्री पवीय षमै प्रेमस्युं, एह रच्यौ अधिकार ॥ १२ ॥

×

×

×

सुगुण श्री सुगुण कीरति गणि, वाचक पदवी धरंत ।
 अंतेय वासीय चिरंजयौ, मति वल्लमहं महंत ॥ १४ ॥
 प्रथम सुशिष्यं अति प्रेमस्यं, मति कुशल कहे एम ।
 सामायक मन सुध कहौ, जय वरौ चंद्र लेहा जेम ॥ १५ ॥

x

x

x

गुणय गुण जे सुणै भावै स्युं, गुरूया तणा गुण जेह ।

मन सुध जिन भ्रम जे करै, त्रिभुवन पति हुवै जेह ॥ १७ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१३) चन्द्रशेषर छरित्र । रचयिता-वीरविजय गणि । आकार-
८" x ४'४" । इस ग्रन्थ में २३७ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ और प्रति
पंक्ति में २८ अक्षर हैं । अक्षरों की लिखावट जैनपाटी की है । कुल २६६१ छंदों
में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है । संवत् १६३६ में माणिकचंद विजय गछ द्वारा लिपि-
बद्ध हुआ ।

यह प्राकृत प्रबंध 'चन्द्रशेषर' का भाषानुवाद है जिसको उक्त रचयिता ने
राजनगर (मेवाड़) में चतुर्मास में भाषान्तर किया । इसमें जम्बूद्वीप के चन्द्रशेषर
नृप की कथा का वर्णन है, जो इस प्रकार विभाजित किया गया है । नरति-सुन्दरी
प्रीति सुन्दरी का पाणि ग्रहण, क्षेत्रपाल वशी-करण, श्रृंगदत्त कथा श्रवण, द्विज
पत्नि कुलटा प्रबन्ध कथन, सुदर्शन कुमरोपनय प्रकाशन, तापस पुंत्रि कनकावती,
विमला पाणिग्रहण शत्रु जययात्राकरण, चतुषष्टिखेट सुताकर ग्रहण, त्रिलोचना
के वचनमृत, पितृ-मिलन, स्वर्गगमन । रचना तथा इसकी भाषा जैन शैली की है
और जैन उद्देश्यों को लिये हुए है । केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग—

दूहा

श्री संघे सुरपालजी, तामधि विघन पलाय ।

प्रिय मेलक परमेश्वरूँ, नमि पद्मावति माय ॥ ५ ॥

इष्ट देव समरण करी, व्रत फलनो अधिकार ।

जिम श्रुति सागर वरणव्यो, तिम कहुँ पर उपगार ॥ ६ ॥

तास सिस विजयबुध तास, सिस गुण बंताजी ।

श्री शुभ विजय जस नामेंजे, महिमा हिमहंताजी ।

पंडित वीर विजय तास सिस चितनो वृति उल्लासेंजी ।

चन्द्रशेषर नृप गुंण मणिमाला गुण श्री छे आरासेंजी ॥ ७ ॥

संवत उगणीसयदोयवरसे विजया दशमी प्रसिद्धिजी ।
 राजनगर मां रहि चत्रमासु रासनी रचना कीधीजी ॥
 विजय देवेन्द्र सूरी साम्राज्यें माण्यो व्रतआचारोजी ।
 दक्ष परीक्षक नर जो सुणस्यें तो श्रम सकल ऊमारोजी ॥ ८ ॥
 जिम सोहम पति इन्द्र ने नन्दन नामें राय जयन्ताजी ।
 तिम राजेशरी सेठ हेमाभाई तस नंदन गुणवन्ता जी ॥
 छे युवराज पदें पद लायक प्रेमामाई विराजेजी ।
 रासतणी में रचना कीधी ते सहु ने सुणना काजेजी ॥ ९ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१४) चन्द्र कंवर की वार्ता— रचयिता-हंसकुमार आकार-
 ११-५" x ८-७" । यह ग्रन्थ चमड़े की जिल्ददार पुस्तक में है, जिसमें इसके अतिरिक्त
 'पनरह तथियां रा दोहा', 'ढोला मारवणीरी बात', 'ब्रंद सतसई', 'फुटकर दोहा',
 'अमरकोश' (संस्कृत), और 'अलंकार रत्नाकर' है । १८ प्रत्रों पर यह ग्रंथ समाप्त
 हुआ है । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १७ अक्षर हैं । अक्षर बहुत
 बड़े २ हैं । यह वार्ता है, इससे अधिकतर कथा गद्य में है । कहीं कहीं दोहा, चौपाई
 सोरठा, चन्द्रायणा आदि आ जाते हैं, जिनकी संख्या ८६ है ।

विवरणी के प्रथम भाग में इस ग्रंथ के विषय में कुछ अशुद्धियां रह गई,
 उन्हें यहाँ सुधार देना चाहते हैं—

प्रथम भाग के पृष्ठ २८ पर इसी ग्रन्थ 'चन्द कुवर री बात' का उल्लेख
 किया गया है । उसमें रचयिता प्रतापसिंह दिया गया है वह अशुद्ध है । ग्रन्थ
 का रचयिता है "हंस कवि" है । प्रतापसिंह तो घुमाण को हुकुम देता है कि 'हंस
 कवि' को कुछ अपूर्व बात सुनाने को कहो (यह उसी विवरणी में दिये गये पाठ
 का अर्थ किया गया है) । इसी प्रकार अमरावती नगर के सेठ की पुत्री चन्दकुँवरि
 लिखा गया है, यह भी अशुद्ध है । यह नाम 'चंद कुवरि' नहीं है 'चन्द कँवर' है
 जो पुल्लिङ्ग है । यह 'चंद कंवर' अमरावती के राजा अमरसेन का पुत्र है । इसी
 प्रकार राजकुमार के स्थान पर 'राज कुँवर' पाठ लिखा होने से यह राजा के पुत्र
 का नाम समझ लिया गया है । इस राजकुमार का प्रेम सेठ की पुत्री से न होकर
 उस सेठ की स्त्री से ही था । 'सेठ तणी जे असतरी, तिण सूं घणों सनेह' का अर्थ

भी यही होता है। अतः इस भूल सुधार के लिये हम संक्षेप में सारी कहानी यहाँ देते हैं—

अमरावती (सौरठ) का राजा अमरसेन। उसका पुत्र चन्द्रकुँवर शिकार को जाता है। सूअर के पीछे दौड़ता हुआ साथियों से छूट जाता है। ३३ कोस पर सूअर मारता है। सूर्यास्त। किसी ऋषि के आश्रम में जल पीकर मार्ग पूछता है। ऋषि कहते हैं आगे कुछ दूर तक बस्ती नहीं है फिर कंधार शहर है, उससे ५ कोस की दूरी पर ताँबापुरी है। कुमार का प्रस्थान। मार्ग में नदी) बरसात से बाढ़-नदी के उस पार ताँबापुरी! काजली तीज का त्यौहार कुछ सुन्दरियाँ वहाँ खेल रही हैं। वह वहाँ जाता है। एक कामिनी उसे पूछती है- तुमने ऐसे समय स्त्री को क्यों छाँडा? कहाँ से आ रहे हो? राजकुमार का उत्तर-“सौरठ हंदा राजवी, राजकरैं अमरेन पंथ सीकारां नीसरणां, भुला आया इण देस।” इसके बाद उसके साथ नगर में जाना- फिर अन्य स्थान पर डेरा डालना। नगर के सेठ सामजी बारह वर्ष से परदेस में- स्त्री विरह में कामान्ध-उसकी एक दूती का ‘भमर’ की खोज में फिरते हुए चंद्रकुवर के पास आना-उसको विवश करना-वह पहले पर-स्त्री के पास जाने से इन्कार-फिर दूती की पटुता से वशीभूत होकर सेठानी को संतुष्ट करता है और प्रेमान्ध हो वहीं रहने लगता है। इधर राजकुमार की माता दुःखी होती है। अमरसेन अपने गुप्तचरों द्वारा पता लगाकर मन्त्री को लेने भेजता है। मंत्री बजाज का वेश धारण कर इसके पास जाता है और उसकी माता को दुःख वर्णन करता है। चन्द्रकुँवर सेठानी से विवाह कर उसे घर ले आता है।’

इसमें कुछ पाठान्तर भी है:—

प्रथम भाग में ग्रन्थ की प्रथम चौपाई इस प्रकार है।

समकं सरसत मात मनाय । गणपति गरु के लागुं पाय ॥

प्रतापसिंह रस कीनो काज । क्यूं न कण्यो रसिक कविराज ॥

इससे भी यह सिद्ध नहीं होता कि इसका रचयिता प्रतापसिंह है। मुझे जो ग्रन्थ प्राप्त हुआ है उसमें यह पाठ है

दोहा

समर सरसत माय कुं, गणपति लागु पाय ।

प्रतापसिंह नृप अरज कीय, यथा सिक कविराय ॥ १ ॥

-आगे जो पाठान्तर है वह इससे मिला लिया जावे-

हंस कवीसर सूं कबो, कछु इक बात सुणाय ॥ २ ॥
 सबकुं लगै सहामणा, रस संजोग सिणगार ।
 सुरष हु को मन हरे, सब रसीयन को सार ॥ ३ ॥
 सतरे से चालीस मै, तेरस पोसज भास ।
 गुण कियो कर चाव के, होगी पूरण आस ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

घर घर हुवा वधामणा, तोरण बांध्या द्वार ।
 परणे आयो पदमणी, आयो चंद कवार ॥ ८२ ॥

चन्द्राइणा

बाप तणे पग लाग मील्यो है माय कुं ।
 बेण उतारे लूण भयो सुख धाय कुं ॥
 दुलहण को मुख देख, ठमक ठमक पाय परत है ।
 मोहरां मर-मर मूठ, निछावर करत है ॥ ८३ ॥

दोहा

मो मन प्यारी सुं वसे, प्यारी के मन पीव ।
 मे प्यारी का जीवडा, प्यारी मेरा जीव ॥ ८४ ॥
 परतापसिंघ सेबक कहै, वाचत सदा सहाय ।
 चंदवात पूरी भई, यह करि रस कविराय ॥ ८५ ॥
 जोध वंश युग युग जियो, बणो होत हरवार ।
 नाम धार्यौ परताप नृप, गुण ही को गुणसार ॥ ८६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(१५) चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्ध । रचयिता-समयसुन्दर । आकार-
 १०" x ४'५" । पत्र-संख्या-३६ । लिपिकाल-सं० १८४२, पोष सुदि १४, शुक्र ।
 रचनाकाल-१६६५ ज्येष्ठ शुक्ल १५ । पत्र संख्या-प्रथमखंड ढाल १०, गाथा १८७,
 प्र० श्लोक २२५; द्वितीय खंड ढाल १०, गाथा २५०, प्र० श्लोक ३६४, तृतीय खंड ढाल
 १७, गाथा ३६६, प्र०; चतुर्थ खंड ढाल १०, गाथा २५०, प्र० ३६४ ।

विषय:-इसमें कर्लिंग देश में चंपावती नगरी के राजा दधिबाहनराय के
 युद्ध तथा चार प्रत्येक बुद्धराजाओं का वर्णन है ।

आदि भाग-

श्री सिद्धारथ कुल तिलो, महावीर भगवंत ।
 वर्तमान तीरथ धणी, प्रणमु श्री अरिहंत ॥ १ ॥
 तसु गणधर गोतम नमुं, लबधि तयो मंडार ।
 काम धेनु सुरतरुमणी, वारूँ नाम विचार ॥ २ ॥
 वीणा पुस्तक धारिणी, समरूँ सुरसति मात ।
 मूरिख नैं पंडित करें, कालीदास कहिवाय ॥ ३ ॥

× × × ×

कर कंहु राजा दुमुख, नमिनइ विग्गड सुद्ध ।
 इणि नामें उत्तम दूआ, च्यारे प्रत्येक बुद्ध ॥ ८ ॥
 चार तिया च्यारे चतुर, मोटा साधु महंत ।
 चिहुं खंडे कहुं चरितहुं, जिम पामूं भव अंत ॥ ९ ॥
 चार खंड ए चउपई, चिउं खंडे परसिद्ध ।
 प्रथम खंड कर कंडुनो, सामलि ज्यो मन सुद्ध ॥ १० ॥

पुष्पिका-“इति श्री आगरा वास्तव्य नागड गोत्रिये श्री संघ भार धुरंधर
 नाना विध शास्त्र विनोद महा रसिक सा० भारू (?) समभ्यर्थ नया वाचक श्री
 समय सुन्दर गणि विरचिते श्री चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्धे.....सम्पूर्ण
 इति श्री चतुः प्रत्येक बुद्ध चतुष्पदी समाप्ता । /सकल पंडित शिरोमणि पंडितजी
 श्री १०८ श्री रत्न रुचिगणि तत् शिष्य पं० श्री अनोपरुचि गणि शिष्य पं० अभय
 रुचिगणि लिपि कृते भींडर नगरे.....संवत् १८४२ वर्षे पोष सुदि १४-
 शुक्ले । ”

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर,]

(१६) चमत्कार चिन्तामणि । रचयिता-अज्ञात । आकार-८" x ५" १"

पत्र-संख्या ३ पद्य-संख्या ११३ । विषय ज्योतिष ।

आदि भाग-

युं विचार ज्योतिष को, कहत न आवैं पार ।
 अब फल बारह भवन को, वर्णन है कविसार ॥ १ ॥
 तन भवनै सूर्य करै, नरक रूप बहु केस ।
 विनय रहित क्रोधी समझ, सार चित लवलेश ॥ २ ॥

वित्त हरे रवि धन रखो, गुह्ये सदा सरोग ।
सजन अधिक दुर्जन अधिक, भाग विसर्ग लोक ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

राह करै अमल वन, वरष तीन को आप ।
जो कदाचि जीवै अधिक तो अति दुखित माप ॥ ८ ॥
धर्म सार तम कर करै, करै बिन्द से वास ।
कामा लोमी कठिन मन, धरै सकल की आस ॥ ९ ॥
राह कर्म कर बुद्धि बल, मरै पिता तत्र रोग ।
सूखीर पर नारि सूँ (रता), सार सुमति को जोग ॥ १० ॥
राह लाम को सुभस सुख, आय बहुत धनवन्त ।
महा बलि सिर बन्त बहु, सारद सदा मति वन्द ॥ ११ ॥
राह बार में आपदा, होत द्रव्य को नास ।
अल्प बुद्धि मानें तिके, माया वन्त उदास ॥ १२ ॥

इति राह फलं

अैसे बारह भवन परि, जोतिष शास्त्र विचार ।
फल नव ग्रह को वर्ण व्यो, सार बुद्धि अनुसार ॥

[सरूपलाल शर्मा जगदीश चौक, उदयपुर]

(१७) चंपकमाला । रचयिता-अज्ञात । आकार-६'४" × ४'२" । पत्र-
संख्या-८५ । पद्य-संख्या ६५ । विषय-चम्पकमाला के सतीत्व और जैनधर्म पालन
की कथा ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१८) चित्रसेन पद्मावती रास । रचयिता-अज्ञात । आकार-
१०'४" × ४" । पत्र-संख्या-३३ । छंद-संख्या ४६५ । रचना-काल- १८१४
विषय-इसमें किसी पूर्व देश के राजा चित्रसेन और उसकी रानी पद्मावती की
कथा है ।

अन्तिम भाग-

भविष्य साचो इक भ्रम भाई ।

भवक ममता जीवनं एहिज होय सहार ॥ १ ॥

धरम पदारथ जगत में जिहों तिहों ग्यानी ए गायौ ।
 तिण्य उप चित्रसेन नरिंद ने ए दृष्टान्त सुणावो ॥ २ ॥
 दान सील तप फल सुमदायक जो होया तावस मेला ।
 श्रुत परणाम बिनासह निरफल तीने ही एह अकेला ॥ ३ ॥
 करम तणौ बंध करम नि जरा एस रु आतम सारे ।
 ए चित सेणे चरित्र श्रवणे शुणीए परमारथ धारे ॥ ४ ॥
 अठारह ऊपर वरसै चवदो तरे बहेते ।
 पोसमास शुदि दसम तणै, दिन रास रच्यौ मनषंते ॥ ५ ॥
 श्री जिन लाभ सूरि सिर राजै षरतरगछ वड़भागी ।

बेम साष श्री शांति हरष शिष्य, श्री निज हरष बैरागी ॥ ६ ॥
 तामु चरण रज कण्य सुप साठौ, सरमतिशु' निज रणाई ।
 राम छिजै उठ जाय ए चौपई बीकानेर वणाई ॥ ७ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर]

(१६) जाम राउल रो बारामास्यो । रचयिता-अज्ञात । यह एक प्राचीन गीत है । जो एक प्राचीन चोपड़े में प्राप्त हुआ । इस चोपड़े पर संवत् ११४२ लिखा है, परन्तु रचना इतनी प्राचीन नहीं है । जाम राउल जामनगर का संस्थापक था और उस समय में जामनगर गुजरात में ब्रजभाषा साहित्य का केन्द्र था ।

साल ले बारह मेघ सायण अंब धारा ऊबले ।
 बाबीहा दादुर मोर बोलै साल दह दिशी षल हलै ।
 भूदमचै सिहरे बीज भूबकै मिले अन्नल फर हरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संमरै ॥ १ ॥
 भाद्रवै नीर निवाण मरिया, गिर पहाड़ पषालियै ।
 मिलि छपन कौडि मेघ माला नदी नीर मालियै ।
 घेषूब लूंबा सांभली छटा कांठली जल हर करै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संमरै ॥ २ ॥
 ऊनमै अति घण मासव पासु नदी नीर निरमला ।
 बन अधिक छाड़ यै लूंब बेलि चंद्र हूँ चढ़ी कला ।

नैबैष करि बापि-तट विहसै बेक वदन बिस्तरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ३ ॥
 कातिग मास आकास मिरमल मेघ चालै घर सुणै ।
 सर कमल बिकसै सरद रेणि नीर छाया पोमणै ।
 अनल ठंमै गरज उतर अरक दषिक मनि धरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ४ ॥
 मगसिरे मारग माग मंडै मेघ मंडै दामिणी ।
 करि कोट बाला रल चमकै उण्य अस्तन कामिणी ।
 बड़ आय कूप पयाल अस्तर जीवह दिसै ऊमरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ५ ॥
 भिति हिमोतर पौष मासे पान तर वर हाखै ।
 साक पै प्रेम कमल बिकयल मंवर पंख न साखै ।
 धूजंत वानर गो निरधन नाग रायण निस्सरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ६ ॥
 उत्तरा दल हरि लंक नाषै प्रलैवन षंड परजलै ।
 अंब होय विषमा अगनि अम्रत सीत बादल साललै ।
 दीरघ रयणि तोछ दिनकर माह मास समाचरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ७ ॥
 निसि सित फागुण दिन ग्रीसम अनल पंष समारै ।
 फिर चलै उतर चाहि रवि रथ दषिण पंथ निवारै ।
 बिति लोक रामति फाग बेलै होलिका प्रष बिस्तरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ८ ॥
 माजरि अद्भुत चैत्र मासै पागुरै पत कोमला ।
 सीजाई घर दिसि धूम पलटै हुए अंबर निरमला ।
 बनराई भार अढ़रि फूटै दहण माथा उत्तरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ ९ ॥
 बैसाख मासै मोरिया बन बसत अमृत आण ए ।
 केतकी जाइक हसै कुसमै मंवर लीला माण ए ।
 महकंत चंपो बेलीदमणो अधिक प्रेमल उधरै ।
 राजेन्द्र पात्रा जाम राउल सांमितिणि रीति संभरै ॥ १० ॥

वरतिये जैठक लूऊ वाजै हुवै दिसी हला हलै ।
 दिन बधै घटै निसी दिवाबर जणि हुवै ।
 प्रितिम जलं फल जाइ दाडिम दाख पाचै मालिखी कायामरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सामितिणि रीति संभरै ॥ ११ ॥
 आषाड ऊवां करै डंबर गहली निद्रा अति घणं ।
 सू जाई निसरी गरमिये जल, कुंअरि दीला कंकणं ।
 बिजली चमकै बले बादल उन्हंगालै प्रसेवो उतरै ।
 राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सामितिणी रीति संभरै ॥ १२ ॥

[माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर]

(२०) जिनपाल जिनरक्षक रो चउढालियो । रचयिता-शान्तिकुशल ।
 आकार-१०'' × ४'५'' । पत्र संख्या ३ । पद्य-संख्या ६१ । विषय-जैन-जीवन
 चरित्र । भाषा-बोल चाल की राजस्थानी ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२१) ढोला मारवणी री बात । रचयिता-अज्ञात ।

आकार-५'' × ४'६'' । पत्र-संख्या-७० । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ
 और प्रत्येक पंक्ति में २० अक्षर हैं । अक्षर सुन्दर और छोटे हैं । प्रति कुछ जीर्ण
 हो गई है । इसमें कुल २१८ पद्य हैं और बीच बीच में वारता दी गई है । रचना
 काल इसका इस प्रकार दिया गया है—

पनरेसे तीसे वरस, कथा कही गुण जाण ।

वदि वेसावै वार गुरु, जन्ति जाण दस आण ॥

इसका आदि भाग विवरणी के प्रथम भाग में पृष्ठ ३७ पर दी हुई कुशल
 लाभ रचित ढोला मारू री चोपई प्रति १ के आदि भाग से कुछ पाठान्तर लिये
 हुए हैं ।

सकल सुरासुर स्वाभिनी, सुणि माता सरस्वति ।

त्रिनोद क्री ने विनवूँ, पुजने दो अविरल मति ॥ १ ॥

जोतानवरस यण दुगे, सबहि करी सणगार ।

रागें सुरनर रीजिये, अबला तस आधार ॥ २ ॥

उदाहरण-

दुहा

नदियां नाला नी भरण, पाणी चढ़ियो पूर ।
कहो कादम किम चले, पंथी पूंगल दूर ॥

वारता

सूणो महाराज आबु परबत अठारे गिरां रो राजा
छे: तिण कने शोवन गीर परबत नेड़ो छे:
तबै जालोरगढ़ थापीयो छै: सो गढ़ विषम जायगा छे:

दूहा

अन्तिम भाग-

अति आणंद उछब हुवा, नरवर वरज्यो दोल ।
ससने ही सयणा तणा, कल में रहिस्यै बोल ॥ २१७ ॥
दुहा गाहा सोरठा, मन विकषणा वर्षाण ।
अब जाण्या मूरख हसै, संभे चतुर सुजाण ॥ २१८ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(२२) दोला मारवण री वार्ता । लेखक-अज्ञात

यह भी उसी जिल्ददार संग्रह में जिसमें है जिसमें चन्द्र कँवरी री वार्ता,
वृंद सतसई और अमर कोष (संस्कृत) हैं ।

इसमें कुल ४७ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १७ से १६ तक अक्षर हैं । यह संवत् १६०४ शकै १७६६ आसोज कृष्ण ५ बुधवार को उदयपुर में लक्ष्मी विजय द्वारा लिपि बद्ध हुआ । यह विवरणी के प्रथम भाग के पृ० ३८-३९ पर दिखे हुए ग्रन्थ ४६ से भाषा और शैली में बहुत भिन्न है । कथा वही दोला मारवणी की है, परन्तु इसका रचयिता कोई है । भाषा यद्यपि राजस्थानी ही है पर लेखक की भिन्नता स्पष्ट प्रकट होती है । वर्णन पद्धति भी वही गद्य तथा दोहा सोरठा वाली है; परन्तु दोहे का विषय तथा क्रम एक दूसरे से भिन्न है । एक ही कहानी की विभिन्न रचनाएं उसकी लोक प्रियता का प्रमाण है ।

आदि भाग-

पुंगल राजा जातरा चवाण (भाटी ?) । पुंगल राज करै छे । सो देस मैं काल पड़ीयो ।
सो लोग परदेस जावा लागा । तरे पुंगल राजा रो प्रधान । पंचायण नाम हुतो । तिण ने हजूर

बुलायो । पंचायण आपणै खजाणो कोठार छै । सो खरचो । लोका ने डुलवा थो मती । तरै प्रधान हाथ जोड अरज करै छै । माहराज खजानो थोडो । ई तरे काल निसरें नही । देशउं चालो करो तो रूडो हुवै । वैसु थानै दीरावां । तरै अटकल नै प्रधानै । आदि तीरथ पोहकर व धारा रे भागसार वास मांडीयो । नै प्रधान सीख मांगी । तरें राजा पीगलै परवानों घणी मनवार देनै लिख्यो ।

दुहा

राज अत आदर कीयो, जिम राज वदजो गेह ।

देस वसारथो रावलो, अँ घोड़ा अल गेह ॥

वारता- परवानों लेनै राजा पुंगल रो प्रधान पुंगल आयो राजा पींगल नै जाय छहार कीनो । समाचार सामलनै । राजा पुगल रलीयायत हुवो ।

दुहा

पुंगल देस दुकाल थयो, किही कंवर सब सेष ।

पुंगलनैउ चालो कियो, नीछें नलवर (दीसै) देस ॥

मारवणी का विरह वर्णन

(डाढ़ी के द्वारा मारवणी ढोला को संदेश भेजती है)

“कागद में तो घणई मोकलीया । पीण पाछो जबाब कोई आयो नहीं । हमे तो कागद में कोई देवा नहीं ॥ नै थे मां कनेसेती दुहा सीखो ॥ तिके कवरजी तु संमलावजो ॥ वि जो थांकने परमेसरजी कहावै जी को कही जो ॥ नरे मंगण कहीयो ज राज प्रमाण दुहा—

मारवणि सीखावीया, मारू राग उपाय ।

दूहा संदेसां तया, डाढ़ी जाय सुणाय ॥

डाढ़ी जो ढोलो मिले, (तो) कह अमारी बात ।

धण कणीयर री कांबजु, सुंकी तोही छुरात ॥

डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला ने कहिधीव ।

पींजर नाही प्राणिया, थां दीस्या छे जीव ॥

डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला केह सुणाय ।

जीवन आंबो मोरीयो, साष लुटोनी आय ॥

डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला केह सुणाय ।

जोबन छांत उपाड़ीयो, राजंद वसो आय ॥

डाढ़ी एक संदेसडो, ढोला केह सुणाय ।

जौवन हसती मद हुवौ, आंकुस थोनी आय ॥
 बाढी एक संदेसडो, दोला लग पोहचाय ।
 डेर पड़ी छे आंगणे, सीलो करो नी आय ॥
 बाढी एक संदेसडो, दोला लग पोहचाय ।
 जौवन काला नाग ज्यू, झुक-झुक भोला खाय ॥
 चीतारली चुगतीयां, कुरभां रोवहियाह ।
 कूर भको दा हीयला, मिले नही मन्नाह ॥
 दोला मौलसी नवीसरसी, नहीं आवसी लेस ।
 मारू तणा..... कर कडे, बायस उंडा हेस ॥
 दोला जो तुं न आवियो, सावण पैहली तीज ।
 भंख करेसी मारवणी, देव धीवंती बीज ॥
 बोला जो तुं न आवियो, सावण पेहला मेह ।
 आबा वसीया वालहा, झुर झुर हुइ हम देह ॥
 निरमोही घर आव पिव, कासू घणो कहेर ।
 संपत (तो) दिन दिन आवसी, (पीख) जौवण कइलहेस ॥
 पाव हुवे तो किम हुवो, दई अरुठा त्याह ।
 रात बिछोहो दिन मिलण, पंखछती चकवाह ॥
 आधमण ऊपरां दीठ, पूरव सांमी बाह ।
 एक संदेसडो कुर भड़ी, दोला ने कहियाह ॥
 ओ दुहा केह ने कुरभा, सो मारू जौवनलागी
 ताल चुगंती कुरभड़ी, सर संधियो गी मार ।
 हुं ऊडी आकास ने, हाली जौवनहार ॥

वारता

इतरी बातां करतां मारवणी घरे आई : दोलाजी आगम चिंता करे छे काग बैठी उडावे छैः
 और काग सुं कहे छे—

कागा पीव न आत्रोयो, कियो न डेरो चीत ।
 लकड़ी हुवे तो दध वलु, रहुर अकेली नीत ॥
 कागा देऊ वधाइयां, पीव मिलानो मुभ्भ ।

काड माह थी जीवड़ी, भोजन देस्युं तुभम् ॥

कागा जठे पीव बसे, उड जो त्याह चल जाय ।

दोला बेहलो आवने, (फेर) घणा ही हुता माय ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(२३) दत्तात्रेय उपाख्यान । रचयिता-अज्ञात । आकार-६"२" × ४" ।

पत्र-संख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४० या ४२ अक्षर है । पद्य-संख्या २२० । इसमें भागवत पुराण के अन्तर्गत एकादस स्कन्ध के ७, ८, ९ और १० अध्यायों की कथा है ।

[रामद्वारा धोलीबावड़ी, उदयपुर]

(२४) दवदंती नी कथा । (लेखक-देववर्द्धन(?)) । आकार-१०" × ४½" ।

यह कथा गद्य में है । पत्र-संख्या १२ । प्रति पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३६ अक्षर हैं । जैनपाटी की सुन्दर और व्यवस्थित लिपि है । रचनाकाल-संभव १५०० से पूर्व अनुमानित । भाषा-जूनी राजस्थानी ।

आदि भाग-

दवदंती नी कथा कहियइं छइं । ईणइ जंबू द्वीपि । भरत क्षेत्रि ।
अष्टापद समीपि । संगमपुर नगर । तिहा मंभण राजा ।
वीरमती मायसिहि सुखिइ राज करइं । अन्यदा प्रिया सहियुनु ।
राजा आहेडा भणी नगर बाहर निकलिउ । तिसइ संघात साधि ।
महात्मा एक मल मलिन गात्र आवतउ देखी । मनमाहि अपशकुन-
मानतउ म राजायइ महात्मा उमउ राखिउं । संघात हूतउ ।
चूकविउं । बार बड़ी ताई संतापी पछइ दया परिणमि ऊपनइं-
राजायइ महात्मा पूछिउं । किहां हुता आव्या । किहां जासि ।
तिवारइं मुनि कहइं । हउ रोहीतक नगर हूतउ आविउं ।
इम बात करतां राजा राणी ए दुस्वप्न परिइं कोप मूंकिउं ।
तै बार इम महात्मायइं जीव दया मूल धर्म उपदेसिउं ।
अनइ राजा राणी ए भावना सहित सखहियुं । पछइ ते महात्मा तइ
भात पाणी यह करी सम्पूर्ण भक्ति कीधी । पछइ महात्मायइं यज्ञ-ज्ञान
रूप धर्म उबध कर्म रोगनी चकिशा भणी आपिउं ।

पछइ महात्मा अष्टापदि पहुतउ । हिवतें बिन्हइ यतीना ससग्य लगइ-
 भावकु अर्ध पालिवा लागी जिमराक । द्रव्यनइ पालइ । अन्यदा वीरमतीनइ
 जिन धर्मनी गाढी स्थिरता करिवा मणी शासनना देवताइ अष्टापद
 तीर्थ देखाडिउं । तिसइ तिहां अष्टापद ऊपरि वीरमतीयइ शाश्वती
 प्रतिमायइ जे देवतां पूजइ छइ । ते देखी परमानंद धरती चउबीसइ-
 जिननी प्रतिमा नमस्करी ।

उदाहरण-

नलदवदंती बाहरि नीकली कहइ । तिव केही दिशि जाईस्यइ ।
 तिवारइ दवदंती कहइ । स्वामिन कुंडिनपुरि जाइयइ ।
 जिहां माहारउ पिता छइ । तिवारइ नल कुंडनपुर मणी रथ खेडिउं ।
 पछइ मार्ग उल्लंघता महा अटवी माहि रथ पडिउ ।
 तिसइ गाम भील आव्या । एहइ नल रथ हूतउ उतरी खल्ल लेई ।
 सामुहइ धावा लागउ । ते नलइ दवदंती कहइ ।
 हे नाथ पाली मणी ताहरउ सिउ आलेप । इम कहइ दवदंती हंकारा मूकइ ।
 जे जे हंकारा सुणी ते ते आवत थाइ भुइ पछइ ।
 पछइ भीले पलायन कीधा । हिव जे रथ अलगउ मूकउ हूतउ ।
 तिणि करि बीजे लीधउ । पछइ नल दवदंती पालो पालिवा लागी ।
 इम चालतां मार्गि जातां थका किहांइ एक वृत्त तलइ जई बइठा ।
 तिहां नल केलिनइ पत्रिइ करी दवदंती नइ वाय घातिवा लागउ ।
 दवदंती पणि नलना पग चापइ छइ । एक वई दवदंती त्रिषाकांत हुई ।
 तिसइ तले कमलनइ पत्रेकरी जल आणी पायउ ।
 सुस्ती कीधी तिवाइ दवदंती पूछई । अजी अटवी के एक थाकइ ।
 नल कहइ । सउ जोयण माहि । अजी पाचइ जि जोयण आव्या छा ।
 इम वात करतां सूर आयमिउ । पछइ अशोक वृक्षना पल्लव लेइ साथरउ कीधउ ।
 तिहां दवदंती सूती । एहनउ गाइनइ शब्द सामली ।
 बसतउ जाणी । नलि कहिउं हउ पाहर छउ । तूं सुखि निद्रा करि ।
 पाछइ दवदंती नइ निद्रा आवी । एहवइ नल चीतवई ।

अन्तिम भाग- •

.....। ऐ असार संसार माहि चरित्र इति सार । तेह मणी हिवतूं दीना लइ ।

पछइ नल राजा पुष्कल पुत्रनइं आपणपउं राज देई दवदंती सही दीक्षा लीधी । तिहाँ सतर भेदे संयमे पालतउ पृथ्वी माहि विहार करवा लागउं । पणि नल मुनि कोमलपणां लगइं चारिनुं पालतउं दीलउ हूअउं । एहवइ निषेध देवि आवी द्रदि कीधउं । तउ ही नल मुनि दवदंती नइं बिषइं कामातुर हूअउं । चली पिता पइं आवी प्रति बोधउं । पछइ अणसण सहित नल मरी कुवेर थाहिइ नमिइ उत्तर दिसिकउ अधिपति हूअउं अनइ दवदंती तेहनी देवो हुई । इम दवदंती नइ परिइ ओर नर लोके सील पालिवउं ॥ ६ ॥

पुष्पिका

“इति श्री दवदंती कथा समाप्त” गङ्गहडा गच्छे भट्टा० श्री ४ दयालसुंदर सूरि पटे श्री ४ भावसुंदर सूरि । पटे श्री आचार्य श्री ४ श्री कर्मसागर सूरि । वा० श्री वीरसुंदर । ग० देववर्द्धन लिखापितं । आत्मवाचनार्थ ॥”

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(२५) द्रौपदी चौपई । रचयिता—सांवतराम । आकार—६'४" × ४'२" । इस ग्रन्थ में १० पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियों और प्रति पंक्ति पर ३२ से ३७ अक्षर हैं । कुल ग्रन्थ में ५१ दोहे, १४ ढाल और १६२ पद हैं । संवत् १८६३ कार्तिक कृष्ण सप्तमी को सांवतराम ने सवाईजयनगर (जयपुर) में रचना की । इसकी भाषा राजस्थानी है । विषय: द्रौपदी के जीवन की घटनाओं को जैन दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया गया है ।

आदि भाग—

दोहा

शील बड़ो संसार में, मंत्रां में नवकार ॥
दांनं माहि बड़ो अनै करदे खेवो पार ॥ १ ॥
ग्यान में केवल बड़ो, रिष में गौतम जेम ॥
सतीयां माहि शिरोमणी जौउ पंचाली जेम ॥ २ ॥
परबरा पडिया द्रौपदी, पञ्चोतर के पाश ॥
शील साध तो राखीयो, सकल फली तथु आश ॥ ३ ॥

ढाल

भर्त चेत्र माहे भलों, किंपिलपुर नयर रसालो ऐ ॥
राज करें रलीयामणो, दुपद नाम भूपालो ऐ ॥ १ ॥

सुणज्यो चित्त सुहामणो, धरज्यो मन वैरागो ऐ ॥
 करज्यो कारज जीव रो, ज्युं पामो खेवो पारो ऐ ॥ २ ॥
 रूझी ने रलियामणी, लावण ने चतुराई ऐ ॥
 क्रमरी द्रौपदी तेह मै, कसर न तिलभर काई ऐ ॥ ३ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(२६) धना सालिद्रजी री चोपी । रचयिता-अज्ञात । आकार-
 ८३" × ४" । पत्र-संख्या ३७ । छंद-संख्या ५०५ । लिपिकाल-संवत् १८७७ ।
 विषय जैन-जीवन चरित्र ।

आदि भाग-

सासण नायक समरियै, वर्धमान जिनचंद ।
 अलिय विघन दूरें टलै, आपे परमाणंद ॥ १ ॥
 सहु को जिनवर सारिखा, (पिण) तीरथ घणी विशेष ।
 परणी जेते गाइये, लोक नीत संपेण ॥ २ ॥
 दान-शील-तप-भावना, सिवपुर मारग च्यार ।
 सरिषा छे तो पिण इहां, दान तणो अधिकार ॥ ३ ॥
 सालभद्र सुख संपदा, पामे दान पसाय ।
 तास चरित्र बखाणता, पातिक दूर पलाय ॥ ४ ॥
 तास प्रसंगे जे थई, धन्ना नी पण बात ।
 सावधान थइ सांभलो, मति करिज्ये व्याघात ॥ ५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२७) नयनदीप । रचयिता-कृपाराम । आकार-८" × ७" १" । यह
 ग्रंथ उक्त आकार के एक गुटके में है । इसमें कुल ४३ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर
 १५ पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति में २१-२३ अक्षर हैं । अक्षर नागरी हैं । लिखावट
 आरम्भ में घसीट है दो पत्रों के पश्चात् लिपि जमी हुई है । कुल ७०० पद्यों में
 ग्रन्थ समाप्त हुआ है । इसका विषय वैद्यक है । इस ग्रन्थ की रचना महाराणा
 संग्रामसिंह (दूसरे) के आदेश से संवत् १७८५ में लेखक ने कई ग्रन्थों का अध्ययन
 कर की गई है । यह बात इसके आदि भाग तथा प्रत्येक अध्याय (प्रकाश) के

अंतिम पुष्पिका लेख से ज्ञात होती है। संवत् १७६४ श्रावण कृष्ण ७ श्रृगुवार को यह लिपिबद्ध हुआ। इस ग्रन्थ में नेत्र में उत्पन्न होनेवाले विविध रोगों का वर्णन किया गया है। लेखक ने ग्रन्थ के आदि भाग में अपना वंश परिचय भी दिया है। जिससे ज्ञात होता है कि उसके पूर्वज ऋषिकेश भारत के अंतिम सम्राट महाराजा पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे और रावल समरसिंह उसे अपने यहाँ लाये। इसका रचनाकाल संवत् १७८५ है।

आदि भाग—

सुमति सदन गज वदन को, करि कृपाल परनाम ।
 विघन हरन बुद्धि करन, कवि एक रदन निधि धाम ॥ १ ॥
 अमरसिंघ सेवत चरण, एकलिंग शिव ध्यान ।
 अटल देस मेवार दे, प्रभु थापे तहा रान ॥ २ ॥
 शिव की भक्ति सदा करै, प्रभु को सवै प्रसाद ।
 सूरय कुल मंडल भये, राषन वेद मृजाद ॥ ३ ॥
 नगर उदैपुर प्रगट जग, मे वत नृपति समाज ।
 तहां रान संग्रामसिंह, करत इन्द्र ज्यों राज ॥ ४ ॥
 प्रगट धर्म अवतार है, विप्र धेन प्रति पाल ।
 महारांन हींदवान पति, साहन के उर साल ॥ ५ ॥

व्यापय

महारांन संग्रामसिंघ, जस जगत न बीनों ।
 शिव अराधि सब साधि, दान सकत अति कीनों ॥
 जाको प्रबल प्रताप, मानि फुरमांन लए हैं ।
 नीस नावावत आनि, नृपति मुअ मण्डल जै है ।
 सुनि सदा रहत दिल्लीस के उर में संक अपार ।
 अमर रान सुत मान कुल, प्रगटै अधिक उदार ॥ ६ ॥

+

+

+

कुवर नाथ श्री रांन को, हित चित सी सुषकार ।
 कवित राग रुचि जिव सदा, सुंदर सूर उदार ॥ ६ ॥
 कवि पंडित वो होतै गुनि, औरै वैद्य समाज ।
 आग्या करि कृपाल कों, राजा के महाराज ॥ १० ॥

किते नैन के रोग हैं, बनो तिन्हे बनाय ।
 ज्यों निदान लखिन सहित.....॥ ११ ॥
 विनती करि कृपाल तब, जब प्रभु आग्या कीन ।
 आचारिज मिलि देषि कैं, करियो ग्रंथ नवीन ॥ १२ ॥
 प्रिथीराज चहुवान पैं, रिषीकेश दुज नाम ।
 लाऐ रावल समरसी, दीनो मोही गांव ॥ १३ ॥
 बैद्य भले तिहि कुल भाए, उदयसिंह महारान ।
 उदक गांव द्यो पीपरी, षेम द्विजन कूँ दान ॥ १४ ॥
 उही वंश प्रगटे सुमति, रूपदत्त परवीन ।
 महानंद दूजे कहं, तिनि मिली संमत कीन ॥ १५ ॥
 प्रभु आयस ते ग्रन्थ जिन, विविध सुनाऐ आनि ।
 नेम तस ..कृपालां कवि, मोषा करी वषानि ॥ १६ ॥
 सुश्रुत चरक..... ।
रच्यो कवि, कृपाराम निरधार ॥ १७ ॥
 संव.....तसे, वरम पञ्चासी जानि * ।
 माह मास सित पैंचमी.. च गुर मानि ॥ १८ ॥

अंतिम भाग-

छापय

कवित करे अरु चित्र, वैद्य अन्दर लिपि जानै ।
 जाकी सूरति कहो, काट में ताकी आनै ॥
 बिना प्राण की सेन, बनायर बहे लहरावै ।
 बात अपूरब कहै, सुनत भूपन मन भावै ॥
 सो कृपाराम दुज नाम है, जामे केउ गुन लसै ।
 संग्रामसिंह महागन दिग, नगर उदैपुर में बसै ॥

[श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, लद्दयपुर]

(२८) नरसी महता को माहैरो । रचयिता-रतनोषाती । यह ग्रन्थ भी
 १३७ संतो के संग्रह में है । इसमें कुल ६५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ में ११

पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ३१ अक्षर हैं। इसके अंतिम भाग से ज्ञात होता है कि विक्रम संवत् १६१६, और शाहिवाहन संवत् १४८१ में इसकी रचना हुई और बाद में रामरतन-शिवकरण ने शोधकर शुद्ध किया। सारा ग्रंथ दस प्रकाशों में विभाजित किया गया है जिनमें ४० प्रकार के छंद रागादि हैं। कुल संख्या लगभग ६०० है। ग्रन्थ का पूरा नाम 'भक्त वत्सल बिरदराग कोतूहल नरसी महता को माहेरो है'।

आदि भाग—

श्री श्री सद गुरु प्रणम्य, द्वितीय बंदु सब साध ।
तृतीय बंदु परि ब्रह्म को, घो बांणी विमल अगाध ॥ १ ॥
भक्त गत भगवंत गत, यो पे लखी न जाय ।
श्री गुरु देव दया करो, दीजे भेद बताय ॥ २ ॥

सोरठा

विघन हरण गन राज, देह सदा सारद सुमति ।
कीजिये मंगल राज, कंठ कमल बांणी विमल ॥ ३ ॥

चौपाई

श्री गुरु चरण कवल चित राखूँ । भक्ति प्रभाव बिडद जस भावूँ ।
बंदू भक्त भक्त बुधि पाऊँ । नरसी को इतिहास सुनाऊँ ॥ ४ ॥
गजरात जूनैगढ माहीं । जक्त छाड कर भक्त के माहीं ।
नागर कुल बड़नगरा केही । पूर्व जनम की भक्ति लेही ॥ ५ ॥
तृतीय जनम की कथा सुनाऊँ । थोडे में बहुती समझाऊँ ।
पूरव जनम हूँ तो नृप भारी । सुभद्र नाम सतवंती नारी ॥ ६ ॥
सदा वरत पत्निन कों दीन्हौ । पग मिल घात रिषी को कीन्हौ ।
पुन्य करत लागो तिन पापूँ । विप्र दुषित हुय दयो सरापू ॥ ७ ॥
सो वह कथा यहाँ नहीं आनी । मीरां मिथुला बहुत बखानी ।
कछु एक तात पिरज चुन लेहूँ । लघु संक्षेप यहाँ लिख देहू ॥ ८ ॥
यहाँ शिवकरण कहत कछु छ्राई । ग्रंथ बटे बाँवै कोउ नाहीं ।
यह सुन रीस करो मति कोई । इतनो ही पढ़ें सुनें धन सोई ॥ ९ ॥

(१७८)

दोहा

नृप सुभद्र कों श्राप अति, दियो विप्र कोउ काल ।
गयो महारण के विषे, भयो सिंघ विकाल ॥ १० ॥

चौपाई

नारी सहित सिंह तन धारे । बन के जंतु सकल चुन भारे ।
रये न षग मृग सकल संघारे । धावा बड़त दूरलौं पारे ॥ ११ ॥
हनें पथिक गौ ग्वाल समेता । चलत न पंथ होत मयमेता ।
द्वारावती जात मग माँही । सुनते श्राक सब लोग परांही ॥ १२ ॥

अन्तिम भाग-

सौला से सोलोतडो, विक्रम संवत जान ।
चवदासैं इकियासियो, शाके शालीवहान ॥ ६ ॥
भक्ता के हित कारणै, जद हरि बांध्यो मोड ।
माहेरामें रूपीया, लागा नहि करोड ॥ १० ॥
जो गावे सीखे सुणै, वैकुंठां को बास ।
हरि नामे रतनो बसैं, हरी भक्तन को दास ॥ ११ ॥
लिखे पदे गावे सुणै, कहे करावे कोय ।
खाती रतनो यूं भणै, गऊ सहस फल होय ॥ १२ ॥
माहेरो नरसी तणै, करे ज्ञान अरु मान ।
ज्ञान बटै गुण ऊपजे, गंगा तणा सनान ॥ १३ ॥
महिमां माहेश तणा, षाती कही ब्रणाय ।
सहज मुक्ति फल पावे सही, जन जमपुर नहिं जाय ॥ १४ ॥
भक्ति उपजै भय मिटै, अस स्वास ससी काज (?) ।
नुषता सकल निहजसी, सांवल सा महाराज ॥ १५ ॥
सुखसारण कृपा करी, सत गुरु दई सुबुद्ध ।
रामरतन शिवकरण यह, सोध करथो अति सुद्ध ॥ १६ ॥

[रामद्वारा धोली बावड़ी, उदयपुर]

• (२६) नल दवदंती आख्यान । रचयिता-वैरागी नारायण ।

आकार-१०'१" × ४'१" । पत्र-संख्या-७ । पद्य-संख्या-३१५ । रचनाकाल-१६८२
पोष सुदी एकादशी ।

आदि भाग-

दुहा

परम, पुरुष धरि ध्याईइ, वंछित सुखदातार ।
 सिद्धार्थ कुलि चंद सभ, त्रिसला मात मल्हार ॥ १ ॥
 प्रातु समय निति तेहनुं, धरता निर्मल ध्यान ।
 दुख नाबइ सुपना तरिइ, बाधइ महिमावान् ॥ २ ॥
 त्रिभुवण.....मंडण निलउ, चरम जिणैसर सामि ।
 वेद मुनि प्रभुता हरइ, लहीइ बुधि नामि ॥ ३ ॥
 तूंकुर.....समरथ धणी, सेव्यु देव दयाल ।
 चरित्र रचुं रलीआमणुं, देज्यो वरन रसाल ॥ ४ ॥
 नल दवदंती लुं हवई, सुणज्यो सहु आख्यांन ।
 सती तणां गुण गावतां, दूरि टलइ अज्ञान ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

जीवहणी जेह धर्म रूपसिइ, तेह अनारि जि जांणि ।
 आश्रय छंडीनइ संजम पालीइ, ए जिन परवणी आणि ॥३१०॥
 रूप ऋषि जीव ऋषि कुंअरजी गणि, श्री मल्लजी मुनिराय ।
 तारण तरण आचारजि रत्नसर, बंदीय तेहना पाय ॥३११॥
 रास रचिउ रलीआमणउ रंगसुं, आंणीय हरष अपार ।
 भणइ गुणइ जे सांमलइ भाव सुं, तेहनइ जय जयकार ॥३१२॥

कलस

संवत सोल बिहासी वरषे, पोष सुदी एकादशी ।
 गुरूवार कृतिका तणइ योगिइ, कीधऊ दिम उल्हसी ॥३१३॥
 श्री ग्वसीह गणि गच्छ नायक, नेमि जिम सम स्वामिए ।
 तास प्रसादिइ रास रचीउ, खेडावारे ग्रामिए ॥३१४॥
 देव जिनवर साधु सहिगुरु, दया धरम आराधिइ ।
 बैरागी नारायण जंपइ, मुगित मारग साधिइ ॥३१५॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(३०) नसीतनामो । रचयिता-अज्ञात । आकार-६'' x ४'५'' ।

पत्र-संख्या ७ । रचना गद्य में है । प्रति पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १४-१५ अक्षर हैं । लिपिकाल-संवत् १६०१ । लिपिकार-गोपालजी ।

आदि भाग-

दुपाजी पुछे । मुला कहे । श्री दली भीतर की बाणी । नीसाणि । पुछयो-बसत कैसे प्रमाणीय । कछो-देतां कुसाली रहे । पुछयो-कोन बाजा सुं जीव पोषीय । कछो-धरम सुं । बुध का विचार सुं । पुछयो-कोन बात जाकुं लोग दुडै । कछो-तीन बात सुं । पहले तो देह नरोगी । पछे कुसली रहे तीजी मंत्र हेत कारी । कछो-भलाई तो करनी । बुराई सु दूर रहणा । पुछयो-गुण करता श्रीगुण होई सो कोन । कछो-दे' न पाओ मांगता । पुछयो-कोन बात सुं दल कुं बंधावै । कछो-धरम सुं सांच सुं ॥

अंतिम भाग-

मजमान आगे अपने घर की हकीकत ना कीजै । ओर लड़ाई अपने घर पै नां लीजै । असो-काम कीजै सुं अपने घर म्हां कुसाली रहै । जो काम करो जो पंचा प्रमाणो पूछ के कीजै । सब की ईजत राखी जै । तब अपनी ईजत रहै । राजा की महरबानी ऊपर गुमान लाईजे नहीं । पराये घर भोजन बना आदर कीजै नहीं । भूखा कुं अवस दीजै । घर को दुख का सुं कहणों नहीं । क्यूं । बदतो हुब तो लोग लागुं । घट तो हुब तो भरम जावै । मरदु का देवाला मुवा नीसरता है । यो नसीतनामो सत समजसी ज्यो सुख पावसी सही ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३१) नासकेत की कथा । रचयिता- अर्जुन नागा । यह भी १३७ संतों के संग्रह वाले गुटके से लिया गया है । इसमें कुल १२५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७ अक्षर हैं । रचयिता ने इस ग्रन्थ में 'नासिकेतोपाख्यान' का २०६२ दोहा-चौपाइयों में भाषानुवाद किया है । संवत् १७५१ पोष ८ गुरुवार को इसकी रचना आरम्भ की और संवत् १७५१ फाल्गुन की प्रथम पंचमी शुक्रवार को यह ग्रन्थ समाप्त किया ।

आदि भाग-**दोहा**

गुर गोविंद प्रणाम कर, नारद सारद सेस ।

शिव सनकादिक बंद कै, करुं ग्रन्थ मति जेस ॥ १ ॥

जथा शक्ति बरनन करुं, धरमाधरम विचार ।

सरधा सुं सब सिख सुनै, तरै सिन्धुभव पार ॥ २ ॥

हरिदासन के निमित कर, कछो भाष भगवान ।

जो या कूं हिरदै धरै, होय निरंजन ज्ञान ॥ ३ ॥

सत्रहसैइक्यावने, पोष अष्टमी जान ।

सुरगुरवार विचार कै, आरंभ कर दिन मान ॥ ४ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(३२) नासकेत पुराण । भाषाकार-नंददास । आकार-३-२" × २-५" ।

पत्र-संख्या-६४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २४ अक्षर हैं । इसको मोहनदास ने संवत् १६२० आश्विन कृष्ण ११ सोमवार को लिपिबद्ध किया ।

आदि भाग-

आदि संस्कृति महाभाषा करि विस्तारी छै । नासकेत पुराण भाषा करि वारतीक । नंददास जो आपण सिषनै के हेतु है । सो या कथा कैसी है । सहस्र पाप कटतु है और देही बहोत पवित्र होतु है । या कथा संस्कृत पुराण बैस्यंपायन रिषि । राजा पीछत को पुत्र । राज जनमैजै कों कथा कहीतु है । राजा जनमैजै या कथा सुणी । परम गति कों पाया है ।

अन्तिम भाग-

राजा जनमैजै विवाण चढ़ि करि । परम पद कों पाय वैकुण्ठ को प्रापति भयो है । बैस्यंपायन रिषि आपणे आश्रम आयो है । ये कथा आदि है । स्वामी नंददास । आपण मित्र ने भाषा करि सुणाय छै । सो यह कथा महा अप्रृत है ।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(३३) नामकेत भाषा । रचयिता-चरनदास । आकार-१५" × ६" ।

पत्र-संख्या-७४ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । इसको मेवाड़ निवासी दाधीच ब्राह्मण सीताराम के पुत्र सुखदेव ने कार्तिक सुद २ संवत् १६३५ में कपासन में लिपिबद्ध किया—

आदि भाग-

तुहा

जे जे श्री व्यासजी, जे जे गुरु सुख देव ।

तुहन कृपा सूँ कहत हूँ, नासकेत को भेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

तुहा

नासकेत ऐसी कथा, जेसा धरम जिहाज ।

जनमेजय तापै चढ़ा, कष्ट गये सब भाज ॥

षेवटिया जहां व्यास से, वचन बाद ही वान ।
जगत सिंधु सम जानियै, धर्म जिहाज पिछान ॥

x

x

x

बाण अनिमिल अरू नंद महि, विक्रम संवत मान ।
कार्तिक सुद दुतिया रवी, ग्रंथ संपूरन जान ।
पुस्तक प्यारा ग्रान सुं, और हिया का हार ।
रहो जही लग राखियो, पुस्तक ही सो प्यार ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(३४) नासकेत भाषा । रचियता-दयाल । इस ग्रन्थ की दो प्रतियां हैं ।
दोनों ही सचित्र हैं । चित्र सुगल शैली के हैं । एक प्रति में पूरे पृष्ठ पर चित्र है
और दूसरी और मूल पाठ है । दूसरी प्रति में दोनों पृष्ठों पर छोटे तथा बड़े चित्र
हैं जो बीच बीच में चित्रित हैं । प्रत्येक पत्र चित्र पर लिखित प्रसंगानुसार खिंचे
हुए हैं । ये चित्र कई रंगों के हैं । हम यहां दूसरी प्रति का ही विवरण देंगे, क्यों-
कि कथा में कोई अंतर नहीं है और दोनों का रचियता एक ही है ।

आकार-१६" × ११'५" । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर बीच बीच में चित्र आ
जाने के कारण कहीं ६ कहीं २० और कहीं २३ पंक्तियां हैं और प्रति पंक्ति में
इसी कारण ४६, ४८ और ५० अक्षर हैं । पूरे ग्रन्थ में ७७८ चौपाई ४ कवित्त
(श्लोक १००७ ?) हैं । संवत् १७२४ फाल्गुन शुक्ल पक्ष में इस ग्रन्थ की रचना
समाप्त हुई ।

आदि भाग-

दोहा

श्री गुरु श्री हरि संत सब, रुषिजन नाऊँ सीस ।
गिरजा जनपति सारदा, ऐ विद्या के ईस ॥ १ ॥
बाल जनन से बीनती, कवि गुरु बंदू पाय ।
संस्कृत भाषा करूँ, हे प्रभु करो सहाय ॥ २ ॥

चौपई

राजा जनमेजै बरु भागी, पुन्य संग्रही पाप को त्यागी ।
गंगा तट जगि आरंभ कीयो, द्वादस बरस नेम व्रत लीयो ॥ ३ ॥

तहाँ छरे हैं रिष समाजा, पद बंदे जनमेजै राजा ।

बैसंपाईन मुनी समाजा, व्यास सिष्य परिरूख काजा ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

संस्कृत श्लोक हैं, सुगम सुभाषा कीन ।

जगन्नाथ आग्या दर्ई, दयाल सीस धर लीन ॥ १२५ ॥

धरि बिधि अन्तर मातरा, आराधऊ मुधि (न) होइ ।

बाल बुधि मम जानि सब, त्रिमा करो मुनि सोइ ॥ १२६ ॥

सितर सात'रू सात सै, दोहा चौपई जानि ।

च्यारि कवित्त पुन ओर भनि, नासकेत आख्यान ॥ १२७ ॥

श्लोक बीसा गन करे, संख्या एक हजार ।

पुनि सात ऊपर जानिए, नासकेत विसतार ॥ १२८ ॥

संवत सत्रा से गए, ऊपरि पुनि चौबीस ।

फागण सुद तिथि सुक्ल पक्ष, पूरण ग्रन्थ सुदीस ॥ १२९ ॥

सत गुर संतन की क्रिपा, भाष्य ऊन उपदेस ।

जो श्रवणि नीकै करै, ताकै मिटै संदेस ॥ १३० ॥

बक्ता मन दिढ़ राखि करि, बके ग्रन्थ के बैन ।

श्रोता मुनि निश्चै करै, तब ही तिनकूँ चैन ॥ १३१ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(३५) निसांणी आगम री । रचियता-पं० जगन्नाथ । यह रचना एक

८" x ५" आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में है । इसमें २ पत्र हैं । प्रत्येक पत्र पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २५-२६ अक्षर हैं । पद्य-संख्या २६ हैं ।

आदि भाग-

आषा तीज अठागूँऐ, आगम पांचा दीह ।

पावूग पुरमाण अ, ग्रंही ज वीली जीह ॥ १ ॥

महिणा में सुणिया सबद, मोहि पिउ कियो मन्न ।

जाणु धर उजड हूसी, बसती हूसी वन्न ॥ २ ॥

पुलसी कोधर पष मै, कोइक खंडसी काल ।
 उलटि चलेसी आदमी, बांधे तकिया बाल ॥ ३ ॥
 कहता समो करवरो, डवैकारा रो बाँद ।
 मान नीरंदा बूढिसी, गढ मोलिसी गइंद ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग

तुरका कंध मंडोवरो, दाण वनिक दातौड ।
 जेतीधर ऊअरां, तेती चुहाणां तौड ॥ २३ ॥
 एती आण वरतावसी, राठो वध राणैड ।
 को मणियो को सावणी, को आगम जाणैड ॥ २४ ॥
 आकां उछल पाछल काः, आई ठुकियां ठाणैड ।
 एवायक उला नहीं, पेला ऊहमाणैड ॥ २५ ॥
 खेला पाछूँ कहै जी, हवोली ठाणैः ।
 होसी हो ठाकुरे दिस्ली हिंदू आणैड ॥ २६ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(३६) नेमिनाथ रास । रचयिता-पुण्यरतन । आकार-६'४" x ४'२" ।
 पत्र-संख्या ५ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ । ३४ अक्षर हैं ।
 इसमें लिपि प्राचीन पाटी की होने से मात्राएँ पीछे की ओर लगीं हैं । पत्र-संख्या
 १६५ ।

आदि भाग-

सारद पाय पणमी करी, नेमि तणा गुण होइ धरेवि कि ।
 रास भणू रूलीयामणउ, गुण गिरू आगा इसूँ संषेवकि ।
 हुं बलिहारी यादवा ॥ १ ॥ दुपद (भूपद) ।
 एक सर उरध पाछु बालिकि, मइ अपराध न को कीउ ।
 काइ ठोडइ नव योवन बालिकि, राजलि प्रीऊ प्रति इम मणाइ ॥ २ ॥
 सोरीपुर सोहामणउ, राजा समुद्र विजय जु ठामकि ।
 शिवादिवि राणी तसु तण, अणुपम रूपि रंम समाण कि ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

अपन दिवस नि अंतरि, आश्विनि तणी अमावसि जाणकि ।
 रैवत सिधर वर पाषती, जिनवर पाम्यु केवल न्यानकि ॥ ६२ ॥

संपि म पाली सातसि, सहस वर सतुपुरी आड कि ।
 असादि सुदि अष्टमी, मुगति पहुता यादव राइ कि ॥ ६३ ॥
 प्रहि उठी नित प्रणमीइ, श्रीयादव मंडण गिरिनारि कि ।
 मन वांछित फल ते लहि, हरणि जे गाई नर नारि कि ॥ ६४ ॥
 समुद्र विजय तनु गुण निल, सेव करइ जसु सर वृंदकि ।
 पुन्य रतन मुनि इय भणि, श्री संघ सु प्रसन्ता नमि जिणंद कि ॥ ६५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(३७) पद्मावती नी वार्ता । रचयिता-सामलदास । आकार ७'' x ५'५''
 पत्र-संख्या ८६ ।

प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में १२-१३ अक्षर अधिक जमे हुये और साफ नहीं है पर पढ़े जा सकते हैं । ६५८ पद्यों की यह वार्ता त्रिभुवन त्रिवाड़ी द्वारा संवत् १६१८ बेसाख विद ३० बुधवार को लिपिबद्ध की गई । इसकी भाषा बागड़ी है, जो दक्षिणी मेवाड़ी का एक अंग है । इसमें चंपावती नगरी के राज कुमार पुष्पसेन्य तथा कुन्तलपुर की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम और विवाह का वर्णन है । रचना सरल, सरस और सुन्दर है ।

आदि भाग-

दोहरो

परधम समरूँ सारदा, आपो एक पसाअ ।
 वरदो मुज वर दाअनी, सुभ मती आओ माय ॥ १ ॥
 + + +
 कल्प वृक्ष कवि राजवी, पूरो मननी आस ।
 बहुकर जोडी वरणये, कहे कवि सामलदास ॥ ४ ॥
 + + +
 आख्यान कहूँ पद्मावती, सती सिरोमणी जेह ।
 पुष्प सेन्य राजा ने वरी, वरणत्र करहुं तेह ॥ ६ ॥
 + + +
 चतुर नगर चंपावती, (तिनी) चंपक सेन्य राजन ।
 (तेने) पटराणी पुष्पावती, (तिनी) पुष्पसेन्य ऐक तन ॥ ८ ॥

अन्तिम भाग-

दोहरो

सोमल मरे रो वरणवुं, पुष्प सैन्य आख्यान ।
 गाय् सीखे ने सांभले, तीने गंगातुं स्नान ॥ १ ॥
 सतवादी जेराय ने, गाय सुणे नहीं माय ।
 वी जोग भोगे तेहना, यासा पूरण भाय ॥ २ ॥
 राजो राणी जम मला, पोती मननी हांम ।
 जो कोई सीखे सांभले, (तितुं) अंबा पूरे काम ॥ ३ ॥
 सेवक छे अंबा तणो, सौ कविउ केरो दास ।
 भ्रामण चारण भाट ने, नसी करू पुरो अभ्यास ॥ ४ ॥
 खोटमदे सोजन कवी, सौ कोनो हु रांक ।
 जाणो अंजाणे जे करू, दामा करो मुभ वांक ॥ ५ ॥
 कवीरी कई ई वारता, कान्य सुण जो सोय ।
 श्रोता जन मौ सांभलो, श्री हरी को सौ कोय ॥ ॥६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३८) परदेसी राजा री चोपाई । रचयिता-अज्ञात । पत्र-संख्या ३१ ।

प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति २६-३३ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ४५६ ।
 लिपिकाल-संवत् १६३१ मिति आषाढ़ विद १२ ।

आदि भाग-

संघ प्रदेसीरायनी, राय प्रसेणी माहि !
 तिण अणुसारै हुं कहुं, सांभल ज्यो चित नाहि ॥ १ ॥
 आमल कंप्पा नगरी, (तिहाँ) अंब साल ना राग ।
 तिहाँ श्री वीर समोसरथा, भव जीरा रै भाग ॥ २ ॥
 खबर हुई नगरी मभे, लोग वांदण जाय ।
 सेनराय जीपी आवीयो, सेव करे चित लाय ॥ ३ ॥
 प्यार जात रा देवता, आया वंदण नै काज ।
 ल ल नै लटका करै, धन दीहाड़ो आज ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

परदेसी ना सीध कही रे, भगत भाव विचारी रे ।

जो कोई साधु पढ़े तिणकुं, वंनणा हमारी रे ॥ १४ ॥

[चर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(३६) पांडव यशेन्दु चन्द्रिका । रचयिता-स्वरूपदास । आकार-
८'५'' x १०'६'' । पत्र-संख्या-१६३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक
पंक्ति में २०-२१ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ११६७ (१६ मयूख) लिपिकाल-संवत्-
१६१७ कार्तिक कृष्णा ३ गुरुवार । लिपिकार-वैष्णव नरसिंहदास ।

आदि भाग-

अथ रसालकृत बोधिनी पांडव यशेन्दु चन्द्रिका

दुहा

ध्यान कीर्तन वंदना, त्रिविध मंगलाचर्न ।

प्रथम अनुष्टुप बीच सोइ, मये त्रिधा सुध कर्ण ॥ १ ॥

नमो अनन्त ब्रह्माण्ड के, सुर-भूप नकेभूप ।

पांडव-यशेन्दु-चन्द्रिका, वरनत दास सरूप ॥ २ ॥

स्वामी के पीछै रहै, आदि होय उच्चार ।

नर नारायन सब्द कुं, दास स्वरूप विचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तति कीनी हुंये चन्द्रिका, मेरी मति अनुमान ।

भक्त संग अरु भक्ति कौं, देहु कृपानिधि दान ॥ ५५ ॥

पंगुल गूंगो रोग छुत, बनि कछु धातुर जीव ।

भय छुत बालकत्रिया अत्वष (?), सुनत अनाथ सदीव ॥ ५६ ॥

कवित्त

ज्ञान ओ विराग दोउ पांन विनाइ पंगू,

भक्ति रस न तिहिन गूंग हूँ निहारोगे ।

त्रिधा ताप रोगी कर्म बानी जब निकहूँ मैं,

भूखो दस धाकी केउ जन्म को विचारोगे ॥

काल मित बाल बुधि आतमा है अबलाऔ,

अंध तत्व अजन हूँ विनाहूँ नेक धारोगे ।
 एक अंग के अनाथ ताकि विषे सूने हाथ,
 आदि अंत में अनाथ नाथ का विसारोगे ॥ ५७ ॥

छप्पय

पंगु कुबज्या संपाति, गूंग ज मला अर्जुन गावत ।
 रोगी माधवदास, वनिक, तरि लोचन धावत ॥
 छुधित सुदामा विप्र, नित छत व्रज की भामिनि ।
 बालक ध्रुव प्रह्लाद, अबल दुपदादिक कामिनि ॥
 है अंध सूरलौ हम सुने, हाथ विकें तिष्ठ के हरि ।
 ॥ ५८ ॥

दूहा

रस'रू अलकत ग्रंथ में, लिखे नाहि इहमाय ।
 समझहि बुधि जिन विनु लिखे, अबध लिखें लखाय ॥ ५९ ॥
 पिंगल डिंगल संस्कृत, सब समझन के काज ।
 मिश्रत सी भाषा धरी, छिमा करिहु कविराज ॥ ६० ॥

सोरठो

नृप रस को बलुतीक, भूषित धुनि अधिक भये ।
 दूषन खर नजदीक, भारवाह मेढहि कि भा (?) ॥ ६१ ॥

इसका पाठ बहुत अशुद्ध है ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४०) फूलजी फूलमती री वार्ता । रचयिता-मंछापुरी, जोधपुरी ।

आकार-११" × ६" । पत्र-संख्या २३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २४ अक्षर हैं । संवत् १८५२ चैत्र शुक्ल ६, रविवार को इसकी रचना हुई । इसमें उदयपुर राज्यान्तर्गत भदेसरी के लक्ष्मणपति सेठ गंगाराम की बेटी फूलमती की सगाई, उदयपुर में सामजीराम के बेटे मोक्ष से होती है । पर फूलमती एक अन्य व्यक्ति फूलजी से प्रेम करने लगती है । इन्हीं दोनों की प्रेम कहानी मारवाड़ी भाषा में वार्ता के रूप में दी गई है । पद्य इसमें केवल २३ ही हैं, परन्तु सारी प्रति कई रंगों के चित्रों से सचित्र है ।

आदि भाग-

दुहा

समरू देवी सारदा, गवरी पुत्र गनेश ।
 निमस्कार शिव कुं करूँ, ब्रह्मा विसणु महेस ॥ १ ॥

वारता

श्री उदेपुर में सीसोदीयो राणों राजसीधजी राज करै छै । बड़ो जोरावर छै । राजसींग री वार में भदेसरी नगर सेठ गंगाराम रहे छै । बड़ो दोलतवंत लखेश्वरी धरमातमा छै । तिणरे बेटी फूलमती मोटी हुई । तिणरी सगाई सांमजीराम रा बेटा मोक्ष सुं कीवी छै । सेहर उदेपुर माही ज कीधी । ओ पण रूप रो निधान छैः।

अन्तिम भाग-

वारता

पाटवी कुंवर उदेसीध ने परा मराया । तरे ए समाचार फुलजी सुणीया सो घणो फीकर कीनो । पछे राणाजी ने मुजरो करण गया । मुजरो कीधो । राणेजी लाष दोय रो पटो दीनो । ने धीरप देने उदेपुर राखीया । फुलजी फुलमती जीवीया । जठा ताई घणो सनेह राखीयो ।

दुहा

अरज हमारी मानने, वात करी विख्यात ।
 आग्या सुं कीनी कथा, माता तेरे दास ॥ २२ ॥
 मंझापूरी मातजी, बमे जोधपुर बास ।
 जिहा शंकर के सीस पर, सदा रहत हे चांद ॥ २३ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(४१) बुढला री ढालाँ । रचयिता-मोतीचंद 'चंद' । आकार-१०" × ४'६" । पत्र-संख्या ७ । सर्व ढाल २२ । रचना काल-१८३६ । विषय-एक धनलोलुप पिता अपनी पुत्री को किसी बूढ़े के साथ ब्याह देता है, उसकी करुण कहानी । भाषा-मारवाड़ी ।

आदि भाग-

दुहा

दया 'ज माता बीनबू', गणधर लागूँ बाय ।
 वर्द्धमान चौबसमा, बादूँ सीस नमाय ॥ १ ॥
 कन्या ने जमी तयो, पइसो न लीजै कोय ।
 बूढ़ा नै परणावतां, गुण बूढ़ा रा जोय ॥ २ ॥

ढाल-इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥
 पर देस सुं एक सेठ 'ज आयो ॥
 धन कमाय 'र बोहलो ब्यायो ॥
 रुपीया नवसै आकरा लीया ॥
 बटा लागिण पाछा दीया ॥
 सभरे लगने साहो सुजावै ॥
 घर सारू वले जान बुलावै ॥
 बीन बीनरो दूब्यो माई ॥
 तीजो भोजग चौधो नाई ॥

अन्तिम भाग-

मा कहै सुण ॥ है बेटी, मम करो याँ सू बाद ।
 याँ रा हुकम मे रहो, करो जीव री साद ॥ १ ॥
 बालक ने परणी सू तो ले गयो काल..... ।
 बूढ़ा नै परणी ह्वाली, यो हुलराव माबार ॥ २ ॥
 कहूँ मन मै धरस्यो राग ।
 भारो क्यूँ ही नहीं बिगळ्यो बेटी गज पतला भाग । डाल ।
 बेटी भारे माथे रो मोड़ो । तोनै इण बीन किसड़ी ठोड़ो ॥
 इण सुहाग सुं हुं धाई । सामायक कर स्यूँ सहाई ॥
 मारी नव तत्व हिरदै धरस्युं । तपस्या ने पोसो करस्युं ॥
 घर सारू दान हुं देस्युं । मन मान्या कारज करस्युं ॥
 संवत १८३६सै आणी । मगसर मास ए जाणी ॥
 'चंद' परतिस देल बखानी । सुणो कलजुग री नीसानी ॥

(४२) बूढ़या ससो । रचियता-मोतीचंद 'चंद' । आकार-१०'१" × ५'५"
इसमें कुल ११ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर-१० पंक्तियों और प्रति पंक्ति में २१ । २५ तक अक्षर हैं । लिपि जमी हुई नहीं है पर लिखावट जैन पाटी की ही है । कुल १०८ छंदों में यह ग्रंथ समाप्त हुआ है । रचियता का यह मूल ग्रन्थ ज्ञात होता है । इसका रचना काल तथा लिपिकाल संवत् १८४५ भिगसर मास है ।

आदि भाग-

दूहा

जंबू द्वीपना भरत मा, दुषमी पंच में काल ।
धनि होई तो घर नहीं, घर हूँ तो नहि नारि ॥ १ ॥
निरधन के बेटी हुई मन में हरषित थाइ ।
बाई जी मोटी हुवै, तो म्हारा घर नो दालिद जाइ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

बैन कहै सुणों बाई । चिंता मन में म करो भाई ।
बाप रुपीया सूँ चित लाई । तो बूढ़ा ने परणार्थ ॥ १ ॥
तपस्या करि लाह्या लेस्युं । घर सरूँ दान ज देस्युं
संमत अठारै पैतालीसै आणी । मृगसर मासै ज जाणी ॥ ८ ॥
मोतीचंद कहै भाई । बाई थे सो धरम विना एक भाई ।
मोतीचंद प्रतक बषाणी । या कलियुग की नीसाणी

[वट्टमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४३) भटियाणी की वार्ता । रचियता-अज्ञात । आकार-१०'३" × ६'३"
पत्र संख्या-६ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियों और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं । यह रचना गीतों में लिखित है । इसमें किसी भटियाणी का विरह वर्णन है ।

आदि भाग-

भामी ने भटियाणी कागद मोक्ष्यारे ।
मोकमसिघ ! अके बार उदेपुर आव ।
छोगा राजीओ ! अके बार उदेपुर आव ॥

वारी वारी कागद कही मोकलो रे ।
मामज मारेवती आयहु न जाय ॥

अन्तिम भाग-

ज्ञान री व्रता नहीं करे रे मोकल सीध,
ममता में बीया जाया । छोगा
हाथे पले कही आवे नहीं रे मोकम सिंघ,
अणगणती राखार । छोगा.....
वेणी बे ज्यो होसी । मोकमसीध,
ईश्वर धारे जो होयगा । छोगा.....

[अन्ताणी संग्रह]

(४४) भावनावेलि । 'रचयिता-जससोमविबुद्ध । आकार-
१०'४'' × ४'३'' । पद्य संख्या-१०७ । पत्र-संख्या ४ । लिपिकला-संवत् १७६० मार्ग-
शीर्ष कृष्ण पक्ष ७ कर्मवाश्री, लिखतं पलागा मध्ये ।

आदि भाग-

दूहा

पास जियोसर पय नमी, सह गुरु तई आधार ।
भवियण जण नै हित भणी, भणस्युं भावन बार ॥ १ ॥
प्रथम अनत्व असरण पणुं, एह संसार विचार ।
एकलपण अनत्व तिम, अशचि आसव संसार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

(तथा रचनाकाल)

दूहा

भोजन नभ गुण वरस सुचि, सत हे सरि कुजवार ।
भगते हेज भवन भणि, जेस लमेर मभार ॥ १ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर]

(४५) भुवन भानु केवली । रचयिता-अज्ञात । लिपिकाल-संवत्
१८१७ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(४६) मंगल कलश । रचयिता-मेघविजय । आकार-१०" x ४" २"
पत्र-संख्या ३० । पद्य-संख्या ६०८ । लिपिकाल-संवत् १८१६ ।

[वद्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४७) मदननरिन्द चरित । रचयिता-दयासागर । आकार-
६" ४" x ४" ४" । पत्र-संख्या ३७ । पद्य-संख्या ५६५ । रचनाकाल-१६१६, आसोज
सुदी १०, गुरुवार । इसोका दूसरा नाम 'मदनराज ऋषि नी चउपइ' है ।

आदि भाग-

आदि जिणेश्वर अतुल बल, शांतिनाथ सुखकार ।
नेमि पास प्रणमु सदा, वीर विनय भंडार ॥ १ ॥
जिन वंदना वृज-वासिनी, गौर वरण गुण गेह ।
ते सरसति समरू सदा, वचन रूप जसु देह ॥ २ ॥
सुभ्र तनु घर मांहीं किऊ, ज्ञान दीप जिणसार ।
ते सदगुरु नईं हुं सदा, जुगतइं करूँ जुहार ॥ ३ ॥
सुकवि तणी अनुमति लही, शीलतणइ अधिकारि ।
मदन नरिंद तणुं चरित हूं, विरचि सुमति सार ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

मदन महीपति चरित विचार । बोलिउं शील तणि अधिकारि ॥
जे नर शील सदा मनि धरइं । शिव रमणी ते निश्चइं वरइं ॥ ५६ ॥
श्री अंचल गछि उदधि समांण । संघ रयण केरउ अहि ठाण ॥
उदउ तास पधारण चंद ! श्री धरम मूर्ति सूरेश मुण्दि ॥ ६० ॥
अचारिज श्री गुरु कल्याण । सागर सागर सम गुण नाण ॥
तास पक्षि महिमा भंडार । पंडित भीमरतन अणगार ॥ ६१ ॥
तास विनेय विनय गुण गेह । उदय समुद्र सु गुरु स सनेह ॥
तास सीस आणंदइ घणइं । श्री दयासागर वाचक इम मणइ ॥ ६२ ॥
गुरु भाई लडुडउ ऋषि देव । विनयवंत सारइं मिति सेव ॥
आदरि तेह तणइ ए पईं । मदनराज ऋषिनी चउपई ॥ ६३ ॥

दूहा

मदन शतक कां दूहड़ा, एकोतरसो सार ।

मदन नरिंद तणुं चरित, मइ विरच्युं विरतारि ॥ ६४ ॥

(१६४)

सोलहसय उठाणोतरहं, पुर जालोर मभारि ।

आसो सुदि दशमि मइं कीऊ, कथाबंध गुरुवारि ॥ ६५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४८) मयणरेहा । रचयिता-हर सेवक । आकार-१०'२''×४'५'' ।

पत्र-संख्या-६ । पद्य-संख्या १५७ । लिपिकाल-संवत् १८७८ । विषय-जैन-जीवन चरित्र ।

आदि भाग-

जुवो मांश दारु धकी, करे वेश्या सूं जोष ।

जीव हिस्सा चोरी करै, पर नारी ने दोष ॥ १ ॥

+

+

+

जंबू द्वीप नै भरत खेतर में नगर सुदर्शन मांरी ।

धन सम्पूरण देखत सुंदर रैत सुखी राजारी ॥ ५ ॥

मरणेथ राजा रै धरणी राणी रिद्ध तणों विस्तारो ।

मनरथ राजा रे जुग बाहु भाई माहो माहि छे धारो ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग-

युग बाहु नै मयण रेहा राणी युगवल्लभ लघु भाई ।

भ्यारां रा तो कारिज सरीया मणरथ दुरगति माहीं ॥ ५४ ॥

एक क्रुविल्ल मणरथ सेव्यो दुख पायो संसारो ।

सात क्रुविल्ल सेवे प्राणी जिण रा दुख छै अंपारो ॥ ५५ ॥

विसन सातमो पर नारी रो जीव घात घर हांणी ।

मणरथ राजा नारकी पोहतो कुजस बाण्यौ प्राणी ॥ ५६ ॥

विषया-नस तो विष जाण नै सद गुर सेवा कीजो ।

मणरथ राजा री बात सुणी नै पर नारी त्यागी जो ॥ ५७ ॥

(मेढता मध्यै)

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४६) महिपाल नरेन्द्र चरित । रचयिता-विनयचंद । आकार-
१०'२" x ४'६" । पत्र-संख्या १८७ । पद्य-संख्या ३६२७ ।

आदि भाग-

श्री नामेय युगाजि जिन, प्रथम नरेश्वर पाय ।
प्रणमूं मन वच काय सुं, संसेवित सुरसाय ॥ १ ॥
मारु देव मनमथ मथन, कथन गुणां की राशि ।
सूरामो तुंथे सरस, पोहचे नाहि प्रयासि ॥ २ ॥
ऋषमदेव असरण सरण, पूरण सकल जगीस ।
केवलदरसण ज्ञानमय, तीन भुवन के ईश ॥ ३ ॥
शासन नायक सुखकरण, सुर गिरि सम प्रभू धीर ।
प्रणमूं जगनायक सदा, मति दायक महावीर ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

जयो जगत जीवराज गुरवर केवली धर्म प्रकासियो ।
धनराज धन सुम राय ऋषिवर स्याम आगम मासियो ॥
तास चंद्र अनुप मुनिवर शिष्य विनय या भणी ।
चोपई महिपाल मुनि नी श्री संघ रंग वधामणी ॥ १ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५०) मानतुंग मानवती रास । रचयिता-मोहनविजय । आकार-
६" x ४" । पत्र-संख्या ३६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में
३४ अक्षर हैं । लिपिकाल-संवत् १८५१ वर्षे पोष वदी ४ दिने श्री ।

आदि भाग-

ऋषम जिणंद पदाबूजे, मन मधुकर करि लीन ।
आगम गुण सौरम वर अति आदर थी लीन ॥ १ ॥
यान पात्र सम जिन वरूं, तारण मवनिधि तोय ।
आप तरणां तारे अवर, तेन प्रणमति होय ॥ २ ॥
भावे प्रणमूं मारती, वरदाता सुविलास ।
बावन अक्षर थी मरयो, अखय खजानो जास ॥ ३ ॥

शुक्र करवा के शनि धकी, एहवी जेहनी शक्ति ।

किम मुकामें तेहनइ, पदनी कोविद शक्ति ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

राज ऋद्धि गृहदास तयां सुख ते सुहिणे न विचारे हैं ।
जिम अहि कंचुकी विरमी अलगी जिम सफरी नैन तिहारे हैं ॥
मानतुंग जिमि ऋषि मानवती तिमि कोहादिक ने रो हे हैं ।
करे विहार जिन कल्पी भवियण ने पडि बोहे हैं ॥
अनुक्रमे सासतणी संलेखण करीने बेहूँ गह गहता हैं ।
सय रे तेतीसमे आयु समये सर्वार्थ सिद्धे पूहता हैं ॥
तिहा थी पिणतें बिहूँ न चव सें महा विदेहे अवतरस्ये हैं ।
..... ॥

पुष्पिका-

श्रीविजयसेन सूरीय सेवक कीर्तिविज उवकाया है ।
तत्सीस संजम गुण लीला मानविजय वधुराया हैं ॥
तास सीस पंडित मुंगटा मणि रूप विजय कविराया हैं ।
तास चरण करुणा थी करी नें अत्तर गुण में गाया हैं ॥
अणहिलपुर पट्टन में रहिने मानवती गुंण गाया हैं ।
दुर्गादास राठोड़ ने राज्ये आनंद अधिक उपाया हैं ॥
सड़तालीस ढाले करी ने कीधीरास रसाला हो ।
मोहन विजय कहे नित होज्यो घरि घरि मंगलमाला हो ॥

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

(५१) मुनियति चरित्र कथा । रचयिता-सांखभद्र । आकार-१०" x ४"

पत्र-संख्या २४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४-१५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३८-४० अक्षर हैं । पद्य-संख्या ५७३ । रचनाकाल-संवत् १५५० वैशाख कृष्ण सप्तमी रविवार ।

आदि भाग-

गागाय मग धर पाय पणमेवि नासि नवनिधि संपजइ ।

.....सयल सिद्धि सेवकह थापइ ॥

एक मना जे उलगि धरइ ध्यान तस्स लचथि आपई ।

..... ॥ १ ॥

बेकर जोड़ी वीनविउ, देउ मभ वाणि विशेष ।

बोलेस राउ मुनिपति वरी, कथा बंध सुविशेष ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

करइ सवि अति पश्चाताप । दीधू आलसहुस्यइ मुभ पाप ।

लाजिउ घणु हीया माहि तेह । भव बंधन सुं नहिं संदेह ॥ २ ॥

थयो वैगग सेविनइ घणुं । करसुं काज हवइं आपणुं ।

घणउं महोच्छव तिणि कीधी । रिषि मुनिपति नइं दत्ता दीधी ॥ ३ ॥

बेहू मुनिवर करइ विहार । पालइं पंच महाव्रत भार ।

धर्म ध्यानि तपि सोसीदेह देव लोक नइ गया बेह ॥ ४ ॥

तेहनु ध्यान हीया माहि आण । बेहुए एकावतारी जाण ।

मुगति पंथि ते जाइ वही । सणउ कथा साखभद्र कही ॥ ५ ॥

[वद्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५२) मेतारज मुनि चरित्र कथा । रचयिता-चौथमल । आकार-

६'६" × ४'४" । पत्र-संख्या ६ । रचनाकाल-संवत् १८६२ असाढ़ विद् १३ ।

पद्य-संख्या २०१ ।

आदि भाग-

समरूँ सासण रा धणी, पो उगंते सूर ।

अनंत चोवीसी वांदतां, जन्म-मर्ण जाय दूर ॥ १ ॥

श्री श्रीमंदर आदि दे, जेवंता जगदीस ।

केवल ग्यानी साधने, सदा नमाउ सीस ॥ २ ॥

चोखो चारित्र पालतां, करे दुगंछा कोय ।

मेतारज मुनी नी परे, नीच गत फल होय ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तप जप कर सुध गत गयो, नेट जासी नीरवाण ।

आवागमन मेटायने, जनम मरण कर हाण ॥ ६ ॥

वध परीस(१) सही करी, मेता रज रिष राय ।
 सिव सुख पांम्या सासता, रिष चोथमल गुण गाय ॥१०॥
 ऊसा दे पन दूसरो, अधे न मेरा भाव ।
 ग्यानी देखी दीखीयो, चित धरीयां तिण रो डाव ॥११॥
 समत १८६२ आसाढ वदि १३ जोय ।
 सहर मेइता मे करया तणीया गुणीयो सुख होय ॥१२॥
 कथा अनुसारे दाखीयो, केवली भील जोय ।
 इधके उछो ब्यो करयो; तो मिछा मडकड(१) मोय ॥१३॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५३) मोहमरद राजा की कथा । रचयिता-जगन्नाथ । इसकी कई प्रतियां देखी गईं जिनमें से चार का उल्लेख यहाँ दिया जाता है :—

प्रति १: आकार ४'५" × ३'१" । पत्र संख्या-२५ । पद्य संख्या-१२५ ।

[श्री रोशनलाल सामर, वकील, उदयपुर]

प्रति २: आकार ६'२" × ४" । पत्र संख्या- १६ । पद्य संख्या-२७२ ।

[रामदास, धोलीबावड़ी, उदयपुर]

प्रति ३: आकार ३' × २'४" । पत्र संख्या- २७ । पद्य संख्या-२७२ ।

प्रति ४: देखो:- जन सूरतराम वाणी संग्रह ग्रंथ १५ ।

विशेष- प्रति २ और तीन में रचनाकाल इस प्रकार दिया गया है-

‘संवत् सत्रेहसौ ज्योत्रे बरष’ ।

अतः मिलाओ भाग १, १०२ । (६६) में उल्लिखित लिपिकाल ।

(५४) रत्नपाल रत्नावती रास । रचयिता- सूरविजय । आकार- ६'४" × ६" । पत्र-संख्या ३८ । पद्य-संख्या ७८१ । रचनाकाल-संवत् १७३२ । लिपिकाल संवत् १६३२ ।

आदि भाग-

दूहा

श्री ऋमादिक जिन नमुं, वर्द्धमान चौबीस ।

सीमंभर प्रमुख नमुं, विरहमान बलिबीस ॥ १ ॥

पुंढरीक गो तम प्रमुख, गणधर दुष्मा गुणवंत ।
 चउदैसै बावन नमुं, मोटा महिमावंत ॥ २ ॥
 समएं हुं श्रीसारदा, त्रिण जग मां जस ख्यात ।
 बीणा पुस्तक धारिणी, शुभ मति आपो मात ॥ ३ ॥
 निज गुरुनाम जपुं सदा, रिद्धि सिद्धि दातार ।
 मूरख नइ पंडित करइ, ए मोटो उपगार ॥ ४ ॥
 तास तयै सुपसाउ लै, रचस्युं रास रसाल ।
 रतनपाल गुण गायवा, मुभ मन थयो उजमाल ॥ ५ ॥

(५५) राजनीति-हितोपदेश । रचयिता-भैरवप्रसाद । लिपिकाल-संवत्-
 १६२१, भाद्रपद वदि १३ चन्द्र । यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है- इसकी सूचना इसके निम्न-
 लिखित अंशों से ज्ञात हो जाती है—

आदि भाग—

“किसी समय श्रीनारायण पंडित ने नीतिशास्त्रों से कथाओं का संग्रह कर संस्कृत में एक
 ग्रन्थ बनाया और उसका नाम हितोपदेश रखा सो संवत् १८६६ में ललूलाल कवि
 ब्राह्मण गुजराती आगरे वाले ने उसका आशय ले त्रिजमाखा कर नाम राजनीति रखा ।
 सो अब उसे भैरवप्रसाद इंदोर के हिंदी मंदरसे के गुरु ने हिन्दी बोली में रचा ।

दोहा

पंडित हे ते जानिये, कथा प्रसंग प्रवीन ।
 मूरख मन मे मानि हे, लाल कहाय हकीन” ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

“बांदर सैं यह उपदेस सुन मगर अपणै घर गया और उसने नया विवाह किया, ओ घर
 बसाया, सब दुख छोड़ा आनंद से रहने लगा ।”

उदाहरण—

“कहा है— जिस समा में वृध न होय सो समा न पावे । ओर ओ वृध नहीं जो धर्म नहीं
 पहिचानता हो । ओर वह धर्म नहीं जो सत्य न होय । वह सत्य नहीं जहां दया न होय ।
 ऐसे समझाय मंत्री ने राजा का क्रोध सांत किया ।”

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(५६) राजा चोर बकचूलजी की कथा । रचयिता-खेम । आकार—
 ४'५" x ३'१" । पत्र-संख्या ४० । प्रति पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६

अक्षर हैं । पद्य-संख्या १७१ । इसमें किसी चोर बरूचूल नाम के राजा के यहाँ चार साधुओं के ठहरने, उनका राजा द्वारा पहले सम्मान न होना, फिर इसके लिये राजा द्वारा क्षमा याचना आदि का वर्णन है । रचना सामान्य कोटि की है ।

रचनाकाल - १७५० के उत्तरार्द्ध की अनुमानित ।

आदि भाग-

गुर प्रमेस्वर कौं श्रु प्रनाम । बरनौ कथा धरम सुख थाम ॥
 करौ चौपाई कहि समझाऊं । सब को मन आनंद बढाऊँ ॥ १ ॥
 सिब बिरंचि नारद सनकादिक । बंदौ कल्प छदत सुकादिक ॥
 सकल साध जे है निज संत । नमो तास को मगति अनंत ॥ २ ॥
 एक प्रसंग कहूं अब सोई । साध संगति को सो फल होई ॥
 राजा एक चोर बकचूल । ताके विविध मांति की मूल ॥ ३ ॥
 चारि साध पुनि आयें जहाँ । उतर आइ बाग में तहाँ ॥
 बरिषा चतुर मास रूति आई । साध रहे यह मति ठह राई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

राजा चोर बकचूल की बरनो सहठ विधान ।
 साधन के सतसंग तै, पायौ पद निरवान ॥ १७० ॥
 चारि बचन साधन कहै, नृपति उधारयो सोइ ॥
 खेम कहै धनि धनि हुवै, नित प्रति सेवे सोइ ॥ १७१ ॥

[रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(५७) राजा भोज चरित्र पनरमी विद्या री बात । रचयिता-व्यास भवानीदास । आकार-५'५'' × ४'२'' । पत्र-संख्या ७२ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २० अक्षर हैं । यह वार्त्ता गद्य-पद्य में है । पद्य-संख्या-३२६ । हठीमल लोढ़ा ने इसको संवत् १८२१ जेठविद् ६, सोमवार को लिपि बद्ध किया । भाषा-राजस्थानी ।

आदि भाग-

अथ राजा भोज धारा नगरी से धयी तिणरी पनरमी विद्यारी वार्त्ता लिख्यते । व्यास भवानी-
 दाम कृत । दूहा, चन्द्रायण, रेखता, नीसाणी, रूपालंकृत लिख्यते ।

(२०१)

दूहा

श्री गणपत सरस्वति शिव, विसन रबी गुरदेव ।
व्यास करै भरदास प्रभु, दीजै अक्षर मैव ॥ १ ॥
अविरत बाणी आपिजै, दीजै सुबुध सुग्यान ।
त्रिया चरित वरणन करूं, धर सुम वन.....ध्यान ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

छप्पय

श्री महाराजा भोज, आप मैह मातन आयो ।
सुर न हुआ आर्यंद, प्रथी नव खंड सुहायो ॥
समिया हुआ सुगाल, काल अरीया सिर कोपै ॥
षट दरसण पोषिजै, रिधु आरोपारोपे ॥
जग जीत वात राखण, जगत पीत रीत पारख करी ।
सुण जो सुजाण नर नारियाँ, इल पर गलाँ ऊबरी ॥ १ ॥
गढ जोधाण सतोल, धाम आई ब्रीलीडै ।
..... ॥
भोज चिरत जिण सुण कह्यौ कविगण सुख पावै ।
व्यास भवानीदास, कवित कर वात वणावै ॥
सुणियो प्रबंध चारण प्रते, भोजराज कवि यूं कह्यौ ।
कलियाणदास भूपाल को, धरम-धजा-धारी धयौ ॥ २ ॥

[रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर]

(५८) राठोड़ वंश की उत्पत्ति साखातेरा की ।

रचयिता-कविराव करनीदान । आकार-१५" × ६" । पत्र-संख्या १०८ ।
इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५ अक्षर हैं । ग्रन्थ, दोहे
और छप्पयों तथा अन्य कई प्रकार के छंदों में रचित है । इस प्रति को खटाड़ी
के खड़िया नरसिंगदास भेरूदासोत ने संवत् १६०७ और १६०८ के बीच में
लिपिबद्ध किया । रचना डिंगल में है । पाठ बड़ा शुद्ध है ।

आदि भाग-

छंद बेअंधरी

राम पाट कुस भूप बिराजे । सुज कुस पाट अनत त्रप साजे ।
स भ्रम अतत त्रप सोहत । राजा नषद पाट नम राजत ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

दिबस एक जयचंद, बीर मीसलत बीचारी ।
जीय किया सह जेर, धरा हिन्दु छत्र धारी ॥
अटक पारमो अगे, पलानह नमे बिलायत ।
जवन बसे जिण मांभ, आप अशुर अस पत ॥
अ्याहणु काय पकड जीयां, प्रथी बदे तण पाणरी ।
बगपा पाण डंडलु तद बत्री, बीतछ बंड घुरसाणरी ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(५६) रात्रि भोजन री चौपई । रचयिता-सुमति हंस । आकार-
६'८'' × ४'८'' । पत्र संख्या २१ । पद्य-संख्या ४०३ । लिपिकाल-संवत् १६१३ ।
रचनाकाल-संवत् १७२३, मगसर विद् ६ गाम सरसा में लिखित ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६०) वल्लभाख्यात । रचयिता-गोपालदास । आकार-७'५'' × ६'६''
पत्र-संख्या ११ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ अक्षर हैं ।
पद्य-संख्या १२६ । पुस्तक जीर्ण है ।

आदि भाग-

यज पुरुष हरि श्रुति गुण गायजी ॥ १ ॥ ढाल ॥
गाए स्तुति गुण रूप अहर्निश धरें ध्यान विचार ।
आनन्द रूप अनूप सुंदर पावे नहीं कोई पार ॥ २ ॥
प्राण पति प्रगटवा कारण काई कहूँ मति मंद ।
हर सुर विधाता नवल हैं, सो ज्ञात ज्ञानंद ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

सोमा यमुना कवल देवका जेहना सात बंधु सौभाग्य रै रसना ।

एहना चरण स्मरण करी श्री विठ्ठल पद रज रति भाग्य रै रसना ॥

पुत्र पौत्र सुख किम कहूँ जो तू मुख माँए करे रे रसना ।

श्री विठ्ठल कल्पद्रुम फलयौ तेहनी साखा पररी अनेक रे रसना ॥ १४ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(६१) वात संग्रह । पत्र-संख्या ३६० । प्रति सजिल्द है और संवत् १७५४ में फाल्गुन वदि ५ को आदुणिगढ़ में लिखी गई है । इसके अंत में एक अपूर्ण सूची दी गई है जो महाराज बाघसिंहजी द्वारा संवत् १८३६ माह सुदी २ सोमवार को एक प्रहर दिन चढ़ते तैयार की गई । प्रति में अक्षरों की लिखावट समान नहीं हैं, कहीं अक्षर जमा कर लिखे गये हैं-कहीं नहीं । सम्पूर्ण प्रति एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखी गई । वार्ता में राजस्थानी का परिमार्जित गद्य-पद्य मिलेगा । सब का आदि अन्त न देकर यहाँ केवल विषय सूची ही दी जाती है-

- १ विक्रमादीत री उतपती
- २ राजा गंधर्व सेन री वात
- ३ चोबोली राणी री वात
- ४ राजा सुसील री वात
- ५ राजा भोज री अर माघ पंडित री, राणी भाणवती लबीयातैं समयै री वात ।
- ६ वात राजा भोज री ४ चारणा बाबत
- ७ वात राजा भोजरी छीपण बाबत
- ८ बोरोचन (६) मौहते री वात
- ९ राजा चंद री वात
- १० हरीदास चहवाण री वार्ता
- ११ वार्ता जेसे सरबही ये री
- १२ रायधण री वार्ता
- १३ पोपा बाई री वार्ता
- १४ कोन्याइत रै साहरी वार्ता
- १५ वार्ता श्री सूर्यजी री

- १६ कर्ता राजा सालवहान री
- १७ रतनमायक साहिजादी री वार्ता
- १८ बंग साहिजादे री वार्ता
- १९ राजा पराक्रम सेन री वार्ता
- २० वार्ता ओषाये तये सू मारथ हुवौ तेरी
- २१ ओषानेरी वार्ता
- २२ रजपूत आल्हण री अर सादे वाणीये री बात
- २३ दीवाली री वार्ता
- २४ भाटीयारी नषा छुदी छुदी हुई तेरी वार्ता
- २५ वेला छुरै री वार्ता
- २६ मले बुरे री बात
- २७ राजा भोज अर बाफरै चोर री बात
- २८ मोरङ्गी हार गिलीयौ तैरी बात
- २९ दिल्ली रै हौसनाषा री बात
- ३० कुंवर चित्रसेण री बात
- ३१ पातसाह बंग रे बेटे री बात
- ३२ लुद्धवै पाटण माहे आहण चोरी कीवी तैरी बात
- ३३ अपछरानू इन्द्र सराप दीन्हौ तैरी बात
- ३४ कुंवर भूपति सेन री बात
- ३५ ज्ञानै साह री बात
- ३६ वंसी ब्रह्मभाट री उतपत री बात
- ३७ दीन मान रा फला री बात
- ३८ बात नरबद जी री अर नृसंघ सीधल री पियारदे बात
- ३९ सिधराव जेसंघदे री बात
- ४० राजा भोज री अर मंत्र सेन री बेटे री बात
- ४१ बात राजा भोज री बाफरे चोरा पासा चोरी सीषी तेरी
- ४२ राजा भोज अर माणवती रे बाद री बात
- ४३ चार परधाना री बात
- ४४ बात अचलदास बीची री ऊंमादे साबती परणीयौ तेरी (यह प्रथम भाग में प्रकाशित रचना से भिन्न है)

- ४५ तिलोक सी जस डोट री माटी री अर कुगंडे बलोच री बात
४६ राजा विजैपति री बात
४७ राव नरपतजी री बात
४८ रावल जामनू साह मिलीयो तेरी बात
४९ मोगल मैहंदरै री बात
५० राजा रो बेटो देसौटै नीसरीयो छै तेरी वार्ता
५१ राजा रे बेटै रै महल री बात
५२ बाघडै बछैरे री बात (बाघ और बछेरे री बात)
५३ पंच मार री बात
५४ चापे सींच री अर बीरे भायल री बात
५५ सिषरेई देउगड़ावत री वार्ता
५६ सादे मागली येरी वार्ता
५७ दामौ देवड़ो (अर) सामो सखहीये री बात (इसके अंत में सं० १७५४ लेख मिलता है।)
५८ षयौ चीते (तौ) री अर विजे देवडै री बात
५९ देवसी रबारी री बात
६० बात रत्नारी रतन ही रहे अर प्रीत ही रहै
६१ काणे रजपूत री बात
६२ भलै भलौ बुरे बुरौ री बात
६३ वार्ता राजा मंत्रसेन री
६४ तांत वाजी अर राग बूझी तेरी बात
६५ रजपूत री स्त्री री सहटी बोली तेरी वार्ता
६६ बांधी बुहारी री वार्ता
६७ सो नारी री र सुतारी री वार्ता
६८ वार्ता साहुकार री अर सूवेरी
६९ बात राजा कैरधनरी
७० राजा विजे राव री वार्ता
७१ सतवंती री वार्ता
७२ बात मोरडी मतवाली री
७३ बात मुहतै सुमत कुरं मंगलू रूपरी

- ७४ श्री महादेव जी पार्वती की बात
७५ साहूकार की बात
७६ साहरी स्त्री के तपावस की वार्ता
७७ गौव के धणी की वार्ता
७८ राजा के बेटे की बात
७९ राजा सिंघराव जैसिंघ देव की बात (हेमचन्द्राचार्य और सिद्धराज जयसिंह)
८० कुंवरपाल पाटण के धणी की वार्ता
८१ कुंवर साहिजादा की बात
८२ लालमेण कुंवर की वार्ता
८३ मदन कुंवर की वार्ता
८४ पातसाह अलावदीन की अर हंमीर हठीले की बात
८५ मिहमद खान साहिजादे की बात (गजनी के पिरेशाह का बादशाह का पुत्र)
८६ सलेमखान साहिजादे की बात
८७ सावल साह के बेटे की स्त्री की बात
८८ चरण मदमै (मौ) मनोहर की बात
८९ रत्न मंजरी की तृतीय वार्ता
९० नवरत्न कुंवर की वार्ता
९१ लूण साह की बेटा की वार्ता

[स्वरूपलालजी, जगदीश चोक उदयपुर]

(६२) वैष्णव वार्ता संग्रह । आकार-६" x ७" । पत्र अस्त व्यस्त है । इसमें ८४ तथा २५२ वैष्णवों की वार्ताएँ सम्मिलित हैं । इसके साथ नाभादास कृत भक्तमाल की टीका भी है । प्रति, पानी से कहीं कहीं बिगड़ गई है ।

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(६३) विक्रम चरित्रे चोबोली सती नी चउपई । रचयिता-अभयसोम । आकार-१०"२" x ४"७" । पत्र-६ । पद्य-३३५ । रचनाकाल-सं० १७२४ । लिपिकाल-सं० १८८२ ।

आदि भाग-

वीणा पुस्तक धारिणी, हंसासन कवि-साय ।

प्रह उगंतई नित नमुं, साख तोरा पाय ॥ १ ॥

हुइ पंचासे बाँधियो, कोई नबो मंझार ।
 बाधा मरिनइ काढ़ता, किछ ही न लाधो पार ॥ २ ॥
 तो हुंती नव निछि हुवइ, तो हुंती सह सिद्धि ।
 आज-अनइ आगा लगइ, मूरख पंडित किछि ॥ ३ ॥
 तिण तौनै समरी करी, कहि स्युं विक्रम-वात ।
 मइं तो उद्यम मांडीयो, पुरो करिस्यइ मात ॥ ४ ॥
 सोनइ कियनइ छेतरथौ, मइं जग ठग्या अनेक ।
 ओ कलियुग नइ छेतरथौ, राजा विक्रम एक ॥ ५ ॥
 चउबोली राणी चतुर, शीलवंति सुखकार ।
 विक्रम परणी जिय विधइ, कथा कहिस्यु निरधार ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग—

च्यारे पुहर बोली चतुर, चारे वाट सुखकार ।
 कहे सबे ही सुंदरी, जय जय आणंदकार ॥ १ ॥
 फल्यो मणोरथ बिहुंजणा, उलसीया मन माहिं ।
 आलसूया रै आगणै, आयो गंग प्रवाह ॥ २ ॥
 जे मन राखै जेह सुं, तेहनै मिलै ज तेह ।
 मुंह मांग्या पसादल्या, दूधे वूवा मेह ॥ ३ ॥
 हुंती एक पंखी धणी, ताठी गाठी प्रीति ।
 तपी विक्रम लाहोर ज्यो, जोडी करी इत चीत ॥ ४ ॥
 परतग्या पूरी थई, माहरी रही ज ममि ।
 में जाणयो नाही मिलै, पूरण हारो सामि ॥ ५ ॥
 लीलावतीइं भूठी नै, कंठ ठवी वरमाल ।
 रलीया तोरण बाधिजै, रथ्यो वीवाह रसाल ॥ ६ ॥
 परणी बह मंडाय करी, पुण्य तथै परमाण ।
 मन सुं विक्रम हरषियो, माग फल्यो निरवाण ॥ ७ ॥

(६४) विक्रमसेन चतुपदी । रचयिता-परमसागर । आकार-८" x ४'५" ।

पत्र संख्या-१३२ । छंद संख्या-१३०६ । लिपिकाल-संवत् १६२७, कार्तिक कृष्णा ६ शनिवार । यह प्रति उपरोक्त प्रति से भिन्न है । इसकी भाषा भी जैन शैली की है ।

अन्तिम भाग-

तप गङ्ग अंबर तयी सरीषो, विजयदेव गुणधारी ।
तसपाटें संप्रत गुरु प्रतपे, श्री विजय प्रभ सुखकारी रे ॥ ६ ॥
तस गधे गुण मणि आगर, जयसागर उवभाया ।
तस पद सेवे सुर नर वृंदा, नामे नव निधि पायारे ॥ १० ॥
तास सीस पंडित जिन नायक, लावण्य सागर गुरु राया ।
महिपल महमा जे नो पसरयो, दिन चढ़त सवाया रे ॥ ११ ॥
तस पद सेवक परम सागर, कवि रचियो रास रसाल ।
भाव धरीने सुंणता रसीया, लहस्यो मंगल मालरे ॥ १२ ॥
तिहां लगे चोपी थिर थाज्यो, जिहां लगे सूरज चंदा ।
राग धन्यासी ढाल चोसठमी, परम सागर आणंदारे ॥ १३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६५) विक्रमादित्य चउपई । रचयिता-अभयसोम ।

आकार- १० ३/४" x ४ ३/४" । पत्र संख्या ६ । इसके प्रत्येक पत्र पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४६ अक्षर हैं । अक्षर जैन पाटी के प्राचीन नागरी हैं । इसमें कुल २८५ छंद हैं । संवत् १७२३ जेठ मास में सिरोही में इसकी रचना हुई और संवत् १८१० आसोज सुदि ७ को यह प्रति लिपिबद्ध हुई । भाषा परिमार्जित जैन शैली की राजस्थानी है ।

आदि भाग-

दूहा

सरसति माता समरियै, नित प्रति लीजै नाम ।
चित माहि जे चितवै, सीभै बंछित काम ॥ १ ॥
पय जुग प्रणमी तेहना, विक्रम चरित्र कहेस ।
सानिध करज्यो मामझी, हुं तुभ विनय वहेस ॥ २ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६६) विक्रम वेलि । रचयिता-मत्तिसुन्दर । आकार-४.३" × ३.६" ।
पत्र संख्या-१४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं ।
पद्य संख्या-२८० । रचनाकाल-१७२४, आसाढ़ कृष्ण १० ।

आदि भाग—

दोहा

दुह पंचासे बंधियो, कोइ नवो कोठार ।
बाप भरीने कांटा, किणही नलधो पार ॥ १ ॥
तोऊ तिन वनिध हुवे, तोहु तिसहुं सिद्ध ।
अभु अने आगा लगै, मुरिष पंडित किद्ध ॥ २ ॥
तिन तोने समरी करी, कहस्यु विक्रम वात ।
मे तो उद्यम मंडिउ, पूरो करस्यो मात ॥ ३ ॥

अंतिम भाग—

कलियुग मांहि विक्रमराय नो, सोहग सुंदर महिमा गाऊ तो ।
तेहनि सानिध सिव करै, आगा लडती आपद अपहरे ॥
अपहरे आपद चरित सुनावै, नाम थी नवनिधि मिलै ।
परतर गछ श्री जिनचंद सद गुरु, सेविता बंझित फलै ॥
सतरे चोवीस कृष्ण दसमी, आदि आसादे सही ।
वाचना •चारभ अमय सोमे, मति सुंदर काजे कही ॥

[पं० उमाशंकर द्विवेदी, 'विरही' उदयपुर]

(६७) विमल साहरो सलोको । रचयिता- विनीत विमल । आकार-
६"८" × ४"२" । पत्र संख्या- ५ । छंद संख्या-१०७ । लिपिकार-हेमंत विज ।
विषय- विमल शाह ने ग्यारहवीं शती में आबू पर एक जैन मन्दिर बनवाया,
उसकी कथा इनमें दी गई है । भाषा जैन शैली की है और बोलचाल की है ।

आदि भाग—

सरसति समरु बेकर भोडि । वाह वर काणो गिरनार गौडि १
भईण सेत्रुं भै संवेसर दोडि ! कविता ने कुसल कल्याण कोडि ॥ १ ॥

मरुभर माहि तीरथ ताभा । आबू नब कोटि तेहनो राभा ।
 गढ़ मढ़ मई देवल दरवाभा । चऊमष चंपाने ऊपर भाभा ॥ २ ॥
 असल आचारभ धर्मयोष सूरि । या कीधि पिण भाणें अधुरी ।
 देवल विण मुंगरि दीसइ न नूरी । ध्यानइ तिहां छै छायाद मासण पूरी ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

मन ना मनोरथ संघलाई सीधा । बारे ही पतिसाहरा बिरुध लीधा ।
 पाटण छोड़ेंने चंद्रावें आयो । वढायी यामें नें छत्र धरायो ॥ ४ ॥
 पतिसाह बांधें ने डंड भरायो । आबू ने ऊपरि देवल करायो ।
 पोरवाइ प्राक्रम पांच में आरे । नाणों खरच ने न्यात बधारे ॥ ५ ॥
 पंचाणुं ए बांध्या पतिसाह, बारें । एक सपूत आवो कुल तारें ।
 कहसी वांणी नू काई वंखाणुं । धन पामें ने खरचितु नाणो ॥ ६ ॥

वि० जैन गुर्जर कविओ भा० ३ पृ० १३४३ के अनुसार इसके पद्य ११५ हैं ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६८) सतवंती री वात । रचयिता-ज्ञान कवि ।

यह 'वात संग्रह' (६१) में प्राप्त हुई है । रचना दोहा, सोरठा और चौपाई में है । इसका रचनाकाल इसके अन्तिम भाग के अनुसार संवत् १६७८ है । इसकी भाषा पिंगल है । रचना सरस और मधुर तो है ही पर भाषा भी बहुत परिमार्जित और प्रवाह पूर्ण है । रचना के आदि भाग से ज्ञात होता है कि इसका रचयिता मुसलमान है और सूफी मत का अनुयायी ज्ञात होता है । संचेप में रचना की कथा इस प्रकार है ।

मनसूर एक व्यौपारी है । इसकी स्त्री का नाम सतवंती है । जैसा उसका नाम है-वैसी ही वह रूपवती और पतिव्रता भी है । मनसूर अपने मित्रों के साथ व्यौपार के लिए विदेश जाता है । उसकी स्त्री विरह में दुःखी होती है । बहुत दिन बीत गये । एक धूर्त ने इसके सौंदर्य के विषय में सुन कर इसे छलने का विचार किया । अतः उसने चार दूतियों-पँनवारिन, कलाली, मालिन और छलिनी योगिन को बारी बारी से उसके यहाँ उसे छलने को भेजा । सब बारी बारी से हार कर और मार खाकर लौटी । उसका धैर्य इन चारों से विचलित न हुआ ।

तब धूर्त हताश होकर वह किसी धूर्त श्वेताम्बर के पास जाता है। जो तंत्र, मंत्र और टोना करने में सिद्ध है। कुछ दिनों तक वह उसकी सेवा कर के उसे प्रसन्न कर लेता है और उससे रूप पलटने की क्रिया सीख लेता है। फिर मनसूर बन कर सतवंती के साथ रहने लगता है। सतवंती को कुछ संदेह होता है। अतः वह कुछ दिन तक टालती रहती है। इतने में उसका पति भी आ जाता है। एक रूप के दो व्यक्ति राजा के पास न्याय के लिये जाते हैं। राजा दोनों से तथा सतवंती से अपने अपने विवाह की तिथि लिखवा लेता है। सतवंती और मनसूर की तिथि एक मिलने पर धूर्त को प्राण दण्ड मिलता है।

आदि भाग-

चौपई

प्रथम सभिरौ सिरजन हार । अलष अर्गोचर एकंकार ॥
अधम उधार अधार निरंजन । मलिनरसन सुमिरन तिह मनन ॥
ब्याध असाध महा अपराध । विधि सुमिरन तै-होत समाध ॥
जिह रसना सुमिरन रसरसी । प्रगट भयो ज्यों-सविता ससी ॥
सुमिरन रसना रसना पीजै । तिरसना षट रस कत बीजै ॥

सोरठा

हार हार समरारि, पारा प्यार अपार कबो ।
कंसै करै विचार, जान कबि इक रसना सौं ॥

चौपई

दूसरौ सुमिरौ नाम नबी को । सर्व रसूलन को है टीको ॥
रच्यौ महंमद सब तै आद । रचना सफल ताहि परसाद ॥

उदाहरण-

(सतवंती का विरह)

सुन सबती वरिषा आई । अन पिय बिन कैसें रझी जाई ॥
दादुर कोकिल मोर पुकारै । बैन बाण विरहिन कूं मारै ॥
अरध रैन बोलै है चात्रिग । मानो कामदेव के घासिग ॥
स्याम घटा बग पंत दिषावै । करि दंते ले मारन आवै ॥
घरी घरी घन वरसत फेरै । मलन बसन हूंमारी तेरै ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

सतवंतो मनसूर, अमर मये या जगत मैं ।
 ब्रगमगात समि सूर, तैसे प्रगटै सील तैं ॥
 सोलै सैशु अठतरै, सनि सहस इक्तीस ।
 सतवंती, सत जान कवि, बांध्यो विसवा वीस ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६६) श्रीपाल चतुष्पदी । रचयिता- जिन हर्ष ।

आकार- १०'२" x ३'६" । पत्र संख्या- ५० । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ
 और प्रति पंक्ति में ३६ । ४२ अक्षर हैं । लिपिकाल- सं० १८४८ । रचनाकाल-
 सं० १७४० ।

विषय- जैन- जीवन चरित्र । रचना उत्तम कोटि की है । भाषा जैन शैली
 की परिमार्जित राजस्थानी है ।

आदि भाग-

श्री अरिहंत अनंत गुण, धरिये हियडे ध्यान ।

केवल ग्योन प्रकास करि, दूर हरथ अगन्यान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

संबत सतरैसै चालीसै, चैत्रादिक सुंजगीसरे ।

सातिम सोमवार सुम दिसै, पाठण विसवा वीसरे ॥ ११ ॥

x

x

x

कहे जिन हरष भाविक नर सुण ज्यो, नव पदमहिमा गुण ज्योरे ।

उगण पचासै दाले गुणज्यो, निज पातक वन लुणज्योरे ॥ १३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७०) श्रीपाल रास । रचयिता-विनयविजय तथा जसविजय आकार-

१०'१" x ४'४" । पत्र- ७४ । लिपिकाल-सं० १८१४ रचनाकाल-सं० १७३८ ।

आदि भाग-

कल्प वेलि कपि अणतणी, सरसति करि सुप साय ।

सिद्ध चक्र गुण गवतां, पूरि मनोरथ माय ॥ १ ॥

सूचना-इसमें चार खण्ड हैं । जिनमें प्रथम दो तो विनय विजय तथा अंतिम दो जसविजय कृत है ।

[वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७१) श्री मंधर स्वामी विज्ञप्ति स्तवन । रचयिता-अज्ञात । आकार-
१०'१'' × ४'२'' । पत्र-संख्या- ४ । पद्य-संख्या- १०५ । विषय- जैन धर्म ।

[वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७२) साधु (मुनिसरकी) गुण माला । रचयिता- जैमल ।

आकार- १०'' × ५'' । पत्र संख्या- ३ । पद्य संख्या- ६५ ।

[वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७३) सामुद्रिकइं स्त्री पुरुष शुभाशुभं । रचयिता-अज्ञात ।

आकार- ८'४'' × ५'८'' । पत्र संख्या- ३३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ हैं । और प्रति पंक्ति में २७-३१ अक्षर हैं । अक्षरों की लिखावट प्राचीन जैन पाटी की है, परन्तु अक्षर जमे हुए नहीं हैं । यह प्रति सम्वत् १५७६ कार्तिक विद ६ की लिपिबद्ध है । प्रति प्राचीन है, अक्षर भी प्राचीन हैं । अक्षर घिस गये हैं, जिससे पढ़ने में कहीं कहीं कठिनाई होती है । इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह 'सहज सागर' नाम के किसी ग्रन्थकार के संस्कृत ग्रन्थ 'सामुद्रिक' की टीका है । टीकाकार का नाम घिस गया है, परन्तु उसको सामुद्रिक का ज्ञान देने वाले का नाम 'गुण सागर' दिया गया है । ग्रन्थ का विषय सामुद्रिक शास्त्र है जिसमें नायिकाभेद का भी ध्यान रक्खा गया है ।

भाष-प्राचीन जैन शैली की राजस्थानी है ।

आदि भाग-

ॐ नमो श्री सरस्वती नमः नु गक्तुं सामुद्रिक शास्त्रो नराण्ययत ।

शुभाशुभं । तदहंसंप्रवक्ष्यामि । नव केशामप्रमतेः ॥ १ ॥

देस मालवो कंचन बाण । नगर देवास महा सुभ जाण ॥
कवि जन तहां बसे देवीदास । बुडे देवी तगो नीवास ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग-

ऐसो विक्रमसेण भोवाल । तास सहाइ वीर वेताल ॥
नारी धाम रयो संहार । जित्या ताइको मिडुहार ॥ १ ॥
पंच डंड सिर वज्र धराइ । सात उदधि लागि साके कराइ ॥
पंच जोण मंडप आवण्यो । नारी चरित तेहीतषं जाणीयो ॥ २ ॥
हरसि की मुरा करि मानियो । पर कीयो परवेस जु कीयो ॥
तीन लोक कीनो पसार । बोल्या मुष यामे संसार ॥ ३ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(७६) सिंहल सुत चौपई । रचयिता- समयसुन्दर ।

लिपिकाल- १८८५ .

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीडर]

(७७) हंसराज बल्लराज चउपी । रचयिता- जिनोदयसूरि ।

आकार- ६३" x ४" । पत्र संख्या- ३८ प्रत्येक पत्र पर १४ पंक्तियों और प्रति पंक्ति में ३३ । ३४ अक्षर हैं । इसमें कुल ७१४ पद्य हैं ।

विषय- जैन धर्म जीवन-चरित्र है । भाषा राजस्थानी गुजराती है ।

आदि भाग-

आदिस्वर आदि करी, चउविसैं जिण चंद ।
सरसती मन समरु सदा, श्रीजयतिलक सुरिंद ॥ १ ॥
सदगुरु पाय प्रणमी करी, पायी गुरु आदेस ।
पुन्य तथा फल बोलस्यूं, कहस्यूं हूं लव लेस ॥ २ ॥

[वट्टमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७८) हरीचंद सत । रचयिता- ध्यानदास ।

यह १३७ संतों के संग्रह में है । इसमें २४ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियों और प्रति पंक्ति में ३७ अक्षर हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थ तीन अध्यायों में विभाजित

है। प्रथम अध्याय में १६६ पद हैं, द्वितीय में १२१ और तृतीय में १००। इस प्रकार इसमें १४ दोहे, २ सोरठे, ४ छंद और ३२० चौपाइयां हैं। जिनकी सर्व संख्या ३४० होती है। ग्रन्थ का विषय सत्य हरिश्चन्द्र की पौराणिक कथा है। इसका रचना-काल कवि ने इस प्रकार दिया है—

‘उदधि दोत कर लीजिये लेखन भार अठार’

४

२

१८

जिसके अनुसार संवत् १८२४ या १८४२ ठहरता है।

इसके प्रथम अध्याय में राजा का राज्य त्याग और काशी में आगमन। द्वितीय अध्याय में सुत-रानी और राजा का वियोग, सुत-रानी का अग्नि सुशर्मा के यहां निवास और राजा का डोम के घर निवास। तृतीय अध्याय में रोहिताश्व की मृत्यु आदि शेष घटनाएं।

आदि भाग—

दोहा

गोविंद गुर को नित नमौ, नमौ भक्त सब साथ।

ता प्रसाद जस ऊचरूं, हरिचंद सत अगाध ॥ १ ॥

चौपई

अबगति अलप अनाहद भारी। उपत षपत महासुधि भारी।

नाव न गांव ठांव कहा कहियै। आगम अगाध साध संग लहिये ॥ २ ॥

अन्तिम भाग

दोहा

उदधि दोत करि लीजिये, लेखन भा अठार।

ध्यान दास बसुधा लिखै, भगवंत भगत अपार ॥ ६६ ॥

लषा वाकाज सुरस्वति लागै, सब बुधिबंत कलि माहि।

रोम समान न लष सके, हरि चरचा मति नाहि ॥ ६७ ॥

जो उचरे या ग्रंथ कूं, कोऊ सुनै चितलाय।

‘ध्यान’ लहसो परम पद, पाप ताप त्रिय जाय ॥ ६८ ॥

हरीचंद सत कूं सुनै (कोई), औसी टेक समाय।

‘ध्यान’ लहे सो परम पद, या मै संसे नाय ॥ ६९ ॥

ध्याय तीन या ग्रंथ की, धरम कथा बिसतार।

हरीचंद हिरदै धरे, सो जन उतरे पार ॥ १०० ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७६) हितोपदेश । रचयिता- नारायण- ब्राह्मण ।

आकार- ८" x ६" । इसमें ११५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ । १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ । २० अक्षर हैं । लिखावट साधारण है । ग्रन्थ पर चमड़े का जिल्द है । जिसके भीतर दोनों ओर हनुमान के रंगीन तथा सामान्य शैली के दो चित्र भी हैं, जिनका कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसमें हितोपदेश (संस्कृत) का गद्य में भाषान्तर किया गया है । यह प्रति संवत् १८७६, माह वदि ४, भोमवार को खवास बरदा द्वारा जहाजपुर (मेवाड़) में लिपि कृत हुई । भाषा अशुद्ध लिपि के कारण बड़ी अशुद्ध हो गई है ।

लल्लू ताल के गद्य की भाषा का आचार यही भाषा है—

‘पुत्र सौही मयो जानीये, जीन कै भयै वंस मै ऊंचो होय, नतर मुयेते संसार मै कौ नाही उपत । अरु जहा गुणी जण साधुगणी यही हैं, तहा आदर सौ जाकौ नाम पहले न लखी हं । ऐसे हु पुत्र की माता कौ पुत्रवंती होये तो को हो धो (तो) वांझ कौन सौ कहीयै ।’

अन्तिम भाग—

‘तब विसनु सरमा राजपुत्रन सों—कश्यो—अब तुमारे ओर सुनवे की अंछ्या होये सो कहो, सोहु सुनाऊ’ तब राज पुत्र—कश्यो—तुमारे प्रसाधते सब राजनीत, सब किया सीष सुख मयो । ज्ये हमारी आग्या रुपन हो । नयो जनम मयो । तब विसनु सरमा कही—तब हु ओर यह होऊ, सब राजनि सों । ओर संधी होऊ । अरु जय करि आनंद होऊ । सदा वृत प्रताप होऊ । सुकृत की क्रीती बढ़ो । नित मंत्रिन के हिरदे मो क्रीड़ा करो । दिन दिन सब राजनि सों ऊंचो होऊ । जो लुं श्रीगोविंद जी के वक्ष्यस्थल मै लक्ष्मी रहे, अरु जो लुं गोरी नाथ के माथा पर चंद्रमा, जेसे मेघ मो बिजुलता, जो लुं सुमेर दावानल सो भूमंडिल मो विराजे, तो लुं नारायण नामी ब्राह्मण करि कीयो येहें हेतुपदेस नामा गंध प्रणी मो बल हु—

दोहा

राजनीत नै रीत सों, बांचो चत बढ़ाय ।

बालक कु अति सुख बधे, सबै ग्यान सरसाय ॥ १ ॥

जन्तु कथा जाणो मती, सुण जो सुरत लगाय ।

(ओ) हेतों को उपदेस है, सुर पंडित गुण साय ॥ २ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(परिशिष्ट)

मीराँ के अप्रकाशित भजन

निम्न लिखित भजन विविध गुटों में लिखे हुये मिले हैं। यहाँ केवल वे ही भजन दिये गये हैं जो अब तक अप्रकाशित हैं। कुछ भजन ऐसे भी दिये गये हैं, जिनमें और प्रकाशित भजनों में पाठान्तर हैं। जिनका लिपिकाल मिला है, उसको उनके साथ नीचे कोष्ठों में दे दिया गया है।

१

जब कै तुम बिछड़े मेरे प्रभुजी, कहूँ न पायौ चैन ॥ १ ॥

बिह बिधा कासूँ कहुँ सजनी, कवत आवे अैन ॥ २ ॥

ऐक टगटगी पिया पंथ निहारुँ, मई छै मासी रैण ॥ ३ ॥

मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, दुःष मेलण सुष देण ॥ ४ ॥

(१८७६)

२

मैं ती म्हाग रमईया नै देष बी करुली ॥ टेक ॥

तेरी ही सुमरण तेरी ही उमरण, तेरी ही ध्यान धरुली ॥ १ ॥

जिहा जिहा पाव धरे मेरे प्रभुजी, ताहा ताहा वरतक करुली ॥ २ ॥

मीराँ के प्रभु हरि अबनासी, चरणा में लिपट रहूली ॥ ३ ॥

(१८७६)

३

जाबो नर मौहीयाजी भीषी तेरी प्रीतई ॥ टेक ॥
 लगन लगी जब और प्रीतिछी अब कछु अबली रीतई ॥ १ ॥
 ईम्रत पाइ विषे क्यूं पीजिये कौण गांव की रीतई ॥ २ ॥
 मीरा के प्रभु हरि अविनासी, जौ गायो किसकी मीतई ॥ ३ ॥

(१८७६)

४

जोगीयाज दरसण दीज्यो रा जी ।

कर जोइथा करणी करूं म्हारी वाहा गहवा की लाज ॥ टेक ॥
 लोक लाज जब सारी डारी, छाड्यो जग उपदेश ॥
 ब्रह्म अग्नि में प्रान दाभे, हारो सुषि लीज्यो आदेश ॥ १ ॥
 साँच सुदा भाव कंथा, साज्यो नष सष साज ॥
 जौगणि होइ जुग टुटस्युं, हारी घर घर फेरी आस ॥ २ ॥
 दरब दिवानी तन देषि आपनूं, मलीया परम दयाल ।
 मीरा के मनि आनन्द हुंवा, रूम रूम खुसियाल ॥ ३ ॥

(१८७६)

५

नातौ हरि नांव को माई ।
 मोसूं तनक न बिसरयौ पल न जाई ॥ टेक ॥
 पाना ज्यू पीली भई, लौग कहै पिंड रोग ॥
 छनि लंगण में कोया, राम मिलण के जौग ॥ १ ॥
 बाबल बैद बुलाईया, पकड़ि बताई म्हारी बाटि ।
 मूरिष बैद न जाण हीं, म्हारे करक कलेजा माहि ॥ २ ॥
 बैद जाबौ घर आपणै, म्हारो नांव न लेह ।
 मैं दादी हरि नांव की, मोहि काहै को दुष देंह ॥ ३ ॥
 कादि कलेजो मैं धरूं, कागा तू ले जाइ ।
 जा देसा प्रीतम बसे, वे देषे तूँ षाइ ॥ ४ ॥
 छनि आगणि छनि मंदरा, छनि छनि ठाडी होइ ।
 छार ज्यू धूमत फिरूं, म्हारौ मरम न जाणै कोइ ॥ ५ ॥

तन सुकिचि पिंजर भयो, सूँका ब्रह्म की बाँहा ।
 आगणि यालीं मूँदड़ी, म्हारै आगण लागी बाँहा ॥ ६ ॥
 रेरे पापी पपीवडा, पीव का नांव न लेह ।
 पीव मिलै तो मै जीऊँ, नातरि त्यागूँ म्हारो जीव ॥ ७ ॥
 कोइक हरजन सामलैरे, पीव कारण जीव देह ।
 मीराँ व्याकुल ब्रह्मनीं, पीव बनि कसौ सनेह ॥ ८ ॥

(१८७६)

६

जोगीयाजी आजोजी इण देस ।
 नै जस्यौं देषू नाथ नै, धाइ कलूँ आदेस ॥ टेक ॥
 आया सावण भादवा, भरीया जल थल ताल ।
 साई कूँ विलमाई राण्यौ, ब्रह्मनि है बैहाल ॥ १ ॥
 बसरबा बौहो दनि भया, बसरबाँ पलक न जाई ।
 ऐक बेरी देह फेरी नगरि, हमारै आई ॥ २ ॥
 वा मूरत माहारै मन बसै, बसरबाँ पलधून जाइ ।
 मीराँ कै कोई नाही दूजौ, दरसण दीज्यौ आइ ॥ ३ ॥

(१८७६)

७

देसडलो रुडौ रुडौ । राणाजी धारौं ...मगत न भावै माहारा
 राम की ।

लोग बसै छै कूडौ ॥ टेक ॥
 मेवा मसरी सब ही त्याग्या, त्याग दियो छै बुरौ ।
 तन की आस कबहुं न राषी, ज्यूं रण माहिँ सूरौ ॥ १ ॥
 माई मात कुडुंबो त्याग्यौ, त्याग दिवे छे वूँडौ ।
 घूँघट को पटि दूरि कियो, सरि बाँध्यौ छै जूडौ ॥ २ ॥
 यो संसार सब दुष कौ सागर, मै हाकीयौ दूरौ ।
 मीराँ कीके प्रभू हरि अविनासी, बर पायौ छै पूरौ ॥ ३ ॥

(१८७६)

८

ग्यान कूँ बाण बसी । हो म्हरा सतगुरुजी हो ॥ टेक ॥
 बकतर फूटि हीय.....अटकी, मीटर चालि घुसी ॥ १ ॥
 बाहरी घाव दीसत नहीं कोई, उचि बचि पूरि बसी ॥ २ ॥
 तत तरवारि मालिका मलका, सबदी की बरछी धसी ॥ ३ ॥
 राम दीवानी(मैं तो) पलकन बीरूँ, जणि'र करावौ जग में हँसी ॥ ४ ॥
 मीरा के प्रभू हरि अविनासी, अमरा पुर में बसी ॥ ५ ॥

(१८७६)

९

मैं तो तोरै चरन लगी गोपाल ॥ टेर ॥
 जब लागी तब कोऊ न जानि, अब जानी संसार ॥ १ ॥
 किरपा कीजौ दरसण दीजौ, सुध लीजो ततकाल ।
 मीरा कहै प्रभू गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार ॥ २ ॥

१०

रामजी पधारे धनि आज री घरी ।
 आजरी घरी वौ भावरी भरी ॥ टेर ॥
 गुर रामानंद अर माधवावारज, नीमानंद बिसन स्याम हरी ॥ १ ॥
 आजि मेरी आंगणूँ सुहावणूँ, बरसण लागे पीया पेम हरी ॥ २ ॥
 अरसि परसि मिलि हरि गुण गास्यां, धनि मेरी इषी इन मात्र भरी ॥ ३ ॥
 मीरा के प्रभू हरि अविनासी, पकडि पावौ प्याला पेम हरी ॥ ४ ॥

गुटका आकर-६"२" × ४" से—

११

राग कन्नड़ी दूजी

प्रभु बेरा बेडा पार लंवाज्यौ जी ॥ टेर ॥
 मैं दुगणी में गुण नहीं प्रभूजी, औगुण चित्त मत लाज्यौ जी ॥
 काड बडग राणाजी कोप्या, गरड चढ्या हरि आज्यौ जी ॥
 बिस रा प्याला राणाजी मेज्या, चरणाभृत कर पीज्यौ जी ॥
 काया नगर में घेरा पढ्या छै, ऊपर आयर कीज्यौ जी ॥
 मीरा दासी जनम जनम की, कंठ लगाय'र लीज्यौ जी ॥

१२

मैं मेरो मन हरिजी सूं जोरबौ । हरिजी सूं जोर सबन सूं तोरबौ ॥ टेरे ॥
 नाचन लगी तब धूँधट कैसे । लोक लाज तब काज्यूं तोडबौ ।
 जब मैं चली साध के दरसण । तब राणों मारण कूँ दौड्यौ ।
 जहर देण कूँ घात उपायौ । निरमल जल में ले बिस घोरबौ ।
 जब चरणामृत सुगयौ तरवणा (१) । राम भरोसे मुख दोरबौ ।
 प्रगट निसाण बजाय चल जब । राणै राव सकल छुग जोरबौ ।
 मीरां प्रबल घणी के सरणै । का भयौ भूपति मुख मोरबौ ।

१३

सब जग रूठडा रूठड घौ । येक राम रूठो नहीं पावै ॥ टेरे ॥
 गरम कीयो रतनागर सागर । नीर खारो कर डारबौ ।
 गरम कीयौ उन चकवा चकवी । रैण विछोबा पारबौ ।
 गरम कीयौ उन वन की कोयल । रूप स्याम कर डारबौ ।
 गरमकियौ लंकापति रावन । टूक टूक कर डार्यौ ।
 मीरां के प्रभु हरि अविनासी । हरि के चरण तन बार्यौ ।

१४

पीया कूँ बतादे मेरे, तेरा गुण मानूँ जी ॥ टेरे ॥
 एसा है कोय आण मिलावे । तन, मन, धन, कुरवानूँ जी ॥
 रक्त रक्ती भर ना रखौ तनमै, पीरी भई जैसे पानूँ जी ॥
 बिहा मोकूँ आन संतावै, कोयल सबद सुहानूँ जी ॥
 लाल बिना व्याकुल भई सजनी, प्रगट होत नहीं जानूँ जी ।

१५

रमईया बिन रयो न जायरी माय ॥ टेरे ॥
 धान पान मोय फीकौ सो लागै, नैन रहै दोय जाय ॥
 बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाय ॥
 मीरां के प्रभु बेग मिलोगे, तरस तरस जीब जाय ॥

राग परज

१६

जोगीया तूं मारे घर रमतो ही आव ॥ टेर ॥
 काना बिच कुंडल गला बिच सेली ॥ अंग मभूत रमाय ॥ १ ॥
 तुज देण्यां बिन कल न परत है ॥ ग्रहै अंगणौ न सुहाय ॥ २ ॥
 मीरां के प्रभु हरि अविनासी ॥ दरसण घौनै मोकू आय ॥ ३ ॥

१७

मेरी कानां सुणज्यौ जी करूणां निधान ॥ टेर ॥
 राबरो बिरद मोयरो डौसो लागै ॥ परत परायै प्रान ॥ १ ॥
 सगौ सनेही मेरे और न कोई ॥ वैरी सकल जिहानां ॥ २ ॥
 ग्रह गद्यौ गज राज उबारयौ ॥ बूडन दीनौ जान ॥ ३ ॥
 मीरां दासी अरज करत है ॥ नही जी सहारो आन ॥ ४ ॥

८

हरि मारी सुणज्यौ अरज महाराज ॥ टेर ॥
 मैं अबला बल नाहिं गूंसाई ॥ राबो अब के लाज ॥ १ ॥
 राबरी होय कर कणी रे जाऊँ ॥ है हरि दिव राडारौ साज ॥ २ ॥
 हेय कोव पूधर दैत संघा रचौ ॥ सार्यौ देवन काज ॥ ३ ॥
 मीरां के प्रभू और न कोई ॥ तुम मेरे मिर ताज ॥ ४ ॥

१८

पीयाजी थे तो कटारी मारी ॥ टेर ॥
 जिनकौ पीव परदेस बसत है ॥ सो क्यूँ सोबै नारी ॥ १ ॥
 भकनं मिन नही भावत ॥ आकूँ सदे देहारी ॥ २ ॥
 जैसे भवगत जत काचरी ॥ सो गत भई है हमारी ॥ ३ ॥
 बिन दरसण कल नहीं परत है ॥ तुम हम दीये विसारी ॥ ४ ॥
 मीरां के प्रभू तुन्हारे मिलन कूँ ॥ चरण कवल पर-वारी ॥ ५ ॥

२०

राग पूर्वी सोरठा

गिरधर के मन भाई हो राणाजी ॥

(२२५)

२४.

राग धुमायची

पतीयां मैं कैसे लखूं ॥

लिप्योरी न जाय ॥ टेरे ॥

कलम भरत मेंरो कर कंपत है ॥ नेन-रहै भड लाय ॥ १ ॥

बात कहूं तो कहत न आवै ॥ जीवरयो डर राय ॥ २ ॥

बिपत हमारी देष तुम चाले ॥ कहिया हरिजी सूं जाय ॥ ३ ॥

मीरां के प्रभू सुष के सागर ॥ चरण ही कवल रषाय ॥ ४ ॥

२५.

माइ मानैं रमईयो देगया भेष ॥ टेरे ॥

हम जाने हरी परम सनेही ॥ पूरब जनम को लेष ॥ १ ॥

अंग भभूत गल भ्रम छाला ॥ घर घर जपत अलेष ॥ २ ॥

मीरां के प्रभू हरि अविनासी ॥ साई मिलण की टेक ॥ ३ ॥

२६

मेरे घर आवौ सुन्दर स्याम ॥ टेरे ॥

तुम आया बिन सुष नहीं मेरे । पीरी परी जैसे पान ॥ १ ॥

मेरे आसा और न स्वामी ॥ येक तिहारो ध्यान ॥ २ ॥

मीरां के प्रभु बेग मिलौ अब ॥ राखो जी मेरो मान ॥ ३ ॥

राग सुलतानी सोरठ

२७

ऐरी मेरे नैनन बान परी ॥ टेरे ॥

चित चडी प्यारे दी मूरत ॥ उर बीच आन अरी ॥ १ ॥

कबकी में ठाड़ी ठाड़ी पंथ निहारूं ॥ अपने भवन बरी ॥ २ ॥

जब देखूं तब जीऊं मेरी सजनी ॥ जीवन मूल जरी ॥ ३ ॥

कैसे मैं राखूं प्रांन पिया बिन ॥ सरबस देन बरी ॥ ४ ॥

मीरां तो प्रभु के हाथ बिकानी ॥ लोक कहे बिगरी ॥ ५ ॥

२८

गोबिंद गाढा छौजी दीलरा मित ॥ टेरे ॥

बार नीहारूं पंथ बुहारूं ॥ ज्यूं सुष पावे चित ॥ १ ॥

मेरा मन की तुम ही जानौं ॥ मेरो ही जीवनीचंत ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरि अविनासी ॥ पूरब जनम को कंत ॥ ३ ॥

२६

मारे आज्यौजी रामां ॥

थारै आवत आस्यां सामां ॥ टेर ॥

तुम मिलियां मैं बोहो सुष पाऊं ॥ सरै मनोरथ कामां ॥ १ ॥
तुम बिच हम बिच अंतर नाही ॥ जैसे सूरज धामां ॥ २ ॥
मीरा के मन और न माने ॥ चाहे सुन्दर स्यामां ॥ ३ ॥

३०

पीया मैं बैरागन हूंगी हों ॥

जां जां भेषां मारो सायब रीझै ॥ सोय सोय भेष धरूंगी हो ॥ टेर ॥
सील संतोष धरूँ घट भीतर ॥ समता पकड़ रहूंगी हो ॥
जाकौ नाव निरंजन कहीये ॥ जकौ ध्यान धरूंगी हो ॥ १ ॥
गैर ग्यान रंगू तन मेरो ॥ मन सुदरा पहरूंगी हो ॥
प्रेम प्रीत सूँ हरि गुण गाऊँ ॥ चरणां लिपट रहूंगी हो ॥ २ ॥
या तनकी मैं करूँ की गूरी ॥ रसनां राम रटूंगी हो ॥
मीरा के प्रभु हरि अविनासी ॥ सांधां संग रहूंगी हो ॥ ३ ॥

३१

को बिहन कौ दुख जायै हो ॥

जा घट बिहा सोय लखि है ॥ कै कोय हरी जन मानै हो ॥ टेर ॥
रोगी आतर बैद बसत है ॥ बैद हि औषद जानै हो ॥
बिह कर दउर अंतर मांही ॥ हरि बिन सब सुख कानै हो ॥ १ ॥
दुगधा आरण करे उदासी ॥ सुरत बसी सुत मानै हो ॥
चात्रग स्वांत बूंद मन मांही ॥ पीव पीव उक लानै हो ॥ २ ॥
सब जग कूडौ कुट्ट मैं दुनीयां ॥ मेरोदर धन जायै हो ॥
मीरां कै पति आप रमईया ॥ दूजो कोय नही जानै हो ॥ ३ ॥

३२

साईयां अरज बंदी की सुन हो ॥

मैं जुगणी तुम सुगणां सायब ॥ औगुणगारी रा गुण हो ॥ टेर ॥
हूं दासी तेरी जनम जनम की ॥ तुम हो हमारे बर हो ॥
दीन दयाल दया कर मोपै ॥ मोटो सब ही डर हो ॥ १ ॥

राणाजी बिसरो प्यालो भेज्यौ ॥ मारै भगति रो पण हो ॥
 जाकू राखै राम गुसाई ॥ तो मारण हारो कुण हो ॥ २ ॥
 आन देव मारी दायन आवै ॥ तुम सू लागौ मेरो मन हो ॥
 जैसे चंद चंकोर निहारै ॥ यूं सुमरूं छिन छिन हो ॥ ३ ॥
 बेर बेर मोहि विह संतवै ॥ ज्यूं काटै लागौ घूण हो ॥
 मीरां नांव पीया लै छाकी ॥ काई जाणूं राणौजी कूण हो ॥ ४ ॥

३३

अधर नाम कुंजर लीयौ ॥ बाकी अवधि घटांणी हो ॥
 गरुड़ छांड हरी ध्याईया ॥ पसू जूण मिटांणी हो ॥ २ ॥
 अजा मेल से उधरे ॥ जम त्रास हटांणी हो ॥
 पुत्र हेत पदवी दई ॥ जुग सारै जांणी हो ॥ ३ ॥
 नांव महातम गुरु दीयौ ॥ सोई वेद बखांणी हो ॥
 मीरां दासी वारणै ॥ अपनी करि जांणी हो ॥ ४ ॥

३४

पीया मोहि आरत तेरी हो ॥

आरत तेरी तेरी नाम की ॥ मोइ सांभ सवेरी हो ॥ १ ॥
 पटीयां पाड़ुं ग्यान की ॥ बुधि मांग सवारूं हो ॥
 तो परि मेरा सईयां ॥ धन जोबन बारूं हो ॥ २ ॥
 यातन कौ दिवलौ करूं ॥ मनसा की बाती हो ॥
 तेलज पूरूं प्रेम कौ ॥ बालूं दिन रातो हौं ॥ ३ ॥
 सेभड़ीयां बौहौ रंगीया ॥ चंगा फूल बिछाया हो ॥
 रैण घटी तारा गिणत ॥ पीव अज उन आया हो ॥ ४ ॥
 आयौ सांवणं भादवौ ॥ त्रिषा रत आई हो ॥
 बीज भला मल हो रही ॥ नैनां भड लगाई हो ॥ ५ ॥
 तुम पूरा तुम पुरवा ॥ पूरा सुख दीज्यौ हो ॥
 मीरां व्याकुल ब्रह्मनी ॥ अपनी करि लीज्यौ हो ॥ ६ ॥

३५

साजन बेगा घर आज्यौ हो ॥

आदि अंत का मित हो ॥ हम कुं सुख लाख्यौ हो ॥ टेर ॥
 हरी बिन सुरती कहां धरूँ ॥ जिस मारग जोऊँ हो ॥
 तेरे कारण साईयां ॥ मरि नीद न सोउं हो ॥ १ ॥
 अबिनासी आया सुखुं ॥ जब नो निधपाउं हो ॥
 साइब सुंमन मोइलौ ॥ दुष टेर सुणाउं हो ॥ २ ॥
 वा विरीयां कब होवसी ॥ कोइ कहे सनेसा हो ॥
 मीरां कहै इस बात का ॥ मोइ खरा अंदेसा हो ॥ ३ ॥

३६

अैसे जन जायन दीजे हो ॥
 आतो मिलो सहेलज्यां ॥ बाता सुख जीजे हो ॥ टेर ॥
 नैन सलूने साईयां ॥ देप्यां सुं जीजे हो ॥
 तन धन जोवन वारि कै ॥ नछ राषल कीजे हो ॥ १ ॥
 आरंत अपणी कारणै ॥ वाकै पाइ परीजे हो ॥
 चंदन केरा रूष ज्यूं ॥ चरणां लपटी जे हो ॥ २ ॥
 हाथ जोरि बिनती करूँ ॥ मेरी अरज सुणीजे हो ॥
 मीरां व्याकुल ब्रैहनी ॥ जाकुं दरसण दीजै हो ॥ ३ ॥

३७

पीया मैं तेरी बंदी हो ॥
 गरक भई गुण ते रडै ॥ बिन मोल वंकदी हो ॥ टेर ॥
 मैं ब्रैहन तूं बहुगुनी ॥ दोउ सिंध मिलंदी हो ॥
 जो तुम की प्रीतम नां मिलौ ॥ तो में बह जंदी हो ॥ १ ॥
 रूप लुमांनी लोयनां ॥ मैं चलु तेरी छंदी हो ॥
 गुप्ति की बाता तुझि सुं ॥ ऊंल जूँ कहंदी हो ॥ २ ॥
 प्राण सनेही सजनां ॥ दुष टालन दंदी हो ॥
 मीरां के प्रभु रामजी ॥ तेरी चेरी कहंदी हो ॥ ३ ॥

३८

जोगीया तैं जुगत न जोगी हो ॥
 मेंतो आसिक तेरडी तोने दया न आषी हो ॥ टेर ॥
 तुंमी स्वारथ कौ सगौ ॥ पर दुष न जानी हो ॥

तो मो बीच बिछोह भौ ॥ कोई दांयां पांखी हो ॥ १ ॥
 तुम बिन कल मोह नां पड़े ॥ मछी बिन पांखी हो ॥
 तुम बिन मैं कैसें जीउं ॥ रेण तलफ बिहानी हो ॥ २ ॥
 जा दिन तैं तुम बीछड़े ॥ मेरे मइ हानी हो ॥
 तो कारण बन बन फिरूं ॥ होय प्रेम दिवानी हो ॥ ३ ॥
 पान पान की सुध नहीं ॥ काया कुमलाणी हो ॥
 अब तो बांकी नां रही ॥ पिंड त्यागै प्राणी हो ॥ ४ ॥
 पतित पावन तो बिउदहै ॥ याही बेद बषानी हो ॥
 मीरां कु अब धौ दरस ॥ प्रभुजी सुष दीनी हो ॥ ५ ॥

३६

रमईया मेरे तोही सूं लागो नेह ॥
 लागी प्रीत जिन तो डेरे बोला ॥ अधिकौ कीजे नेह ॥ टेर ॥
 जैहूं अैसी जानती रे वाला ॥ प्रीत कीयां दुष होइ ॥
 नगर दंडोरो फेरती रे ॥ प्रीत करो मत कोय ॥ १ ॥
 पीर न षाजे आरी रे ॥ मूरख न कीजे मित ॥
 षिणता ताषिण सीलवारे ॥ षिण बैरी षिण मित ॥ २ ॥
 प्रीत करै ते बावरां रे ॥ करि तोड़ै ते कूर ॥
 प्रीत निभावण दल के षंभण ॥ ते कोई बिरला सूर ॥ ३ ॥
 तुम गज गीरी कौ चूंतरो रे ॥ हम बालू की मीत ॥
 अब तो म्यां कैसे बणै रे ॥ पूरब जनम की प्रीत ॥ ४ ॥
 एकै थाणै रोपोया रे ॥ इक आबो यक चूल ॥
 वाकौ रसनी कौ लगै रे ॥ वाकी भागै सुल ॥ ५ ॥
 ज्यूं हूं गर का बादला रे ॥ यूं ओझा तणां सनेह ॥
 बहता बहैजी उतावला रे ॥ वेतो भटक वतावै-छेह ॥ ६ ॥
 आयो सावण भादवौ रे बाला ॥ बोलज लगा मोर ॥
 मीरां कुं हरिजन मिय्या रे ॥ लेगया पवन भकोर ॥ ७ ॥

४०

ब्रह्म लहर तनमाइ उठै ॥ कांया कुं सीषण हारो ॥
 ओषद पुरी कोई मूल न मांगै ॥ लागत नहीं भारी ॥ १ ॥

राम हमारे गारहू हैं ॥ जीव को प्राण अधारो ॥
 उन आयां मेरी पीर हरत हैं ॥ उनको पतीयारो हा ॥ २ ॥
 मन हमारो प्रभु मोहि लियौ तुम ॥ उलागत है धारो ॥
 दासी मीरां राम मजि करि ॥ विष कियौ न्यारो ॥ ३ ॥

४१

सांवरा की इष्टि मानूं ॥ प्रेम री कटारी हैं ॥ टेर ॥
 लगन बेहाल भई ॥ घर हू की सुधि नहीं ॥
 तनह मैं व्यापी पीर ॥ मन मतवारी हैं ॥ १ ॥
 चकोर चाहत चंद ॥ दीपक जलत पतंग ॥
 जल बिना मरै मीन ॥ असी प्रीत प्यारी हैं ॥ २ ॥
 सखी मिली दोय प्यारी ॥ बावरी भई हैं सारी ॥
 निस दिन ब्रैह लीयां ॥ आसिक अकारी हैं ॥ ३ ॥
 बिन देण्या कैसें जीवै ॥ कल न पड़त हीयै ॥
 जाय वाकूं अैसे कहियौ ॥ मीरां तो तिहारी हैं ॥ ४ ॥

४२

म्हारे घर आबौ स्याम गोठड़ी कराई हैं ॥ टेर ॥
 आनंद उछाव करूं ॥ तन मन भेट धरूं ॥
 मैं तो हूं तुमारी दासी ॥ ताकूं तो चीतारी ए ॥ १ ॥
 गिगन गरंज आयो ॥ बदरा बरस भायौ ॥
 सारंग सब दसुनि ॥ बेहनी पुकारी हैं ॥ २ ॥
 घर आबौ स्याम मेरे ॥ मे तो लगूं पाय तेरै ॥
 मीरां कूं सरन लीजे ॥ बलिबलि हारी हैं ॥ ३ ॥

४३

आब सजनियां बाट मैं जोऊं ॥ तेरे कारण रेण न सोऊं ॥ टेर ॥
 जकन परत मन बहुत उदासी ॥ सुंदर स्याम मिलौ अभिनासी ॥ १ ॥
 तेरे कारण सब हम त्यागे ॥ धान पान पै मन नहीं लागे ॥ २ ॥
 मीरां के प्रभु दरसण दीज्यौ ॥ मेरी अरज कान सुण लीज्यौ ॥ ३ ॥

४४

आय मिलौ मोहि प्रीतम प्यारे ॥

हम कूँ छाड़ क्यूँ न्यारे ॥ टेरे ॥

बौहौत दिनन की बाट निहारूँ ॥ तेरे उपर तन मन बारूँ ॥ १ ॥

तुम दरसन की मो मन मांही ॥ आय मिलौ कर कृपा गुसाई ॥ २ ॥

मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर ॥ आय दरस घौ सुख के सागर ॥ ३ ॥

४५

काई कहीयौ रे बिनती जाय कै ॥

म्हारा प्राण पीयारा नाथ नै ॥ टेरे ॥

जा दिन के बिछुरे मन मोहन ॥ कल न परत दिन रात नै ॥ १ ॥

देस विदेस संदेस न पूगै ॥ बिरहन भूरे स्याम नै ॥ २ ॥

दिल दां मरहम दिल ही जनि ॥ और न जाणै दूजौ वात नै ॥ ३ ॥

मीरां दरसण कारण भूरै ॥ जूँ बालक भूरै मात नै ॥ ४ ॥

४६

म्हारा सुगण साजन बोलो भुवां । बोलो भुवां जरा बैठो नषां ॥ टेरे ॥

कर करमा मेरी सेभ विराजौ ॥ माफ करो जी सब मूलां चूका ॥ १ ॥

कै तुम उपर कामण कीया ॥ कै मरमाया थाने दूजी सोका ॥ २ ॥

यो न पति मेरी दाय न आवै ॥ छोड़ दीयौ जी मै तो हकां धकां ॥ ३ ॥

मे तो दासी थारी जनम जनम की ॥ तुम ठाकुर मारे सीस रषां ॥ ४ ॥

जो ओगण तोही तुमरी बाजूं ॥ मीरां कहां जाय पीव थकां ॥ ५ ॥

४७

मारो मनड़ो हरि सूँ राजी ॥ टेरे ॥

काई करोगा मारो दुरजन पुरजन ॥ भव मारो भूठा पाजी ॥ १ ॥

काई करोगा मारो राजा राणा ॥ काई करोगा मुलां काजी ॥ २ ॥

रंगीला प्रीतम सैं हिल मिल षेलां ॥ पर तन हारां बाजी ॥ ३ ॥

४८

गोबिदा नैं आण मिला ज्यौजी ॥

साईयां मारी यतनी अरज पढ़वा ज्यौजी ॥ टेरे ॥

बिनती तौ कीज्यौ मारी पायन पारिके ॥ सारी सुख जणा ज्यौजी ॥ १ ॥

बिरह बिधा की बेदन कीज्यौ ॥ मारी तन की तपन बुझा ज्यौजी ॥ २ ॥

ब्रज नंद हित सैं हिय उमग्यौ है ॥ मारी अरज मत बीसरा ज्यौजी ॥ ३ ॥

राम मारी लागी प्रीत निमाज्यौ जी ॥ टेरे ॥
 थे छोजी म्हारी सुष का सागर ॥ मारा आगण सारूँ मत जाज्यौ जी ॥ १ ॥
 लोगन धीजै मारो मत न पतीजै ॥ मुषडारा सबद सुणा ज्यौ जी ॥ २ ॥
 मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ॥ मेरो बेड़ो पार लगा ज्यौ जी ॥ ३ ॥

०

उधोजी माधो कैसी कीनी ॥ टेरे ॥
 आज काल कुबज्या बड़ भागण ॥ मे बुध की सुत हीणी ॥ १ ॥
 आप तौ जाय द्वारका छारा ॥ हम कुं पाती नही दीनी ॥ २ ॥
 मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ॥ बिधना या लष दीनी ॥ ३ ॥

५१.

गिरधर रीसांणा कौन गुणां ॥ टेरे ॥
 कछुक आगण हम में काढौ ॥ मे भी कान सुषां ॥ १ ॥
 में तो दासी धारा जनम जनम की ॥ थे साइब सुगणां ॥ २ ॥
 मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ॥ थारोई नांम मणां ॥ ३ ॥

५२.

थे मारे घर आवोजी प्रीतम प्यारा ॥ टेरे ॥
 तन मन धन सब भेंट करूंगी ॥ भजन करूंगी तुमारा ॥ १ ॥
 मो नुगणी ने गुंण नहीं प्रभूजी ॥ तुमहो बगसण हारा ॥ २ ॥
 बौ हो गुणवंता सायब कहिये ॥ सुभ में आंगुण सारा ॥ ३ ॥
 सेभ संवारी आप नहीं आये ॥ कबकी करूँजी बिचारी ॥ ४ ॥
 मीरां के प्रभू गिरधर प्रीतम ॥ थां बिन नैण दुप्यारा ॥ ५ ॥

५३.

सुणज्यौ चित दे कान ॥ टेरे ॥
 भगत प्रकास करो हिरदा में ॥ जासे मिटे अग्यांन ॥ १ ॥
 तुम चरणां में लीन रहै मन ॥ ज्यूंमझी जल ध्यान ॥ २ ॥
 मीरां दासी दोउ कर जोडां ॥ ए भागत वरदान ॥ ३ ॥

५४

गोबिंद आवौ ने सब सुख रासी ॥

आवौजी युक्त बिलासी ॥ टेर ॥

अबकी बैर प्रभू दरसण दीजौ ॥ सषीयां करत मेरी हांसी ॥ १ ॥

सब सणगार सजे तन ऊपर ॥ हरि बिन लगत उदासी ॥ २ ॥

जाका दुषकी जेही जाणै ॥ औरा के मन हांसी ॥ ३ ॥

आंबा की डाल कोइल यक बैठी ॥ बोलत सबद उदासी ॥ ४ ॥

मेरा मन में अैसी आवै ॥ करवत ल्युँगी जाय कासी ॥ ५ ॥

उदिन मोकूँ कैसो होंयगा ॥ हरि मेरी सेभ सिधासी ॥ ६ ॥

मीरां कहै प्रभू कबर मिलोगे ॥ सुख की रैण बिहासी ॥ ७ ॥

५५

लगन को नांव न लीजे री मोली ॥ टेर ॥

लगन लगी कौ पैडो ही न्यारौ ॥ पाव धरत तन छीजै ॥ १ ॥

जैतूँ लगन लगाई चावै ॥ तौ सीस की आसन कीजे ॥ २ ॥

लगन लगी जैसे पतंग दीपक से ॥ वारि फेर तन दीजै ॥ ३ ॥

लगन लगाई जैसे मिरघेनाद सै ॥ सनमुख होय सिर दीजै ॥ ४ ॥

लगन लगाई जैसे चक्रोर चंदा सै ॥ अगनी मन्त्रण कीजै ॥ ५ ॥

लगन लगी जैसे जल मछीयन सैं ॥ बिछडत तन ही दीजै ॥ ६ ॥

लगन लगी जैसे पुसप भवर सैं ॥ फूलन बीच रही जै ॥ ७ ॥

मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर ॥ चरण कवल चित दीजै ॥ ८ ॥

२. मीराँ सम्बन्धी भजन

रचयिता-जेटराम । ये भजन मीराँ के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं । ये एक ३'५" × २'४" आकार वाले गुटके में अन्य सन्तों के भजनों के साथ मिले हैं । इसका लिपिकाल या रचनाकाल नहीं है ।

संगत साधा की म्हैतो करस्यां प्रीति लगाइ ।

संसार समंद में ह्वन तरावै, लेवै बाहि समाइ ॥ टेर ॥

हरिजन हरि तो एक है, फूल बास दोइ नाहि ।

अरसि परसि अँसै मिल रहिया, अति दूध के माहि ॥ १ ॥
 साँचा मन सू सुमिरन कीजे, अति मरम छिटकाइ ।
 अमर लोक पद प्रापति होवै, राम मिले घट माहि ॥ २ ॥
 हरि मज लावौ लीजे प्राणी, साध संगति में आइ ।
 बार बार नर देहि नाहि, आयो मोसर जाइ ॥ ३ ॥
 भामी भीरा सुणो कान दे, साच कहू समझाइ ।
 साधा की संगति छोडर घौजी, मति कुल ने षोड लगाइ ॥ ४ ॥
 साध संगति कीनिधा ठायै, राम कहे सुष नाहि ।
 षोड लागसी वाने बाई, पइसी नरक के माहि ॥ ५ ॥
 साधा को संग मलौ नहीं छे, म्हाँरी न आयौ दाइ ।
 घर जावण की ऐ छै वाता, इण मारिग मति जाइ ॥ ६ ॥
 यो मारिग म्हाँने नीठ मिल्यौ छै, सतगुर दियो बताइ ।
 माथा सारे धारण किन्हौ, क्यूँ कर छोड्यौ जाइ ॥ ७ ॥
 साध संगति में निम दिन करस्यां, जरा जीवडो सुष पाइ ।
 प्राण हमारा हरिजन है जी, ज्यूँ मीन बसै जल माहि ॥ ८ ॥
 कछो हमारो मानौ भामी, समझौ मन के माहि ।
 इस्थौ कुसंगतै काँई समायौ, मति म्हाँनै लाछण लगाइ ॥ ९ ॥
 लाछण ज्याँनै लागसी जी, साध संगति नहीं भाइ ।

.....॥ १० ॥

जनम बडै घर पाइयौजी, आई बड़ा घर माहि ।
 याँ बाता थै भला न दीसौ, मानों कहूँ समझाइ ॥ ११ ॥
 बुरा भलाइ म्हाँनै कह्यौ, लेस्यां पलौ बिछाइ ।
 मन लागो प्रभू का चरणां, छिन भर रख्यो न जाइ ॥ १२ ॥
 पीहर ससरो दोन्यूँ लाजै, हिंदवो भाण लजाइ ।
 मति में जी जुगता करै जगत में, कहूँपलो जी बिछाई ॥ १३ ॥
 राम नाम को मरम न जाणै, साध संगति रुचि नाहि ।
 में यौँ ज्याँनै लागसी, षोटै मारिग जाइ ॥ १४ ॥
 लोक दुनी सब बात करत है, चदासहर के माहि ।
 कटु ब कबीलो हाँसी ठाणै, हिलमिल त्रिधा गाइ ॥ १५ ॥

निंथा म्हारी मलिमलि कीज्यौ, म्हांनै घणी सुहाइ ।
 बिन सावण पांणी बिना, मैल धुपै धुप जाइ ॥ १६ ॥
 हरि मगतय तूं कै कर बैठी, लाज मरा मन माहि ।
 बार बार मै करूं बीनती, बुरा दिषावै काहि ॥ १७ ॥
 साथ संगति मै समझै नाहि, राम कथा जल जाइ ।
 जनम जनम मै बुरा दोषसी, मार जमा की षाइ ॥ १८ ॥
 जिती बात मै कही सीष की, एक न आई दाइ ।
 कुल को नातो तोझ्या बैठी, लोक लाज छिटकाइ ॥ १९ ॥
 भजन बीना जीव मटकठ फिरीयौ, लष चौरासी माहि ।
 किर्यौ किर्यौ कुल लाज सीजी, जाकी गिणती नाहि ॥ २० ॥
 आइ बैरागण आइ कठासूं, म्हांका घर के माहि ।
 ग्यान भगम कौ कथबा लागी, देण्यौ सुण्यौ कंइ नाहि ॥ २१ ॥
 तूं तो नयदल भई बावरी, समझ थारै मै नाहि ।
 ग्यान तणी गम तोनै नाहि, गरम रहि मन माहि ॥ २२ ॥
 मै तो बात रीत की कीन्हौ, तू बाइ चदी बरडाइ ।
 मूढ मुलक की काई जाणै, राजरीति ठुकराइ ॥ २३ ॥
 भगति बिना ठकुराइत फूटी, म्हांनै नही सुहाइ ।
 राज पाट सब धरीया रहसी, जंगल जलसी जाइ ॥ २४ ॥
 थांका कीया थै भुगतोला, म्हांनै दोसण नाहि ।
 मारण धात बिचारी राणै, कोष कीयो मन माहि ॥ २५ ॥
 राण्यो म्हांरो काई करसी, मोहि डरावै काहि ।
 साधां कै हूँ हाथ बकांणी, थासूं नातो नाहि ॥ २६ ॥
 साथ हमारै कटुं ब कबीलौ, साधू बाप'र माइ ।
 हरिजन म्हांरै सीस बिराजै और न आवै दाइ ॥ २७ ॥
 कइवा बचन श्रवण सुंण्या, रीस चटी मन माहि ।
 जाइ सिलगाई घरकां आगै, या नारी काम की नाहि ॥ २८ ॥
 धूतरा पेट सूं या धूतारी, मोसूं छानी नाहि ।
 धूतारो इनको गोत कहीजै, जाणै जगत के माहि ॥ २९ ॥
 म्हांका घर की चरोट बोवै, लीयौ कुलबि समाइ ।
 इनकूं मारबां दोसन कोई, साज मरा मन माहि ॥ ३० ॥

कुबधि केवलि अंतरी माहि, सब दुष्टयां मिल आइ ।
 जहर घोल प्याली पठवायौ, मारण करीछै आइ ॥ ३१ ॥
 नगदल प्याली करमैं लीन्हौ, आइ म्हाल के माहि ।
 हरि सेवा में भीरां में-बैठी, भजन करै चितलाइ ॥ ३२ ॥
 चरणांमृत हूँ ल्याई थाके, नेम करो मन माहि ।
 राखै प्याली मोकल्यौ जी, रुचि रुचि पीवो अघाइ ॥ ३३ ॥
 चरणांमृत मैं सुणयो जी श्रवणां, लेस्या प्रेम बंधाइ ।
 जनम मरण का भगड़ा छूटै, चौरासी मिट जाइ ॥ ३४ ॥
 राम राम कह मुख मैं ठोस्यो, घणो हरष मन माहि ।
 दूंधी कला राम जी दीनीं, संक न उपजी काहि ॥ ३५ ॥
 इअत प्याली म्हानि मेज्यौ, वो गुण बिसरां नाहि ।
 जाइ राणां ने यूँ कहज्यौ जी, रोजीनां पहुँचाइ ॥ ३६ ॥
 यो तो प्याली अब ही पीस्यौ, फिर पीवण को नाहि ।
 म्हानै दोसण को नहीं छै, थाकौ षोट था माहि ॥ ३७ ॥
 नर सब सूधा मरथा षोट सूँ, हरि सूँ छांनां नाहि ।
 राम भजन साधा संग करस्थां, जिवको निर्मल होइ जाइ ॥ ३८ ॥
 हरि भगती को यो फल लागौ, मरजास्यौ पल माहि ।
 साधा सूँ थारै पज्यौ आंतरौ, फेर न मलस्यौ आइ ॥ ३९ ॥
 सिर ऊपर म्हारै सबल घणी छै, काज बिगडै काइ ।
 जीवण को म्हारै मोद नहीं छै, मरणां सूँ डरपा नाहि ॥ ४० ॥
 यो बैणारत यूँ लिषीयौ, टाल्यौ टलैज नाहि ।
 मन मैं वै सौ मांग लइज्यौ, मत उणारथ ले जाइ ॥ ४१ ॥
 बैणा हरि आछौ करसी, डरथां भगति हूँ नाहि ।
 सबल धणी को सरणौ म्हाके, कुमी काहे की नाहि ॥ ४२ ॥
 राम नाम जे छांडै, भिग जीवन कलि माहि ।
 प्रम माहि गल क्यूँ नहीं गईयौ, जननी जर्णीयो काहि ॥ ४३ ॥
 राम नाम की टेक समाई, गाठ धार मन माहि ।
 पण राख्यौ प्रभुजी जिनको, जहर दीयौ पलटाइ ॥ ४४ ॥
 धन भीरां बइभागन जग मैं, हरि सूँ हेत लगाइ ।
 जतराम जस दीयौ भगत नैं दुष्टी रखा पिआताइ ॥ ४५ ॥

अब नहीं बीसहूँ म्हारै हिस्टै लख्यौ हरि नांव । धरतिन बीसहूँ ॥ टेरे ॥

मीरा बैठी महल में, ऊठत बैठत राम ।

सेवा करस्यां साध की और न दूजो काम ॥ १ ॥

राणैजी बतलाईया, काई देखो जुबाब ।

मन लागौ हरि नाम सूं, दिन दिन दूखो लाम ॥ २ ॥

सीप मर्यौ पांणी पीवै रे, टांक मर्यौ अनबाइ ।

बतलायौ बोलै नहीं, रांणौ गयो रिबाइ ॥ ३ ॥

बिस का प्याला मेजिया, दीज्यौ मेडतणि के हाथि ।

करि चरणाग्रत पी गई, सबल धर्यौ के साथि ॥ ४ ॥

रांणौ मो पर कोपीयौ, मारूँ एकण सैल ।

मार्यां पराव्रत लागसी, दीज्यौ पीहर मेल ॥ ५ ॥

बिस का प्याला पीगइ रे, भजन करै अस ठौर ।

धारी मारी ना मरूँ, राषण हारो और ॥ ६ ॥

रांणौ मो पर कोपीयौ रती न राष्यौ मोद ।

ले जाती बैकुंठ मैं समझ्यो नहीं सी समोद ॥ ७ ॥

मीरा मइल सूं ऊतरी, राणै पकर्यौ हाथ ।

हथ लेवा को साहिण्यौ, और न दूजी बात ॥ ८ ॥

माला हमारे दोवडौ, सील बरत सिंगार ।

अब कै किरपा कीजीयौ, तो (फिर) बांधू तरवारि ॥ ९ ॥

रण्यां बैल जुपाइया रे, ऊँटां कसीया भार ।

कैसे तोइ राम सूं (म्हारौ) मो मो को मरतार ॥ १० ॥

राणै सांड्यो मोकल्यौ रे, जाज्यौ एकै दौडि ।

कुल की तारण असतरी, (यातो) पुरडि चली राठोड ॥ ११ ॥

सांड्यो पाछो फेर दे, धरतिन देस्या पांव ।

सुरापण धरी नीसरी (म्हारै) कुण राणौ कुण राव ॥ १२ ॥

संसारी नंथा करै, दुषीयौ सब पिरवार ।

कुल सारो ही लाज्यो, मीरा हुई पुवार ॥ १३ ॥

छापा तलक बखाइया, तजीयौ सब सिंगार ।

मीरां सरयौ राम कै, मलि नीदो संसार ॥ १४ ॥
 राती मांती प्रेम की, बाधि मगति को मोड ।
 राम अनल राती रहै, धनि मीरां राठोड ॥ १५ ॥

३

मामी मीरां क्यूं रै लियौ बैराग ।
 क्यूं रे लीयो बैराग माया में क्यूं तजी ॥ १ ॥
 ऊँचा धारा बैठ्या, ऊँची धारी जात ।
 राणां सरीसो बर पाइयो धारो सहंस मेवाइ मे राज ॥ २ ॥
 पुतो मोती ओस का जैसे यो संसार ।
 आयौ भिकोली पवन को जातान लागै बार ॥ ३ ॥
 बलीर बांड को भोजनि जीमता, ओदौ दिषणी चीर ।
 राणां सरीसो बर त्यागीयो, (धारो) सब भुलकामे सीर ॥ ४ ॥
 चीर बांड सा भोजन त्याग्या, त्याग्या, दिषणी चीर ।
 राणां सरीसो बर त्यागीयो (न्हारै) सब संता में सीर ॥ ५ ॥
 क्यूं पावौ ठंडा टूकड़ा, क्यूं रै पीवौ बाटि छाछि ।
 मैसूवा भूषा भरौ, कदि मिलसी दीना नाथ ॥ ६ ॥
 मीठा लागै ठंडा टूकड़ा, इम्रत लागै छाछि ।
 मैसूवा भूषा भरौ, जदी मिलसी दीना नाथ ॥ ७ ॥
 लाजै पीहर सासरौ, लाजै माइ मोसाल ।
 नित का आवै औलंबा, धारो मरम धरै संसार ॥ ८ ॥
 आग लगाऊं पीहर सासरै, जत जीवे मोसाल ।
 मीरां सरयौ राम कै, भल्ल भारौ संसार ॥ ९ ॥

[धोलीबाबड़ी रामद्वारा, उदयपुर]

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	हेमा चरिज	हेमाचारिज
४	१०	प्रथ	ग्रन्थ
६	२८	पृष्ठ	पृष्ठ
७	२१	ऊधव	ऊधव
८	६	घेरजो	घेर जो
८	१८	नसीतनामा	(१) नसीतनामो
८	१८	(१) अनेकार्थ	(२) अनेकार्थ-
६	१६	(२) 'पाषडव ..	(३) 'पाण्डव'...
१०	२२	प्रगस्या	प्रगट्या
१२	२	प्राता	प्रातां
१५	७	फूटकर	फुटकर
१५	२६	समजन	रामजन
१६	२३	गजेन्द्र	गजेन्द्र
१८	२५	स्गीला	रंगीला
१८	२८	भलराम	बलराम
२१	१७, २०, २६	जन गोपाल	जनगोपाल
२५	१४	आणमै	अणमै
२६	२४	हरिद्वारा	हरि-द्वारा
२८	१३	साध	सार
२८	१६	प्रथ	ग्रन्थ
२६	१६	(३६)	(३७)
३०	१०	बकचूरजी	बकचूलजी
३१	२०	जातिन	जाति न

३२	६	राम चरण	रामचरण
३२	११	'चा	चा'
३८	६	मेर	मेरे
३८	१६	आकार वाले	आकारवाले
४२	१४	२	३
४४	४	ल	लै.
४४	२३	कीजै रसना	रसना कीजै
४६	२६	वारा	वार
४७	२	में	में
४७	१६	अणमै वाणी	१. अणमै वाणी
४७	२२	चहूँटा ईये.	चहूँचाईये.
५७	१०-११	इस प्रति में १०६ ।	इस प्रति में १०६ कम हैं
		कम है	
५७	१६	राख	राखै
५८	२२	छीतभ	छीतम
५६	२४	चर पहनाथ	चरपटनाथ
६०	५	भीडकी पाव	मीडकीपाव
६१	८	भयो	भयो
६६	१५	कोंसो	कों सो
६८	२६	...राम तज	तज राम...
६६	१	आन	आनै
७०	५	त्रप्त राय	त्रप्तराम
७१	२१	(७५)	(७५ क)
७५	७	सुन्दरदासजी सबैया	सुन्दरदासजी का सबैया
७६	२७	आव	आवै
७७	२३	प्रमहंज जू	प्रमहंसजू
७६	२	रामभजन....दिन	राम-भजन....दिन करै
७६	८	पदपात	पद पात
७६	६	पत्र-संख्या	पत्र-संख्या-६

७६	२४	फकीरो	फकीरी
८१	६	अजेसी, 'लखमसी...	'अजेसी, लखमसी....
८२	३	कडि	कवि
८३	५	भण्डार	भण्डारकर
८३	२४	अव तरिउ	अवतरिउ
८४	२	मिलइ ।...टलइ	मिल' इ । ...टल' इ
८५	४	अथवा (लब्धोदय	(अथवा लब्धोदय
८५	५	ढाल में	ढालों में
८५	६-१०. +२) ६१८		+ १) ६१७
८७	१०	। ॥ १० ॥	॥ ६१०॥
८६	५	शलिभद्र	शालिभद्र
८६	२७	भटालज	भटात्मज
९४	७	(नान)	तान
९४	२४	निभरिष'	निभरयं
९४	२६	नारदयंनदयं	नारदयं न दयं
९५	२३	अपभरा	अपभर
९५	२५	कनवाज्ज	कनवज्ज
९६	२७	कीनी ।....तर फे	कीनौ ।....तरफे
९६	२८	केनीचे x	जोड़ो- 'दोहा'
९७	१५	सज्जिव, अरष...सब्बड	सज्जिव अरष, ...सब्बड
९७	१६	दिब्ब	दिब्बड
९८	१७	करुन	करुना
९८	२१	रचनसी	रचनसी
९८	२८	प्रवत्तमाने	प्रवर्त्तमाने
१०१	१	केवार	केवार
१०४	३	आव ओरी में आरडी	आव' ओ री मेंआरडी
१०४	४	उमी रे रे में आरी	उमी रे' रे मेंआरी
१०४	५	जांढो	जांणो
१०४	७	मला	भला

१०४	८	ने षेडो	नै छेडो
१०४	२५	उ द्द रें	उद्धरें
१०५	१	चुडा	चुं डा
१०५	१२	रेणसा वधाइ वधाइ	रेणसी वधाइ वधीइ
१०५	१७	मिंदिर	मिंदिर
१०५	२६	भ डमोटा	भड मोटा
१०७	८	आस्या	आस्यो
१०७	१५	डिंगल	डिंगल
१०७	२७	सन्नातह हि	सन्नाह तहि
१०८	२५	भरवदत्त	भैरवदत्त
१०६	८	चाविगेद	चाविगदे
१११	५	संपात	समपत्ति
११७	४	कुल पति	कुलपति
११७	२२	का किल	काकिल
११७	२३	धरनी	धरनी
११७	२७	कीन्ह कीलृणदे	कील्हणदे
११८	१०	चावले	चाव ले
१२०	२६	द्व	है
१२१	१	नान्हूरांभ	नान्हूरांम
१२१	१५	गदये	मध्ये
१२२	२२	हैसारनि	हे सारनि
१२३	६	कवि प्रियाभरन	‘कवि-प्रियाभरन’
१२५	१	पगो	-पयो-
१२५	६	बाज	काज
१२५	१३	सीस्त्रि	सीस्त्रि
१२६	२६	भांडर	भींडर
१२७	६	पर बंद	परबंद
१२८	२	दंहो	दोहो
१२८	२४	सुख माधरी	सुखमा धरी

१२८	२५	कोम	कौन
१३०	१२	करहुं	कर
१३२	११	स्स	रस
१३३	१३	पंक्ति में और प्रतिपंक्ति	अक्षर और प्रतिपंक्ति में
१३३	१६	देसही	दे सही
१३३	२०	अंत	अंत
१३४	२२	हरा	हरो
१३५	४	जय साहि	जयसाहि
१३५	२७	काट.....भ	काट...भी
१३६	१२	सषो	सषी
१३६	१४	नन	मन
१३६	२१	ठांव	ठांव
१३६	२३	महंत	महंत
१३६	२४	ताततें	तात तें
१३६	२५	आननं	आनन
१३६	८	रस वंत.....थरी	रसवंत...धरी
१३६	१६	अवरथा	अवस्था
१४०	१	रझोन	रझो न
१४१	२६	कुंदन रंग	कुंदन को रंग
१४२	३	अनमिष	अनमिष
१४३	१७	प्रो षत पति का	प्रोषतपतिका
१४४	४	प्रवसित पतिकाये	प्रवसितपतिका ये
१४७	८	भृंगारा	भृंगारी
१४७	१६	क रत	करत
१४७	२३	झावरने	झां वरने
१४८	५	पे	के
१४६	३	परदेंत	परदतें
१४६	२२	नहीं	नहीं
१५०	२२	अनेकार थी	(६२) अनेकारथी

१८१	२३	सुख देव	सुखदेव
१८२	११	दूसरी और	दूसरी ओर
१८२	१२	चित्र पर।	पर चित्र
१८३	६	आम्या	आम्या
१८५	१८	वर दाअनी	वरदा अन
१८६	१३	सुण	सुणे
१८७	१०	रसालकृत	रसालंकृत
१८८	८	काभिनी	कामिनी
१८९	२३	करुण	करुण
१९०	४	चोबसमा	चोबीसमा
१९२	१३	पलागा	पलाणा
१९२	२४	जेस लमेर	जेसलमेर
१९५	६	केवलदरसण	केवल दरसण
१९७	११	सोसीदेह	सो सीदेह
१९८	१	मेता रज	मेत रज
१९९	१	गो तम	गोतम
२००	१	बरुचूल	बकचूल
२०१	२६	शुद्ध	अशुद्ध
२०२	४	स भ्रम अतत	सभ्रम अंततः
२०४	६	ओषानेरी	ओषाणेरी
२०४	१४	हौसराषा	हौसनषां
२०४	२६	साबर्ती	सांषली
२०५	१३	सरवहीये	सर वहीये
२०६	१६	स्वरूपलालजी	कविराव मोहनसिंह
		जदीश चौक	
२०६	२२	भक्तमाल की टीका	भक्तमाल
२०६	१८	वाचना चारभ	वाचनाचारभ अभयसोमे, मतिसुंदर
		अभय सोमे, मति सुंदर	
२०६	२१	हेमंत विज	हेमंतविजय

२०६	२५	वर काणो	वरकाणो
२११	१२	मलिनरसन	मलिन रसन
२१२	५	सोलै सैजु	सोलैसै जु
२१२	२०	जिन हरष	जिनहरष
२१२	२१	उगण पचासै	उगणपचासै
२१३	१	कल्प वेलि कपि	कल्पवेलि कविअणतणी...
		अणतणी ..सुष साय	सुपसाय
२१४	५	सिंहत्याग्रेषां कादि	सिंह व्याग्रेषांकादि स्येइं त च
		स्वेदंतच	
२१४	६	सुल्या	तुल्या
२१४	२६	ओरु	ओरु
२१७	२०	लषा वकाज	लषाव काज
२१८	६	वदि	वदि
२१८	६	आचार	आधार
२१६	३	निम्न लिखित	निम्नलिखित
२१६	६	क्रप्रत...अैन	कहत...अै न
२१६	१०	छै मासी	छैमासी
२२०	२	नर मोहीयाजी	नरमौहियाजी
२२०	११	सुषि	सुणि
२२१	२	आगणि याली	आगणियाली
२२१	५	सामलैरे	सामलै रे
२२१	१२	बैहाल	बैहाल
२२१	२२	बुरौ	बुरों
२२१	२७	करिके	के
२२२	३	भीटर	भीतर
२२३	३	तव काज्यू	तणका ज्यू
२२३	७	बली	बली
२२३	८	घणी...।...मुष...	घणी...।...मुष ..
२२३	१०	घौ	घौ

२२४	१०	जिहानां	जिहान
२२४	१६	होय कर...हिव राडारौ	होयकर...हिवरा डारौ
२२४	१७	हेय कोव पूधर... संघा रचौ	हेय को वपू धर...संघारघौ
२२४	२२	आकूँ सदे देहारी	आकूँ स दे दे हारी
२२४	२३	भवगत जत	भवंग तजत
२२४	२५	तुन्हारे	तुम्हारे
२२६	१	जीवनीचंत	जीव नीचंत
२२६	२	मीरा	मीरां
२२६	२२	कर दउर	करद उर
२२६	२४	उक लानें	उकलानें
२२६	२५	मेरोदर धन	मेरो दरध न
२२७	१०	अजा मेल	अजामेल
२२७	२२	अज ऊन	अजऊन
२२७	२४	भला मल	भलामल
२२७	२५	पुरवा	पूरवा
२२८	४	निधपाउं	निध पाउं
२२८	१२	नछ राषल	नछरावल
२२६	८	बिउदहै	बिरूद है
२२६	१६	बिणता ताबिण सीलंवारे	बिण ताता बिण सीलवा रे
२२६	२६	भारी	भारो
२३१	४	भीरां	मीरां
२३२	३	म्हारी	म्हारा
२३२	५	०	५०
२३३	६	उदिन	ऊ दिन
२३४	६	कीनिधा	की बिधी
२३४	२६	कहुं पलो	कहुं पलो

२३४	२६	चवासहर	चवासहर
२३५	१०	लाज सीजी	लाजसी जी
२३५	३०	दोसन	दोस न
२३८	१०	जातांन	जातां न
२३८	१२	बरत्यागीयो.....	बर त्यागीयो.....मुलकां
		भुलकामे	में
